सम्पादन-समिति

प्रधान सम्पादक
जवाहिर लाल जैन

मुद्रक :
अजन्ता प्रिन्टर्स,
जौहरी बाजार,
जयपुर : ३

मूल्य : पन्द्रह रुपया

विराट ज्ञान–यज्ञ की आवश्यकता

जिस प्रकार चक्र का आविष्कार मनुष्य की सभ्यता के विकास में क्रांतिकारी सिद्ध हुआ, उसी प्रकार शब्दों को आकृति प्रदान करना (जैसा प्राचीन मिश्र और चीन में हुआ) या शब्दों को अक्षरों में विभाजित उनका रूप निश्चित और मान्य करना मनुष्य की संस्कृति के लिए अत्यन्त क्रांतिकारी और महत्वपूर्ण कदम सावित हुआ। मनुष्य अपने विचार को भाषा में अभिव्यक्त करने लगा, पर उस अभिव्यक्ति को इस प्रकार सुरक्षित किया जाय जिससे वह भविष्य में तथा अन्य स्थान पर भी उसी प्रकार से समझ ली जाय, जिस प्रकार वह किसी समय और किसी स्थान पर किसी मनुष्य द्वारा वास्तव में कही गयी थी, वह मनुष्य की मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए बहुत ही लाभ दायक प्रमाणित हुआ और मानव–संस्कृति लेखन–कला के लिए उन अज्ञात नाम-गुरु शील महा वैज्ञानिकों के प्रति कितनी आभारी है, इसका शब्दों में वर्णन कर पाना अशक्य है। फिर लेखन–कला के विकास के द्वारा ग्रन्थों की रचना और उनकी सुरक्षा का जो उपाय निकला, उसने मानव चिंतन को देशकालातीत बना दिया, पर फिर भी जब तक लेखन कार्य मनुष्य के हाथों से किया जाता रहा, पुस्तकें किसी भी देश के कुछ गिने चुने भाग्यवान तथा साधन सम्पन्न लोगों तक ही सीमित रहीं। सर्व साधारण लोग प्रायः निरक्षर ही रहे और जो कुछ ज्ञान वे प्राप्त कर सके उसे उन्हें अपने कण्ठ में ही सुरक्षित रखना पड़ा। ज्ञान का अमृत कुछ थोड़े लोगों के हिस्से में ही आ सका। मुद्रण के आविष्कार ने इस ज्ञान को न केवल बढ़ाने में अभूत-पूर्व मदद दी, बल्कि उसे हरेक गरीब–अमीर, छोटे-बड़े, ऊंचे-नीचे व्यक्ति तक के लिए सुलभ बना देने का महान तथा विलक्षण काम किया।

छापाखाने के आविष्कार के पश्चात् धीरे-धीरे मानव के विचार, [illegible] और कार्यों का विवरण तैयार करना, छापना और सर्वसाधारण तक पहुंचाना [illegible], उद्योग, व्यवसाय और सेवा के रूप में सँवरता, बढ़ता और विस्तार पाता चला गया है। दुनिया में लाखों-करोड़ों पुस्तकें लिखी, छापी और वितरित की गई हैं और व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक और ग्राम से लेकर विश्व संगठन तक इनके सहारे, [illegible]

ओर प्रसार में उत्तरोत्तर अधिकाधिक भाग लेते रहे हैं। यही नहीं जिस प्रकार कागज, छपाई तथा वितरण विश्व व्यापी उद्योग बन गये हैं, उसी प्रकार पुस्तकों के निर्माण, वितरण और संग्रह की भी कला और विज्ञान का विकास, महत्व और उपयोगिता विश्वव्यापी बन गई है।

राजस्थान एक ओर इस विश्वव्यापी कार्यक्रम का एक अंग है, तो दूसरी ओर उसकी अपनी एक विशेषता है जो इसे विशेष महत्व भी प्रदान करती है। एक ओर गंगा-यमुना और चंबल, दूसरी ओर पंजाब की नदियां और सिंधु नदी, तीसरी ओर मालवे का पठार और चौथी ओर गुजरात-सौराष्ट्र के नीचे मैदानों से ऊपर, अरावली पर्वतमाला जिसका मेरुदण्ड है, ऐसी प्राकृतिक सीमाओं से युक्त राजस्थान प्रदेश एक ओर उत्तर भारत-पंजाब और गंगा-यमुना के कछारों में होने वाली राजनैतिक उथल-पुथल और संकट के काल में भारत की कला और संस्कृति का शरण-स्थल और संरक्षक रहा है, वहां वह अपने उत्तर-पश्चिमी मरुस्थल से साहसी और मेहनती संतान को सारे भारत में भेजता रहा है, जो अपने साथ अपनी संस्कृति, शौर्य और व्यवसाय-बुद्धि लेकर गये हैं और सारे देश की समृद्धि में योग देते रहकर भी अपनी मातृभूमि को नहीं भूले हैं और इसको समृद्ध करने में योग देते रहे हैं। इस प्रकार इस देश की कला-संस्कृति राजस्थान में सुरक्षित रही है, पनपी और बढ़ी है जिसकी अभिव्यक्ति का विशाल साहित्य इस प्रदेश में आज भी मौजूद है, जो प्रकाशन की राह देख रहा है, साथ ही राजस्थान की अढ़ाई करोड़ जनता के शिक्षण, अध्ययन तथा ज्ञान सम्बन्वी आवश्यकताओं की पूर्ति के हेतु छपे हुए साहित्य की आवश्यकताओं का विशाल क्षेत्र पूर्ति के हेतु मौजूद है जिसके लिए पुस्तकों का निर्माण, वितरण तथा संग्रह के विराट उद्योग, व्यवसाय और सेवा बहुत बड़े पैमाने पर आवश्यक है। आज इस आवश्यकता की बहुत थोड़ी पूर्ति राजस्थान के साधनों से हो पाती है, बहुत कुछ राजस्थान के बाहर की पुस्तकों से होती है। पर यह सब कुछ मिलकर भी बहुत अल्प है और बहुत थोड़े क्षेत्र की ही पूर्ति करता है। भारत और भारत के बाहर के उपयोगी साहित्य के आयात के विस्तार और वृद्धि की जितनी गुंजाइश है, उससे कहीं अधिक राजस्थान के अन्तर्गत इन सभी दिशाओं में विस्तार की गुंजाइश आज है और वह निरंतर बढ़ती जाने वाली है।

राजस्थान में एक ओर बाहर से और दूसरी ओर भीतर से ज्ञान-विज्ञान की विविध धाराओं को लाने और निर्माण करने तथा इन्हें यहां के करोड़ों जन-जन में प्रवाहित करने का विराट तथा महत्वपूर्ण कार्य बहुत विस्तार और गहराई से तथा सुनियोजित ढंग से चलना चाहिए-इसकी आवश्यकता और महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसे गांव से लेकर प्रदेश के स्तर तक प्रवाहित करना और बढ़ाना चाहिये।

एक ओर विचारकों, लेखकों, कवियों आदि का चिंतन चले और वे उत्तमोत्तम कृतियां समाज को प्रदान करें, दूसरी ओर प्रकाशक उन्हें प्रकाश में लाने की सुनियोजित व्यवस्था करें, तीसरी ओर वितरणकर्त्ता यहां के तथा बाहर से उपलब्ध

साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने का आयोजन करें, चौथी और पुस्तकालय, वाचनालय तथा सभी प्रकार के सरकारी, व्यापारिक, औद्योगिक, शैक्षणिक, कला, विज्ञान तथा तकनीकी संगठन जहां-जहां भी जन-समूह काम करते हों, एकत्रित होते हों, रहते हों, वहां ज्ञान के विस्तार में सहायक हों, तो जन-जन में ज्ञान-विज्ञान का प्रसार यथोचित रीति से हो सकता है।

वाणी मन्दिर ने अभी तक सर्वहितकारी तथा समाज-निर्माणकारी साहित्य के वितरण का ही काम किया है, यद्यपि उसे तथा उसकी जैसी अन्य सभी संस्थाओं को उपर्युक्त सभी दिशाओं में काम करना है। वाणी मन्दिर की ओर से स्मारिका प्रकाशित करके राजस्थान भर की पुस्तकालय-सेवा की जो जानकारी दी गई है, वह भी इस दिशा का एक प्रारम्भिक प्रयास है।

राजस्थान की सारी जन शक्ति अपने-अपने विभिन्न क्षेत्रों में तथा अपनी-अपनी मर्यादा में इस दिशा में संगठित तथा व्यवस्थित रूप में कार्यशील होगी, तभी यह विराट ज्ञान-यज्ञ राजस्थान के जन-जन में सम्पन्न होगा और यहां के जन-जन को तथा सारे समाज को सम्पन्न तथा समृद्ध बना सकेगा

—जवाहिरलाल जैन

वाणी मन्दिर की रजतजयन्ती

के

अवसर पर

मानव एक विचारप्रधान प्राणी है, इसलिए जिस तरह की विचारधाराओं का स्थायी प्रभाव समाज पर होता है, उसी ढांचे में वह ढलता है। इसलिए समाज बदलने के लिए नई विचारधाराओं के लिए अपना प्रमुख प्रभुत्व स्थापित करना आवश्यक होता है। इस प्रयास में पुरानी और नयी विचारधाराओं का संघर्ष अनेक रूप लेता हुआ निरन्तर आगे बढ़ता रहता है।

इतिहास साक्षी है कि किस प्रकार विचार भेद से प्रवाहित होकर मानव अनेक बार अन्धकार में भटका है और समय-समय पर मनीषियों के दिव्य विचारों ने उसे आत्मविनाश के गर्त से उबारकर प्रकाश में लाकर, खड़ा कर नवजीवन प्रदान किया है। इसी प्रकार सत्-असत्, हिंसा-अहिंसा, नैतिकता-अनैतिकता विचारों का तुमुल युद्ध आज भी चालू है।

विश्व की जनता आज पूंजीवादी एवं साम्यवादी खेमे में इस विचार भेद के कारण बंट रही हैं। इन दोनों को चुनौती देने और भारतीय संस्कृति के अनुरूप शान्त-क्रान्ति का रास्ता बताने वाले विचार गांधी और विनोबा का सर्वोदय-विचार है।

सर्वोदय का मूल तत्त्व लोक-नीति एवं जन-शक्ति का होने से सर्वोदय साहित्य का प्रचार कार्य स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा हो, यह समीचीन भी है।

राजस्थान सर्वोदय साहित्य समन्वय समिति, जयपुर

प्रथम खण्ड

पुस्तकालय विज्ञान

आशीर्वाद : शुभकामनाएं

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'—ज्ञान के समान अन्य पवित्र वस्तु नहीं। आत्मा की प्रतीति ज्ञान से ही होती है। चैतन्य गुण आत्मा में ही है। भेद विज्ञान अथवा सर्वज्ञत्व ज्ञान के ही कोटिगत पर्याय हैं। जिस ज्ञान से हेयोपादेय की प्रतीति हो, परमार्थ सिद्धि हो, उसकी पवित्रता में किसे संदेह हो सकता है? इस दृष्टि को समक्ष रखकर विचार किया जाए तो ज्ञानदान कल्याणकारी दान सिद्ध होता है। यद्यपि आहारदान औषधदान तथा वसतिका दान का महत्त्व सामान्य नहीं है तथापि आहार का पाचन होने पर पुनः क्षुधा बाधित करने लगती है, औषध दान तो शारीरिक रोगावस्था में विशेष उपकार मात्र है और वसतिका की आवश्यकता भी अल्पकालिक ही है। अतः ये तीनों दान ज्ञानदान के सदृश सतत उपकर्त्ता नहीं है। इनमें ज्ञानदान ही ऐसा है जिसे आत्महितैषी की कोटि में रखा जा सकता है। आत्महित ही सर्वोपरि है। इसलिए जो ज्ञानदान करते हैं वे सर्वोत्तम दानशील हैं।'

श्री महावीरजी विद्यानन्द

मानव सेवा संघ
वृंदावन

वाणी मंदिर संस्था सत्साहित्य द्वारा बड़ा ही सराहनीय कार्य कर रही है इसमें दो मत नहीं हैं। मानवमात्र में जन्मजात वल तत्व के साथ-साथ ज्ञान और ग्रास्था का तत्व भी विद्यमान है—जब तक जीवन में वल ज्ञान के अधीन रहता है तब तक उपयोगी सिद्ध होता है अतः निज ज्ञान के प्रकाश में हमें अपनी भूल देखना है और भूल रहित होकर ज्ञान और जीवन में एकता स्थापित करना है। यह सर्वमान्य सत्य है कि अपने प्रति होने वाली बुराई किसी को अभीष्ट नहीं है। अतः बुराई रहित होने की प्रेरणा मानव की अपनी प्रेरणा है। बुराई रहित होते ही मानव भला हो जाता है और स्वतः भलाई होती है। उस होने वाली भलाई का अभिमान और फल छोड़ने पर मानव स्वाधीन हो जाता है। स्वाधीनता में ही उदारता तथा प्रेम निहित है। उदारता से जीवन जगत के लिए और प्रेम से जीवन प्रभु के लिए उपयोगी होता है। इस दृष्टि से पराधीनता का जीवन में कोई स्थान ही नहीं है। संत वाणी, भक्त वाणी, वेद वाणी से निज ज्ञान का ही समर्थन होता है। पर यह रहस्य वे ही साधक जान पाते हैं जिन्होंने ज्ञान और कर्म में एकता स्वीकार की है अतः इन्हीं शब्दों के द्वारा मैं वाणी मंदिर की सेवा की सराहना करता हूँ। आशा है पाठक महानुभाव वाणी मंदिर की सेवा करने के लिए अथक प्रयत्नशील रहेंगे। ॐ आनन्द।

अकिंचन कोई एक
शरणानन्द

'Vak eva Brahma' iss vakyase Vanee ka mahatwa maloom hota hai. Karmendriyonse kiya huwa karya jitana mahatwa rakhata hai utna hee CHALTI VANEE KA HAI. Chittame jo kriya chalti hai uska shravya roopa hee vanee ya shabda hai. Kriya aur karya doosare ko samjhane ke liye bhee vanee ka upayog karana padata hai. Apka prayatna yashaswee ho.

R. R. Diwakar
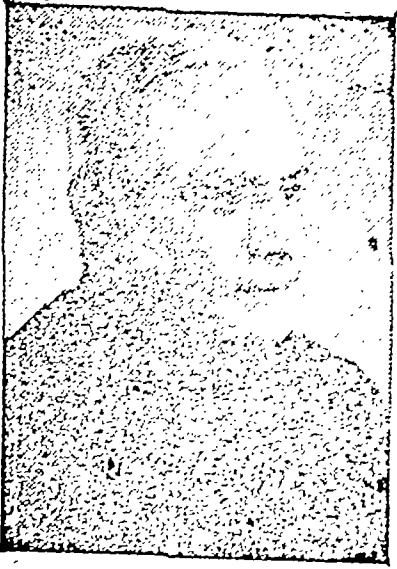
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली

राष्ट्रपतिजी के नाम भेजे दिनांक 25 नवम्बर, 1973 के आपके पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'वाणी मंदिर' का रजत जयन्ती समारोह मनाने व उस अवसर पर एक स्मारिका के प्रकाशन का आयोजन किया जा रहा है। आपके प्रयास की सफलता के लिए राष्ट्रपतिजी अपनी शुभ कामनाएं भेजते हैं।

खेमराज गुप्त
राष्ट्रपति के अवर निजी सचिव।

प्रधान मंत्री, भवन
नई दिल्ली

प्रधान मंत्रीजी को आपका पत्र मिला।

प्रधान मंत्रीजी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष वाणी मंदिर अपनी रजत जयन्ती मना रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

प्रधान मंत्रीजी इस स्मारिका की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं भेजती हैं।

सुरेन्द्र मजुमदार
हिन्दी अधिकारी
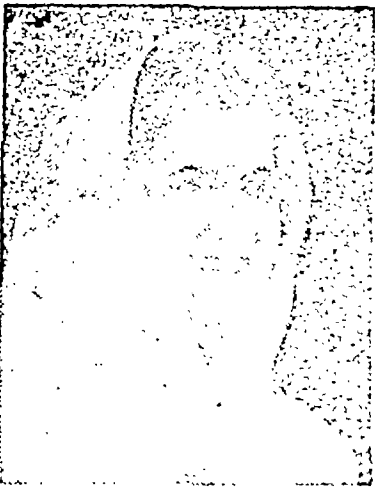
राज्यपाल, कर्नाटक
बंगलौर

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होती है कि वाणी मंदिर अपनी पच्चीस वर्ष की साहित्य सेवा के उपलक्ष में इस वर्ष रजत जयन्ती मनाने जा रहा है और इस सम्बन्ध में स्मारिका प्रकाशन, विचार गोष्ठी, सभा सम्मेलन वगैरह का भी आयोजन किया जा रहा है। गत 25 वर्षों में समिति ने राजस्थान में साहित्य क्षेत्र में जो सेवा की है वह उल्लेखनीय है। साहित्य प्रसार के साथ ही साथ जन-जन में स्वाध्याय की प्रवृत्ति के जागरण की भी आवश्यकता है। मुझे आशा है कि समिति अपनी भावी योजना में इस लक्ष्य पर जोर देगी।

रजत जयन्ती समारोह की सफलता के लिये मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

—मोहनलाल सुखाड़िया

पर्यटन मंत्री, भारत
नई दिल्ली

आपके पत्र से यह जानकर हर्ष हुआ कि "वाणी मंदिर" सा
सेवा के पच्चीस वर्ष पूर्ण कर अपनी रजत जयन्ती मनाने का आयो
रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा
बधाई स्वीकार कीजिये।

"वाणी मंदिर" साहित्य के प्रचार एवं प्रसार में जो पुण्य
रहा है, उसकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभ
प्रेषित करता हूं। सधन्यवाद—

—राज

मुख्य मंत्री, राजस्थान
जयपुर

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वाणी मंदिर, अपनी सेवा के पच्चीस वर्ष पूर्ण कर लेने के उपलक्ष में रजत जयन्ती समारोह मनाने जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। इस स्मारिका में अब तक की गतिविधियों का प्रकाशन होगा।

मैं समारोह की सफलता की कामना करता हूं।

—हरिदेव जोशी

वित्त मंत्री, राजस्थान
जयपुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि वाणी मंदिर जयपुर साहित्य सेवा के पच्चीस वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में इस वर्ष रजत जयन्ती समारोह मनाने जा रहा है और इसी अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित भी कर रहा है।

मैं आशा करता हूं कि इस स्मारिका के माध्यम से जन साधारण वाणी मंदिर द्वारा साहित्यक क्षेत्र में की गई उपलब्धियों से अवगत होंगे और लाभान्वित होंगे।

मैं अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

—चन्दनमल वैद

उप मंत्री, संचार-भारत
नई दिल्ली

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वाणी मंदिर जयपुर ने साहित्य सेवा के 25 वर्ष पूरे कर लिए हैं और इस उपलक्ष्य में वह अपना जयन्ती समारोह मना रहा है, जिसमें विचार-गोष्ठी सभा-सम्मेलन आदि कार्यक्रमों के अलावा एक स्मारिका के प्रकाशन की भी योजना है।

आज के इस संक्रमण-काल में जब विश्व कुछ ही वर्षों पहले एक महायुद्ध की विभीषिका से निकला है और उसके बाद भी छोटे बड़े पैमानों पर निरन्तर युद्ध चलते रहे हैं और बराबर इस बात की आशंका बनी हुई है कि आज मानव ने जिन क्षेपणास्त्रों और अणु-अस्त्रों का निर्माण कर लिया है, युद्ध में यदि उनका प्रयोग हुआ तो विध्वंस का वह तांडव-नृत्य होगा कि मानव अपने अस्तित्व को भी सुरक्षित नहीं रख पाएगा। ऐसे अस्तित्व-विनाशी शस्त्रास्त्रों की रोकथाम के लिए यह आवश्यक हो गया है कि युद्ध के बादल छंटें और शांति का वातावरण तैयार हो। हृदय की शांति मस्तिष्क को भी शान्त कर देती है। अतः हृदय में शांति लाने के लिए ऐसी मानस-भूमिका तैयार करनी होगी जिसमें अशांति शान्ति में परिणित हो सके। मानस-भूमिका तैयार करने में सत्साहित्य सर्वाधिक कारगर सिद्ध होगा। सत्साहित्य वह है, जिससे मंगलमय वातावरण बने, जिसके पठन, चिन्तन और मनन से आसुरी वृत्तियों का शमन हो और मानव में सद्वृत्तियों का अंकुरण हो। सद्वृत्तियों के विकास पर शांति और सद्भावना का उद्रेक होगा। पारस्परिक सद्भावना और प्रेममयी स्थिति ही विश्व-बन्धुत्व की व्याख्या और सत्साहित्य का अभीप्सित लक्ष्य है। अतः सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार करना एक महत्वपूर्ण संकल्प है। प्रसन्नता की बात है कि वाणी मंदिर समिति पिछले 25 वर्षों से इस दिशा में कार्य कर रही है। प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में हमारा देश भी इन्हीं आदर्शों को लेकर सर्वांगीण उन्नति करता हुआ समाजवाद की ओर बढ़ रहा है। इसलिये आज के युग में शांतिदायक साहित्य की ही आवश्यकता है, उत्तेजक साहित्य की नहीं।

मुझे आशा है कि वाणी मंदिर समिति ऐसे साहित्य के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देगी, जो जनता को मंगल-कार्यों की ओर प्रवृत्त करे। मैं स्मारिका की सफलता की कामना करता हूं।

—जगन्नाथ पहाड़िया

राजस्थान में पुस्तकालय सेवा

अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा

जयपुर

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि साहित्य संस्थान वाणी मन्दिर अपने जीवन काल के सफल 25 वर्ष पूरे करने के शुभवसर पर एक रजत जयन्ती समारोह मनाने जा रहा है जिसके अन्तर्गत व्याख्यानमाला, साहित्य प्रदर्शनी आदि मुख्य आयोजन भी किये जा रहे हैं। मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि वाणी मन्दिर इसी अवसर पर 'राजस्थान में पुस्तकालय सेवा' नामक एक स्मारिका का विशेष रूप से प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे आशा है कि वाणी मन्दिर के इन प्रयासों से पाठकों, 'विशेषकर साहित्य प्रेमियों को [illegible] लाभ होगा। वाणी मंदिर ने स्मारिका के लिए जो "पुस्तकालय" विषय चुना है वह अपने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं वृहत क्षेत्र है जिसके माध्यम से ही मनुष्य मात्र का बौद्धिक एव मानसिक विकास सम्भव हो पाता है।

अन्त में मैं आपके वाणी मंदिर के रजत जयन्ती समारोह एवं इस अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की सफलता की कामना करता हूं।

आपका,

(रामकिशोर व्यास)

शिक्षा मन्त्री

राजस्थान, जयपुर

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वाणी मन्दिर जयपुर रजत जयन्ती समारोह मनाने जा रहा है इस शुभ अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा।

इस अवसर पर मेरी शुभ कामनाएं भेजता हूं।

आपका सहभागी,

(खेतसिंह राठौड़)

अध्यक्ष खादी ग्रामोद्योग कमीशन

बम्बई

सत्साहित्य के प्रचार में लगी संस्था की रजत जयन्ती हर्षित [illegible] देती है। "वाणी मन्दिर" स्वर्ण जयन्ती की ओर अग्रसर होते हुए [illegible] नित "सत और सर्वोदय" साहित्य की सेवा करता रहे, यही कामना है।

जी. रामचन्द्रन्

अध्यक्ष
राजस्थान पुस्तकालय
संघ

आपका पत्र 27-12-73 का कृपा रत्र मिला। वाणी मन्दिर की रजत जयन्ती के अवसर पर आपने मुझे सदेश भेजने के लिए लिखा है उसके लिए लिखा हे उसके लिए धन्यवाद। आदेशानुसार में अपनी मंगल कामना भेज रहा हूं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वाणी मन्दिर अपने जीवन के 25 वर्ष पूरे करके रजत जयन्ती मना रहा है। इस संस्था द्वारा साहित्यिक क्षेत्र में जो प्रशसनीय कार्य किया गया है। उसकी पृष्टभूमि में इस प्रकार का समारोह सर्वथा उपयुक्त है। मुझे आशा है कि वाणी मन्दिर भविष्य में भी अपना उपयोगी कार्य अधिक सफलता से करता रहेगा। और उसकी रजत जयन्ती इसके लिए प्रेरणा का कारण बनेगी। मैं इस अवसर पर संस्था को बधाई और अपनी मंगल कामनाएं प्रस्तुत करता हूं।

भवदीय,
(द. वाब्ले)

सचिव
इन्दौर संभाग पुस्तकालय संघ

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'वाणी मंदिर' अपनी रजत जयन्ती के अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

कोई भी पुस्तकालय अच्छे साहित्य के अभाव में अच्छा नहीं हो सकता। 'वाणी मंदिर' पुस्तकालयों के माध्यम से अच्छे साहित्य के प्रचार एवं प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। भविष्य में भी कार्यक्रम जारी रहे और पुस्तकालयों के विकास के साथ-साथ ही उसकी प्रगति हो यही कामना है।

'वाणी मंदिर' द्वारा प्रकाशित होने वाली स्मारिका केवल राजस्थान के पुस्तकालयों के लिये ही नहीं अपितु भारत के समस्त पुस्तकालयों के लिए उपयुक्त होगी ऐसी आशा है।

'इन्दौर संभाग पुस्तकालय संघ' की ओर से मै 'स्मारिका' एवं 'वाणी मंदिर' की सफलता के लिये शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

वा. शि. मोघे

अमृत-वाणी

न हि ज्ञावेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते।
तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥

(गीता अध्याय 4 श्लोक 38)

इस संसार में ज्ञान के सदृश्य पवित्र अन्य कुछ भी नहीं है । प्रयत्न में संलग्न व्यक्ति [illegible] उसे सहज ही अपने में पा लेता है ।

ज्ञान युक्ति प्लावेनैव संसाराब्धिं सुदुस्तरम् ।
महाधियः समुत्तीर्णा निमेषेण रघूद्वह: ॥

इस संसार रूपी समुद्र को बुद्धिमान लोग ज्ञान रूपी नौका पर सवार होकर बड़ी आसानी से [illegible] पार कर जाते हैं ।

ततो वच्मि महाबाहो यथा ज्ञानेतरा गतिः ।
नास्ति संसार तरणे पाश बन्धस्य चैतरा: ॥

बन्धन में पड़े हुए मन को मुक्त करने और संसार सागर से तरने के लिए ज्ञान के [illegible] कोई उपाय नहीं है ।

अर्धं सज्जन सम्पर्कादविद्याया विनश्यति ।
चतुर्भागस्तु शास्त्रार्थैश्चतुर्भागं स्वयस्ततः ॥

आधी अविद्या सज्जनों के संसर्ग से मिट जाती है, उसका चौथाई भाग [illegible] से और शेप चौथाई भाग स्वयं प्रयत्न करने से नप्ट हो जाता है ।

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मस्ततः सुखम् ॥

विद्या विनय को देने वाली है । विनय से मनुष्य योग्यता को प्राप्त करता है । [illegible] मनुष्य धन को प्राप्त करता है और फिर सुख प्राप्त करता है ।

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः ।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान् ॥

न वर्षों से, न सफेद बालों से, न वित्त से, न भाई बन्धुओं से किसी का [illegible] ने इसी धर्म (मर्यादा) को चलाया है कि हम में जो वस्तुतः विद्वान है, वही [illegible]

वाणी का महत्व

(विनोबा)

इन तीन ताकतों ने आज तक दुनिया बनायी । इसके आगे भी जीवन के ढांचे को स्वतन्त्र रूप देने वाली ये ही तीन ताकतें हो सकती हैं । विज्ञान, आत्मज्ञान और साहित्य या वाक्शक्ति, जिसे 'वाणी' भी कहते हैं । विज्ञान से जीवन का स्थूल रूप बदलता है और वह मनुष्य के मनपर असर करने वाली परिस्थितियां पैदा कर देता है । लेकिन वह सीधे मन पर असर नहीं करता । वाणी विज्ञान से आगे जाकर हृदय पर सीधा असर करती है । वह हृदय तक पहुंच जाती है । फिर आत्म ज्ञान अन्दर प्रकाश डालता है । विज्ञान बाहर से प्रकाश डालता है, तो आत्मज्ञान भीतर से प्रकाश करता है । इन दोनों के बीच वाणी पुलका काम करती है । वह दोनों किनारों का संयोग कराती और दोनों तरफ रोशनी डालती है । तुलसीदास जी कहते हैं—

'राम-नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिर हुँ जो चाहसि उजियार ।।'

—"अगर तू अन्दर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहता है, प्रकाश चाहता है, तो यह राम-नाम रूपी मणिदीप जिह्वारूपी देहरी–द्वारपर रखले । इस द्वार पर दिया जलाते ही बाहर और भीतर, दोनों तरफ प्रकाश फैल जाता है" । इतना अधिक उपकार वाणी करती है । मनुष्य को भगवान् की यह अप्रतिम देन है ।

वाणी का सदुपयोग

वाणी की यह देन मनुष्य की बड़ी भारी शक्ति है । इस शक्ति का जहां दुरुपयोग होता है, वहां समाज गिरता है और जहां उसका सदुपयोग होता है, वहां समाजआगे बढ़ता है । ऋग्वेद में कहा गया है:

'सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचम क्रत ।'

यानी हम अनाज छानते हैं, तो उसमें से ठोस बीज ले लेते हैं और ऊपर का छिलका, कचरा फेंक देते हैं । वैसे ही जिस समाज में वाणी की छानबीन होती है, ज्ञानी पुरुष मननपूर्वक वाणी की छानबीन करते हैं और उत्तम, पावन, पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, खालिस, शब्द ढूंढ निकालते हैं, उस शब्द का प्रयोग करते हैं, उस समाज में लक्ष्मी रहती है ।

बहुतों का खयाल है कि सरस्वती और लक्ष्मी का विरोध है, लेकिन ऋग्वेद ने इससे बिल्कुल उलटी बात कही है। यह कहना कितने अज्ञान की बात है कि लक्ष्मी और सरस्वती का वैर है। वाणी तो संयोजन-शक्ति है। वह तो अन्दर की दुनिया और बाहर की दुनिया को, आत्मज्ञान और विज्ञान को जोड़ने वाली कड़ी है। दुनिया में जितनी शक्तियां मौजूद हैं, उन सब शक्तियों को जोड़ने वाली अगर कोई कड़ी है, तो वह वाणी ही है, फिर उसका किसी के साथ वैर कैसे हो सकता है? वाणी सूक्ष्म—शक्ति है। इसलिए उसके भीतर दूसरी शक्तियां छिपी रहती हैं। मेरा तो वाणी पर बहुत भरोसा है। निरन्तर बोलता ही रहता हूं। इसीमें वाणी की महिमा है। श्रवण और कीर्तन दोनों मिलकर वाणी बनती हैं।

———

"....पुस्तकें पंडित बनने के लिए नहीं पढ़ी जाती। वे पढ़ी जाती हैं—जीना सीखने के लिए, जिन्दगी का राजमार्ग पाने के लिए। पंडित बनने के लिए पुस्तकें पढ़ना और अलमारी में पुस्तकें सजाकर रखना, दोनों बराबर है! पुस्तकों की यथार्थ उपयोगिता तो यह है कि वे कुंजियां हैं। जिनसे जीवन-कोष के एक-एक करके सब ताले खोले जाने चाहिए।"

"....पुस्तकालय स्थापित करना और उसे समुन्नत बनाना एक प्रकार का परमार्थ है। इसकी स्थापना के मूल में यही भावना काम करती है कि इससे अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हों। यह तभी हो सकता है जब पुस्तकालय में अच्छी पुस्तकें हों। प्रत्येक नगर में साधन-सम्पन्न और सभी सुविधाओं से युक्त अच्छे पुस्तकालय होने चाहिए।"

—जवाहरलाल नेहरू

नव समाज रचना में सद् साहित्य का योग

(दादा धर्माधिकारी)

यहां सर्वोदय चिन्तक के रूप में मेरा परिचय दिया गया है, पर मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं किसी विचार का व्याख्याता नहीं, सर्वोदय विचार का भी नही। क्योंकि मैं विचार मैं नहीं मानता, विचार को मानता हूं। याने विचार जब किसी महात्मा, सन्त, दार्शनिक या नेता का बन जाता है, तो वह आईडियोलाजी हो जाता है, तब वह विशिष्ट लीक पर चलता है, सत्य निष्ठ नहीं रहता। इसलिए मेरा मानना है कि हम लोगों को इस प्रकार विचार दें कि लोगों की विचार शक्ति जागृत हो, वे विचार प्रवृत हों। जो विचार मनुष्य पर बलात्कार करता है—चाहे वह मार्क्स का विचार हो, बुद्ध का हो, कृष्ण का हो, मुहम्मद का हो–वह मनुष्य की विचार शक्ति को कुंठित करता है।

जब विचार विभूति-निरपेक्ष, ग्रन्थ-निरपेक्ष रहता है, तब शब्द में प्रामाण्य रहता है। प्रामाण्य का मेरा अर्थ है-ज्ञान का साधन होने की पात्रता। जैसे आंख देखने का साधन है, यदि साधन शुद्ध है, उस पर काला चश्मा नहीं लगा और वह निरोग है, तो उससे जो दिखेगा, वह प्रामाण्य होगा। यही बात कान के बारे में है। जो शब्द निरपेक्ष है, वह प्रामाण्य हो सकता है।
मेरा निवेदन यह है कि साहित्य प्रचार का साधन न हो, जीविका का साधन वह चाहे हो सकता है। जो साहित्य जीविका का साधन होना है, उसका उपयोग जीवन के विकास में नहीं होता। क्योंकि वह विक्रय का साहित्य होता है। जैसी मांग होती है, वैसा उसका निर्माण होता है। वह साहित्य विचार जागृति नहीं कर सकता, विचार का अनुगमन करता है। आज हमारे जीवन की मुख्य नियामक संस्था बाजार है, विश्व-विद्यालय नहीं। हर चीज बाजार में बिकती है, वहीं उसका भाव तय होता है–चाहे वह साहित्य हो, कला हो, नाटक हो, संगीत हो। सब पर कीमत की चिप्पी लगी होती है। और यह चिप्पी जितनी बड़ी होती हैं, उतना ही वह मौलिक याने मूल्यवान साहित्य माना जाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि बाजार को समाप्त किया जाये। जीवन बाजार का अनुयायी न रहे। आज तो सर्वोदय साहित्य भी इसका अपवाद नहीं रहा है। जो साहित्य मनुष्य को उदात्त प्रेरणा दे। मनुष्य को मनुष्य से मिलाये, इतना ही नहीं मनुष्य को मनुष्येतार प्राणियों से मिलाये, समस्त सृष्टि के निकट लाये, वही शुद्ध प्रेरणा दे सकता है क्योंकि उसमें जीवन का उत्कर्ष है। सहजीवन की प्रेरणा है। जो साहित्य समाज में संघर्ष पैदा करता है, उससे तो जीवन का ह्रास ही होगा। प्रतिस्पर्द्धा में भी जीवन का ह्रास ही है, सहयोग हो तो विकास हो सकता है।

हम लोग जब जेल में थे, तब कभी कभी लोकमान्य तिलक, अरविन्द विपिनपाल आदि की पुस्तकें मांग लिया करते थे, तो वे देने से इन्कार कर देते थे। पर जब हम रामायण, महाभारत आदि की मांग करते थे, तो तुरन्त उसकी पूर्ति हो जाती थी। विनोबा ने इसका कारण बताया कि जिनको पढ़ने से जीवन में कोई स्फुरण नहीं हो, ऐसा साहित्य देने में अंग्रेजों को क्या हर्ज है? पर अरविन्द, तिलक आदि का साहित्य तो जीवन साहित्य है, इसको वे कैसे दे सकते हैं? मैं यहां यह नहीं कहता कि भगवद् गीता या कुरान आदि में कोई शक्ति नहीं है। इनकी जरा सी बात को लेकर अखिल भारतीय दंगे तक हो सकते हैं। आचार्य तुलसी ने सीता पर कुछ लिख दिया, तो कुहराम मच गया। दंगे हो गये। अब उन दंगा कराने वालों में राम के कितने सच्चे अनुयायी होंगे? लक्ष्मण के अनुयायी तो हो सकते हैं। जिनको नाक-कान काटने में ही श्रद्धा है। तो ऐसा साहित्य चाहे उन्माद भले ही पैदा कर सके, पर जीवन परिवर्तन का माध्यम अब वह नहीं रहा। हम उन पुस्तकों को लेकर सिर पर जरूर रख सकते हैं, पर उनमें लिखे उपदेशों पर अमल नहीं कर सकते। यदि आज अमल ही करते तो इस देश में शराबखोरी चलती? भ्रष्टाचार चलता? रामायण, महाभारत, धम्मपद व कुरान के रहते शराबखोरी चलती रही है। और उसके खिलाफ आंदोलन करने को आज गोकुलभाई को आदमी खोजने पड़ते हैं। और वे भी नहीं मिलते। कहां गई इन ग्रंथों की शक्ति, इसलिए मेरा निष्कर्ष यही निकला कि इन ग्रंथों में अब दो ही बातें हैं—जो पढ़ता है, उस पर इनका कोई परिणाम नहीं होता और जो इनको पीता है, वह उन्मादग्रस्त हो जाता है। इनके नाम पर हत्यायें व संहार चल सकते हैं।

जीवन साहित्य की यह कसौटी नहीं कि वह कितना पढ़ा जाता है। पढ़ने को तो आज भी गीता जितनी पढ़ी जाती है, रामायण व बाइबिल का जितना प्रचार चल रहा है। वह क्या कोई कम है? पर जीवन में उतारने से उनका अब कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है, इसलिए वह जीवन साहित्य नहीं रहा।

जीवन साहित्य के लिए यह जरूरी नहीं कि वह त्रिकालाबाधित हो याने सनातन हो। वह युग विशेष का ही प्रायः होता है। वह लोगों में आवेश, उत्कर्ष, भावना या चैतन्य पैदा करने वाला तो हो, पर क्षोभजनक या मनमुटाव पैदा करने वाला न हो। उस साहित्य के लिए समाज में मांग आकांक्षा पैदा होनी चाहिए। उसका बाजारू मूल्य चाहे न हो, पर समाज में आमूल परिवर्तन करने की आकांक्षा जगाने की ताकत उसमें होनी चाहिए।

मार्क्स ने कैपीटल लिखा तो उसे प्रकाशक तक न मिल सका, [illegible]। गांधी का हिन्द स्वराज्य क्या कोई साहित्यिक दृष्टि से बहुत मूल्यवान है। यदि किसी विश्वविद्यालय की पी०एच०डी० के लिए भेजा जाये और उस पर गांधी का लेबल न हो, तो विश्वविद्यालय से वह एकदम रिजेक्ट हो जाएगी और उसको [illegible]। इसलिए इन सबका कोई बाजारू मूल्य नहीं हो सकता। पर फिर भी इनने कितनों को क्रान्ति के लिए प्रेरित किया, यह आप स्पष्ट देख सकते हैं। क्योंकि ऐसे साहित्य की इसकी एक ताकत होती है। ऐसी पुस्तकों का तात्कालिक परिणाम आवेगा यह भी नहीं कहा जा सकता। आगे कब क्या परिणाम प्रकट हो। हर जमाने की एक विशिष्ट आवश्यकता होती है, वह आवश्यकता

जब आकांक्षा में जागृत हो जाती है, तब उसमें से समाज परिवर्तन की आकांक्षा प्रकट होती है और लाखों करोड़ों को वह प्रेरणा देने वाला सिद्ध होता है। ऐसा साहित्य ही जो युग चेतना व युग आकांक्षा का प्रतिनिधित्व करता है, उसको बल देता है, वही क्रान्ति करने में समर्थ हो सकता है।

विचार में बहुत बड़ी शक्ति होती है, यह बात हमें समझ लेनी चाहिए। यदि विचार में ताकत नहीं होती, तो अपने से भिन्न विचार प्रकट करने वाले से हमें कोई डर नहीं रहता। पर कोई भी वाद वाले हो, साम्यवादी हो समाजवादी हो, कोई भी भिन्न विचार को सहने को तैयार नहीं क्योंकि विचार में जो शक्ति होती है, वह शास्त्र व सम्पत्ति की ताकत से भी बलशाली होती है। इसीलिए लोग अपने भिन्न विचार वाले का सिरकाट कर भ्रमवश यह समझ लेते हैं कि विचार दब जायेगा। या उसकी हत्या हो जाएगी। पर ऐसा करने से विचारक मर सकता है, पर विचार नहीं मर सकता।

एक भाई ने मुझसे कहा कि शब्द में कोई ताकत होती है, यह नहीं दिखता। मैंने उससे कहा कि आपको सत् शब्द में चाहे ताकत न दिख पड़े, अपशब्द में ताकत है या नहीं? यह मानते हैं या नहीं? यदि आपको कोई गाली दे तो जूते मारने से ज्यादा आप पर चोट लगेगी या नहीं? उन्होंने स्वीकार किया कि हां गाली देने का गोली से भी ज्यादा असर होता है। इसीलिए मेरा आज तक भी शब्द शक्ति में अटूट विश्वास है। मुझे आज स्पष्ट दिख रहा है कि कलयुग समाप्त हो रहा है। सतयुग आ रहा है, पश्चिम भौतिक सुख से इतना अघा गया है कि वह परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा से से आलोड़ित हो रहा है। सारी बुराइयां जो अब तक पेंदे में थी, सतह पर आ रही हैं। इससे कभी कभी भ्रम हो सकता है कि बुराइयां बढ रही हैं, पर मेरा ऐसा विचार नहीं। सतह पर बुराईयां आ जाने से उनका निवारण सरल हो गया है। हमारा देश चूंकि भूखा है, दरिद्री है, इसलिए हमारे मन में अभी चाहे भौतिक सुख की आकांक्षाएं हों, इसलिए हम संसार के अन्य देशों में जो परिवर्तन हो रहा है, उसको ठीक से न देख पाये पर संसार में जो परिवर्तन हो रहा है। वह आशा जनक भविष्य का संकेत है। वह परिवर्तन मंगलमय होगा, ऐसा मेरा मानना है।

मेरा मानना है कि दुनियां में एक प्रतिशत बुरे हैं, एक प्रतिशत अच्छे हैं और अठ्ानवे प्रतिशत लोग तटस्थ हैं– जो न बुरे हैं न अच्छे हैं। इसलिए हर व्यक्ति का अपना महत्व है। हमें यही तय करना है कि हम भगवान में शक्ति मानते हैं या शैतान में—हमारी अध्यात्मिकता को यह चुनौती है। हर छोटी बुराई बड़ी बुराई के सामने हार जाती है। इसी प्रकार मेरा मानना है कि बड़ी से बड़ी बुराई भी अच्छाई से हार जाती है। पर आज टक्कर छोटी व बड़ी बुराई के बीच चल रही है। अच्छाई और बुराई के बीच कोई संघर्ष नहीं चल रहा। सज्जन शक्ति जब उठ खड़ी होगी और बुराई से वह लोहा लेने लगेगी। तो बुराई अपने आप समाप्त हो जायेगी। उसके पांव उखड़ जायेंगे। सज्जनों को इतना ही संकल्पबद्ध होना है कि वे चाहे हजार बार असफल हों, पर पराजित व निराश न हों। इसके अलावा और हमारे पास विकल्प भी क्या है?

— ———

सत्साहित्य-निर्माण और प्रसार

(श्री वियोगीहरि)

मैं आरम्भ करता हूं वाणी से। वाणी मन्दिर की बात हो रही है। वाणी यानि सरस्वती। सरस्वती का वसन हमारे यहां ग्रन्थों में शुभ्र कहा गया है। वह सब शुभ्र है, निर्मल है, श्वेत है।

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला,
या शुभ्र वस्त्रावृता,
या वीणावर दण्ड मण्डितकरा,
या श्वेत पद्मासना।

शुभ्रवसनावृता की उसको उपमा दी गई। वस्त्र भी श्वेत हैं, आसन भी श्वेत कमल है। तो अर्थ क्या है? सब कुछ श्वेत है, निर्मल है। कोई रंग नहीं है। इतना ही समझना चाहिये कि हमारी वाणी पर कोई रंग न हो। सत्य जो है वह शुभ्र होता है। उस पर कोई रंग नहीं होता है। हां रंगीन वाणियां भी देखनी हों अगर तो राजनैतिक क्षेत्र में हम देख सकते हैं। लेकिन भारत में सदा से ही श्वेत वाणी, निर्मल वाणी, बिना रंग की वाणी की ही मान्यता दी जाती रही है। तुलसीदासजी का ध्यान अगर आप देखेंगे तो वह भी गंगा की पावन धारा पर ही रहा और महाकवि कालीदास का कवि भी शुभ्र हिमालय पर रहा। हां, कुछ वाणियां हमारे यहां भी रंगीन हुई हैं। बिलकुल नहीं हुई हों, ऐसी बात नहीं है। पर वे टिकीं नहीं यहां अधिक समय तक। उनकी कोई महिमा विशेष नहीं हुई। राज दरबारों में सीमित मात्रा में राजा-महाराजाओं को प्रसन्न करने के लिए उनका मनोरंजन करने के लिए अनेकों प्रकार की रंगीन वाणियां प्रकट हुईं, अतिरंजित शृंगार रस का भी प्रादुर्भाव हुआ। पर वे यहां की संस्कृति में टिकी नहीं।

वर्तमान में एक और हुआ है कवि। महा कवि नहीं कहता हूं। मैं अक्सर पूछा करता हूं लोगों से में खास तौर से अपने व्याख्यानों में कि सबसे बड़ा कवि कौनसा हुआ है इस युग में? कुछ सोच समझ कर कह देते हैं रवीन्द्र बाबू। सुन लेता हूं। बहुत कुछ सही भी है। बहुत सही है। पर मेरा मतलब कुछ और था। आज मैं प्रश्न करता हूं कि सच्चा देखिए प्रकृति ने या भगवान ने हरेक मानव के हृदय में अन्तर घट है उसमें रस भर दिया है। लेकिन रस जो भरा हुआ है वह निकले कैसे। तो कलाकार छैनी से चोट मारता है पत्थर पर उसका रूप निखर उठता

है उसी तरह से अपनी वाणियों के द्वारा, अपने स्वरों के द्वारा, चाह के द्वारा, अलौकिक लेखनी के द्वारा जो भरा हुआ घट है उसमें छैनी चलाकर रस को जो वाहर निकाल देता है, वह कवि है। मैं कहता हूं रवि बाबू को आप बहुत ऊंचा मानते हैं वह आपका मानना ठीक है, पर वर्तमान युग में और भी एक कवि ऐसा हुआ है। वह लिखित-अलिखित भले ही इस कोटि में नहीं खड़ा हो। उसका नाम है गांधी। गांधी कवि हुआ है कवि है वह। उसने सबके हृदयों में जो रस भरा हुआ था, उसे अपनी लेखनी के जादू द्वारा, अपनी वाणी के ओज द्वारा, अपनी संकल्प शक्ति द्वारा, बाहर निकाल दिया। नारियल के अन्दर रस होता है, ऊपर नहीं होता। किसी में ऊपर भी होता है। गांधी ऐसा ही रस अन्दर से निकाल कर ऊपर लाने वाला कवि हो गया है। हमने पूछा सार क्या है ? रस क्या है ?

रसो वै सः

रस ही परमेश्वर है। उसको गांधी ने देखा और गांधी का वही स्वरूप है।

वह रस रूप है और जो स्वयं रस रूप है वह दूसरों को नीरस देख नहीं सकता। चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, समाज का कर्मक्षेत्र हो, चाहे अर्थ का क्षेत्र हो। महापुरुषों को जव रस मिलता है तो उसे बांटे वगैर रहा नहीं जाता। लुटाने का मन होता है।

भगवान् बुद्ध को देखें। बोधि वृक्ष के नीचे संबुद्धि प्राप्त हुई। वहां से चल दिये। सारनाथ चल कर आये। पांच विद्वानों को वहां देखा। सबसे पहले यहां उन पांचों को शिष्यत्व प्रदान किया और वहीं से धर्म चक्र प्रवर्त्तन किया।

महावीर को देखें। केवल ज्ञानरूपी रस का सागर मिला। बांटने के लिए दौड़ पड़े। गणधरों को दीक्षित किया और वहां से ज्ञान की गंगा वहाने चल पड़े।

तो इसी तरह जिन-जिन को वह रस मिला। रहा नहीं गया किसी से भी। रह नहीं सकते। दोनों हाथ लुटाना ही होता है उसको। इसमें साहित्य आ जाता है। फिर भी साहित्य की व्याख्या में जो किया करता हूं वह वताता हूं। सा हित-हित जिसमें भरा हुआ हो, भलाई भरी हुई हो वही साहित्य।

वही नीति, वही यश, वही वैभव ऐश्वर्य और साहिवी अच्छी है, जो सवका हित करती है, विना भेद भाव के। वस। आगे कुछ नहीं। सब का हित। आज के शब्दों में उसे सर्वोदय कह लीजिए, क्योंकि शब्द में आकर्षण होता है। सबका उदय, सब का हित। इससे प्यारा शब्द और नहीं हो सकता।

तो साहित्य वही है जिससे सबका हित होता हो। जिसके हाथ में हित है उसका नाम रख लीजिये साहित्य। जिससे हित नहीं होता है उसे हम सही मायने में साहित्य नहीं कह सकते। आज वहुत साहित्य वढ गया है। इतना बढ़ा है कि देखकर कुछ ऐसा लगता है कि क्या पढ़ा जावे क्या नहीं पढ़ा जावे। क्या हितकर है, क्या नहीं। आदमी उस अम्वार को देख कर घबरा जाता है। मैं तो जब किसी आधुनिक पुस्तकालय में जाता हूं तो मुझे उसका परिचय

कराते हुए सबसे पहले यह कहा जाता है कि हमारे यहां इतने हजार ग्रन्थ हैं। इस-इस भाषा की हैं। ये हैं वे हैं। संसार भर की हैं। हर विषय पर हैं : लेकिन क्या है वह ? उससे क्या जीवन बनता है ? सबका हित होता है। मैं कहता हूं तब कि आप कुछ ऐसी पुस्तकें चुनकर रखिये जिससे यह जीवन बनता हो। जीवन का हित होता हो। सबका हित होता हो।

इसकी दो पद्धतियां हैं। व्यास और समास। व्यास का अर्थ है विस्तार। और समास यानि संक्षेप में हो। दोनों पद्धतियां अपने यहां थीं। समास पद्धति में क्या है। हमारे यहां सारे शास्त्र सूत्र में कहे गये हैं। बहुत छोटे छोटे सूत्र। और उन पर जो लिखा गया, भाष्य किया गया विस्तार, खुलासा किया गया वह व्यास कहलाया। हमारे शंकर-भाष्य और ब्रह्म-सूत्र को ही देख लीजिये। शंकर भाष्य टीकाएं हैं इसमें और अनुवाद है। सारे को इकट्ठा किया जावे तो पांच छः अलमारियां भर जावेंगीं। और ब्रह्मसूत्र कितना छोटा सा ? मूल में छप जावे तो ? बहुत थोड़ा कागज लगे। पहले कागज की कमी थी। हाथ से कागज बनाया जाता था। एक बार बापू ने कहा—हाथ का कागज फिर बनाने की शुरूआत की जाय। दिल्ली की उद्योगशाला में हाथ कागज हम बनाने लगे। पहले कुछ वह चला वला नहीं। बापू से बात हो रही थी। मैंने कहा बापू हाथ कागज बनता तो है, सब जगह बनता है। पर यहां भी बने तो अच्छा है। जरूरत बढ गई है। ज्ञान पहले से अब अधिक बढ़ गया है। बापू ने कि संयम ही हमारी एक पद्धति है। इसी में थोड़े में बहुत मान लेना। बहुत ढ़ेर सी पुस्तकें रख लीं और पढ़ते रहे रात दिन पर याद अधिक नहीं रहता। पहले के युग में लोग कंठस्थ अधिक करते थे। श्रुति से अधिक काम लेते थे। आज स्मृति कमजोर हो गई हैं। आज तो कोई चीज कहेंगे, तो कागज में लिखकर भेजेगें।

हनुमानजी को रामचन्द्रजी ने कोई चिट्ठी लिखकर नहीं दी और सीताजी ने भी कोई उसका उत्तर पत्र में नहीं दिया। पर हनुमान ने दोनों तरफ के सारे सन्देश को हूबहू एक दूसरे को कह दिया। उस समय जितना आप देखेंगे आपको श्रुत पद्धति ही मिलेगी। वैदिक साहित्य में तो इसी पर से श्रुतियां कही जाने लगीं। धर्म की पुस्तकें क्योंकि सुनकर वे कंठस्थ रखी जाती थीं। बौद्ध साहित्य देखिये, जैन साहित्य देखिये। श्रुत ज्ञान के नाम से यहां भी पुकारा गया सारा साहित्य। उस समय तो केवल श्रुत परम्परा ही थी। लिखा तो यह बाद में गया सारा का सारा साहित्य जब क्रम से लोगों की स्मरण शक्ति क्षीण होती चली गई। जो उस समय छपा वह संक्षेप में था, छोटा था। क्या महिमा है उस छोटे रूप में छपे साहित्य की। तो बापू ने कहा कि हाथ कागज भले ही थोड़ा ही बने पर पवित्र रहे और उस पर ऐसी बात ही लिखी जावे जो जीवन को बनाने वाली हो। जीवन का निर्माण करने वाला साहित्य ही इस पर छपे। अन्य नहीं।

आज अखबारों की बहुलता का युग है। बहुत निकलते हैं। पढ़कर फैंक देते हैं। यह मास प्रोडक्शन है। भगवान् बुद्ध ने इस बारे में एक बात बहुत अच्छी कही। एक हृष्ट-पुष्ट बैल जा रहा था। उसका मांस बहुत बढ़ गया था। उसको देखकर भगवान् बुद्ध कहते हैं :

मांसाणि अस्य विस्तरति।

कहने का अर्थ यह है कि विस्तार बहुत है। बड़ा विस्तार है। क्या कहने हैं इस विस्तार के आज के युग में। होना चाहिये। मेरे कहने का यह अर्थ हरगिज न लगावें कि मैं विस्तार के

विरोध में हूं । पर अधिकांश में जो आज हमारी नजरों के सामने आ रहा है गलत है । कुछ शाखायें ऐसी हैं जिनका विस्तार जनहित में है । जिनमें नित नई खोज हो रही हैं । विज्ञान अपना विस्तार लेकर आ रहा है । ये चीजें आनी चाहिये । विज्ञान का विस्तार यहां हो । आज आप देखिये । हमारे साहित्य का बहुत सा अंग सचमुच दुर्लभ है । आज की परिस्थितियों का मुकाबला करने में वे बहुत उपयोगी हो सकते हैं । उनको पुष्ट बनाया जाना चाहिए । आज हम इस दिशा में दुर्बल हैं । विज्ञान की सभी शाखाओं को लिया जाना चाहिये । विद्वानों को बिठाइये । मौलिक लिखने की सामर्थ्य न हो तो अनुवाद भी कराइये । वह शुद्ध हो, सही हो ऐसा करें । अनुवाद सही-सही कर लेना बड़ा टेढा खेल है । बहुत कठिन है ।

पर इन सब अंगों को निश्चय ही परिपुष्ट करना चाहिये । विज्ञान में हमें निश्चित रूप से खोज करनी चाहिये । इस अंग को सब तरह से परिपुष्ट करना चाहिये । विश्व विद्यालय करें इस काम को । पर इतना सब होने के बाद भी एक बात पूछने का मन होता है । विज्ञान का आधुनिक रूप तो परिपुष्ट हो जावेगा । पर क्या करोड़ों रुपया खर्च करके रामचरित मानस या कबीर की साखियों में दर्शायी गई भावना जगाई जा सकती है । कबीर तो पढ़े लिखे नहीं थे । उन्होंने इसे स्वीकार किया है । मसि कागज उन्होंने छूआ नहीं । स्याही कागज कलम के हाथ नहीं लगाया । पर जो कुछ उन्होंने कहा और जो श्रुतियों के आधार पर आज हमारे तक पहुँचा है और जो आज लिपिबद्ध भी किया गया है । कबीर, तुलसीदास आदि ने जिस तरह का साहित्य उस युग में रचा वैसा साहित्य आज के युग में तो नहीं रचा जा सकता है । बड़ी गहरी जीवन की अनुभूतियां हैं इनमें ।

हीरा जब निकलता है खान में से तो कंकर पत्थर कोर मिट्टी में सना हुआ निकलता है । उसके आस पास के सारे कंकर पत्थर बटोर लिये जाते हैं उससे अलग कर लिये जाते हैं तब वह चमकता है । तो पहले तो सारा संग्रह किया जाता है । फिर उसमें से कितनी चीज हमको रखनी है और कितनी सारहीन को छोड़ देनी है । यही हाल हमारे साहित्य का होना चाहिये । कितना प्रकाशित करना है और कितना पुस्तकालयों में पाठकों के लिए रखना है । यह प्रश्न आज है । इसमें सावधानी बरतनी चाहिये । रेफरेन्स बुक्स जितनी भी हों अवश्य रहनी चाहिए । बहुत उसका काम है, बहुत काम है उसका हमारे देश में आज । सार वस्तु सब रख लेनी हैं । कोष की कमी है । कोष हिन्दी में भी आये हैं, और भाषाओं में भी आये हैं । हिन्दी में भी अगर तुलनात्मक दृष्टि से देखा जावे तो मराठी बंगला के बाद नम्बर इसका आता है । उड़िया भाषा में एक व्यक्ति ने विश्व कोष बनाया और सारा जीवन इसी में लगा दिया । राज्य की मदद नहीं, संस्था की किसी की मदद नहीं । कोष बनाना आसान नहीं है । और इसमें ऐसा है कि एक बार बना तो सदा के लिए लाभ कारी बन गया । जैसा कि इनसाइक्लोपीडिया में होता है । एक बार बन जाता है । फिर ज्यों ज्यों शब्द आते जाते हैं उन उन बातों में शब्द भी वही आते हैं । ग्रहण शक्ति कितनी होनी चाहिए इसका महत्व है । रामचन्द्र वर्मा ने काम किया हमारे यहां । पर वह भी यह मानते थे कि जो काम मैंने किया है उससे मुझे स्वयं को सन्तोष नहीं है । तो इस सम्बन्ध में अधिक कहना नहीं है ।

व्यास पद्धति से विज्ञान के और दूसरे जितने भी काम हैं वे खूब किये जावें। अनेकानेक किये जावें। और समास पद्धति को भी हमें भूलना नहीं है। इसका हमारा जो सांस्कृतिक मूल्य है, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्य है उसको उस रूप में देखें अथवा उसमें भी गहरा उतरें और उतर कर वहां से भी कई चीजें लें। वे भी ले सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द, रामतीर्थ, रामकृष्ण परमहंस, अरविन्द ये अलौकिक विभूतियां आज के युग में भी हमारे यहां हुईं। इस जीवन साहित्य में वे गहरे उतरे और एक नया अर्थ भी उन्होंने दिया, पर उस परम्परा को तोड़ा नहीं।

विनोबा ने कहा नष्ट नहीं, लुप्त हो गई कहें। इसमें कमी आ गई यह कहें। कविता के क्षेत्र में तो हम हिन्दी वालों ने परम्परा तोड़ दी है आज। लेकिन उर्दू वालों ने परम्परा नहीं तोड़ी है। उर्दू में नयी रचनाएँ भी आयी हैं पर उसमें भी परम्परा को चालू रखा है, तोड़ा नहीं। हमारे यहां तोड़ दिया है। और जो यहां की आपकी सम्पदा निकलती है। मैंने भी देखा उसे। बीकानेर में देखा। पुराने युग के लेखकों का लेखन। क्या कलात्मक और सुन्दर होता था। क्या सुन्दर लिखावट। कहीं कोई काटता नहीं था। जैनियों में खास तौर से लिखावट बड़ी सुन्दर होती थी। पर आज कल लिखनेवाला रबर पास में रखता होगा। लिखा, फिर काट दिया। कहीं कुछ कर देंगे कहीं कुछ। इसके माने हम असावधान हैं। अपने आप में हम सावधान नहीं हैं। तो यह लेखन कला की सुन्दरता भी हमारी गई। आज तो गर्व मानते हैं भद्दा लिखने में। ऐसे खराब अक्षर होते हैं और उसको मानते हैं क्या घसीट में लिखा है? वाह! बापू ने स्वयं एक बार पत्र लिखा विद्यार्थी को। उस विद्यार्थी ने कुछ लिख दिया। बापू ने जवाब दिया अक्षर सुधारो। मेरे अक्षर बचपन में विद्यार्थीपन में बिगड़े सो बिगड़े, इसके लिए आज दिन तक पछताता हूं। तुम पछताने का काम मत करो। बापू के अक्षर अच्छे नहीं होते थे। तो यह नकल हमें नहीं करनी चाहिये कि बापू के अक्षर अच्छे नहीं होते थे तो हमारे भी अच्छे नहीं होने चाहिये।

महापुरुषों की बहुत से नकल करते हैं। विनोबा की नकल करते हैं आज। गुजराती बंगला मराठी वाले भी कुछ करते हैं। नकल नहीं की जानी चाहिए। तो जैसा कि मैंने निवेदन किया प्रकाशन में भी आज यह चल पड़ा है। अब प्रकाशन की स्थिति आज ऐसी है कि मैं क्या बताऊं। मैं भी थोड़ा बहुत जानता हूं। सस्ता साहित्य मण्डल से मेरा सम्बन्ध है। आज तो यह मंहगा साहित्य मण्डल है। सस्ता क्या रहा। सत्साहित्य मण्डल कहें उसको तो ठीक है। अब कुछ प्रश्न आ जाते हैं जो बहुत बड़े हैं। जो आज पुस्तक प्रकाशक हैं उनके सामने कई समस्याएं हैं। सर्व सेवा संघ का साहित्य भी लाखों रुपयों का पड़ा है। नहीं बिकता। अच्छा साहित्य जिसे जीवन साहित्य कह सकते हैं नहीं बिकता। तो आज यह प्रश्न हमारे सामने है। सत्साहित्य की बिक्री कम क्यों? कम होते होते कहीं बिलकुल ही शून्य पर न जावे, यह भी डर है।

दूसरा साहित्य जो है, बिकता है। काफी बिकता है। एक वर्ष में एक एक लेखक को एक एक लाख और नव्वे नव्वे हजार तक की रायल्टी मिल जाती है। बिक रहा है वह साहित्य धड़ल्ले

के साथ। इधर कागज के भी दाम बढ़ गये। छपाई के दाम भी बढ़ गये। तो इसमें कुछ बीच का रास्ता निकालना होगा। न तो उस पर चिपके रहें कि औरों के प्रकाशनों को रखें ही नहीं हम और न नीचे ही उतर कर हम उस हल्के साहित्य को अपनावें। बच्चों को सद्ज्ञान होना चाहिये, ऐसी चीजें भी रख लें। परम्परा को भी निभावें। नई रोशनी भी लावें। पर उसको ऐसा रंग दें कि परम्परा हमारी न टूटे और काम बन जाय। यह सब लेखकों पर निर्भर है जो आधुनिक युग में भी हमें पहुंचा सकें। और पुराने से भी जुड़े रहें। उस वस्तु को हम ले सकें, यह सोचने की बात है।

मैं स्वयं प्रकाशक नहीं हूं। पर प्रकाशकों से मेरा सम्पर्क रहा है। सवाल खड़ा है सामने। सब जानते हैं क्या है? आज पुस्तकें छापते हैं और फिर राज सरकार के पास जाते हैं और हाथ पसारते हैं। महरबानी उसकी हो जाती है तो कुछ किताबें सरकार खरीद लेती है। इसमें मिनिस्टर लोगों की महरबानी पर सब कुछ निर्भर है। अब क्या करें? जो फुटकर बिक्री थी ग्राहकों की, वह आज नहीं रही है। एक स्तर इनके अपने साहित्य का है। उस को पढ़ने वाले समाज में ही आज वह नहीं बिक रहा है। पर इसमें निराश होने की बात नहीं है। साथ ही साथ हमको यह भी देखना होगा कि हम किस साहित्य का प्रकाशन करें कि जिससे हम लोगों की सुरुचि को बढ़ा सकें। सुरुचिवर्द्धक साहित्य तो हो। फिर उसकी बिक्री की हम आशा पहले से ही कम रखें। इसको देख लें। अगर आपका संस्करण एक हजार का छपा है तो वह कितने दिनों में बिकता है, कैसा है, लोगों की रुचि जगी या नहीं यह देखकर फिर दूसरे संस्करण में हाथ लगावें। हमारे एक नेता विलायत से होकर आये। एक ने कहा कितनी किताबें छपती हैं आपके यहां एक बार में। मैंने कह दिया कि इतना छपता है। कहने लगे विदेशों में कितने हजार का एडीशन होता हैं यह पूछना छोटी बात मानते हैं। वहां तो लाखों में छापने की बात होती है। दो लाख से पांच लाख तक। यहां दो चार हजार ही छपती हैं। बस यह तो कुछ भी नहीं है। एक डेढ़ लाख का एक एडीशन तो होना ही चाहिये। हम आज इनकी बातों पर विचार कर सकते हैं। मैं इसका अधिकारी नहीं हूं। मैंने तो इतना ही कहा है कि साहित्य सुरुचिवर्द्धक हो, सुरुचिवर्द्धन में योगदान दे सकें, प्रचारकों के द्वारा, पुस्तकालयों के द्वारा और साथ साथ अपने जीवन में इन मूल्यों को स्वयं उतार सकें। यह सबसे बड़ी चाह है मेरी। ऐसे लेखक हों, प्रकाशक हों, ग्राहक हों और पढ़ने वाले हों। यह ध्यान और लक्ष्य अगर हमारा बना रहा तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

मोतीलालजी संघी : महान् पुस्तकालयाध्यक्ष

(डा. एस. आर. रंगनाथन्)

विश्व में मास्टर मोतीलालजी इस प्रकार के पहिले पुस्तकालयाध्यक्ष नहीं हैं। दूसरी ओर दूसरी दुनियां में एन्ड्रयू कारनेजी हैं जिनकी अनेक संगमरमर की मूर्तियां हैं। मास्टर मोतीलालजी उस अर्थ में पुस्तकालयाध्यक्ष नहीं हैं जिसमें हम एन्ड्रयू कारनेजी को लेते हैं। एन्ड्रयू कारनेजी के पास असीम धन था और इस पैसे से उन्होंने अनेकानेक पुस्तकालयों की स्थापना की। उनके पास कितना पैसा था? उनके विषय में कहा जाता है कि एन्ड्रयू कारनेजी ने अपने लाल कोट की जेब में हाथ डाला और एक पुस्तकालय बाहर निकाल लिया। मोतीलालजी उस प्रकार के व्यक्ति नहीं थे, फिर भी मोतीलालजी और एन्ड्रयू कारनेजी के बीच एक चीज समान है और यह समान चीज उनके जीवन सिद्धान्त से सम्बद्ध है। यह सिद्धान्त कारनेजी की पुस्तक Gospel of Wealth (सम्पत्ति का संदेश) में बतलाया गया है। इस संदेश के अनुसार किसी व्यक्ति के पास उसके जीवन, भोजन एवं साधारण सुविधा के अतिरिक्त बचा हुआ रुपया पैसा उसकी अपनी सम्पत्ति नहीं है। वह तो केवल जनताकीसम्पत्ति है। जहां तक उसका सम्बन्ध है वह इस सम्पत्ति का केवल ट्रस्टी है। मोतीलालजी भी इसी प्रकार के सम्पत्ति के सन्देश से प्रेरित हुए थे, यद्यपि उनके पास धन बहुत कम था। महत्व इसका नहीं है। सम्पत्ति भले ही कम हो या अधिक, पर जो कुछ महत्वपूर्ण है, वह है व्यक्ति का सम्पत्ति के प्रति दृष्टिकोण।

मोतीलालजी ने बड़े मामूली ढंग से शुरुआत की। उनका जन्म १८७६ में हुआ था। १८९७ में मैट्रिक पास करने के बाद कुछ वर्ष उन्होंने निर्धन विद्यार्थियों को प्राइवेट ट्यूशन पढ़ाने में लगाये। इसी से व्यक्ति का पता लगता है कि छोटे लड़कों के लिए अपनी ज्ञान-सम्पत्ति का उपयोग किया और उस समय ज्ञान ही उनकी सम्पत्ति थी। उसके पश्चात् उन्होंने १५) मासिक वेतन पर स्कूल मास्टर के रूप में जीवन प्रारम्भ किया। उनके सेवा-काल की समाप्ति तक यह सिलसिला चलता रहा। सेवा-निवृत्त होते समय उनकी आय ४०) मासिक थी। यद्यपि उन्हें १५) मासिक ही मिलते थे फिर भी इसमें से कुछ पैसा बचने लगा। इस बचे हुए पैसे का क्या किया जाय? अपने सम्पत्ति के संदेश की ओर वे उन्मुख हुए। इस प्रकार वे छोटे स्तर पर पुस्तकालय-अनुदाता बन गये जैसे एन्ड्रयू कारनेजी बड़े स्तर पर पुस्तकालय-अनुदाता थे।

वे न केवल एक पुस्तकालय-अनुदाता थे, अपितु वे पुस्तकालय में रोजमर्रा का काम-काज देखने वाले भी थे। ६) रुपये में कर्मचारी तो ला नहीं सकते थे। इसलिए वे स्वयं पुस्तक-विक्रेता

की दुकान पर जाते, स्वयं पुस्तकें छांटते, स्वयं खरीदते, स्वयं उन्हें घर ले जाते, अपने घर को पुस्तकालय की भांति उपयोग करते, हर पुस्तक पर अच्छी जिल्द चढाते, उन्हें ऐक्सेशन रजिस्टर में चढ़ाते और फिर वे स्वयं ही थोड़ी-थोड़ी पुस्तकें घर-घर देने जाते थे। दूसरे शब्दों में पुस्तकालय का अन्दरूनी रोजमर्रा का काम कर लेने के बाद, वे पुस्तकालय से पाठकों के घर स्वय पुस्तकें देने जाया करते थे। जब वे पाठक के घर में प्रवेश करते तो वे कुछ और हो जाते थे। वे निर्देश-पुस्तकालय-अध्यक्ष (Reference Librarian) बन जाते थे। वे पाठक से मिलते, उसे पुस्तक का महत्व समझाते, उसे पुस्तक पढ़ने के लिए राजी करते और यदि वह मना भी कर देता तो उसे छोड़ते नहीं थे। उसके पास रुक जाते, उसे अपनी कहानी सुनाते, पुस्तक में से कुछ रोचक चीजें पढ़कर सुनाते, और उसे पुस्तक पढ़ने के लिए राजी करने के लिए भरसक प्रयत्न करते। अतः मोतीलालजी में छोटे-छोटे रोजमर्रा के कर्मचारी या पुस्तकें ले जाने वाले से लेकर ऊंचे से ऊंचे व्यावसायिक पुस्तकालयाध्यक्ष का हर पहलू मूर्त्त था। और इस प्रकार वे पुस्तकों का काम करते थे। वे पाठक और पुस्तकों में सम्पर्क बनाते थे और पुस्तकों के उपयोग से पाठक को लाभान्वित कराते थे। मोतीलालजी की पुस्तकालय सेवा का यह व्यापक दायरा था।

इन सब वर्षों में उन्होंने किया क्या ? यही काम, जिसे वर्ष-प्रति-वर्ष नियमित रूप से करते आ रहे थे। उन्होंने अपनी पुस्तकों को बड़े ध्यान से सहेजा था, स्वयं उन्हें उठाकर रखते थे, किसी वेतन-भोगी को उन्होंने उनको हाथ नहीं लगाने दिया और काफी उपयोग के बाद भी उनकी पुस्तकें पूर्णतः सुरक्षित रहती थीं। उनके घर में यह सुरक्षित पुस्तकें इकट्ठी होती गईं। लगभग चार वर्षों में इनकी संख्या १५०० तक पहुँच गई। फिर भी वे और इकट्ठी करते गये। उनके स्वर्गवास के समय तक उनके पुस्तकालय में, जो उनके घर से थोड़ी दूरी पर था, ३०,००० पुस्तकें थीं, यह छोटी संख्या नहीं है। ३० हजार उस संख्या का करीब दुगना है जिसकी सिफारिश हम २५,००० जनसंख्या वाली आबादी के कस्बे में शाखा पुस्तकालय के लिए करते हैं। एक अकेले आदमी ने, एक प्राइमरी स्कूल अध्यापक ने औसतन ३०) मासिक वेतन में बढ़िया तरह से चलते हुए, चुपचाप बिना किसी शोर-शराबे के, बिना किसी प्रोपेगैन्डा के, बिना किसी अहम् या अभिमान के ३०,००० पुस्तकोंवाला पुस्तकालय विकसित कर डाला। और, इससे भी अधिक बात यह कि उन्होंने यह ध्यान रखा कि प्रत्येक पुस्तक पढ़ी जाती है (उससे पुस्तकालय के नियम ३ की शर्त पूरी होती है) और प्रत्येक व्यक्ति पढ़ता है (उससे पुस्तकालय के नियम २ की शर्त पूरी होती हैं) और पुस्तकालय के नियम ४ की पूर्ति हेतु वे पाठक के दरवाजे तक पुस्तकें लेकर पहुँचे और उसका समय बचाया। पुस्तकालय नियम पांच के पालन स्वरूप वे जीवन भर यह कार्य करते रहे। **अतः यहां एक व्यक्ति है, रोटी-रोजी कमानेवाला पुस्तकालयाध्यक्ष नहीं, अपितु एक अध्यापक और वह भी मिडिल स्कूल अध्यापक जो सही मायनों में एक पुस्तकालयाध्यक्ष भी था, जिसने पुस्तकालय विज्ञान के सभी नियमों का बिना किसी दूसरे की सहायता के अपने निजी प्रयत्नों से ही पालन किया जितनी पूर्णता से, एक अकेला व्यक्ति पालन कर सकता है।**

मोतीलालजी जन्मजात निर्देश-पुस्तकाध्यक्ष थे। आप कल्पना कर सकते हैं कि जब वे पुस्तकों का पैकेट लेकर किसी घर में प्रवेश करते होंगे तो कितने विरोधों का सामना करना पड़ता

होगा। हमारे घरों में किसी चीज को बेचने के लिए उसका नमूना लिये हुए कितने आदमी आते हैं और, उन्हें हमारे क्रोध, अनिच्छा का सामना करके वापस चला जाना पड़ता है। तो यह सब अनुभव उन्हें भी हुआ होगा। उन्होंने उस सबको सहन कर लिया और इसके बावजूद वे दिन-प्रति-दिन तब तक प्रत्येक घर में जाते रहे, जब तक उन्हें अपनी सेवाएं स्वीकार कराने में सफलता न मिलती हो।

मास्टरजी की स्मृति का चिरस्थायित्व :

उनका कार्य-क्षेत्र जयपुर था। जब वे सेवा-निवृत्त हुए तब उनके पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या काफी अधिक हो गई थी। इसके बावजूद भी वे यह दैनिक सेवा करते थे। **इस अर्थ में मैं उन्हें विश्व के महानतम पुस्तकालयाध्यक्षों में से एक मानता हूं** जो प्रारम्भ में धन की व्यवस्था से लेकर अन्त में पुस्तकें पढ़ी जायं इस तक की व्यवस्था वे स्वयं करते थे, और साथ ही यह ध्यान रखते थे कि पुस्तक गन्दी न हो और भविष्य के लिए सुरक्षित रहे। ऐसा करना एक साधारण बात है ! **मुझे किसी ऐसे व्यक्ति की जानकारी नहीं है जिसने यह सब स्वयं किया हो,** किन्तु यहां हमारे सामने एक व्यक्ति है जिसने धनवान न होते हुए भी न केवल रुपया जुटाया अपितु पुस्तकों के प्रयोग के लिए हर सम्भव काम किया, हर सम्भव वस्तु जुटाई। यह निश्चिय ही जयपुर निवासियों की असीम उदारता है कि उन्होंने उन्हें याद किया है। यह उनकी असीम अनुकम्पा है कि उन्होंने उनकी मृत्यु के उपरान्त उनके पुस्तकालय को अपने हाथ में लिया है और उसे जयपुर के सार्वजनिक पुस्तकालय के रूप में बदल दिया है। लोग इस प्रकार अपनी कृतज्ञता दिखलायें, यह वास्तव में महान् बात है। जीवन में कृतज्ञता का होना एक साधारण गुण नहीं है। मैं सोचता हूं कि मनुष्य में यह जन्म से ही होती है। जयपुर के लोग, कम से कम कुछ लोग तो, इतने कृतज्ञ हैं कि उनके पुस्तकालय को चिरस्थायी करने में लगे हैं।

भगवान इस पुस्तकालय पर अपनी अनुकम्पा बनाये रखे ताकि यह दुनिया की आखिरी चीज के समाप्त होने तक बना रहे और इस प्रकार जयपुर के लोगों में मोतीलालजी की स्मृति सदैव के लिए बनी रहे।

राष्ट्रीय विकास में सार्वजनिक पुस्तकालयों का स्थान

(श्री डो० आर० कालिया)

सार्वजनिक पुस्तकालयों की वर्तमान दयनीय दशा स्वाभाविक रूपसे (1) 185 वर्षों के ब्रिटिश शासनकाल की उपेक्षा (2) स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय के अभावग्रस्त संक्रामक आर्थिक, सामाजिक स्वरूपप विशेषकरर्याप्त यातायात के साधन, ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत की अनुपलब्धि, उच्च मात्रा में निरक्षरता तथा अपर्याप्त मात्रा में भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का प्रकाशन (3) विधान के द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास का दायित्व पूर्ण रूप से राज्यों तक सीमित करना (4) असक्षम आर्थिकयोजन (5) राज्य स्तर पर उदासीन संगठनात्मक रचना तथा (6) राष्ट्रीय विकास में व्यक्तिगत पठन को महत्व न देना है।

में इनके निराकरण हेतु सुझाव देने के पूर्व क्रमवार इन रोकों का सविस्तार वर्णनकंगारू।

ब्रिटिश उदासीनता

यह एक दुःख पूर्ण बात है कि 185 वर्षों के शासन के बाद अंग्रेजों ने 15 अगस्त, 1947 को भारत का शासन छोड़ा उस समय देश में एक भी सार्वजनिक पुस्तकालय नहीं था। यह बात अविश्वसनीय सी लगती है कि इस शताब्दी के दूसरे दशक में जब नई दिल्ली को बसाने के लिए रूपांकन किया गया तथा 1930 में जब यह नगर राजधानी के रूप में पूर्ण किया गया उस समय इसके रूपांकन में अथवा रचना काल में सार्वजनिक पुस्तकालय के लिए कोई स्थान नहीं रखा गया। जो पुस्तकालय विद्यमान थे वे या तो स्वयं सेवी संस्थाओं के द्वारा अथवा दान द्वारा स्थापित किये गये, जो सभी शुद्ध रूप से शुल्क देय पुस्तकालय थे। प्राथमिक रूप से ये आबादी के एक प्रतिशत अंग्रेजी भाषा बोलने वाले प्रतिष्ठत व्यक्तियों द्वारा ही उपयोग किये जा सकते थे। यद्यपि ब्रिटेन में 1850 में ही प्रथम पुस्तकालय अधिनियम पारित किया जा चुका था किन्तु इस प्रकार के पुस्तकालय अधिनियम को भारत में लागू किया जाना अंग्रेजी सरकार ने अपने सम्पूर्ण शासन काल में कभी आवश्यक नहीं समझा। नगरपालिका तथा स्थानीय संस्थाओं के अधिनियमों में इन संस्थाओं को अवश्य सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना के अधिकार प्रदान किये किन्तु उसमें भी उन्हें इसके लिए बाध्य नहीं किया गया। फलस्वरूप 1947 में 440 स्थानीय संस्थाओं तथा नगर पालिकाओं में से 56 ने यह तकलीफ उठाई कि थोड़ी मात्रा में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा भी स्थापित की जावे। यद्यपि ये नगरपालिका

पुस्तकालय जनता के धन से स्थापित किये गये थे फिर भी शुल्क के साथ साथ नकद धरोहर भी प्रत्येक उपयोग कर्ता पाठक से प्राप्त करते थे।

कुछ लोग मेरे इस कथन पर कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय एक भी सार्वजनिक पुस्तकालय नहीं था एतराज कर सकते हैं। हम सार्वजनिक पुस्तकालय की परिभाषा एक उस संस्था के रूप में करें कि 'वह पुस्तकालय जो आम जनता के लिए निःशुल्क हो, जिसका आर्थिक संयोजन जनता के धन से किया जाय व जो जनता के प्रतिनिधियों द्वारा प्रशासित हो, जो किसी भी प्रकार का शुल्क उसके उपयोग कर्ता पर लगाने अथवा पंजीकृत पाठक होने की शर्त को लगाये बिना न केवल मुद्रित सामग्री ही वरन दृष्य-श्रव्य सामग्री, रेकार्ड्स, स्लाईड्स, फिल्म स्ट्रीप्स, चार्ट, नकशे तथा आवरित चित्र सामग्री का उपयोग तथा पाठन सामग्री निर्बाध फलको पर उपलब्ध कर उसे पढ़ने के लिए ले जाने की सुविधा प्रदान करे व जिसका संयोजन सामुदायिक केन्द्र के रूप में हो जिसका वातावरण सामुदायिक जीवन व संस्कृति के अनुरूप हो तो ऐसा कोई पुस्तकालय स्वतन्त्रता के समय देश में विद्यमाननहीं था।

अभावग्रस्त संक्रामण आर्थिक सामाजिक स्वरूप

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय सक्षम आर्थिक सामाजिक स्वरूप का अभाव था। केवल 15 प्रतिशत लोग ही पढ़ना लिखना जानते थे उनमें से भी 3 प्रतिशत ने ही आठ वर्षीय विद्यालयी शिक्षा प्राप्त की थी। 88 प्रतिशत आबादी जो ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थी साक्षरता से विहीन थी। अंग्रेजी शासन में तथाकथित जो सार्वजनिक पुस्तकालय थे उनमें मुख्य रूप से अंग्रेजी पुस्तकें क्रय की जाती थी जो इंग्लेंड (यू० के०) से प्रकाशित होती थी। लेखन व पाठन अंग्रेजी बोलने वाले प्रतिष्ठित लोगों ने अपने तक ही संकुचित सीमित कर रखा था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 1947 में 6455 पुस्तकें 15 भारतीय भाषाओं में भारत में प्रकाशित हुई जो अनुपात से 430 पुस्तकें प्रति भाषा होती है, जबकि इनमें से 1627 पुस्तकें केवल अंग्रेजी भाषा की थी। 1,53,133 कस्बों तथा ग्रामों में केवल 2,767 या0.49 प्रतिशत जनता को ही विद्युत सेवा प्राप्त थी व केवल कस्बों का एक आंशिक भाग ही पक्की सड़कों से जुड़ा था।

भारतीय संविधान

भारतीय संविधान के अन्तर्गत केवल राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता तथा राष्ट्रीय महत्व के कुछ पुस्तकालयों का दायित्व केन्द्र सरकार पर रख कर शेष सार्वजनिक पुस्तकालयों को राज्य सरकार का दायित्व स्वीकार किया गया। क्योंकि शिक्षा का दायित्व सम्पूर्ण रूप से संविधान में राज्यों का निश्चित किया गया था अतः सार्वजनिक पुस्तकालयों का दायित्व केंद्र द्वारा ग्रहण करने का प्रावधान नहीं रखा जा सकता था। यही कारण है कि सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास भिन्न भिन्न राज्यों में भिन्न भिन्न रूप व स्तर का हुआ। यह सब इस पर निर्भर करता करता था कि कौनसा राज्य इनके विकास में कितना महत्व प्रदान करता है तथा वे कितनी

राशि इस कार्य हेतु सुविधा से दे सकते हैं। प्रति केपिटा व्यय सार्वजनिक पुस्तकालयों पर आधा पैसा से लेकर 16½ पैसा प्रति व्यक्ति तक आता है। प्रथम व द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत शिक्षा मन्त्रालय द्वारा राज्य सरकारों को कुछ योजनाओं के अन्तर्गत राज्यों को राज्य केन्द्रिय पुस्तकालय तथा जिला केन्द्रीय पुस्तकालयों की स्थापना की प्रयोजनाऐं प्रदान की गई किन्तु तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में प्रयोजन को हटाकर सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास का कार्यक्रम राज्य सरकारों को उनकी इच्छानुकूल करने हेतु सौंप दिया गया। फलस्वरूप केन्द्र सरकार की सहायता से कई राज्यों में राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय तथा जिला केन्द्रीय पुस्तकालयों की स्थापनाएं हो गयी किन्तु केन्द्र द्वारा परियोजना को हटा लेने के कारण इनके विकास की गति धीमी हो गयी। केन्द्र सरकार ने राज्यों द्वारा पुस्तकालय अधिनियम लागू किये जाने का भी प्रयास किया गया व पुस्तकालय अधिनियम का एक प्रारूप भी राज्यों को भेजा किन्तु दुर्भाग्यवश 21 राज्यों में से चार राज्यों में ही पुस्तकालय अधिनियम बनाने पर ध्यान दिया। केन्द्र सरकार आर्थिक एवं तकनीकी कार्यों द्वारा ही राज्य सरकारों का सहयोग कर सकती है किन्तु समान स्तर से सम्पूर्ण देश में विकास किये जाने में उसकी अपनी सीमाएं हैं।

अपर्याप्त आर्थिक संयोजन

यह अनुमान है कि आज भारत में पांच पैसा पर केपिटा व्यय किया जा रहा है तथा कुल आबादी के लगभग 10 प्रतिशत(दस प्रतिशत)जनता को सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा की सुविधा उपलब्ध की जा रही है। यह तर्क दिया जा सकता है कि भारत एक विकासशील देश है तथा विकसित देशों के समान सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास पर व्यय करने की सामर्थ्य नहीं रख सकता है।

मुझे यह कहते हुए संकोच नहीं है कि यह कथन सर्वथा भ्रम पूर्ण है। हम कुछ अन्य आंकड़ों पर ध्यान दें तो ज्ञात होगा कि इंगलैंड (यू० के०) की प्रति केपिटा आय भारत से उन्नीस गुना अधिक है। इसका अर्थ है कि भारत को सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा पर इंगलैंड द्वारा किये गये व्यय का 1/19 भाग व्यय करना चाहिये किन्तु भारत इंग्लैण्ड के व्यय का केवल 1:200 भाग ही व्यय करता है। इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रति केपिटा आय भारत के इकतालीस गुना अधिक है। अतः भारत को अमेरिका के व्यय का 1:41 वां भाग सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा पर जितना व्यय करना चाहिए किन्तु भारत 1:416 वां भाग ही इस सेवा के लिए व्यय करता है। इसका अर्थ है भारत सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा पर जितना व्यय करने की क्षमता का 1:10 वां भाग ही व्यय कर रहा है यह विवाद के योग्य प्रश्न है। इसका परिणाम यह है कि सार्वजनिक पुस्तकालय 100 नागरिकों पर एक पुस्तक उपलब्ध करता है जबकि इंग्लैंड 145 व अमेरिका 100 पुस्तक प्रति सैकड़ा नागरिकों को सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा उपलब्ध करता है। इसी प्रकार इंगलैंड में 37 प्रतिशत व अमेरिका में 25 प्रतिशत व्यक्ति सार्वजनिक पुस्तकालयों से सामग्री प्राप्त करने हेतु पंजीकृत हैं जबकि भारत में प्रति हजार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति ही इस संस्था से पुस्तक प्राप्त करने

हेतु पंजीकृत है। इंगलैंड में प्रति सौ व्यक्ति 512 पुस्तकें प्रति वर्ष उपयोग करते हैं व अमेरिका में यह संख्या 263 है जबकि भारत में यह संख्या 1.6 पुस्तक प्रति सौ व्यक्ति प्रति वर्ष है। सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा के तीव्र विकास की गति में सबसे बड़ी बाधा वित्तीय है। यह समस्या कितनी कठिन है या हठी है इसका अनुभव केवल वे ही कर सकते हैं जिनका पुस्तकालय विकास कार्यक्रम से निकट का सम्बन्ध रहा है। उदाहरण स्वरूप एक घटना का उल्लेख कर रहा हूँ कि 1966 में योजना आयोग की पुस्तकालय समिति ने देश में पुस्तकालय विकास के लिए चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत 310 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा, किन्तु केवल 20 करोड़ रुपया याने प्रावधान का छह प्रतिशत ही केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा वास्तव में निर्धारित किया गया। अर्थात योजना में लक्ष्य निर्धारण एक बात है तथा प्रावधान उपलब्ध करना एकदम दूसरी बात है।

पंचम पंचवर्षीय योजना जो 1 अप्रेल 1974 से प्रारम्भ होगी इसमें अधिक प्रावधान की उज्जवल सम्भावनाएें हैं। योजना आयोग ने पंचम पंचवर्षीय योजना की पुस्तकालय समिति में पहली बार योजना आयोग ने पुस्तकालय विकास कार्य योजना की इस समिति में पुस्तकालय विशेषज्ञ के रूप में लेखक (डी० आर० कालिया) को सहवरित किया है। व परिणाम स्वरूप पुस्तकालय विशेषज्ञ के सहवरण के कारण पुस्तकालय कार्य योजना समिति ने केन्द्र व राज्य दोनों सैक्टर में पर्याप्त अधिक मात्रा में सार्वजनिक पुस्तकालय विकास हेतु वित्तीय प्रावधान रखे हैं।

राज्य स्तर पर उदासीन संगठनात्मक रचना

किसी योजना का कार्यरूप उसकी प्रशासनिक एजेन्सी पर निर्भर करता है। केवल तमिलनाडू, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक व महाराष्ट्र में ही पुस्तकालय अधिनियम लागू है जिसके फलस्वरूप वहां अलग से सार्वजनिक पुस्तकालय निदेशालय हैं। अतः यह भी निर्विवाद है कि जहां सार्वजनिक पुस्तकालयों का विकास शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों के द्वारा उनके अन्य कई कार्यों के साथ यह कार्य भी एक अतिरिक्त कार्य के रूप में दिया गया है उससे वे राज्य जहां सार्वजनिक पुस्तकालय निदेशालय अलग है व इसी कार्य का दायित्व उन पर है वहां इनका विकास कार्य भी निश्चित रूप से अधिक सुचारू होगा। स्वतन्त्रता के पश्चात राज्य पुस्तकालय व्यवस्था का उदय हुआ है। जिसमें राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, जिला केन्द्रीय पुस्तकालय, ब्लाक व तालुका केन्द्रीय पुस्तकालय, नगर पुस्तकालय व्यवस्था, टाउन पुस्तकालय, ग्राम पुस्तकालय नगर व ग्रामीण क्षेत्रीय चल पुस्तकालय व्यवस्था आते हैं। राज्य पुस्तकालय व्यवस्था के इस विस्तृत क्षेत्र की सुचारू व्यवस्था तभी सम्भव है, जबकि पूर्ण कालिक योग्य पुस्तकालय निदेशक हो।

राष्ट्रीय विकास में व्यक्तिगत पठन की महत्वहीनता का दोष

भारत में शिक्षा अधिक विश्रृंखलित है। यह शिक्षा प्रणाली भारत पर अठारवीं शताब्दी में पाश्चात्त प्रभाव द्वारा अंग्रेजों द्वारा थोपी गई थी। आज शिक्षा सभी स्तर पर आबादी के फैले विभिन्न

वर्गों में प्रसारित है अब शिक्षा उच्च वर्ग की थाती नहीं रह गई है। शताब्दियों से निम्न वर्गों के प्रति बरती गई उदासीनता के कारण भारत में कुल आबादी की सत्तर प्रतिशत जनता आज निरक्षर है, यह कोई आश्चर्य नहीं। राष्ट्रीय विकास में पुस्तकालयों के कार्य को पूरी तरह से नहीं आंका जा रहा है। दुर्भाग्यवश भारतीय शिक्षा पद्धति इस प्रकार की है कि पुस्तकालय में एक बार भी कदम रखे बिना भी कोई स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर ले। समाज व शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालयों का कितना महत्व है यह इससे ही स्पष्ट है। अनुभवों ने यह बताया है कि जिन लोगों में अपने विद्यार्थी जीवन में पठन रुचि नहीं बनती, उनमें साधारणतया शेष जीवन में विशेष प्रयास किये बिना पाठन रुचि जागृत नहीं होती।

इस समस्या का एक दूसरा पहलू भी है। पश्चिम में औद्योगिक क्रांति, जन शिक्षा व सामाजिक जागृति के द्वारा जनतन्त्र तथा संसदीय शासन प्रणाली का उद्भव हुआ है जबकि भारत में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के परिणाम स्वरूप जनतन्त्र की स्थापना हुई। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत में संसदीय जनतन्त्र की स्थापना की गई है किन्तु इस जनतन्त्र को अधिक संख्या में निरीक्षर मतदाताओं का समर्थन मिला है। यह आश्चर्य का विषय हो सकता है कि यह निरक्षर जन मतदाता जन समस्याओं तथा नीतियों को उचित या न्याय पूर्ण ढंग से समझते है, केवल पांच प्रतिशत शिक्षित प्रतिष्ठित जन ही आज भारत में जन जीवन पर छाये हुए हैं। ऐसा महसूस होता है कि अभी जनतन्त्र का सामाजीकरण किया जाना है और यह तभी होगा जब सार्वभौमिक व शत प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करना होगा व उसे स्थायित्व देने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा को माध्यम बनाना होगा।

विकास की वर्तमान गति

भारत वर्तमान में प्रशासनिक दृष्टि से 21 राज्यों तथा 9 केन्द्र शासित प्रदेशों में विभाजित है। प्रत्येक राज्य तथा केन्द्र शासित प्रदेश जिलों व उप जिलों में विभाजित है। आज लगभग 376 जिले व लगभग 3100 उप जिले जो ताल्लुका या तहसील के नाम से पुकारे जाते हैं, 2921 कस्बों व 5,66,878 ग्रामों के मिलाकर 5,69,799 मौजूद यूनिट हैं जिनको पुस्तकालय सेवाऐं उपलब्ध की जानी हैं।

राष्ट्रीय पुस्तकालय व्यवस्था के अन्तर्गत वर्तमान में एक राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता में क्षेत्रीय राष्ट्रीय पुस्तकालय मद्रास, बम्बई व दिल्ली में, एक राज्य केन्दिय पुस्तकालय प्रत्येक राज्य में तथा बड़े राज्यों में राज्य क्षेत्रीय पुस्तकालय व शेष व सभी राज्यों में जिला केन्द्रिय पुस्तकालय उप जिला पुस्तकालय प्रत्येक उप जिले में उपलब्ध हैं। प्रत्येक एक लाख व इससे अधिक आबादी वाले नगरों में एक पुस्तकाल नगर पुस्तकालय व्यवस्था के अन्तर्गत जो शाखा पुस्तकालयों व धरोहर केन्द्रों का अपने अपने नगर व ग्रामीण क्षेत्रों में संचालन करते है उपलब्ध हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् एक राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा दो क्षेत्रीय राष्ट्रीय पुस्तकालय मद्रास तथा बम्बई में स्थापित किये गये हैं। आज 21 में से 15 राज्यों में या 71 प्रतिशत

राज्यों में राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, 376 जिला में से 235 जिलों में अर्थात 63 प्रतिशत जिला केन्द्रीय पुस्तकालय, 3100 में से 1500 उप जिलों अर्थात् 48 प्रतिशत उप जिला केन्द्रीय पुस्तकालय तथा 5,66,878 ग्रामों में से 50,000 अर्थात् 9 प्रतिशत ग्रामों में, ग्राम पुस्तकालय है। 2621 में से 1800 अर्थात् 68 प्रतिशत कस्बों में पुस्तकालय हैं। 29 बड़े व प्रधान नगरों जिनकी आबादी 4,00,000 चार लाख या अधिक है में से केवल चार मद्रास, हैदराबाद, बेंगलोर व दिल्ली में अर्थात् 14 प्रतिशत नगरों में ही नगर सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा धरोहर केन्द्रों, शाखा पुस्तकालयों तथा केन्द्रीय पुस्तकालय से युक्त उपलब्ध है। दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय ही देश में एक मात्र ऐसा पुस्तकालय है जो नगर में चल पुस्तकालय सेवा दे रहा है। अनुमानतः भारत में आज 5 पैसा प्रति केपिटा सार्वजनिक पुस्तकालयों पर व्यय कर रहा है तथा लगभग कुल आबादी की 10 प्रतिशत जनता को सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा का लाभ मिल रहा है। सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा को शत प्रतिशत स्थापित करने के लिए एक लम्बा रास्ता तय करना है।

निष्कर्ष

देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से अब तक चाहे वे पुस्तकालय अधिनियम के अन्तर्गत अथवा कार्यकारिणी व्यवस्था के अन्तर्गत स्थापित हुये है, वे पढने हेतु पुस्तक प्राप्त करने वालों से धरोहर राशि प्राप्त करते रहे हैं। यह धरोहर राशि 10 रुपया प्रति व्यक्ति प्रति पुस्तक से 30 रुपयों तक प्राप्त की जाती हैं। इन पुस्तकालयों ने निश्चित रूप से वार्षिक सदस्यता शुल्क प्राप्त करना बन्द कर दिया है। किन्तु धरोहर राशि प्राप्त करने की व्यवस्था भी एक बड़ी संख्या में पुस्तक प्राप्त कर्ता की संख्या में बाधक है तथा पुस्तक प्राप्त कर्ता पाठक की रूचि में ह्रास करता है। वर्तमान कार्यकारी पुस्तकालयों का अध्ययन किया जावे तो ज्ञात होगा कि वे अपनी पाठन सामग्री से जितनी पुस्तकालय सेवा कर रहे हैं, उससे अधिक संख्या में पाठकों को सेवा प्रदान कर सकते हैं। यह पाया गया है कि एक समय में कुल पुस्तकों का 1 से 5 प्रतिशत भाग ही पाठन हेतु पुस्तकालयों से बाहर जाती है जबकि इससे काफी अधिक संख्या में एक समय में पुस्तकें पढने हेतु पाठकों को दी जा सकती हैं। जहां धरोहर के साथ सदस्यता शुल्क भी प्राप्त किया जाता है, उनकी तो और भी खराब स्थिति है। धरोहर तथा वार्षिक शुल्क प्राप्त करने की पद्धति पुस्तकाध्यक्ष विरोधी स्वरूप है, साथ ही भारतीय समाज में निःशुल्क शिक्षा सुविधा के स्वीकार लक्ष्य का नैतिक पतन है। सामयिक पुस्तक गणना के समय खोई हुई पाई गयी पुस्तकों के लिए पुस्तकाध्यक्ष को उत्तरदायी मानने के 1888 में निर्मित वित्तीय नियमों से आज भी चिपके रहना भी उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने वाला है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पुस्तकाध्यक्ष अपनी सुरक्षा के लिए बहाने चतुराई से बनाकर उपयोग कर्ता को पुस्तकों से दूर रखता हो।

1972 में दो महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं-एक तो भारत सरकार के सांस्कृतिक विभाग की स्थापना तथा उसके अन्तर्गत सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास का कार्य सौंपना दूसरा राजा राम मोहन राय पुस्तकालय संस्थान का निर्माण है परिणामतः सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास

की ओर अधिक महत्व व ध्यान दिया जा रहा है तथा अधिक वित्तीय आधार प्राप्त हो रहा है। यह अनुमान किया जाता है कि पंचम पंचवर्षीय योजना में चतुर्थ से सात गुना अधिक वित्तीय प्रावधान किया जायेगा। पुस्तकालय विकास प्रयोजना के लिए एक अलग से पुस्तकालय विभाग केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा स्थापित किये जावेंगे। राजा राम मोहन राय पुस्तकालय संस्थान का निर्माण राज्य की पुस्तकालय योजना में तकनीकी तथा अच्छी पाठन सामग्री द्वारा सहयोग के लिए किया गया है।

हम आशा करें कि भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास के क्षेत्र में आने वाले वर्षों में महत्वपूर्ण प्रगति करेगा तथा वह भारत के नागरिकों को अच्छा खाने को ही नहीं अच्छे विचार के लिए सक्षम सामग्री प्रदान करेगा।

अनुवादक : हिमकर नेगी

विश्व मैत्री का साधन पुस्तकालय

पुस्तकालय वास्तव में दुनिया की संस्कृति के सम्पर्क का एक महानतम् माध्यम है।

पुस्तकालय एक ऐसी विधि है, जिसका मूल्यांकन धन से नहीं किया जा सकता।

पुस्तकालय भूत और वर्तमान के साथ भविष्य का भी दिग्दर्शन कराते है।

वर्तमान ज्ञान व विद्या किसी देश, भूमि, फासले अथवा काल तक सीमित नहीं है। वह असीम है।

हवाई जहाज और रेडियो से विश्व एक दूसरे के काफी निकट आ गया है। किसी भी स्थान पर होने वाली अशान्ति या दुर्घटना का शीघ्र पता चल जाता है। ऐसी स्थिति में पुस्तकालय विश्व मैत्री और सद्भाव का उत्तम साधन है जहां सभी प्रकार का साहित्य एकत्रित होता है।

इस द्रुत गति से बदलती दुनियां के ज्ञान को वृद्धि करने में पुस्तकालय अपना विशेष महत्व रखते हैं।

—गोपाल स्वरूप पाठक

बाल शिक्षण में पुस्तकालय की उपयोगिता

(शिव नारायण माथुर)

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयों की महत्ता सर्व मान्य है, परन्तु बाल-शिक्षण में पुस्तकालय की उपयोगिता बहुधा कम आंकी जाती रही है। मेक्कालविन के अभिमत में यदि बालकों का बचपन पूर्ण सानन्दमय करना है और युवा होने पर उनकी योग्यता का अधिकतम लाभ उठाना है, तो उनकी पुस्तकों के प्रति रुचि पैदा करना नितान्त आवश्यक है। इस अवस्था में यदि उनका सम्पर्क उत्तम पुस्तकों से नहीं कराया जाता अथवा विद्यालय छोड़ने के उपरांत उनकी पुस्तकों के प्रति रुचि नहीं रही, तो यह एक गम्भीर क्षति है जिसकी पूर्ति भविष्य में प्रायः असम्भव भी हो सकती है। तात्पर्य यह है कि युवक एवम् प्रौढ़ों हेतु पुस्तकालयों के साथ-साथ बाल पुस्तकालयों की आवश्यता भी अपना महत्व रखती है।

'पुस्तकालय' शब्द 'पुस्तकें' एवम् उनके रखने का स्थान (आलय) दोनों का परिचायक है। यहां 'आलय' की अपेक्षा 'पुस्तक' शब्द कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि अध्ययन में बच्चों की रुचि अत्यधिक होती है, और जब वे पढ़ेंगे तो उनके लिए पर्याप्त पठन-सामग्री जुटाना अति आवश्यक है। अतः बाल पुस्तकालय के संग्रह को उनके अध्ययन के पाठ्यक्रमानुसार ही सीमित न करके कुछ ऐसा बनाना चाहिए जो कि बालक के प्राकृतिक बाल-सुलभ नई वस्तुओं के बारे में जानते रहने की उत्सुकता को अध्ययन द्वारा और तीव्र कर सके। यह पुस्तकालय के संग्रह पर निर्भर करता है कि वह अधिक से अधिक बालकों को जागरूक और गहन अध्ययनकर्त्ता बनादे, ताकि अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के समापन के पश्चात् भी वे अपने निजी हितों अथवा मनोरंजन हेतु स्वतः ही पुस्तकों में अभिरुचि लेते रहें। बाल पुस्तकालय के स्वछन्द वातावरण में बालक अपनी रुचि की पुस्तक चुनने को पूर्ण स्वतन्त्र होने चाहिए। यह स्वछन्दता वह अपने विद्यालय के पुस्तकालय में महसूस नहीं कर पाता। आप एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय के द्वार एक बार उसके लिए खोल दीजिए और उसे मन पसन्द पुस्तकें आदि देखने परखने दीजिए। बस, वह शीघ्र ही किसी ऐसी पुस्तक के अधीन हो जायेगा जो उसकी जिज्ञासा को जागृत करती है तथा उसकी रुचि को और भी प्रोत्साहित करती है। तदुपरान्त, वह यह महसूस करने लगता है कि पुस्तक कितनी परमआनन्द देती हैं और वह पुस्तकों को मित्ररूप में ग्रहण करने लगता है। इस स्थिति के पश्चात् तो उसकी उत्कट इच्छा सदैव यही रहेगी कि उसे अपने ज्ञानवर्धन अथवा मन बहलाव के लिए पुस्तकें पढ़ने को मिलती रहें। हमारे देश का आम नागरिक अपने बच्चों की शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त अपनी सीमित आय में से उनके लिए पुस्तकें नहीं खरीद सकता। अतः पुस्तक जगत से उनका सम्पर्क टूट

सा जाता है। देश के इन भावी कर्णधारों का ज्ञानवर्धन तो दूर, बल्कि, इनके अर्जित ज्ञान का भी शनैः शनैः ह्रास हो जाता है तथा इनकी शिक्षा पर किया गया व्यय और परिश्रम सब निरर्थक सिद्ध हो जाता है। यदि हम बच्चों के अर्जित ज्ञान का ह्रास होते हुए नहीं देखना चाहते और उनकी अध्ययन के प्रति रुचि को तीव्र करना चाहते हैं, तो हमें उनके लिए पर्याप्त पुस्तकों आदि का प्रबन्ध करना पड़ेगा और यह केवल उत्तम एवं सुव्यवस्थित पुस्तकालयों द्वारा ही सम्भव हो सकता है। चल पुस्तकालयों द्वारा यह सुविधा हमारे गांवों तक भी सुलभ की जा सकती है।

बच्चों का आकर्षण जागृत करने के लिए यह जरूरी है कि बाल-पुस्तकालय सुव्यवस्थित हों। उठने, बैठने, चलने, फिरने के लिए पर्याप्त स्थान अथवा आरामदेह फर्नीचर होना चाहिए। प्रकाश एवम् हवा आने जाने का उचित प्रबन्ध हो। सजावट एवम् पुस्तकें आदि रखने का तरीका बच्चों की रुचि के अनुरूप हो। संग्रह बच्चों के लिए खुली आलमारियों या स्टेन्ड पर रखा हो ताकि वे हर पुस्तक आदि की स्वय जांच परख कर सकें। पुस्तकालयाध्यक्ष स्वागत-मय प्रवृत्ति वाला हो और स्वयं बच्चों की रुचि को ही प्राथमिकता देकर पुस्तक चुनाव में उनकी सहायता करे। तात्पर्य यह है कि पुस्तकालय के वातावरण में बालक अपने को विद्यालय की कक्षा के अनुशासन सम्बन्धी औपचारिक बन्धनों आदि से मुक्त और स्वछन्द महसूस करे। हां, पुस्तकालय सम्बन्धी औपचारिक बातें उन्हें अवश्य समझा दी जानी चाहिए।
पुस्तकालय संग्रह के लिए पुस्तक-चयन करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा संग्रह एक आदर्श संग्रह हो। पुस्तकों के उपयोग के तीन मुख्य उद्देश्य हैं। (१) सूचना (समाचार) प्राप्त करना, (२) ज्ञान अर्जन करना एवम् (३) काल्पनिक अनुभव जगत में रस लेना। पुस्तक चयन के समय इन तीनों पहलुओं को दृष्टिगत रखना चाहिए। संदर्भ पुस्तकों, साहित्य विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों, कथा-कहानी सम्बन्धी पुस्तकों, हॉबी, खेलकूद एवम् आमोद प्रमोद संबंधी पुस्तकों को स्थान दिया जाना चाहिए।

राजस्थान विश्वविद्यालय ने भी विश्वविद्यालय पुस्तकालय में ही एक बाल-कक्ष स्थापित करके एक अद्भुत प्रयोग किया है। इस कक्ष की निरन्तर बढ़ती हुई लोकप्रियता और उपयोग से इस प्रयोग की सफलता के बारे में कोई सदेह शेष नहीं रह जाता। संभवतः इस लोकप्रियता का प्रमुख कारण यह रहा हो कि अभी तक राजस्थान में अन्यत्र ऐसा सुव्यवस्थित बाल पुस्तकालय नहीं है। इस समय यह पुस्तकालय अपने सीमित साधनों एवं स्थानाभाव होते हुए भी लगभग ४५० बालकों की सेवा कर रहा है। औसतन ५० बच्चे प्रतिदिन इस पुस्तकालय के संग्रह से ज्ञान अर्जन करके लाभान्वित हो रहे हैं। वर्तमान पुस्तक संग्रह का योग कुल ४५०० है जिनमें से ७० प्रतिशत पुस्तकें हिन्दी में हैं।

अधिक सार्वजनिक पुस्तकालय और उन सभी में बाल-पुस्तकालयों का जाल बिछाने में अनुमानित व्यय को वहन करने में हमारी राज्य सरकार के पास साधनों का अभाव हो सकता है, परन्तु निम्न सुझाव यदि तुरन्त अमल में लाये जावें तो बिना किसी अतिरिक्त राशि की मांग किये, पुस्तकों के माध्यम से ही बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

(१) समस्त विद्यालय-पुस्तकालय, चाहे, वे किसी भी स्तर के हों, जन साधारण हेतु खोल दिये जावें। इन पुस्तकालयों की सेवाएं केवल अपने विद्यालय के छात्रों एवम् अध्यापकों तक ही सीमित न हों, बल्कि अपने क्षेत्र की समीपस्थ बस्तियों के उन बालकों के लिये भी उपलब्ध हों, जिनका कि विद्यालय से सीधा-संबंध न हो।

(२) प्रत्येक विद्यालय में पर्याप्त क्षेत्रफल का अलग कमरा पुस्तकालय हेतु आवंटित किया जाना चाहिए।

(३) प्रत्येक विद्यालय पुस्तकालय में एक योग्य एवं प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष हो जिसे पुस्तक जगत की सम्पूर्ण जानकारी हो।

(४) पुस्तकालय के लिए पुस्तकें क्रय करने हेतु चाहे कितने हो सीमित साधन हों परन्तु इन साधनों का समुचित उपयोग तब ही हो सकता है जबकि पुस्तकालय संग्रह के लिए पुस्तक चयन ठीक ढंग से किया जाय।

(५) पुस्तकालय के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिये पुस्तकालय की विस्तार सेवाओं के अन्तर्गत कुछ अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाना चाहिये। सामान्यतया 'गल्प-विहार' कार्यक्रम अति लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

अतएव यह कहना अनुचित नहीं होगा कि बाल-पुस्तकालय बालकों की सामाजिक एवं शैक्षणिक आवश्यकताओं की आपूर्ति करते हैं। यदि राष्ट्र की इस भावी पीढ़ी को हम उन्नत और विश्वसनीय नागरिक बनाना चाहते हैं तो हमें उन्हें सही ढंग की शिक्षा प्रदान करनी पड़ेगी और इस शिक्षा के लिए पुस्तकें नितान्त आवश्यक है जिनकी सहज उपलब्धि पुस्तकालयों में ही संभव है।

नारदजी ने एक दिन अम्बरीस से पूछा कि तुम पांच मूर्ख आदमियों के साथ स्वर्ग जाना पसन्द करते हो या पांच बुद्धिमान आदमियों के साथ नरक जाना? अम्बरीस ने उत्तर दिया, भगवन्! बुद्धिमान आदमियों के साथ नरक में रहना भी स्वर्ग में रहने के समान होगा। मूर्ख लोग तो स्वर्ग को भी नरक बना कर रख देंगे।

पुस्तकालय : छात्र–अनुशासनहीनता के अवरोध का एक सशक्त माध्यम

(रतनलाल सनाढ्य)

कुछ वर्षों से शिक्षा क्षेत्र में एक बेचैनी सी बढ़ती जा रही है एवं उसका कारण अनुशासनहीनता हैं। यदि अनुशासनहीनता की ओर दृष्टिगोचर करें तो ज्ञात होगा कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता के पश्चात् अनुशासनहीनता बढ़ती ही जा रही है। यदि आज के दैनिक, साप्ताहिक आदि पत्रों पर नजर डालें तो विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की बातों के उदाहरण हमेशा पढने को मिलते हैं। भारत के विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग ने भी इसके लिए बहुत से सुझाव दिए हैं। एक वर्ग इन सब अनुशासनहीनता का उत्तरदायित्व शिक्षा-शास्त्रियों से हटाकर राजनीतिज्ञों पर डालते हैं कि इन्होंने अपनी स्वार्थपरता के कारण विद्यार्थियों को इस ओर मोड़ दिया है। दूसरा मत इस अनुशासनहीनता के लिए दोषी अभिभावकों को मानता है कि वर्तमान अभिभावक छात्रों में अनुशासन की भावना पैदा नहीं करते। किन्तु कुछ लोग इसे तथ्यहीन समझते हैं। मैं अपने विचार इससे पृथक् ही रखना चाहूंगा। अनुशासनहीनता के बढ़ने का कारण यह है कि विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त ज्ञान वर्द्धन के लिए अन्य पुस्तकें समय पर उपलब्ध नहीं होती। इस सम्बन्ध में ये तथ्य अविस्मरणीय हैं —

आज का बालक स्कूल जाने की अवस्था में आते ही स्कूल पढ़ने भेजा जाता है। यदि सर्वेक्षण किया जाय तो अधिकांश नगर स्कूलस् के पास खेलने के लिऐ स्थान नहीं है। ग्रामों में क्रीड़ा-स्थल पर्याप्त नहीं हैं, जहां क्रीड़ा स्थल उपलब्ध है वहां क्रीड़ा सामग्री का अभाव है। वहां के पुस्तकालय की ओर दृष्टिपात करें तो हास्यास्पद परिणाम प्राप्त होते हैं। पंचायत समिति के पास पुस्तकालय बजट का नामोनिशान नहीं है अतः ग्रामों के विद्यार्थी कोई पुस्तक पढ सकें यह एक अचरज की बात है। शिक्षा के पुस्तकालय व्यय की ओर देखा जाय तो नगर की पाठशाला पर प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष आधा पैसा खर्च किया जाता है ऐवं राजस्थान की प्राथमिक पाठशालाओं में 59.3 लाख विद्यार्थी जब पढ़ते हैं तो पुस्तकालय का कुल व्यय चार हजार रुपया है यानि प्रति बीस विद्यार्थियों पर एक नया पैसा खर्च करती है। अतः वहां पुस्तकों की उपलब्धि दुर्लभ है। जब विद्यार्थी को अपने मनोरंजन हेतु पाठ्यसामग्री के अतिरिक्त अध्ययन के लिए कोई सामग्री न हो, क्रीडास्थल न हो, तो बालक सड़कों अथवा गलियों में ही तो खेलेंगे। क्योंकि 24 घण्टे पाठ्य पुस्तक नहीं पढ़ सकेगा एवं वह गली अथवा सड़कों के दूषित वातावरण का शिकार हो जायेगा।

यदि शिक्षा के आंकड़ों की ओर दृष्टिगोचर करें तो प्राथमिक पाठशालाओं से उच्च माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की संख्या आधी से भी कम रह जाती है। किन्तु उच्च प्राथमिक शालाओं में पुस्तकालय व्यय, प्रति छात्र पर पांच नये पैसे से पच्चीस पैसे तक खर्च किए जाते हैं। जबकि प्रति विद्यार्थी पर शिक्षा खर्च 215 रुपया है। अतः उसके मुकाबले में शिक्षा-खर्च देखा जाय तो नगण्य सा है। माध्यमिक शालाओं में पुस्तकालय का सही व्यय तो ऐसा हास्यास्पद है कि स्पष्टीकरण करना भी दुर्लभ हैं। राजस्थान माध्यमिक बोर्ड की सिफारिश का वर्णन करना तो एक ऐसा हास्यास्पद सा है कि शर्म के मारे मस्तक झुक जाता है। उदाहरण के तौर पर आज पुस्तक का मूल्य 10 रुपये से 20 रुपये के बीच चल रहा है उस समय भी बोर्ड ने एक विषय पर 50 रुपये एवं कुल विद्यालय के पुस्तकालय का व्यय 400 रुपया बताया है। यानि एक शाला में 20 से लेकर 30 पुस्तकें तक खरीदने का प्रावधान बताया है। मै यह प्रश्न पूंछना चाहूंगा कि क्या एक पुस्तकालय की कुल 30 पुस्तकें अध्यापक तथा वहां के विद्यार्थियों के लिए पूर्ण हैं ?

पुस्तकालय की पुस्तकें कुछ माध्यमिक शालाओं को छोड़ कर शेष में दिखावे के लिए रखी गई हैं किन्तु उनका कोई उपयोग नहीं होता। केवल निरीक्षक महोयय को दिखाने के लिए चन्द विद्यार्थियों को पुस्तकें दी जाती हैं। उनमें ऐसा कोई ज्ञान नहीं होता कि ये पुस्तकें उन विद्यार्थियों के उपयोग की हैं।

विद्यालय में पुस्तकालय न होने का ही दुष्परिणाम है कि बालक अनुशासनहीनता सीखता है। सर्वप्रथम बालक पाठ्य-पुस्तक से ऊब जाता है किन्तु उसके पास कोई अन्य पुस्तक न होने कारण वह सड़क पर डोलता है एवं वहां अनुशासनहीनता सीखता है। कुछ प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थी जब कुछ पुस्तकें पढ़ना सीख जाते हैं तो वे कुछ पढने को इच्छुक होते हैं एवं उस समय उनको यदि बाजारू सड़ा-गला साहित्य एवं अनुशासनहीनता का साहित्य मिलता है वही पढ़ने बैठते हैं एवं वही ज्ञान उन्हें अनुशासनहीनता की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करता है। यदि अध्यापकों की ओर देखें तब हम पायेंगे कि उनकी अवस्था भी विद्यार्थियों जैसी है। अध्यापक प्रायः अपनी उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए लालायित रहता है एवं परीक्षा देकर आगे अपनी उन्नति चाहता है। सही पुस्तकें वह प्रायः नहीं खरीद सकता। विद्यालय-पुस्तकालय से वे पुस्तकें उपलब्ध नहीं होती अतः प्रश्नोत्तर-पुस्तकों को ही पढ़कर वह परीक्षा उत्तीर्ण करता है। अतः विद्यार्थी गलत पुस्तकें अध्यापक के हाथ में देखता है तो वह भी यही सोचता है कि मैं भी इसी प्रकार की पुस्तकें पढ़ कर परीक्षा उत्तीर्ण करूं।
उपर्युक्त तथ्य से यह स्पष्ट है कि जब अध्यापक का ज्ञान ही अधूरा है एवं उत्तीर्ण होने के लिए प्रश्नोत्तर-पुस्तकें काफी हैं तो विद्यार्थी क्यों वर्ष भर पढ़ेगा एवं क्यों गुरु की आज्ञा मानेगा। इस कारण उसे अनुशासनहीनता के कार्य करने का साहस रहेगा।

जब बालक पढ़ना सीखता है उस समय मित्रों से पुस्तकें लाता है जो पढ़ाई छोड़ने के पश्चात कुछ पढ़ने का शौक रखते हैं एवं उन्हीं के पास उसको पढ़ने के लिये जासूसी उपन्यास, हत्याओं के किस्से, प्रेम-कहानियां आदि उपलब्ध होते हैं। क्योंकि ये किस्से इस ढंग से लिखे होते हैं कि सीधे युवक लोगों के हृदय पर असर करते हैं अतः युवक उसी अग्रसर हो जाता है एवं वहां

सीखता है। विद्यार्थी अप्रेल माह से जुलाई माह तक यानी चार माह निठल्ला ही रहता है। क्योंकि परीक्षा देने के उपरांत एवं विद्यालय के एक माह खुलने तक पाठ्य-पुस्तकें नहीं छूता है। उपरोक्त समय भारत में अच्छे पुस्तकालय एवं वाचनालयों की कमी के कारण विद्यार्थी इन चार माह तक चौराहों पर खड़े होना, लोगों के साथ अभद्र व्यवहार करना, गुरुओं की मजाक उड़ाना, भद्दे गाने गाना आदि सीखता है। यदि वह कुछ आगे बढ़े तो बुक स्टाल पर जाता है तथा पढ़ने के लिए स्टाल से जासूसी तथा अश्लील उपन्यास किराए पर लेता है एवं उन्ही के पढ़ने में अपने अमूल्य समय को खो बैठता है। जैसे उसे उन उपन्यासों में मिलता है वही सीखता है। इस प्रकार विद्यार्थी अनुशासनहीनता के कार्यक्रमों की ओर अग्रसर होता जाता है।

यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो हम देखेंगे कि नाजियों, कम्युनिस्टों आदि लोगों ने अपने प्रचार का कार्य प्रारम्भ में लघु बच्चों को इसी तरह का अपना साहित्य पढ़ाने के लिए प्रयत्न किए एवं बालक उसी वातावरण की ओर अग्रसर हो गए तथा जर्मनी जैसा लघु राष्ट्र भी विश्व के लोगों से युद्ध में मुकाबला कर सका। इसी प्रकार अगर बालकों को अच्छी पुस्तकें दी जाय तो अनुशासनहीनता नहीं सीखेंगे। शिक्षा का उद्देश्य पुराने युग में मनुष्य को इस प्रकार बना देता था कि व्यक्ति नैतिकता, नम्रता, व्यवहारिकता का पुजारी बन जाता था। यही कारण था कि पुराने युग का छात्र अनुशासनहीन नहीं था।

पुस्तकालय की समृद्धि एवं सुव्यवस्था, छात्रों की अनुशासनहीनता बाढ़ को रोकने में सबसे अधिक प्रबल अवरोध है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

किस प्रकार की अनुशासनहीनता विद्यार्थियों में पनप रही है :

1—कक्षाओं में ज्यादा दिन आना नहीं चाहते।
2—कक्षाओं में अध्यापक को पढ़ाने में रूकावटें डालना।
3—हड़ताल करना एवं तोड़-फोड़ में सहयोग करना।
4—छात्राओं के साथ अभद्र व्यवहार करना।
5—शिक्षक (गुरु) का आदर न करना।
6—शिक्षा संस्थाओं अथवा शहर में आवारा की तरह घूमना।

इसके अतिरिक्त गृह एवं बाजार में अनुशासनहीनता को बनाए रखना, विद्यार्थी अपना परम कर्त्तव्य समझने लगे हैं।

पुस्तकालय इस अनुशासनहीनता को कैसे कम कर सकता है : इस संबंध में मेरा स्पष्ट मत है कि :

1—वर्तमान युग में हम यदि शिक्षा में आंकडों की ओर दृष्टिपात करें तो शिक्षा व्यय प्रति छात्र निम्न प्रकार है :—

माध्यमिक शाला	में	285
उच्च प्राथमिक शाला	में	175
एवं प्राथमिक शाला	में	123

उपरोक्त खर्च का प्रतिफल निम्न प्रकार है :—

परीक्षा	वर्ष	परीक्षाफल	पैसे का दुरुपयोग
माध्यमिक	1970	49-33	50-66 प्रतिशत
उच्च मा. शा.	1970	62-25	37-75 प्रतिशत
माध्यमिक	1971	47-37	52-63 प्रतिशत
उच्च मा. शा.	1971	60-44	39-56 प्रतिशत
माध्यमिक	1972	52-74	47-26 प्रतिशत
उच्च मा. शा.	1972	57-1	42-9 प्रतिशत

(यह रिजल्ट रेगुलर विद्यार्थियों का है)

Rajasthan Board Journal of Education के आधार पर

इतना व्यय प्रति छात्र प्रति वर्ष विद्यार्थी को केवल पाठ्य-पुस्तकों को पढ़ाने में ही व्यय करते हैं इसके अलावा राजस्थान बोर्ड के रिजल्ट से साफ है कि माध्यमिक शाला का 50 प्रतिशत से 52 प्रतिशत का सरकार का व्यय वेकार जाता है क्योंकि विद्यार्थी फैल हो जाते हैं। उ. मा. शालाओं में यह 40 प्रतिशत तक का वेस्टेज जाता है अगर सरकार इतने नुकसान को भी सहन करती है तो फिर पुस्तकालय का नुकसान जो कि वजट का 10 प्रतिशत भी माने तो उपरोक्त वेकार पैसे में कमी की जा सकती है। यदि प्राथमिक शालाओं में वालकों को पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त नैतिकता का ज्ञान, कहानियां, नाटक एवं कविता के रूप में पुस्तकों के द्वारा पढ़ने के लिए दी जाय तो विद्यार्थी का ज्ञान वढ़ेगा। दूसरा विद्यार्थी जो सड़कों पर अनुशासनहीनता की वातों को सीखता है, इन वातों से दूर हटेगा। यदि नैतिक वातावरण की पुस्तकों की ओर वालक की आरम्भ में रूचि वढ़ गई तो छात्र अनुशासनहीनता की ओर कम वढ़ेगा।

उच्च प्राथमिक शालाओं में आते ही पुस्तकों का इतना व्यापक रूप कर देना चाहिए कि विद्यार्थी पुस्तकों की ओर वढ़े। इस समय प्राथमिक पाठशालाओं की पुस्तकों के साथ-साथ तरह तरह के व्यवसायों की लघु पुस्तकें, ऐसे व्यवसायियों की पुस्तकें जिन्होंने व्यवसाय के द्वारा गरीवी से अमीरी प्राप्त की हों, उनकी जीवनियां, राष्ट्र के कर्णधारों की जीवनियां आदि पर नैतिकता प्राप्त करने का मसाला मिलना चाहिए। इससे विद्यार्थी की रूचि स्वत: पढ़ने की वढ़ जायेगी एवं विद्यार्थी की रूचि अनैतिक पुस्तकों से हटकर अच्छी पुस्तकों की ओर वढ जायेगी। वालक का ज्ञान वढ़ जाने पर वह अनैतिक पुस्तकों की ओर न वढ़ेगा।

माध्यमिक शालाओं में तो पुस्तकों के द्वार खुल जाने चाहिए ताकि विद्यार्थी अपना स्वेच्छा से पुस्तकों का चयन कर पढ़ सकें एवं तभी वह पुस्तकों में रूचि लेने लगेगा तथा स्वत: ज्ञान की ओर अग्रसर होगा। यदि हम कोठारी कमीशन की रिपोर्ट की ओर देखें तो उसमें भी हम पायेंगे कि हर माध्यमिक शाला में वहुत सुव्यवस्थित पुस्तकालय होने के लिए अपनी सिफारिश की है। इसके साथ साथ उन्होंने यह भी सिफारिश की है कि कुछ शालाओं को मिला कर एक शाला-गठन (स्कूल काम्पलेक्स) किया जाय जिसके अन्दर एक केन्द्रीय पुस्तकालय हो जिसके द्वारा कि पुस्तकों का वितरण सभी शालाओं में हो सके।

यदि पुस्तकालय सुदृढ़ होगा तो अध्यापक पुस्तकें पढ़े बिना नहीं रह सकता एवं पढ़ने पर यह निश्चित है कि उसके ज्ञान में वृद्धि होगी एवं ज्ञान की वृद्धि का लाभ विद्यार्थियों को निश्चित होगा। विद्यार्थियों को पता लगेगा कि जो ज्ञान अध्यापक ने उन्हें बताया है वह पाठ्य-पुस्तकों से अधिक है तो वह जानने का प्रयत्न करेगा कि वह ज्ञान किस स्थान से प्राप्त किया गया है। इस प्रकार उसकी रूचि इस विषय को पुस्तकें पढकर अपने ज्ञान की वृद्धि में बढावा देगी। इसके साथ साथ जब वह पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य अच्छी पुस्तकें पढ़ेगा तो उसके पास इतना समय ही नहीं रहेगा कि वह बाहर घूमकर अनैतिकता की ओर बढ़े। इससे अपने आप अनैतिकता का वातावरण कम होता चला जायेगा।

हर माध्यमिक शाला में पाठ्य-पुस्तक कक्ष हो तथा यह लम्बे समय तक खुला रहे ताकि विद्यार्थी वहां पर बैठकर उन पुस्तकों को पढ़ सके। इससे विद्यार्थियों को जो कि गृह पर शान्ति से बैठकर पढ़ने की जगह एवं पुस्तकें न होने के कारण सड़कों पर रहते हैं उससे अनैतिकता का वातावरण बनता है वह समाप्त हो जायेगा।

अध्यापक को जब अपना ज्ञान बढाने के लिए सही पुस्तकें मिलने लगे तो वह प्रश्नोत्तर पुस्तकों की ओर कम जायेगा तथा उसी की नकल करने में विद्यार्थी भी पाठ्य-पुस्तकों के संदर्भ की की पुस्तकें पढ़ेगे। अतः शिक्षा विभाग अध्यापकों के लिए एक अच्छा पुस्तकालय कायम करें। उपरोक्त कथन के लिए यदि ग्रीष्मावकाश के समय विद्यार्थियों को पुस्तकें दी जायं तथा पढने की सुविधा मिल जाय तो मैं सोचता हूँ कि विद्यार्थी को काफी हद तक अनैतिकता से बचा सकेंगे। ग्रीष्मकाल में उन्हें यदि स्कूल या कालेज से ज्ञान की पुस्तकें मिल जाय तो वे अश्लील, जासूसी तथा गन्दे साहित्य से बच जायेंगे।

यदि स्कूल-काल में विद्यार्थी को पढने की ओर लगा दिया जाय तथा उनकी अच्छी पुस्तकों को पढ़ने की रूचि को प्रोत्साहन दें तो राष्ट्र उनके सद्कार्यों पर गर्व करेगा जिन्हें इस भारत मां की कोख में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ऐसे विद्यार्थी को वर्तमान राजनीतिज्ञ भी गलत रास्ता बताने में असफल रहेगा। क्योंकि उसके पास स्वयं का ज्ञान है तो वह बाहरी ज्ञान को बिना तर्क के मानने को तैयार न होगा। कुछ लोगों से बात-चीत पर यह दृष्टि-गोचर हुआ कि सरकार यह व्यय बर्दास्त नहीं कर सकती। लेकिन मैं यह मानने तो तैयार नहीं हूँ। आज समस्या यह नहीं है कि शिक्षित हो किन्तु शिक्षित को शिक्षित बनाए रखना अत्यधिक आवश्यक है। यदि सरकार ने इस ओर ध्यान न दिया तो शिक्षा का स्तर तो गिर ही रहा है, छात्र असन्तोष बढ़ेगा क्योंकि अधूरे ज्ञान प्राप्त-शुदा विद्यार्थी क्या कार्य करेंगे। अभी उदाहरण के तौर पर कुछ तृतीय वर्ष विज्ञान उत्तीर्ण विद्यार्थियों ने एम० काम कर लिया एवं उसमें उन्होंने अच्छे अंक प्राप्त किए। उन्हें जब महाविद्यालयों में नियुक्ति दी गई तो वाणिज्य का अधूरा ज्ञान उन्हें ले बैठा। वे पढाने में असफल रहे तथा विद्यार्थियों का असन्तोष व्यापक रहा। अगर आरम्भ से ही पुस्तकालय में पुस्तक मिलती तो शायद वे प्राध्यापक विज्ञान के अतिरिक्त आरम्भ से ही वाणिज्य लेते एवं अपनी योग्यता इसी में बनाते।

आज के युग में विद्यार्थियों में असन्तोष का दोष शिक्षा-शास्त्रियों तथा पुस्तकालय दोनों पर ही है । यदि शिक्षा शास्त्री पस्तकों को खरीदने हेतु पैसा व्यय कर एवं उन्हें विद्यार्थियों को पढ़ने का शौक बढ़ाने में उपयोग करें तो अधिक बेहतर रहेगा । जब हम शिक्षा पर इतना व्यय कर रहे हैं । यदि पुस्तकों के खोने अथवा फटने पर उदारता का वर्ताव करें तो मैं समझता हूं कहीं अधिक श्रेष्ठ होगा । यदि छात्रों की अनुशासनहीनता को समाप्त करना है तो हमें इस ओर ठोस कदम उठाना होगा ।

पुस्तकालय की समृद्धि एवं सुव्यवस्था, छात्रों की अनुशासन-हीनता की बाढ़ को रोकने में सबसे अधिक प्रबल अवरोध है, इसमें कोई संदेह नहीं है ।

साहित्य जनता के समीप आए

संसार की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं में मनुष्य का इतना ध्यान खिच चुका है कि साहित्य की ओर देखने की कुछ फुर्सत ही नहीं । पिछले युगों में साहित्य--उच्चकोटि का साहित्य--विशुद्ध साहित्य माना जाता था जो सब समय समान मूल्य रख सके । इस प्रकार का साहित्य स्वाभावतया जीवन के समकालीन क्रिया-क्षेत्रों से दूर जा पड़ता है । साहित्य को जनता के सजीव संपर्क में लाने के लिए उन विषयों से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ेगा जो जनता के समीप हैं ।

अंग्रेजों में एक कहावत है कि अगर पहाड़ मुहम्मद के पास नहीं आता तो मुहम्मद को पहाड़ के पास जाना चाहिए । पहाड़ की जगह खाई चाहूंगा : साहित्य को नई खाइयों में झांकना, झुकना है जिसमें मानवता अपने जीवन की समस्याओं का हल खोजती हुई भटक रही है ।

साहित्य के लिए यह नया काम है । वह बहुत समय तक आकाशगामी रहा है । साहित्य को अपनी व्यापकता सिद्ध करने का आज अवसर है । अथवा साहित्य समाज की धड़कनों को खोकर निर्जीव, निष्प्राण, नकली हो जाएगा ।

—बच्चन

विद्यालय पुस्तकालय संगम

हिम्मत सनाढ्य हिमकर नेगी

विद्यालय पुस्तकाध्यक्ष अपने सीमित क्षेत्र में सीमित रहते हुए कार्य करते हैं। उन्हें इस संकुचित क्षेत्र से बाहर निकलने का साहस यदा कदा ही होता है। विद्यालय पुस्तकालय की कार्यविधि और कर्मचारियों की संख्या के कारण कार्याधिकता में उलझा विद्यालय का पुस्तकाध्यक्ष कठिनता से ही देख पाता है कि उसके साथी किन परिस्थितियों में किस कार्यविधि से कार्य करते हैं। साथ ही वह अपनी व्यवहारिक कठिनाइयों में इतना अधिक उलझ जाता है कि उसके निकट के व दूर के अन्य पुस्तकाध्यक्ष उन कठिनाइयों को कैसे हल कर रहे हैं इसका ज्ञान नहीं होता। न वह इन कठिनाइयों को संकुचितता के कारण अपने साथियों के बीच रखकर उनके हल करने का साहस ही कर पाता है। और यदि उसने साहस भी किया तो साथी पुस्तकाध्यक्ष अपनी संकुचितता और अल्पज्ञता के कारण उसे सही हल देने में समर्थ ही हो पाते हैं।

इन सब व्यवहारिक कठिनाइयों के हल के प्रति जिज्ञासु रहते हुए भी वह अपना आत्म-विश्लेषण न करने के कारण अपने पड़ौसी पुस्तकाध्यक्ष के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता जबकि दोनों ही समान कठिनाइयों को हल करने के लिये समानान्तर बिन्दुओं पर चलते रहते हैं। यदि वह आत्मनिरीक्षण करे और सोचे कि मैं भी अन्य पड़ौसी पुस्तकाध्यक्षों का साथी हूँ और हम आपस में मिल बैठकर अपनी समस्याओं पर विचार करने व उन्हें हल करने का प्रयत्न करें तो सम्भवत: कोई मार्ग निकल ही आयेगा।

हमारा पड़ौसी पुस्तकाध्यक्ष क्या सोचता है, क्या समझता हैं किस प्रकार काम करता है यह सूचना निष्परियोजन नहीं होगी। किन्तु इस सब के लिये एक पृष्ठ-भूमि एक आधारभूत भावना का निर्माण करना होगा, और इसके लिये एक मंच स्थापित करना होगा जो सम्पुट से निकल कर एक वृहत दायरे में समष्ठी रुप से पुस्तकालय की समस्याओं पर विचार कर सके। यह मंच स्टेडीसर्किल, लाइब्रेरियन्स फार्म या पुस्तकालय संगम किसी भी नाम से निर्मित किया जा सकता हैं। सब का अर्थ और प्रयोजन एक ही दिशा और लक्ष्य की ओर आह्वान करता है।

मानवीय समाज का वास्तविक प्रवर्तन सहयोग है। अनेक स्थानों तथा समय में मानवीय अनुभवों के आधार पर सहयोग के बिन्दु निर्धारित किए जाते हैं। विद्यालय पुस्तकालय संगम इन्हीं आधार भूत सिद्धांतों का एक नामकरण है। और उनके नामकरण है। संगम के निर्माण के पूर्व हमें विद्यालय पुस्तकालयों की वर्तमान परिस्थितियों का विहग अवलोकन करें तो ज्ञात होगा कि राजस्थान में कुछ नगरीय विद्यालयों के पुस्तकालयों के अतिरिक्त सभी पुस्तकालयों की स्थिति समान है। न विद्यालयों में पुस्तकाध्यक्षों के पद हैं न कर्मचारी। कहीं मन्त्रालय कर्मचारियों के द्वारा तो कहीं पर तृतीय वेतन श्रृंखला के अध्यापकों के द्वारा यह संचालित होते हैं। जिन्हें पुस्त-

कालय की वैज्ञानिक कार्य विधि व पद्धति का ज्ञान नही होता । इस प्रकार के पुस्तकालयों को एक समूह में एकत्रित कर वैज्ञानिक पद्धति के ज्ञान वाले पुस्तकाध्यक्षों के ज्ञान व अनुभव का लाभ उठाकर उन्नत करने की दिशा में प्रगति करने की एक सुगम व मितव्ययी पद्धति की योजना विद्यालय पुस्तकालय संगम है ।

उद्देश्यः—

विद्यालय पुस्तकालय संगम का उद्देश्य मूल रूप से मितव्ययता है । छात्रों की बढ़ती हुई संख्या के कारण विद्यालयों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है, व इसीके अनुरूप स्वत. ही पुस्तकालय बढ़ रहे हैं । इन बढ़ते हुए विद्यालय पुस्तकालयों की व्यवस्था, पठन सामग्री व उपस्कर आदि पर इसी अनुपात से व्यय बढ़ रहा है । संगम के द्वारा आंशिक रूप से इस व्यय में मितव्ययता लाई जा सकती है । दूसरा उद्देश्य संगम का सहयोग की भावना जागृत कर एक दूसरे को सहयोग देकर विद्यालय पुस्तकालयों के बढ़ते हुए कार्य भार को हल्का किया जाना भी है । इससे समान उद्देश्य से कार्यरत पुस्तकालय कर्मचारियों में भाईचारे की भावना का उदय होगा व एक स्थान पर पास-पास चल रहे पुस्तकालय जो वर्तमान में एक-दूसरे के प्रति उदासीन है निकटता का अनुभव करेंगे उनमें एकाकार होने की भावना का भी प्रस्फुटन होगा ।

संगम का एक उद्देश्य और भी है । अनुभवी व प्रशिक्षित पुस्तकाध्यक्षों की वर्तमान में कमी है । इस विद्यालय संगम के द्वारा इसका भी आंशिक हल निकल आएगा क्योंकि संगम के विद्यालयों के समूह में प्रशिक्षित व अनुभवी पुस्तकाध्यक्षों के प्रशिक्षण व अनुभव का लाभ जो एकांगी एक ही विद्यालय तक केन्द्रित है फैल कर बड़े क्षेत्र में उपयोग में आने लगेगा । संगम के द्वारा इन पुस्तकालयों के संगठन, कार्य प्रणाली, तकनकी कार्य आदि सभी में सरलता व एकरूपता की वृद्धि होगी । समान उद्देश्य व कार्यों के लिए संगठित शक्ति से कार्य करने से अधिक उपयोगी, सुचारू व सुसंगठित रूप उभरेगा ।

कार्यकलापः—

विद्यालय पुस्तकालय संगम के लिए दो कार्यकारी रूप उभर कर आते हैं । एक केन्द्रिय विद्यालय पुस्तकालय की स्थापना कर प्रशासनिक डण्डे के द्वारा इन्हें संगठित किया जाए दूसरा स्वेच्छा से प्रशासनिक सहयोग को माध्यम बनाकर आस-पास के विद्यालयों के समूह को समान उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्य करने की भावना के द्वारा गठित किया जावे । मेरे विचार से दूसरा रूप ही अधिक प्रभावशाली व व्यवहारिक होगा क्योंकि इसमें दबाव कम और लोक कल्याण की भावना अधिक है । इसके लिए सर्वप्रथम निकटतम चल रहे विद्यालयों को दस-दस के समूह में विभाजित कर इनका एक-एक संगम गठित किया जावे । जो निम्न कार्यक्रमों द्वारा संगम के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयत्न करें ।

1—संगोष्ठी:—इन भिन्न-भिन्न समूह के पुस्तकाध्यक्षों की व आवश्यकता हो तो इनके प्रशासनिक अधिकारियों की संगोष्ठी सुविधानुसार प्रति दूसरे मास या तीसरे मास आयोजित की जावेंगी । जिससे यह एक-दूसरे के सामने अपने कार्यों को रख उसका विश्लेषण कर सके व अपनी कठिनाईयों को एक-दूसरे के सामने रखकर एक-दूसरे के अनुभव का लाभ उठाकर उनके हल ढूंढ सके अथवा सामूहिक रूप से उन्हें हल करने का प्रयत्न कर सकें ।

2—**कार्य सहयोग :**—संगम के विद्यालयों के पुस्तकालयों को उन्नत करने के लिए संगम के सभी विद्यालयों के कार्यकर्ता मिलकर बारी-बारी से एक-एक विद्यालय की व्यवस्था, तकनकी कार्य व अन्य कार्यों को पूरा करेंगे जो एकाकी विद्यालय का पुस्तकाध्यक्ष पूरा करने मे असमर्थ है अथवा अधिक समय लगने की संभावना है।

3—**पुस्तक सूचियों का आदान-प्रदान:**—सभी विद्यालय अपनी नवीन पुस्तकों की सूचि संगम के सभी सदस्य विद्यालयों को देंगे। इससे नई पुस्तकों की एक संकलित सूचि संगम के प्रत्येक विद्यालय में उपलब्ध हो सकेंगी। इसी प्रकार पुस्तकालय संग्रह में उपलब्ध विशेष उपयोगी पुस्तकों की विषयवार सूचि एक दूसरे विद्यालयों को परिवर्तित करेंगे। यदि संभव हो तो संगम इनको एक केन्द्रिय सूची का रूप भी दे सकता है।

4—**पुस्तक चयन व अन्तर पुस्तकालय पुस्तक परिवर्तन :**—संगम के विद्यालय पाठ्य पुस्तकों व प्रतिदिन काम में आने वाली पुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकों की एक संयुक्त सूची बनाकर यह निश्चय करें कि कौन सी पुस्तक कौन सा विद्यालय क्रय करे ताकि एक ही पुस्तक की आवश्यकता से अधिक प्रतियां संगम के विद्यालयों में क्रय नहीं की जावें वरन परिवर्तन के द्वारा इनका उपयोग किया जा सकें। इस प्रकार उपलब्ध प्रावधान से ही अधिक पुस्तकें-पुस्तकालयों में आ सकेंगी।

5—**समान क्रय नीति :**—संगम अपने क्षेत्र के विद्यालयों के पुस्तकालयों के लिए एक समान क्रय नीति निर्धारित करेगा व उसके अनुसार संयुक्त रूप से पुस्तक क्रय करेगा। इससे समय के साथ-साथ व्यय मे भी मितव्ययता होगी व कार्यभार भी हल्का होगा।

6—**समान तकनिकी कार्य:**—तकनकी कार्यों की सरलतम पद्धति निर्धारित कर समान रूप से सभी सदस्य पुस्तकालयों में उसका उपयोग करेंगे। इससे तकनकी कार्यों वर्गीकरण, सूचिकरण आदि में एकरूपता आ सकेंगी व एक दूसरे के अनुभवों से उसे सरल बनाने की दिशा में प्रगति होगी।

इस प्रकार विद्यालय पुस्तकालय संगम के द्वारा सदस्य पुस्तकालय एक दूसरे के अनुभवों का लाभ उठाकर समान प्रणाली से सामूहिक सहयोग से व्यवस्थित व सुसंगठित हो सकेंगे तथा सभी सदस्य पुस्तकालयों में एकरूपता आ सकेंगी। इससे पुस्तकालय सेवाएं अधिक उपयोगी तो बनेगी ही साथ भी व्यय में भी मितव्ययता आएगी। पाठ्न सामग्री पर होने वाले दोहरे व्यय मे भी आंशिक कमी होगी व भविष्य मे केन्द्रिय आदर्श पुस्तकालय की स्थापना का भी मार्ग प्रशस्त होगा। इस योजना से परमपरागत रूढ़ी-ग्रस्त कार्यप्रणाली में परिवर्तन होकर अधिक उपयोगी रूप उभरेगा जो सहकार के भावना को प्रोत्साहन देगा। प्रजातन्त्र का दूसरा रूप मिलजुल कर शासन व साधनों का विकास है। सहयोग में शक्ति है व अकेला साधन सम्पन्न भी असहाय है। ज्ञान के क्षेत्र का मूल ही सहयोग पर आधारित है अकेला व्यक्ति समूह से निश्चित रूप से निर्बल तथा ज्ञान में पीछे है। विद्यालय पुस्तकालय संगम प्रजातन्त्र के इस युग में निश्चित ही एक अनूठा प्रयोग है। इसका भविष्य उज्वल है।

———

पुस्तकालय विज्ञान : विज्ञान से दर्शन की ओर

(छाजूसिंह चांपावत)

सामाजिक विज्ञानों की दुनिया में दूसरे विश्व-युद्ध के बाद ज्ञान का जो क्रान्तिकारी विस्फोट हुआ उसके फलस्वरूप सामाजिक अध्ययन शास्त्र नये व्यक्तित्व ग्रहण कर रहे हैं। एक समय था जब सभी ज्ञान—प्राकृतिक और सामाजिक—कला के स्तर पर विशिष्ठ प्रकार के ज्ञान माने जाते थे। उनके अपने दर्शन, सिद्धान्त और बौद्धिक-स्तर अपने आप में पूर्ण थे, और यह माना जाता था कि किसी भी ज्ञान का दर्शन उस ज्ञान की सीमा रेखा तथा कार्यकारी सिद्धान्तों पर समाप्त हो जाता है। प्राकृतिक विज्ञानों में जब बीसवीं शताब्दी में अभूतपूर्व प्रगति हुई तो सामाजिक विज्ञानों की दुनियां इतनी पुरातन लगने लगी कि उन्हें प्राकृतिक विज्ञानों के समकक्ष लाने की चेष्टाएं शुरु हुई। राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि के क्षेत्रों में विज्ञान नई-नई अध्ययन विधियाँ और वैचारिक प्रत्यय लेकर सामने आया और सामाजिक विज्ञानों में वैज्ञानीकरण बढ़ा। पुस्तकालय विज्ञान भी इसी प्रकार का एक सामाजिक-विज्ञान है, जिसने ज्ञान के विस्फोट एवं सामाजिक विज्ञानों की बढ़ती हुई वैज्ञानिकता के परिवेश में अपना एक स्वतन्त्र दर्शन विकसित करने की गत दशकों में चेष्टा की है। सामाजिक-परिवर्तन जितना द्रुतगति से आने लगा है, उतनी ही सभ्य-समाज में ज्ञान की भूमिका विकसित हुई है और इस ज्ञान की भूमिका को प्रखर करने में पुस्तकालय–विज्ञान का अपना योगदान रहा है।

वैसे पुस्तकालय विज्ञान का दर्शन एक विरोधाभासी वक्तव्य सा लगता है यही कारण है कि इस प्रश्न पर विद्वानों के विभिन्न मत हैं। रेमान्ड इरविन (Raymond Irwin) के कथनानुसार पुस्तकालय विज्ञान का कोई दर्शन नहीं है, और न ही उसकी कोई आवश्यकता है, क्योंकि पुस्तकालय विज्ञान, उनके मतानुसार, व्यावहारिक विज्ञान है तथा उसमें सैद्धान्तिकता जैसी कोई चीज ही नहीं है। इस विचारधारा के विपरीत ए० ब्रोडफील्ड (A. Broadfield) का कहना है कि दर्शन की खोज करना दार्शनिक का काम है। यदि पुस्तकालयाध्यक्ष को पुस्तकालयाध्यक्षता का दर्शन खोजना है तो उसे स्वयं दार्शनिक होना पड़ेगा तथा अपने दर्शन को स्वयं ही खोजना व मूर्त रूप देना होगा। जो भी हो, सैद्धान्तिक रूप से यह सही है कि वैज्ञानिकता की पृष्ठ भूमि में एक दार्शनिक व्यवस्था सदैव विद्यमान रहती है। पुस्तकालय विज्ञान, जिसे आज विज्ञान माने जाने में अधिक विवाद नही है, शैक्षणिक दुनियां में दर्शन के अभाव से ग्रसित रहा है। यद्यपि मुद्रण के आविष्कार से लेकर आज तक प्रकाशित–शब्दों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ी है, लेकिन इन मुद्रित शब्दों की सुरक्षा, वितरण, संयोजन एवं वर्गीकरण के क्षेत्र में बहुत लम्बे समय तक इसलिए प्रगति नहीं हो सकी कि पुस्तकालय-विज्ञान अपना दर्शन विकसित नहीं कर सका। दर्शन से यहां तात्पर्य उस वैचारिक भावभूमि से है जो किसी भी अध्ययन–शास्त्र की दिशाएं निरूपित करता है और उसे कार्यकारी उपयोगिता प्रदान करता है। जिन विषयों में 'प्रोफेशनलिज्म्' एक स्तर को छू लेता है वहां दर्शन की विद्यमानता स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक ज्ञान का दर्शन, समाजशास्त्रीय ज्ञान का दर्शन, चिकित्सा ज्ञान का दर्शन

यहां तक कि सैनिक ज्ञान तक का दर्शन हो सकता है । किन्तु पुस्तकालय–विज्ञान का दर्शन इसलिए विकसित नहीं हो सका कि पुस्तकालय कर्मियों का कार्य समाज में एक व्यावसायिक स्वीकृति नहीं पा सका ।

यह कहना न होगा कि गत दशकों में जब सभ्य समाज में ज्ञान का स्तर और महत्त्व व्यापक रूप से स्वीकारा जाने लगा तो पुस्तकालय विज्ञान के दर्शन की आवश्यकता अनुभव हुई । दूसरे शब्दों में यह आवश्यकता उसकी उपयोगिता थी, और जैसे-जैसे उपयोगिता बढ़ती गई, आवश्यकता भी उसी रूप में गम्भीर बनती गई । पुस्तकालय की भूमिका केवल शिक्षा जगत के लिए ही नहीं बल्कि जन-साधारण तथा सभी वर्गों के लोगों के लिए अनुभव की जाने लगी । पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संगृहीत करने की तिजोरियां न रह कर, ज्ञान के ऐसे सजीव केन्द्र बनने लगे जो समाज को चेतना तथा संस्कृति के मूल्यों की रक्षा करने की दिशा में सजीव स्तम्भ हो सकते थे । ज्ञान के विकास ने उनका विस्तार किया । तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति ने उन्हें आकर्षक और स्थायी रूप दिया, और 'स्वान्तः सुखाय' ज्ञानवर्द्धन से कहीं अधिक समाज को मोड़ने-बदलने और प्रगति की ओर उन्मुख करने में उनकी भूमिका निखर कर सामने आई । इस उपयोगिता ने इस आवश्यकता को स्पष्ट किया कि पुस्तकालय-प्रबन्ध की तकनीक आधुनिक और वैज्ञानिक बनाई जाये, और इस वैज्ञानिकता के लिये यह आवश्यक हुआ कि पुस्तकालय ज्ञान पर मौलिक और सैद्धान्तिक चिन्तन किया जाय । एक अध्ययन-शास्त्र के रूप में इसकी अवतारणाएं निश्चित की जायें, मान्यताएं प्रतिपादित की जाएं और ज्ञान का एक ऐसा व्यवस्थित संगठन खड़ा किया जाये, जो सैद्धान्तिक भी हो और व्यावहारिक भी । इस प्रैक्टीकल और सोशियल फिलासफी के लिये आगमनात्मक (Inductive) और निगमनात्मक (deductive) प्रणालियों की आवश्यकतायें उत्पन्न हुई और इस प्रकार एक विकासोन्मुख विज्ञान बनने के लिये एक उच्च स्तरीय दर्शन की खोज प्रारम्भ हुई ।

दूसरे विश्व-युद्ध के बाद यूरोप और विशेषकर अमेरिका के देशों में उनके विश्वविद्यालय अपने पुस्तकालयों को सभ्यता और संस्कृति की सर्वोत्तम उपलब्धि मानकर आगे बढ़ने लगे । उन्होंने अनुभव किया कि मौलिक ज्ञान कक्षा में न होकर पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं में होता है । फलस्वरूप शोध की प्रवृत्तियां जागी, जिसने पुस्तकालय की उपयोगिता और भूमिका में एक नया अध्याय जोड़ा । समाज और विश्वविद्यालयों ने अनुभव किया कि पुस्तकालय ज्ञान को भी उसी तरह खोजा, संचित और विकसित किया जाय, जिस तरह कोई भी उपयोगी ज्ञान मानव समाज में हो सकता है । फिर केवल उपयोगिता के लिये ही नहीं, अपितु ज्ञान के लिए भी पुस्तकालय-ज्ञान आवश्यक हो गया । यूरोपीय और अमेरिकन विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय-विज्ञान के विभाग खुले और नये-नये पुस्तकालय-शास्त्री सामने आये । स्वर्गीय डा० एस० आर० रंगनाथन् (भारत), डब्ल्यू०सी० बर्विक सेयर्स (इंगलैण्ड) व हेनरी एलविन ब्लिस (अमेरिका) के अतिरिक्त गत दो दशकों में जिन प्रमुख पुस्तकालय-शास्त्रियों ने पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में अपनी शोधों द्वारा स्पृहणीय कार्य किया है वे हैं—डो० जे० फास्केट, बी०सी० विकरी ई०जे० कोट्स जे० मिल्स् (क्लासीफिकेशन); विलियम वार्नर बिशप, मारगरेट मान, रुडोल्फ एन० जेसनैस (कैटेलागिंग); हैल्से विलियम विल्सन, रैल्फ आर० शा०, पाल ओटलेट, अरुन्डेल एसडेल व

राबर्ट लेविस कालिजन (बिबलियोग्राफी, डाकूमेन्टेशन एण्ड रेफ़रेन्स मेटिरियल्स); मोरिस एफ ट्यूबर व लुइस आर० विलियम (टेकनिकल सर्विसेज) । निश्चय ही इन विद्वानों की शोधों ने पुस्तकालय-विज्ञान के दर्शन को स्पष्टता प्रदान की है ।

दर्शन की दृष्टि से पुस्तकालय-विज्ञान का दर्शन, इसके लक्ष्य, उद्देश्य और कार्यों का स्पष्टीकरण चाहता है । अतः पुस्तकालय-विज्ञान के दार्शनिकों ने इन लक्ष्यों और उद्देश्यों को निम्न रूप में प्रस्तुत किया है :—

(१) पुस्तकालय-विज्ञान का लक्ष्य और उद्देश्य ज्ञान के धरातल को ऊंचा करना है ।

(२) ज्ञान को सामाजिक परिपेक्ष में प्रस्तुत कर सामाजिक परिवर्तन की दिशा को निर्दिष्ट करना है ।

(३) ज्ञान को वैज्ञानिक विधियों से संयोजित एवं सुरक्षित कर भावी पीढ़ियों तक उसे पहुंचाना है ।

(४) वैज्ञानिकरण के उपायों का सहारा लें, बढ़ते हुए ज्ञान-भण्डार को "कैप्सूल" कर शोध, अनुसंधान तथा भावी ज्ञान की प्रगति की दृष्टि से प्रयुक्त करना है ।

(५) जन-साधारण को सामान्य-सूचनायें आदि उपलब्ध कराने की दृष्टि से सामाजिक ज्ञान और सामान्य ज्ञान को वर्द्धित कर शिक्षा की निरन्तरता को जीवित रखना है ।

ये सब उद्देश्य सदा से थे, किन्तु इनकी स्वीकृति एवं पुनरावृत्ति पुस्तकालय दर्शन को व्यवस्था देती है । इन लक्ष्यों से पुस्तकालय-विज्ञान का कार्य क्षेत्र व्यापक बना और उसके कार्य केवल शैक्षणिक न रहकर बौद्धिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बन गये । यह निर्विवाद है कि पुस्तकालय के प्रमुख कार्य शैक्षणिक और बौद्धिक ही हैं । किन्तु शैक्षणिकता और बौद्धिकता कोई सामाजिक मूल्य-निर्पेक्ष वस्तु नहीं है । सोवियत रूस और चीन ने अपने ज्ञान के सामाजिक उपयोग से साम्यवादी व्यवस्थाओं को सुदृढ़ किया है । पश्चिम के पुस्तकालयों ने जनतन्त्र और उदारतावाद के मूल्यों को आशातीत योगदान दिया है । आज के पुस्तकालय केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं और न ही उनकी भूमिका इतनी संकीर्ण है कि वहां पर बैठकर ज्ञान को ज्ञान के लिये खोजा जाये । ज्ञान का एक सामाजिक पहलू है । अतः पुस्तकालय सामाजिक संस्थायें हैं । वे समाज की अन्य प्रक्रियाओं से जैविक रूप में सम्बद्ध है और क्रान्ति, आधुनिकीकरण, मूल्य-परिवर्तन, वर्ग-संघर्ष राजनीतिक-विस्फोट तथा संस्थागत सुधारों के प्रेरणा स्रोत हैं । अतः पुस्तकालय-विज्ञान का दर्शन जब व्यापक लक्ष्यों की ओर संकेत करता है, तो सामाजिक जीवन का व्यापक कार्यक्षेत्र पुस्तकालय वैज्ञानिक की कर्मभूमि बन उसके सामने आ खड़ा होता है । वह जितना अच्छा वैज्ञानिक है, उतनी ही गहराई से अपने दर्शन के प्रति प्रतिबद्ध हो सकता है । उसका दर्शन उसके अध्ययन शास्त्र को सामजिक भावभूमि में इस गहराई से आबद्ध करता है कि वह केवल एक प्रशासक या शिक्षक मात्र न होकर सामाजिक ज्ञान का संरक्षणकर्ता बन जाता है ।

पुस्तकालय विज्ञान का क्षेत्र सामाजिक विज्ञानों की दुनियां में एक नई उपलब्धि है । वैसे प्रत्येक सामाजिक विज्ञान एक कला होता है । कला से तात्पर्य है कि वह एक ऐसा व्यावहारिक और

उपयोगी ज्ञान होता है जिसकी अपनी कुछ विशिष्ठता होती है। एक कलाकार अपने दूसरे सहयोगी से भिन्न एवं विशिष्ठ होता है। कला की वैयक्तिकता उसके 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' रूप को सृजनात्मक बनाती है। इस दृष्टि से तो पुस्तकालय-विज्ञान भी एक कला है जिसके माध्यम से 'सत्य' की चिरन्तन खोज जारी है। समाज के 'शिव' अथवा कल्याण की वांछा मूर्तिमान होती है, और मानव सभ्यता, संस्कृति और समाज को सौन्दर्यात्मक मूल्य मिलते हैं। कलात्मक ज्ञान की विशिष्ठता, जो कलाकार को अनूठापन देती है, पुस्तकालय विज्ञान के साथ भी जुड़ी है। किन्तु कलात्मक पुस्तकालय-ज्ञान समाज की उतनी व्यापक सेवा नहीं कर सकता, जितनी कि पुस्तकालय-विज्ञान कर सकता है। आज हमारे पास तथ्यों को संगृहीत करने के साधन और विधियां हैं। अतः पुस्तकालय ज्ञान को एक विशेष प्रकार का ज्ञान बनाया जा सकता है, और साधारणीकृत नियमों के माध्यम से एक 'व्यवस्थित ज्ञान भण्डार' (Body of knowledge) जन्म ले सकता है। अत: पुस्तकालय ज्ञान की दुनियां में जैसे-जैसे नये आयाम आ रहे हैं और प्रगति का मार्ग प्रचण्डता से खुल रहा है, वैसे वैसे ही हम पुस्तकालय ज्ञान की कला से पुस्तकालय-विज्ञान के स्तर तक पहुंच गये हैं। स्वर्गीय डा० एस० आर० रंगनाथन् के पुस्तकालय विज्ञान के पांच सिद्धान्त (Five Laws of Lihgrary Science) पुस्तकालय-विज्ञान का व्यावहारिक दर्शन कहा जा सकता है। पुस्तकालय–सेवा की विधियों में आने वाले विभिन्न चरण यथा पुस्तक-वर्गीकरण, पुस्तक सूचीकरण, इन्डेक्सिग, डाक्यूमेन्टेशन सन्दर्भ सेवा आदि 'व्यावसायिक-ज्ञान' के प्रतीक हैं। यद्यपि पुस्तकाध्यक्ष का यह सारा आचरण 'रूटीन' कहा जा सकता है, किन्तु इस क्षेत्र में दक्षता तभी बढ़ सकती है, जबकि व्यावहारिक ज्ञान, वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से पूर्णता की ओर उन्मुख हो। यह वैज्ञानिकता अपने आप में स्तुत्य है किन्तु इसकी तकनीकें हम जितनी अधिक पैनी कर सकेंगे, ज्ञान-प्राप्ति, ज्ञान-संयोजन और ज्ञान-विकीर्ण की दिशाएं उतनी ही प्रखर बन सकेंगी। पर कोई भी विज्ञान साधन हो सकता है, साध्य नहीं। चांद में जाने वाले खगोल शास्त्री चांद में जाने की विधियां बतला सकते हैं, पर चांद पर जाना चाहिये या नहीं यह एक दार्शनिक प्रश्न चिन्ह है, जहां ज्ञान बुद्धि में बदल जाता है (Knowledge becomes wisdom) और विज्ञान का ज्ञान (Philosophy of Science) या 'मैटाथ्योरी' (Theory of Theory) जन्म लेती है। पुस्तकालय-ज्ञान एक अध्ययन शास्त्र के रूप में 'कला' से 'विज्ञान' तक आ गया है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इसे विज्ञान से दर्शन के स्तर तक पहुंचा दें।

एक अध्ययन

राजस्थान में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा

चन्द्रप्रकाश गुप्ता

शिक्षा के विकास एवं विस्तार के साथ साथ सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं का महत्व बढ़ता ही जा रहा है। सार्वजनिक पुस्तकालय सामान्य शिक्षा के अनिवार्य अंग, प्रौढ़ शिक्षा के पोषक, अनवरत शिक्षा की आधार शिला, समाज शिक्षा के सहायक एवं पत्राचार शिक्षा के पूरक होते हैं। जन शिक्षा व जन जागृति के प्रमुख एवं प्रभावशाली माध्यम होने के कारण इन्हें 'जनतंत्र के प्रशिक्षण केन्द्र', 'जनता के विश्वविद्यालय', "सांस्कृतिक धरोहर के रक्षक" आदि नामों से सम्बोधित किया जाता हैं। इनका कार्य व्यक्ति को बाल्यकाल से मृत्यु तक विज्ञ, बुद्धिमान विवेकी एवं व्यावहारिक बनाना होता है। विशिष्ट पाठकों यथा बालक, बीमार, अन्धे आदि को विशिष्ट सामग्री प्रदान करना इसका दायित्व है। उद्योग तथा व्यापार के विकास में इनका विशेष योगदान होता है। राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास के ये सशक्त माध्यम होते हैं। देश में व्याप्त दिशा विहीनता एवं युवा आक्रोश का एक प्रमुख कारण यहाँ सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं का पर्याप्त विस्तार नहीं होना है।

राजस्थान के निर्माण के पूर्व इसकी प्रत्येक प्रमुख रियासतों के अपने सार्वजनिक पुस्तकालय थे। इनमें जयपुर रियासत में सबसे अधिक सार्वजनिक पुस्तकालय व वाचनालय स्थापित थे। राज्य परिवार का इन पुस्तकालयों से विशेष सम्बंध एवं लगाव होता था। प्रमुख पुस्तकालयों का प्रबन्ध उच्च अधिकारियों एवं शिक्षाविदों की समिति के माध्यम से राज्य के सर्वोच्च अधिकारी की देखरेख में होता था। राजस्थान के निर्माण के बाद सन् 1956 में राज्य द्वारा संचालित सभी सार्वजनिक पुस्तकालयों का पुनर्गठन किया गया तथा इनकी देखरेख हेतु शिक्षा विभाग के अन्तर्गत उप निदेशक, समाज शिक्षा का नवीन पद सर्जित किया गया। वर्तमान समय में उप निदेशक, समाज शिक्षा विभाग, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक के अधीन निरीक्षकों/प्रधानाध्यापकों के माध्यम से इन पुस्तकालयों पर नियंत्रण करते हैं। पुस्तकालय व्यवस्था हेतु स्थानीय स्तर पर स्थाई परामर्शदात्री समितियों का भी गठन किया हुआ है। शिक्षा विभाग के अतिरिक्त पंचायत एवं विकास विभाग, स्वायत शासन विभाग भी अपने-अपने सार्वजनिक पुस्तकालय चला रहे हैं। सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा संचालित एवं निजी पुस्तकालयों की भी राजस्थान में संख्या कम नहीं है। आइये, अध्ययन करें कि इन सभी प्रकार के सार्वजनिक पुस्तकालयों की क्या स्थिति है ?

1. राजकीय सार्वजनिक पुस्तकालय

शिक्षा विभाग के माध्यम से राज्य सरकार द्वारा संचालित सार्वजनिक पुस्तकालय निम्न स्तर में विभक्त हैं :—

(क) राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय :

राज्य पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सी .सी. भण्डारी के आधीन इस पुस्तकालय की विधिवत् स्थापना जयपुर में सन् 1959 में की गई थी। सन् 1962 में उप निदेशक, समाज शिक्षा के कार्यालय का बीकानेर में स्थानान्तरण हो जाने के कारण राज्य पुस्तकालयाध्यक्ष का भी बीकानेर स्थानान्तरण कर दिया गया तथा इस पुस्तकालय की देखरेख हेतु एक निम्न स्तर का नवीन पद (केन्द्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष) सर्जित कर इसे महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर (डिवीजनल पुस्तकालय) में स्थानान्तरित कर दिया गया। आज यह पुस्तकालय महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय के आधीन उसके संदर्भ कक्ष के रूप में पाठकों की सेवा कर रहा है। इसके लिए पुस्तकों के क्रय हेतु अलग से कोई धनराशि प्राप्त नहीं होने के कारण इसकी पुस्तकों की संख्या जो स्थानान्तरण के समय 1000 थी, में कोई वृद्धि नहीं हुई है।

राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय सार्वजनिक पुस्तकालय के ढाँचे में सर्वोच्च पुस्तकालय होता है तथा राज्य पुस्तकालयध्यक्ष इसके संचालन हेतु सीधा उत्तरदायी होता है। राज्य सरकार को इस पुस्तकालय के विकास हेतु राज्य पुस्तकालयाध्यक्ष (बीकानेर) और राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय (जयपुर) के मध्य व्याप्त दूरी को समाप्त कर अन्य राज्यों की तरह यहां भी इस पुस्तकालय के अन्तर्गत निम्न विभाग गठित करने चाहिए :—

(1) राज्य अन्तर पुस्तकालय आदान-प्रदान केन्द्र
(2) राज्य तकनिकी सेवा केन्द्र
(3) राज्य वाङ्मय सेवा केन्द्र
(4) राज्य मुद्रणाधिकार पुस्तकालय
(5) राज्य बाल पुस्तकालय
(6) राज्य अंधों के लिए पुस्तकालय
(7) राज्य संग्रीह पुस्तकालय
(8) राज्य स्तरीय अन्य पुस्तकालय सेवाएं।

(ख) डिवीजनल पुस्तकालय :

वर्तमान समय में राज्य में डिवीजनल पुस्तकालय, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर व कोटा में स्थित हैं। प्रथम चारों पुस्तकालय भूतपूर्व रियासतों के उच्च पुस्तकालय थे। राज्य परिवार व उच्च वर्ग का इन पर विशेष ध्यान रहने के कारण ये विदेशियों तक के लिए दर्शनीय स्थल ही नहीं, आकर्षक अध्ययन केन्द्र भी थे। डिवीजनल पुस्तकालय कोटा की स्थापना सन् 1960

में हुई है । पांचों पुस्तकालयों के अपने निजी भवन हैं लेकिन वर्तमान आवश्यकताओं एवं इसके कार्य क्षेत्रों को देखते हुए इनके विस्तार एवं आधुनिकीकरण की अत्यावश्यकता है । इनमें मुख्य रूप से मुख्य पुस्तकालय, चल पुस्तकालय, बाल पुस्तकालय, पत्र-पत्रिका विभाग, संदर्भ कक्ष, तकनिकी शाखा आदि विभागों का गठन किया हुआ है । जयपुर पुस्तकालय में शताब्दी पूर्व साहित्य कक्ष एवं श्रव्य द्रश्य शिक्षा कक्ष का भी अलग से गठन हो रहा है । प्रत्येक पुस्तकालय का बजट लगभग एक लाख से दो लाख के मध्य है तथा कर्मचारियों की संख्या 18 से 44 तक के मध्य है । ये पुस्तकालय प्रतिदिन 12 घन्टे खुलते हैं । इन पुस्तकालयों के आधीन बीकानेर में एक, जोधपुर में दो तथा जयपुर में 13 वाचनालय चल रहे हैं । प्रत्येक पुस्तकालय के आधीन उसके ग्रामीण क्षेत्र में 100 से 150 के मध्य चल पुस्तकालय धरोहर केन्द्र चल रहे हैं, जहां पुस्तकालय की जीप पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार पुस्तकों का विनिमय करती रहती है । पुस्तकालयाध्क्ष का पद राजपत्रित नहीं होना तथा पर्याप्त पठन सामग्री के क्रय हेतु धनाभाव इनकी प्रमुख समस्याएं हैं ।

(ग) जिला पुस्तकालय :

वर्तमान समय में राज्य के 26 जिलों में से 24 जिलों में जिला पुस्तकालय हैं । इनमें से 20 जिला पुस्तकालय जिला मुख्यालय पर स्थित हैं तथा जयपुर, जोधपुर, उदयपुर और बीकानेर में डिवीजनल पुस्तकालय होने के कारण इनके जिला पुस्तकालय क्रमशः किशनगढ़, बिलारा, नाथद्वारा और नोखा कस्बों में स्थित हैं । अजमेर और कोटा जिले के लिए जिला पुस्तकालयों की स्थापना होना अभी शेष है । राजस्थान निर्माण के समय जोधपुर और जैसलमेर एक ही जिले थे । जैसलमेर जिला अलग गठित होने पर जिला पुस्तकालय, कोटा को जैसलमेर स्थानान्तरित कर दिया गया तथा कोटा के प्रादेशिक पुस्तकालय को डिवीजनल पुस्तकालय बना दिया गया । पुस्तकालयों के पुर्नगठन मार्च 1956 के समय तक अजमेर रियासत राजस्थान में विलीन नहीं हुई थी । झालावाड़ शहर में जिला पुस्तकालय झालावाड़ व तहसील पुस्तकालय (श्री हरिश्चन्द्र पुस्तकालय, झालावाड़) दोनों पास पास स्थिति हैं । जिला पुस्तकालयों में मुख्य पुस्तकालय, वाचनालय तथा कुछ में बाल पुस्तकालय के विभाग गठित हैं । प्रत्येक पुस्तकालय प्रतिदिन 8 घन्टे (प्रातः 4 घन्टे एवं सायं 4 घन्टे) खुलते हैं । जिला पुस्तकालय भरतपुर (7) व जिला पुस्तकालय टोंक (5) को छोड़ कर शेष सभी जिला पुस्तकालयों में तीन कर्मचारियों (पुस्तकालयाध्यक्ष, कनिष्ठ लिपिक, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी) के पद स्वीकृत हैं । जिला पुस्तकालय का आयोजना भिन्न वार्षिक बजट 15 हजार से 25 हजार के मध्य होता है जिसमें से पठन सामग्री के क्रय हेतु केवल 1400)रु० (पुस्तकालय ग्रान्ट 700, रु. पुस्तकें पत्र-पत्रिकाएं खिलौने आदि 700रु.) प्रदान किए जाते हैं । 24 जिला पुस्तकालयों में से केवल 21 पुस्तकालयों के अपने निजी भवन हैं । पुस्तकालयों की अधिकतर सामग्री जीर्ण-शीर्ण है, उपस्कर व उपकरण पुराने, संख्या में कम तथा अनाकर्षक और कष्टदायी हैं । जिला स्तरीय पुस्तकालय और पाठकों को देखते हुए स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इन पुस्तकालयों की दयनीय दशा में सुधार करने हेतु राज्य सरकार को तुरन्त पर्याप्त तथा प्रभावशाली कदम उठाने चाहिए ।

(घ) तहसील पुस्तकालय

राज्य की 196 तहसीलों में से केवल डीग, खेतड़ी, शिवगंज, प्रतापगढ़, धौलपुर, बारां तथा बहरोड़ आठ स्थानों पर तहसील पुस्तकालय स्थित हैं। श्री हरिश्चन्द्र पुस्तकालय, झालावाड़ का कहीं वर्गीकरण नहीं होने के कारण उसे तहसील पुस्तकालय माना जाने लगा है। प्रबन्धकों की प्रार्थना पर सर्व हितकारी पुस्तकालय, करौली का प्रबन्ध अपने आधीन लेकर उसे तहसील पुस्तकालय बनाने का निर्णय सरकार द्वारा लिया जा चुका है। जिला पुस्तकालयों की तरह ये पुस्तकालय भी प्रतिदिन 8 घन्टे (प्रातः 4 घन्टे एवं 4 घन्टे सायंकाल) खुलते हैं। प्रत्येक पुस्तकालय में एक पुस्तकालयाध्यक्ष और एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी का पद स्वीकृत है। प्रत्येक पुस्तकालय का वार्षिक वजट अठारह हजार रुपये के लगभग होता है। सन् 1956 के बाद तहसील पुस्तकालयों की संख्या में वृद्धि नहीं होना शिक्षा विभाग के कार्य की प्रगति के लिए एक मनन शील प्रश्न चिन्ह है। लगभग प्रत्येक तहसील मुख्यालय पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना हो जाने से वहां की साक्षरता में काफी वृद्धि हो गई है। अतः सरकार को तहसील पुस्तकालयों की स्थापना की ओर गम्भीरतापूर्वक और निष्ठापूर्वक शीघ्र ही विचार करना चाहिए।

विशेषताएं

राज्य के राजकीय सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं की निम्न विशेषताएं उल्लेखनीय हैं:--

(1) सबके लिए समान सेवा

भूतपूर्व रियासतों के समय पुस्तकालय में पाठकों के लिए विभिन्न स्तर बने हुए थे। प्रत्येक पाठक को उसके स्तर के अनुसार सुविधाएं प्रदान की जाती थी। राजस्थान सरकार ने इस सामन्तशाही प्रथा को सन् 1956 में पुस्तकालय सेवाओं का पुनर्गठन करते समय समाप्त कर दिया तथा सभी प्रकार के पाठकों के लिए एक समान नियमों का निर्माण कर समान सुविधाएं प्रदान करने की व्यवस्था की है।

(2) निःशुल्क पुस्तकालय सेवा

यहां के समस्त सार्वजनिक पुस्तकालय पाठकों से सेवा प्रदान करने का कुछ शुल्क लिया करते थे। पुस्तकालयों का पुनर्गठन होने पर राज्य सरकार ने 13 जून 1963 से सभी प्रकार के शुल्क समाप्त कर जनता के लिए निःशुल्क सार्वजनिक सेवा प्रदान करने की व्यवस्था की है।

(3) जिला स्तर तक पुस्तकालयों की स्थापना

राज्य ने राजकीय सार्वजनिक पुस्तकालयों की जिला स्तर तक स्थापना का लक्ष्य (दो जिलों को छोड़कर) सन् 1959 में ही पूर्ण कर लिया गया था। जबकि आज भी देश के अनेक राज्य इस समस्या की पूर्ति में काफी पिछड़े हुए हैं। हां, तहसील पुस्तकालयों की संख्या में वृद्धि नहीं होना स्थिरता का प्रतीक है।

(4) **पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए सेवा नियमों का निर्माण**

सन् 1971 में राज्य सरकार ने सार्वजनिक पुस्तकालयाध्यक्षों व विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों की सेवाओं के लिए अलग से संयुक्त सेवा नियमों का निर्माण कर पुस्तकालयाध्यक्षों को उनक सेवाओं के लिए सरकार का संरक्षण प्रदान किया है। अभी देश के एक दो प्रान्तही इस प्रकार के सेवा नियमों का निर्माण कर पाये हैं।

एक विश्लेषण—

(क) संख्याएं

(i) पुस्तकालयों की संख्या

वर्ष 1960	स्तर	वर्ष 1973	वृद्धि
1	राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय	1	स्थिर व्यवहारिक रूप में समाप्त
5	डिवीजनल पुस्तकालय	5	स्थिर
24	जिला पुस्तकालय	24	स्थिर
9	तहसील पुस्तकालय	9	स्थिर
16	वाचनालय	16	स्थिर

(ii) शिक्षण संस्थाओं की संख्या

वर्ष 1950-51	शिक्षण संस्थाएं	वर्ष 1973-74	वृद्धि
1	विश्वविद्यालय	4❀	400%
27	महाविद्यालय (सामान्य शिक्षा)	86	319%
175	माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय	1260	720%
732	उच्च प्राथमिक विद्यालय	4800	656%
4,336	प्राथमिक विद्यालय	19500	450%

(अ) उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि योजनाओं के माध्यम से शिक्षण संस्थाओं की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। लेकिन सन् 1960 के बाद सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई है। सार्वजनिक पुस्तकालय महत्वपूर्ण शिक्षण संस्थाएं होती हैं लेकिन इनकी संख्याओं में वृद्धि करने हेतु कोई ध्यान नहीं दिया गया है।

(आ) सन् 1962 में, राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय को महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय का सदर्भ विभाग बना कर इस सर्वोच्च पुस्तकालय की व्यावहारिक रूप से इतिश्री करदी गई है।

(इ) राज्य सरकार को राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय को पुनर्जीवित करने, कोटा और अजमेर जिलों में जिला पुस्तकालय खोलने, राज्य की 196 तहसीलों में से कम से कम 100 तहसीलों में तहसील पुस्तकालयों की स्थापना तथा शहरों में लगभग 50 वाचनालय खोलने हेतु तुरन्त सक्रिय एवं प्रभावशाली कदम उठाने चाहिये।

❀ बिरला विज्ञान एवं औद्योगिक संस्थान, पिलानी सहित

(ख) **स्वीकृत बजट (लाखों में)**

	1956-57	1970-71	
आयोजना भिन्न	3.5	9.51	
योजना	.25	1.32	
	योग 3.75	10.83	
स्थापना व्यय प्रतिशत	50 प्रतिशत	71 प्रतिशत	वृद्धि
पठन सामग्री व्यय	24 ,,	14 ,,	गिरावट
पुस्तकालयों को सहायता व अनुदान	13 ,,	10 ,	गिरावट
अन्य व्यय	13 ,,	5 ,,	गिरावट
	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	

(अ) राजस्थान में शिक्षा का बजट 40 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष से अधिक पहुंच गया है। लेकिन सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए इसमें से केवल 11 लाख रुपये प्रति वर्ष प्रदान किए जाते हैं जो कि कुल शिक्षा बजट का $\frac{1}{400}$ भाग है। राजस्थान में गत 15 वर्षों से सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए लगभग ढ़ाई पैसा प्रति व्यक्ति व्यय किया जा रहा है जबकि इसकी तुलना में तमिलनाडु साढ़े सोलह पैसे प्रति व्यक्ति व्यय करता है। भारतवर्ष का औसत 5 पैसा प्रति व्यक्ति है तथा विकसित देशों में यह धनराशि प्रति व्यक्ति 10) रु० से 12)रु० के मध्य होती है। राज्य सरकार के विचाराधीन पुस्तकालय अधिनियम में सम्पूर्ण शिक्षा बजट की 2 प्रतिशत धनराशि पुस्तकालय सेवाओं के लिए रखे जाने का प्रस्ताव है। राजस्थान में पुस्तकालयों के जाल बिछाने हेतु यह धनराशि सर्वथा अपर्याप्त रहेगी। पर्याप्त धनराशि के अभाव में पुस्तकालय सेवाओं को सुधारना एक दुसाध्य कार्य है। अतः सुझाव है कि सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं के सफल संचालनार्थ शिक्षा बजट का 6 प्रतिशत या प्रति व्यक्ति कम से कम एक रुपया अवश्य प्रदान किया जाना चाहिये।

(आ) देश में प्रति वर्ष लगभग 30 हजार पुस्तकें व 11 हजार पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। राजस्थान के सार्वजनिक पुस्तकालय सामान्यतया प्रकाशित पुस्तकों का 3 से 4 प्रतिशत और पत्र-पत्रिकाओं का आधे से एक प्रतिशत के मध्य क्रय करते हैं। प्रति वर्ष पुस्तकों के मूल्य व पत्रिकाओं के शुल्कों में वृद्धि, पाठकों की संख्या एवं रुचि विभिन्नता में वृद्धि तथा पठन सामग्री के लिए प्राप्त धनराशि में स्थिरता ने पुस्तकालयध्यक्षों के सम्मुख पाठकों को सन्तुष्ट करने हेतु एक जटिल समस्या पैदा कर दी है।

(इ) सभी राज्य कर्मचारियों के वेतन वृद्धि के साथ साथ पुस्तकालय के स्थापन्न व्यय में प्रति वर्ष स्वतः ही वृद्धि होती रहती है लेकिन अन्य वस्तुओं के मूल्यों में हुई वृद्धि के साथ साथ पठन

सामग्री व अन्य मदों में उसी अनुपात में वृद्धि नहीं हो रही है । फलस्वरूप 50:50 का वैज्ञानिक अनुपात विगड़ गया है तथा अपव्ययों और अवरोधों में वृद्धि होती जा रही है । अतः सुझाव है कि अन्तिम तीनों मदों में पर्याप्त धनराशि प्रदान करने हेतु राज्य सरकार को गम्भीरतापूर्वक तुरन्त विचार करना चाहिये ।

(ग) सेवाएं :—

	1956–57	1969–70	अनुपातिक वृद्धि
सदस्यता	5527	11839	200 प्रतिशत
पाठक	448701	1250377	300 प्रतिशत
पुस्तकें	160012	388426	250 प्रतिशत
पुस्तकों का आदान-प्रदान	104391	454699	400 प्रतिशत

(अ) प्रति सौ व्यक्तियों के पीछे यू०के० में 37 व अमेरिका में 25 व्यक्ति पुस्तकालय के सदस्य हैं जबकि भारत में प्रति हजार व्यक्तियों के पीछे एक व्यक्ति व राजस्थान में प्रति दो हजार व्यक्तियों के पीछे एक व्यक्ति पुस्तकालय का सदस्य है ।
(आ) अनुमान है कि देश की 10 प्रतिशत जनता पुस्तकालय की पाठक है जबकि राजस्थान में यह संख्या केवल 4.85 प्रतिशत है ।

(इ) प्रति सौ व्यक्तियों पर यू०के० में 100 पुस्तकें, अमेरिका में 145 पुस्तकें पुस्तकालयों में संग्रहीत हैं जवकि राजस्थान में यह संख्या केवल डेढ़ (1 5) पुस्तकें हैं । राष्ट्रीय स्तर पर औसत एक पुस्तक की है ।

(ई) प्रति सौ व्यक्तियों के पीछे यू०के० में 512 पुस्तकें, अमेरिका में 263 पुस्तकें आदान-प्रदान होती हैं जबकि राजस्थान में यह संख्या केवल 18 पुस्तकों की है । राष्ट्रीय स्तर पर औसत 1.6 है ।

अधिक संख्या में पाठकों को पुस्तकालय की ओर आकर्षित करने, उन्हें नियमित पाठक बनाने व सदस्यों की संख्या में वृद्धि करने हेतु राजस्थान को अभी बहुत कुछ करना है । राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने वाले पुस्तकालय सप्ताह को राज्य स्तर पर विभाग द्वारा प्रति वर्ष मनाया जा कर, पुस्तकालय प्रसार सेवाओं व प्रचार कार्यों हेतु अलग से धनराशि प्रदान कर विभाग इस दिशा में ठोस कदम उठा सकता है ।

(घ) योजना व्यय

योजनाएँ	प्रस्तावित व्यय लाखों में	वास्तविक व्यय लाखों में
प्रथम पंचवर्षीय योजना 51–56	—	2.78
द्वितीय पंचवर्षीय योजना 56–61	9.00	2.00

तृतीय पंचवर्षीय योजना 61–66	10.00	2.73
वार्षिक योजनाएं (तीन) 66–69	—	1.71
चतुर्थ पंचवर्षीय योजना 69–74	9.00	4.49 (अनुमानित)
पंचम पंचवर्षीय योजना 74–79	20:00	—

(अ) प्रस्तावित धनराशि और वास्तविक व्यय में अत्यधिक अन्तर है ।

(आ) लगातार प्रति योजना में लगभग तीन चौथाई धनराशि का उपयोग नहीं होना विभागीय नीति में तुरन्त परिवर्तन चाहता है । उच्च स्तर पर पुस्तकालय सेवाओं का प्रतिनिधित्व करने हेतु किसी प्रशिक्षित पुस्तकालय अधिकारी को उत्तरदायी बनाया जाकर इस दोष को रोका जा सकता है ।

पंचवर्षीय योजनाएँ

पंचम पंचवर्षीय योजना प्रारूप में राज्य ने वर्तमान डिवीजनल पुस्तकालयों, जिला पुस्तकालयों व तहसील पुस्तकालयों के लिए शिक्षा की 150.14 करोड़ की विशाल योजना में केवल 20 लाख रुपये (5 लाख रैकरिंग, 10 लाख नान रैकरिंग तथा 5 लाख भवन निर्माण हेतु) की अल्प धनराशि रखी है ।

सरकार को चाहिये कि निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए राज्य के लिए एक दस वर्षीय योजना बनावे तथा कम से कम निम्न लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पंचम एवं षष्टम पंचवर्षीय योजनाओं में समुचित धनराशि का प्रावधान रखे । सन् 1984 के अन्त तक :—

(अ) राज्य के समस्त गांवों में ग्रामीण पुस्तकालयों की स्थापना हो जावे ।

(ब) राज्य के नगरों में मुख्य पुस्तकालय के साथ साथ उसकी शाखाओं का इस प्रकार जाल बिछाया जावे कि पाठक को पुस्तकालय भवन तक पहुंचने हेतु 20 मिनट से अधिक का समय नहीं लगाना पड़े ।

(इ) जिला स्तर तक के समस्त पुस्तकालयों के अपने निजी आधुनिक भवन हों ।

(ई) जिला स्तर तक के समस्त पुस्तकालय प्रतिदिन 12 घण्टे तक खुले रह सकें ।

२. नगर पालिका पुस्तकालय

राजस्थान की लगभग सभी नगरपालिकाएं अपने क्षेत्र में सार्वजनिक पुस्तकालय चला रही हैं । कुछ नगरपालिकाएं तो मुख्य पुस्तकालय के साथ साथ नगर में अन्य स्थानों पर अलग से वाचनालय भी चला रही हैं । यहाँ अधिकतर पुस्तकालयों के पुस्तकालयाध्यक्ष अप्रशिक्षित हैं । फलस्वरूप पुस्तकों का व्यवस्थापन वैज्ञानिक आधार पर नहीं होकर स्थानीय पूर्व प्रचलित परिपाटियों के अनुसार हो रहा है । राज्य स्तर पर इनके निरीक्षण की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण इनकी सेवाओं व व्यवस्थाओं में एकरूपता का सर्वथा अभाव दिखाई देता है । पर्याप्त

धनराशि का प्रावधान नहीं होने के कारण इनकी सामग्री, उपस्कर, उपकरण तथा भवन आदि सभी अपर्याप्त, अनुपयुक्त एवं अनाकर्षक हैं। पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए कोई सेवा नियम नहीं बने हुए हैं तथा वेतनमान में भी असमानता है।

३. पंचायत समिति पुस्तकालय

विकास विभाग के अधीन गांवों में पंचायत समितियां भी अपने पुस्तकालय व वाचनालय चला रही हैं। ये पुस्तकालय अपने अल्प साधन एवं सामग्री के साथ ग्रामीण जनता की आवश्यकताओं को किस सीमा तक पूर्ण कर रहे हैं, यह एक सर्वेक्षण की बात है लेकिन अनुभव के आधार पर इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इनके पुनर्गठन की नितान्त आवश्यकता है। राष्ट्र में हो रही वैज्ञानिक प्रगति, राजनैतिक जागृति तथा सामाजिक सुधार व आर्थिक व्यवस्था में हो रहे परिवर्तनों का यहां कोई स्पष्ट चित्र दिखाई नहीं देता है। अतः राष्ट्रीय उत्थान व जन जागृति के लिए इन पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण की ओर सरकार को तुरन्त ध्यान देना चाहिए।

४. संस्थाओं के पुस्तकालय

विभिन्न सामाजिक धार्मिक आदि संस्थाओं द्वारा संचालित पुस्तकालयों का उत्थान व पतन उस संस्था से सम्बन्वित कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग और समर्थन पर निर्भर करता है। इन पुस्तकालयों की आय का प्रमुख साधन चन्दा, सरकारी अनुदान, पाठकों से प्राप्त शुल्क आदि होता है। इनमें पुस्तकालयाध्यक्ष सामाजिक कार्यकर्ता होते हैं। तथा उनकी व्यक्तिगत रुचि का पुस्तकालय की व्यवस्था पर पर्याप्त प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनमें से कुछ पुस्तकालयों विशेषकर जैन समाज द्वारा संचालित पुस्तकालयों में बहुमूल्य साहित्य संग्रहीत है। इस प्रकार के पुस्तकालयों में श्री सन्मति पुस्तकालय, जयपुर तथा शारदा पुस्तकालय चौमू की प्रगति एवं सेवा उल्लेखनीय है।

५. निजी पुस्तकालय

राजस्थान में निजी पुस्तकालय के निम्न तीन रूप दिखाई देते हैं।

1) स्वज्ञान व मान वृद्धि हेतु स्थापित पुस्तकालय
2) परमार्थ हेतु स्थापित पुस्तकालय
3) आर्थिकोपार्जन हेतु स्थापित पुस्तकालय।

प्रथम प्रकार के पुस्तकालयों में राजाओं व जागीरदारों तथा अध्ययनशील विद्वानों के पुस्तकालयों को रखा जा सकता है। राजस्थान में ऐसे अनेक पुस्तकालय हैं जो व्यक्तिगत रुचि के कारण स्थापित किए गए थे लेकिन वर्तमान समय जिनकी हालत अत्यन्त दयनीय है। अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण ऐसे पुस्तकालयों में से अधिकतर पुस्तकालयों में संग्रहीत साहित्य की सुरक्षा एवं व्यवस्था विकट स्थिति में पहुंच गई है। राज्य सरकार को चाहिए कि ऐसे पुस्तकालयों को राज्यादेश द्वारा तुरन्त राज्याधीन करने की कार्यवाही करे।

द्वितीय प्रकार के पुस्तकालय भी अर्थाभाव के कारण दयनीय स्थिति में हैं। शिक्षा विभाग समुचित अनुदान देकर इन पुस्तकालयों की दशा में पर्याप्त सुधार कर सकता है।

तृतीय प्रकार के पुस्तकालय जनता में अध्ययन रुचि की वृद्धि के सूचक एवं समर्थक हैं। आज हर प्रमुख बाजार में किराए के उपन्यासों की दुकान दिखाई देती है। उपन्यासों के नाम पर

व इनकी ओट में इन किराये की दुकानों पर जो अस्वास्थ्यकर मानसिक खुराक मिलती है, वह सर्वविदित है। सरकार का दायित्व है कि पुस्तकालय सेवाओं में विस्तार कर तथा ऐसी दुकानों पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा कर समाज को जो दूषित मानसिक आहार वितरण किया जा रहा है, उस पर तुरन्त रोक लगाये।

पुस्तकालय अधिनियम

विश्व के सभी सभ्य और विकसित देशों में सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम बने हुए हैं। भारत में भी तामिलनाडू (1948) आन्ध्र (1960) कर्नाटक (1965) तथा महाराष्ट्र (1967) राज्यों ने पुस्तकालय अधिनियम पारित कर पुस्तकालय सेवाओं का जनतान्त्रिक ढंग से जिस प्रकार विकास व विस्तार किया है, वह अनुकरणीय है। राजस्थान में भी 1969 से पुस्तकालय अधिनियम के निर्माण का कार्य चल रहा है। सरकार को इस ओर अधिक क्रियाशील होकर शीघ्र ही सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम पारित करना चाहिए।

निष्कर्ष एवं चेतावनी

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि 1956 से 1960 तक राजस्थान में पुस्तकालय सेवाओं का सन्तोषप्रद एवं सन्तुलित विकास होता रहा था। तत्पश्चात् पुस्तकालयों में जिस अनुपात में सेवाओं की वृद्धि होती रही, मुख्यालय उस अनुपात में उन्हें आवश्यक साधन एवं सुविधाएं प्रदान करने में असमर्थ रहा है। फलस्वरूप राजस्थान जो 1956 में देश के अधिकांश राज्यों से सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं में अग्रणीय था आज अधिकांश राज्यों से पिछड़ गया है। सरकार पर्याप्त सहायता देकर, उच्चस्तर पर किसी प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष की नियुक्ति कर, राज्य के सभी सार्वजनिक पुस्तकालयों को एक सूत्र में बांध कर और अन्त में लेकिन महत्वपूर्ण तथ्य पुस्तकालय अधिनियम पारित कर पुस्तकालय सेवाओं का राज्य में सुनियोजित रूप से विकास व विस्तार कर सकती है।

राज्य ने यदि पुस्तकालय सेवाओं के विकास और विस्तार की ओर समय रहते अभी से समुचित ध्यान नहीं दिया तो आगामी दस वर्ष बाद जबकि राजस्थान की लगभग 80 प्रतिशत जनता साक्षर होगी राज्य के लिए उसकी मानसिक भूख को नियमित एवं संतुलित रूप से शान्त करना एक विकट समस्या बन जाएगी कारण कि मानसिक भूख शारीरिक भूख से अत्याधिक भयकर, कष्टदायी एवं प्रभावशाली होती है तथा उसके परिणाम भी अत्यधिक परिवर्तनशील तथा दूरगामी होते हैं। सरकार और शिक्षा अधिकारीगण जितनी जल्दी इस तथ्य को स्वीकार कर इस पर गम्भीरता पूर्वक ठोस कार्यवाही करना प्रारम्भ कर दे उतना ही राज्य व देश के लिये हितकर है।

द्वितीय खण्ड

राजस्थान में पुस्तकालय सेवा

अजमेर जिला

सार्वजनिक पुस्तकालय–गांधी भवन, अजमेर

अजमेर के हृदय में स्थित गांधी-भवन पुस्तकालय विगत लगभग सत्तर वर्षों से मां-सरस्वती के साधकों के लिए उपासना स्थल बना हुआ है। बालक-वृद्ध, छात्र-शिक्षक, व्यवसायी और मजदूर हर किसी नागरिक के लिए यह ज्ञान मंदिर ज्योति-स्तम्भ (Light House) बना हुआ है। कहना न होगा कि गांधी-भवन के बिना आज के अजमेर की कल्पना कठिन है।

सन् 1904 में संस्थापित यह सार्वजनिक पुस्तकालय नगर की शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रवृतियों का मुख्य केन्द्र बन गया है। अजमेर रेल्वे स्टेशन के सामने ही घनी-बस्ती में स्थित पुस्तकालय का भव्य-भवन हर किसी को आकर्षित करने में समर्थ है।

नगर परिषद द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में कुल 25,900 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। जिनमें हिन्दी, 10500, अंग्रेजी 11,395 तथा अन्य भाषाओं के 4,000 ग्रन्थ हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष एक सौ लगभग पत्र-पत्रिकाएं मंगवाई जाती हैं।

प्रतिदिन पुस्तकालय आने वाले व्यक्तियों की संख्या 500 है। इसी प्रकार वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु दी गई पुस्तकों की संख्या 7,764 है। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलॉग रजिस्टर फार्म पर है। पुस्तकालय में खुली पहुँच नहीं है।

पुस्तकालय पर प्रति वर्ष एक लाख रु० की राशि व्यय की जाती है जिसमें पुस्तक खरीद पर लगभग 10 हजार रु० व्यय किये जाते हैं।

पुस्तकालय का अपना निजी भवन है लेकिन बढ़ती हुई आवश्यकताओं के लिए वह अपर्याप्त है। सन् 1900 से पूर्व छपी हुई लगभग 250 पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं।

पुस्तकालय में शिशु विभाग है, जिसमें लगभग 8000 पुस्तकें हैं। इसी में क्रीड़ा-विभाग है, उसमें लगभग 200 खिलौने हैं। इस विभाग के 1395 बालक सदस्य हैं। पुस्तकालय में एक संदर्भ-कक्ष भी है, जिसमें कीमती पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिसका आदान-प्रदान नहीं होता। इस पुस्तकालय के अन्तर्गत नगर में 35 वाचनालय चलते हैं।

श्रीमती पुष्पलता मिश्र बी. ए., बी. लिब. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। अन्य पुस्तकालय कर्मचारी बीस हैं।

लगभग 70 वर्षों से लोक शिक्षण कार्य में सक्रिय गांधी-भवन पुस्तकालय अजमेर नगर का गौरव है।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय पुस्तकालय, अजमेर

भारत सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली ने शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवीन कार्यक्रम लागू करने के उद्देश्य से भारत में चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों की सन् 1963 में स्थापना की थी। उन्हीं में से एक यह महा-

विद्यालय है। इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में पाठ्य-सामग्री का संग्रह भी उसी दृष्टिकोण तथा पाठ्य-क्रम के अनुसार और बड़ी तीव्रगति से किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय जो कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा संचालित है, के इस पुस्तकालय में लगभग 40 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों की पुस्तक संख्या क्रमश: 9000 तथा 31,000 है। शिक्षा, विज्ञान, कृषि, वाणिज्य, हिन्दी, अंग्रेजी, तकनीकी, संदर्भ आदि सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

पुस्तकालय की पुस्तकें डेवी दशमलव पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय-संग्रह का कार्ड कैटलॉग है जो ए. एल. ए. पद्धति पर बना हुआ है।

पिछले वर्ष 22 हजार से अधिक पुस्तकें घर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकालय में लगभग 110 पत्र-पत्रिकाएँ मंगवाई जाती हैं। करीब 400 पाठक प्रतिदिन पुस्तकालय में आते हैं।

पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष नव्वे हजार रुपये व्यय किये जाते हैं। पुस्तक खरीद पर 40 हज़ार, कर्मचारियों पर 31 हजार, पत्र-पत्रिकाओं पर 8 हजार रुपये व्यय होते हैं।

वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष श्री बनारसीदास मिश्रा हैं। 15 अगस्त 1933 को इटावा (उ. प्र.) में जन्मे श्री मिश्रा ने अर्थशास्त्र में एम. ए. तथा पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा किया है। लेखन में रुचि के अलावा उत्तर प्रदेश पुस्तकालय संघ के उपाध्यक्ष तथा राजस्थान पुस्तकालय संघ, अजमेर शाखा के अध्यक्ष पद पर इन्होंने कार्य किया है। पुस्तकालय में अन्य प्रशिक्षित कार्यकर्ता हैं, सर्वश्री ओमप्रकाश मिश्रा, गोपालसिंह तथा एल. एस. शिवाजी।

राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय–पुस्तकालय, अजमेर

राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के इस पुस्तकालय में 13986 पुस्तकें संग्रहीत हैं। शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों की प्रमुखता है। पुस्तकालय की पुस्तकें डेवी-पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलॉग है, जो सी. सी. सी. (रंगानाथन) पद्धति पर बना है।

पुस्तकालय का उपयोग मुख्य रूप से बी. एड. के छात्र-अध्यापक ही करते हैं। शिक्षा तथा अन्य विषयों से सम्बन्धित 50 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं पुस्तकालय में मंगवाई जाती हैं। विगत वर्ष लगभग तीन हजार पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई तथा लगभग इतनी ही पुस्तकें यहां पढ़ी गई। प्रतिवर्ष तीन हजार रुपये का पुस्तकादि खरीद हेतु प्रावधान है।

श्री भगवती प्रसाद शर्मा एम. ए. पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर माह मई सन् 71 से कार्य कर रहे हैं। श्री शर्मा ने विभिन्न स्कूलों तथा जिला पुस्तकालय में कार्य किया है।

विजयसिंह पथिक श्रमजीवी महाविद्यालय–पुस्तकालय, अजमेर

महाविद्यालय के साथ ही इस पुस्तकालय का शुभारम्भ 5 अगस्त 1968 को हुआ। प्रारम्भ में ग्रंथ संख्या मात्र 322 थी और वाचनालय में पत्रिकाओं की संख्या भी 29 थी। उत्तरोत्तर विकसित होते हुए वर्तमान में पुस्तकालय में 6587 ग्रंथों का संग्रह है और 66 पत्र-पत्रिकाओं द्वारा वाचनालय पाठकों को लाभान्वित करता है।

सन् 1971–72 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पुस्तकों के क्रय आदि के लिए चालीस हजार रु. का विशेष अनुदान प्राप्त हुआ था। इस राशि द्वारा पुस्तकों के क्रय में संदर्भ

ग्रंथों को विशेष महत्व दिया गया था। लगभग 15 हजार रु. मूल्य के सन्दर्भ ग्रन्थ क्रय किये गये।

राजस्थान विद्यापीठ द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में नवीन एवं उपयोगी ग्रन्थों का संग्रह है। प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या लगभग 500 है। विगत वर्ष 25 हजार पुस्तकें पढ़ी गईं। पुस्तकालय में कार्ड केटेलाग है और पुस्तकों का डेवी पद्धति पर वर्गीकरण हुआ है।

श्री सुजानमल जैन बी. ए., बी. लिब. एस. सी. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। श्री जैन माह अक्टूबर 72 से यहाँ पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

दयानन्द कॉलेज पुस्तकालय, अजमेर

लगभग 85 वर्ष पूर्व संस्थापित यह ज्ञानमंदिर राजस्थान का गौरव है। कहना न होगा कि आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर का इसके संचालन के मूल में एक मिशन है।

पुस्तकालय में हिन्दी तथा अंग्रेजी आदि विषयों के 46,314 ग्रंथ संग्रहीत हैं। वैदिक साहित्य इस संग्रह की विशेषता है। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु लगभग 26 हजार पुस्तकें दी गई तथा 6 हजार से अधिक पुस्तकें पुस्तकालय में ही पढ़ी गई। पुस्तकालय की पुस्तकें डेवी पद्धति पर वर्गीकृत हैं। कार्ड ए. एल. ए. पद्धति पर बना हुआ है।

पुस्तकालय पर औसतन प्रति वर्ष 80 हजार रु. की राशि व्यय की जाती है, जिसमें पुस्तक क्रय पर 60 हजार रु. लगभग व्यय होते हैं।

पुस्तकालय में लगभग 200 पुस्तकें ऐसी हैं, जो सन् 1900 से पूर्व छपी हुई हैं। पुस्तकालय एक भव्य भवन में चल रहा है। श्री जयदेव शर्मा बी, ए. डिप्लोमा इन लाइब्रेरी साइन्स, विद्यावाचस्पति वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, अजमेर

सन् 1836 में संस्थापित यह पुस्तकालय प्रदेश के पुराने पुस्तकालयों में से है। पुस्तक संख्या 50 हजार से अधिक है। अंग्रेजी, हिन्दी तथा उर्दू भाषाओं के ग्रंथ मुख्य रूप से उपलब्ध हैं। पुस्तक खरीद पर प्रतिवर्ष बीस हजार रु० से अधिक व्यय किए जाते हैं।

श्री बी. पी. भार्गव एम. ए. डिप्लोमा-पुस्तकालय विज्ञान पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

राजपूताना संग्रहालय पुस्तकालय, अजमेर

इसकी स्थापना सन् 1908 में हुई। वर्तमान में 5 हजार ग्रंथ संग्रहीत हैं। हिंदी, अंग्रेजी तथा संस्कृत विषयों की पुस्तकें मुख्यरूप से हैं।

श्री मुन्नालाल नागरी प्रचारिणी सभा-पुस्तकालय, अजमेर

सन् 1898 में संस्थापति इस सार्वजनिक पुस्तकालय में लगभग तीन हजार पुस्तकें हैं। पुस्तकें विषयानुसार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर लगभग 3 हजार रु. की राशि व्यय की जाती है। पुस्तकालय का निजी भवन नहीं है।

पुस्तकालय में सन् 1900 से पूर्व की कोई 500 पुस्तकें उपलब्ध हैं। हिन्दी का प्रसार इसका एकमेव कार्य और उद्देश्य है। श्री किशनलाल शर्मा वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राज्य सरकार से पुस्तकालय को अनुदान मिलता है। प्रतिदिन लगभग 300 व्यक्ति पुस्तकालय में आते हैं। श्री किशनलाल शर्मा वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

सूचना केन्द्र, अजमेर

राजस्थान सरकार के जनसम्पर्क निर्देशालय द्वारा सन् 1963 से संचालित इस केन्द्र में 10,298 ग्रंथ संग्रहीत हैं। वाचनालय में दो सो से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं।

जयपुर रोड़ पर अवस्थित निजी-भवन में यह पुस्तकालय चल रहा है। संदर्भ पुस्तकें इसकी विशेषता है। डेवी पद्धति पर पुस्तकें वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। पुस्तकालय का उपयोग मुख्य रूप से विद्यार्थी, कर्मचारी, अन्य व्यवसायी तथा अवकाश प्राप्त व्यक्ति करते हैं। प्रतिदिन 150 व्यक्ति पुस्तकालय आते हैं। श्री सरोज खन्ना एम. ए, बी. लिब. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

दयानन्द उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय–पुस्तकालय, अजमेर

विद्यालय के अन्तर्गत संचालित यह पुस्तकालय सन् 1888 से चल रहा है। निजी उपयुक्त भवन का अभाव है। छात्र तथा अध्यापक ही मुख्य रूप से इसका उपयोग करते हैं। हिन्दी और संस्कृत विषयों की पुस्तकें मुख्य रूप से हैं। पुस्तकें डेवी-पद्धति पर वर्गीकृत हैं।

जिला पुस्तकालय, किशनगढ़ (अजमेर)

23 अगस्त सन् 1956 से राज्य सरकार द्वारा यह पुस्तकालय यहाँ संचालित है। वर्तमान में इसमें 6494 ग्रंथ संग्रहीत हैं। गाँधी तथा अरविन्द साहित्य इसकी विशेषता है।

लगभग 200 व्यक्ति प्रतिदिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। 600 करीब बाउण्ड पत्र-पत्रिकाएं यहाँ हैं। डेवी-पद्धति पर पुस्तकें वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। पुस्तकालय-संग्रह का कैटलॉग कार्ड प्रकार का है। श्री कैलाश बिहारी माथुर यहाँ पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, किशनगढ़

अजमेर-जिलान्तर्गत किशनगढ़ के इस राजकीय महाविद्यालय की स्थापना वर्ष सन् 1959 में हुई। वर्तमान में हिन्दी-अंग्रेजी विषयों की कुल पुस्तकें 16927 हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 16368 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 450 है। पुस्तकालय की पुस्तकें डेवी दशमलव पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में कार्ड कैटेलॉग की व्यवस्था है।

श्री मुरारीलाल गुप्ता बी. ए., बी. लिब. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

के० डी० जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, मदनगंज-किशनगढ़

विद्यालय प्रवन्ध समिति द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की शुरुआत सन् 1951 में हुई। 2775 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय की पुस्तकें विषयानुसार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर 6 हजार रु० से अधिक व्यय किए जाते हैं। विद्यालय के प्रिन्सीपल की देखरेख में ही पुस्तकालयाध्यक्ष कार्य करते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष श्री कालूराम हैं।

श्री विजयवर्गीय पुस्तकालय, केकड़ी (अजमेर)

विजयवर्गीय समाज के उत्साही तथा सेवाभावी युवकों ने 20 अक्टूबर 1946 को इस पुस्तकालय की स्थापना की। समाज के हर सामाजिक व सांस्कृतिक पर्व पर धन संग्रह कर इसकी अभिवृद्धि की गई। सन् 1956 में संस्था का रजिस्ट्रेशन करवाया गया तथा शिक्षा विभाग, राजस्थान से अनुदान प्राप्त किया गया, जो बराबर मिल रहा है।

नगर के प्राचीन भाग में रात्रिकालीन वाचनालय एवं पुस्तकालय सुविधा का यह एक-मेव केन्द्र है। पुस्तकालय किराये के मकान में चल रहा है।

श्री शंकरलाल विजयवर्गीय वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्री रमा वैकुंठ संस्कृत महाविद्यालय, पुस्तकालय, पुष्कर

श्री रमा वैकुंठ मंदिर द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1925 में हुई। वर्तमान में 3649 ग्रंथ संग्रहीत हैं। संस्कृत विषय की पुस्तकों का बाहुल्य है। पचास व्यक्ति प्रतिदिन पुस्तकालय में आते हैं।

पुस्तकालय का भवन निजी है। छात्र-समुदाय इसका मुख्य रूप से उपयोग करता है। पं० रामनिवास शास्त्री, साहित्याचार्य पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्री युवक पठनालय, नसीराबाद

मेन स्ट्रीट पर स्थित इस सार्वजनिक पुस्तकालय तथा वाचनालय का शुभारम्भ अक्टूबर सन् 1918 में हुआ। वर्तमान में 6031 ग्रन्थ सग्रहीत हैं। पुस्तकालय में धार्मिक एवं संदर्भ पुस्तकें मुख्य रूप से हैं।

पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की संख्या औसतन एक सौ है। पुस्तकालय निजी भवन में है। हिन्दी तथा शिक्षा का प्रसार इसका एकमेव उद्देश्य है। संस्था के मंत्री श्री रतनलाल हैं तथा श्री बृजमोहन शर्मा के निर्देशन में इसका संचालन हो रहा है।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, नसीराबाद

धर्मशाला के एक छोटे से कमरे में जौलाई सन् 1970 में यह पुस्तकालय प्रारम्भ हुआ। तदुपरान्त 21 अगस्त 1972 को कॉलिज के खुद के भवन में स्थानान्तरित हुआ। जैसे-जैसे राजस्थान सरकार से अनुदान (Grants) मिलती जा रही है, पुस्तकालय का विस्तार होता जा रहा है। पुस्तकालय में मुख्यत: उन विषयों की पुस्तकें खरीदी गई हैं, जिनसे विद्यार्थी पढ़ाई में सहयोग प्राप्त करते रहते हैं।

पुस्तकालय में 2597 ग्रंथ संग्रहीत हैं। पुस्तकें डेवी पद्धति पर वर्गीकृत हैं तथा कार्ड ए. एल. ए./सी. सी. सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना हुआ है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। प्रतिदिन 250 से अधिक व्यक्ति इसमें आते हैं।

विगत वर्ष पुस्तक खरीद पर रु. 11 हजार व्यय किये गए। पुस्तकालय के अनुरूप फर्नीचर है। भवन को उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। श्री टी. आर. यादव, जो पुस्तकालय-विज्ञान में प्रशिक्षित हैं, वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, ब्यावर

सन् 1905 में संस्थापित इस पुस्तकालय में कुल 42150 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकें डेवी-पद्धति पर वर्गीकृत हैं। विगत वर्ष कोई 29 हजार रु० पुस्तकें क्रय करने पर व्यय किए गए।

पुस्तकालय राजकीय भवन में चल रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उपयुक्त भवन निर्माण हेतु स्वीकृति प्रदान की है। सहकारी भंडार के माध्यम से पुस्तकें खरीदने का क्रम रहता है। पुस्तकालय में लगभग तीस हजार पुस्तकें पढ़ी गई।

श्री रतनलाल सनाढ्य एम. ए., लिब० डिप्लोमा, वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं तथा वे राजस्थान पुस्तकालय संघ के महामंत्री हैं।

राजकीय पटेल बहु० उ० मा० विद्यालय, ब्यावर

इस विद्यालय के पुस्तकालय में 14650 पुस्तकें हैं और 82 पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। गत वर्ष छात्रों को कुल 3836 पुस्तकें दी गई। श्री नारायणदास लड्ढा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्री जैन सांखला पुस्तकालय, ब्यावर

इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1945 में सेठ श्री जीवराजजी तथा श्री फूलचंदजी सांखला के प्रयत्न से की गई। और उसी वर्ष इसके ट्रस्ट का पंजीयन हो गया। पुस्तकालय का अपना निजी भवन है जिसके नीचे 4–5 दुकानें बनी हुई हैं, जिसके किराये से पुस्तकालय का खर्च चलता है। पुस्तकालय में 10,250 के करीब पुस्तकें तथा 350 पत्रिकाओं के जिल्द हैं।

नगर परिषद् सार्वजनिक पुस्तकालय, ब्यावर

नगरपालिका द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1912 में हुआ। वर्तमान में 14092 ग्रंथ संग्रहीत हैं। सवा सौ लगभग पत्र-पत्रिकाएँ प्रतिवर्ष वाचनालय में आती हैं। विगत वर्ष 7784 पुस्तकें घर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले व्यक्तियों की संख्या 360 है। पुस्तकें वर्गीकृत नहीं हैं। पुस्तकालय अपने निजी भवन में चल रहा है। श्री मांगीलाल प्रजापत पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

राजकीय उच्च माध्यमिक कन्या शाला, ब्यावर

सन् 1959 से पूर्व यह एक सहायता प्राप्त विद्यालय था। इस पुस्तकालय में 8000 पुस्तकें हैं तथा 40 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। प्रतिवर्ष लगभग 6000 पुस्तकें छात्राओं को घर पर पढ़ने हेतु दी जाती हैं। श्रीधर्मशंकर चतुर्वेदी बी. ए. बी. लिब. एस. सी. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

अलवर जिला

सूचना केन्द्र, अलवर

जयपुर–दिल्ली मार्ग के लगभग मध्य में स्थित प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण अलवर में सर्वसाधारण के मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा स्थानीय पुरजन विहार के सामने सूचना केन्द्र की स्थापना की गई है। इसका उद्देश्य सरकार द्वारा किये जा रहे सभी कार्यों की जानकारी देने के अतिरिक्त जनता की देश के विकास कार्यों की ओर रुचि बढ़ाना है। केन्द्र में विभिन्न नवीनतम साधनों से जनसाधारण को उपयोगी एवं शिक्षाप्रद जानकारी देने की व्यवस्था की गई है। केन्द्र की स्थापना 10 मई 1965 को की गई।

सर्वसाधारण हेतु इस केन्द्र में निम्न सुविधायें उपलब्ध की गई हैं:—

केन्द्र का प्रमुख कक्ष संदर्भ पुस्तकालय है, जिसमें सभी प्रकार की मूल्यवान रचनायें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में कोई भी पाठक अपने आप निःसंकोच पुस्तकें निकाल सकते हैं।

जनसम्पर्क निर्देशालय द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में तीन हजार ग्रंथ संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 548 है। राजकीय प्रकाशन, प्रतिवेदन, पैम्फलेट्स, गजट तथा गांधी-साहित्य का बाहुल्य है। पुस्तकालय की पुस्तकें डेवी पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का कैटलॉग तैयार हो रहा है। यह सी. सी. सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना है।

प्रतिवर्ष पुस्तकें क्रय करने पर 2500 रु. व्यय किये जाते हैं। यह केन्द्र किराये के भवन में चल रहा है। विद्यार्थी तथा राजकीय सेवाओं में लगे लोग पुस्तकालय का मुख्य रूप से उपयोग करते हैं। केन्द्र में बालकों के अध्ययन के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

आधुनिक साधनों से सुसज्जित इस कक्ष में एक साथ 30 पाठकों के बैठने की व्यवस्था है। हिन्दी तथा अंग्रेजी की पत्र-पत्रिकाओं की संख्या एक सौ से अधिक है। स्वागतकर्ता पाठकों की सेवा के लिए तत्पर रहता है। वाचनालय कक्ष में समय-समय पर रात्रि को वृत्तचित्र प्रदर्शन का आयोजन भी किया जाता है।

केन्द्र में उन लोगों का विशेषतौर पर ध्यान रखा गया है, जो कि खोज या अनुसंधान कार्यों में रत हैं अथवा शांत वातावरण में लम्बे समय तक अध्ययन करना चाहते हैं। इनके लिए वाचनालय कक्ष में विशेष प्रकार की टेबिलों का प्रबन्ध कर अध्ययन कक्ष स्थापित किया गया है।

केन्द्र ने छात्र-छात्राओं के लिए भी एक पृथक सुविधा प्रदान करने की योजना बनाई है।

केन्द्र का एक अन्य कार्य नागरिकों को जहां तक संभव हो, सभी प्रकार की सामान्य जानकारी देना है। इसके लिए केन्द्र के कार्यकर्ता सदैव प्रस्तुत रहते हैं और यह प्रयत्न करते हैं कि दर्शकों की जानकारी के अभाव से उत्पन्न समस्याओं का यथासंभव समाधान किया जा सके।

आकाशवाणी के सभी प्रमुख हिन्दी बुलेटिनों का केन्द्र में तथा केन्द्र के बाहर लगे उद्घोषक यंत्रों द्वारा प्रसारण की व्यवस्था की गई है ताकि नागरिकों को शीघ्र ही ताजा से ताजा समाचार मिल सके।

सर्वश्री अक्षयकुमार जैन, मधुलिमये, अमृत नाहटा, विजयकुमार मलहोत्रा, वी. एन. जोशी, सरनामसिंह शर्मा तथा श्रीमती कमला बेनीवाल आदि ने इस केन्द्र का निरीक्षण किया है।

श्री भोजकुमार सहायक जनसम्पर्क अधिकारी हैं। श्री जगदीश प्रसाद शर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। श्री शर्मा एम. ए. तथा बी. लिब. एस. सी. हैं तथा सूचना केन्द्र, जयपुर में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्य कर चुके हैं।

गौरी देवी राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, अलवर

कॉलेज शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1964 में हुई। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों की कुल 9619 पुस्तकें हैं। पाठ्य सामग्री मुख्य रूप से है। पुस्तकालय की पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का कैटलॉग कार्ड प्रकार का है, जो सी. सी. सी. पद्धति पर बना हुआ है। विगत वर्ष पुस्तकें खरीद पर दस हजार रुपये व्यय किये गये। पुस्तकालय निजी कक्ष में चल रहा है लेकिन भवन उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

श्री लीलाधर एम. ए. लिब. साइन्स पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राजकीय संग्रहालय पुस्तकालय, अलवर

राजकीय संग्रहालय पुस्कालय में हिन्दी, उर्दू तथा संस्कृत भाषाओं की महत्वपूर्ण पुस्तकें संग्रहीत हैं। रिसर्च स्कालर्स के उपयोग हेतु इतिहास और साहित्य विषयों के ग्रंथ हैं। पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1940 में हुई तथा श्री कैलाशविहारी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

जिला पुस्तकालय, अलवर

सन् 1956 में राज्य सरकार द्वारा संस्थापित इस पुस्तकालय में अनेकविध विषयों की 6000 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। श्री सुमति प्रकाश जैन, बी. ए. बी. लिब. एस. सी. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

पंचायती पुस्तकालय, राजगढ़

देशोपकारक मास्टर कृष्णजसरायजी द्वारा किये गये सार्वजनिक कार्य के स्मारक स्वरूप इस पुस्तकालय–वाचनालय की संस्थापना की गई। जनसहयोग जुटाकर उपयुक्त भवन निर्माण करवाया गया है।

सन् 1924 में संस्थापित इस पुस्तकालय में वर्तमान में दो हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकों का कैटलॉग विषयवार है। प्रतिदिन पचास लगभग व्यक्ति पुस्तकालय आते हैं। नवयुवकोपयोगी साहित्य मुख्यरूप से है। वर्तमान में श्री सुरेशचन्द्र गुप्त पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राजकीय श्री गंगा पुस्तकालय, बहरोड़

सन् 1966 में संस्थापित इस ज्ञान मंदिर में अभी एक हजार लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। श्री मोहनलाल तिवारी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

———

उदयपुर जिला

उदयपुर विश्वविद्यालय कृषि महाविद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1956)

"विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुस्तकालय कुंजी है" की भावना तथा महाविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रम में यथासंभव महत्वपूर्ण योगदान देना इस ज्ञान मंदिर का एकमेव ध्येय है। यह पुस्तकालय इस दिशा में शिक्षण, शोध तथा प्रसार के व्यापक कार्यक्रम द्वारा कार्यशील है। उदयपुर विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राजस्थान कृषि महाविद्यालय के इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1956 में हुई। वर्तमान में हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के 30 हजार से अधिक ग्रन्थ संग्रहीत हैं। वाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 4,000 है। पुस्तकालय में 100 हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं। माइको कार्ड्स, फिल्म्स आदि सामग्री की संख्या 1,000 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 88,300 पुस्तकें दी गईं। इसी प्रकार पुस्तकालय में वर्ष भर में पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या 1,00000 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 400 है।

पुस्तकालय में कृषि-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य की प्रमुखता है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं तथा कार्ड कैटलाग की व्यवस्था है, जो रंगनाथन पद्धति पर बना हुआ है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष रु० 1,00,000 व्यय किए जाते हैं। पुस्तकालय महाविद्यालय के मुख्य भवन में स्थित है। पुस्तकालय का उपयोग करने वालों में छात्र, प्रोफेसर्स तथा लेक्चरार्स की अधिकता है। संसार के विभिन्न भागों से पुस्तकें खरीदने का क्रम रहता है।

पुस्तकालय का संचालन एक पुस्तकालय-समिति द्वारा होता है। महाविद्यालय स्टाफ में से चार सदस्यों का समिति के लिए निर्वाचन किया जाता है। पुस्तकालयाध्यक्ष इस समिति का पदेन सचिव होता है। अवकाश के दिनों के अलावा पुस्तकालय प्रतिदिन प्रातः 8 से रात्रि के 8 बजे तक खुलता है। निर्धारित नियम-उपनियमों के द्वारा पुस्तकालय संचालन का क्रम रहता है।

श्री देवीशंकर श्रीमाली एम. ए., डिप्लोमा लिब. एस. सी. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं तथा श्री भंवरलाल आमेरा तथा श्रीमती कमला लाल सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। सन् 61 से श्री श्रीमाली यहां पुस्तकालयाध्यक्ष हैं तथा अध्ययन और लेखन इनकी मुख्य रुचियां हैं।

सरस्वती भवन, राजकीय प्रादेशिक पुस्तकालय, उदयपुर (1874)

वैसे तो इस पुस्तकालय का श्रीगणेश महाराणा सज्जनसिंहजी के शासनकाल से ही माना जा सकता है। उन्होंने सन् 1874 में सरस्वती भंडार, जिसकी स्थापना बहुत पहले

ही हो चुकी थी, के साथ ही सज्जनवाणी विलास नामक दूसरे पुस्तकालय की स्थापना की, जिसमें विभिन्न विषयों जैसे काव्य, अलंकार, छंद, शालिहोत्र इत्यादि जिनमें वे स्वयं रुचि रखते थे, की करीब 550 हस्तलिखित एवं मुद्रित पुस्तकें थीं। वे पुस्तकें अब इसी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं। महाराणा फतहसिंहजी ने भी तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन के आदेशानुसार स्थानीय संस्कृति एवं विचारधाराओं को भावी संतति के उपयोगार्थ संग्रहीत रखने हेतु सन् 1887 में विक्टोरिया-हाल लाइब्रेरी एवं संग्रहालय की स्थापना की । राज्य सरकार के आदेशानुसार सरस्वती भंडार, सज्जनवाणी-विलास तथा विक्टोरिया हाल नामक तीनों ही पुस्तकालयों की पुस्तकों को सम्मिलित किया जाकर वर्तमान सरस्वती भवन का रूप दिया गया, जो 12 मार्च सन् 1951 से ही सार्वजनिक उपयोग का एकमात्र स्थान बना ।

पुस्तकालयों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण समाज तक पुस्तकालय-सेवा पहुंचाने हेतु लाइब्रेरी इम्प्रूवमेंट स्कीम के अन्तर्गत चल-पुस्तकालय शाखा खोली गई, जिसके अन्तर्गत अभी 115 पुस्तक संग्रह केन्द्र चल रहे हैं। बाल-कक्ष भी अलग से प्रारम्भ किया गया है ।

राज्य के इस प्रादेशिक पुस्तकालय में 36072 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 2850 हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु दी गई पुस्तकों की संख्या 33,640 है। ऐतिहासिक विषय की पुस्तकें इसकी विशेषता है । पुस्तकालय में प्रतिदिन औसतन 350 व्यक्ति आते हैं। पुस्तकें खरीद हेतु वार्षिक बजट रु० 6,000 का है।

पुस्तकालय की पुस्तकें डेवी डेसीमल पद्धति से वर्गीकृत हैं । कार्ड कैटलाग की व्यवस्था है, जो सी. सी. सी. पद्धति पर बना है। पुस्तकालय पर प्रति वर्ष लगभग 75,000 रु० व्यय किए जाते हैं। पुस्तकालय के हस्तलिखित ग्रन्थ अब राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान को दे दिये गए हैं। उनकी सूची छपी हुई विक्रयार्थ भी इस पुस्तकालय में उपलब्ध है। श्री श्यामसुन्दर व्यास बी. काम, डिप. लिब. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं तथा अन्य कार्यकर्ताओं में श्री पुरुषोत्तमलाल पुरोहित, श्री मुकुन्दलाल नागर, श्री भैरवशंकर दवे आदि हैं।

राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर (1958)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की शुरूआत सन् 1958 में हुई। वर्तमान में हिन्दी, अंग्रेजी आदि के 15,500 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। विगत वर्ष 24,534 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं । पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। महाविद्यालय के ही कुछ कमरों में पुस्तकालय चल रहा है, जो छात्राओं की संख्या को देखते हुए उपयुक्त नहीं है। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट रु० 10,000 का है ।

श्री शंकरलाल आमेटा एम. ए., बी. लिब. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

संदर्भ पुस्तकालय, सूचना केन्द्र, उदयपुर (1963)

उदयपुर के मोहतापार्क, चेटक सर्किल स्थित यह पुस्तकालय 15 अगस्त 1963 में आरम्भ हुआ। जनसम्पर्क निर्देशालय द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में 4400 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगवाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 205 है। संदर्भ पुस्तकालय होने के कारण पुस्तकें घर पर पढ़ने के लिए उपलब्ध नहीं कराई जाती हैं। गांधी, नेहरू तथा विनोबा साहित्य मुख्य रूप से हैं। जनगणना की पुस्तकें इसका मुख्य आकर्षण है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। कार्ड कैटलाग की व्यवस्था है, जो सी.सी.सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना हुआ है। सूचना केन्द्र अब तक किराये पर था लेकिन अब उपयुक्त नवीन भवन राज्य सरकार ने निर्मित करवाया है। महामहिम राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि ने भवन का उद्घाटन किया है।

श्री वनराज जोशी एम. ए., बी. लिब. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। श्री जोशी उदयपुर पुस्तकालय एसोसियेशन के सचिव भी हैं।

भूपाल नोबल्स महाविद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1954)

स्टेशन रोड़ पर स्थित इस महाविद्यालय के पुस्तकालय की स्थापना माह जौलाई 1954 में की गई। वर्तमान में लगभग 10 हजार पुस्तकें हैं तथा एक सौ करीब पत्र-पत्रिकाएं पुस्तकालय में आती हैं। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। सन् 1969-70 में कुल सदस्य संख्या 1031 थी। प्रतिवर्ष 13 हजार से अधिक पुस्तकें घर पर पढ़ने को दी जाती हैं। श्री एस. एस. शेखावत पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

भूपाल नोबल्स माध्यमिक स्कूल पुस्तकालय, उदयपुर (1938)

सन् 1968 में सस्थापित इस संस्था के पुस्तकालय में 6 हजार से अधिक ग्रन्थ संग्रहीत हैं। प्रतिवर्ष 8000 लगभग पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी जाती हैं। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। सन् 1969–70 में सदस्य संख्या 290 थीं।

पुस्तकालयाध्यक्ष श्री वी. एस. शेखावत हैं।

केन्द्रीय विद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1965)

प्रतापनगर–उदयपुर स्थित इस पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1965 मे हुआ। लगभग तीन हजार पुस्तकें हैं तथा वाचनालय में तीस पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। दो हजार से अधिक पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी जाती हैं। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत है। श्री विमला माथुर पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

गृह विज्ञान महाविद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1965)

सूरजपोल स्थित महाविद्यालय के इस पुस्तकालय में लगभग 2 हजार पुस्तकें सग्रहीत हैं। पुस्तकालय की शुरूआत सन् 1965 में हुई। वाचनालय में 80 पत्र-पत्रिकायें आती हैं। पुस्तकें कोलन-पद्धति पर वर्गीकृत हैं।

श्री एल. एन. वर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

तकनीकी एवं कृषि अभियांत्रिक महाविद्यालय, उदयपुर

विश्वविद्यालय प्रांगण में स्थित इस पुस्तकालय में लगभग 4500 पुस्तकें हैं। वाचनालय में 50 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आते हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु दस हजार पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत है। वर्ष 1969-60 में 275 सदस्य रहे।
श्री वी. डवल्यू. कार्निक पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

दारुल मुनालियानुल बुरहानिया पुस्तकालय, उदयपुर (1942)

हाथी पोल के वाहर स्थित सन् 1942 में संस्थापित इस पुस्तकालय में छः हजार से अधिक ग्रन्थ सग्रहीत हैं। वाचनालय में पचास से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। वर्ष 1969-70 में 172 सदस्य संख्या रही। पुस्तक खरीद के लिए वार्षिक बजट रु० 700 है।
श्री फखरुद्दीन पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

खनिज निर्देशालय, पुस्तकालय, उदयपुर

राज्य के खनिज विभाग के अन्तर्गत संचालित इस विभागीय पुस्तकालय में 7000 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तके डेवी पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तक खरीद हेतु पांच हजार रु० का वार्षिक बजट है।
श्री आर. एस. मेहता पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

जिला एवं सत्र न्यायालय पुस्तकालय, उदयपुर (1940)

सन् 1940 में संस्थापित इस पुस्तकालय में लगभग 3 हजार पुस्तकें हैं। प्रतिवर्ष घर पढ़ने हेतु 1200 करीब पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। वर्ष 1969-70 में सदस्य संख्या 200 थी। प्रतिवर्ष पुस्तक तथा पत्र-पत्रिका खरीद का बजट 1 हजार रुपये से अधिक है।
श्री आर० एल० जाट पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

फतेह माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर (1945)

जौलाई 1945 में संस्थापित इस विद्यालय के पुस्तकालय में लगभग पन्द्रह हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 60 से अधिक पत्र-पत्रिकाए आती है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 12 हजार पुस्तकें दी जाती हैं।
श्री शिवदान शंकर पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, पुस्तकालय, उदयपुर (1958)

प्रतापनगर में मई 1958 में संस्थापित इस पुस्तकालय में एक हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 15 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। वर्ष 1969-70 में 200 सदस्य संख्या थी। अवकाश के दिनों के अलावा पुस्तकालय प्रतिदिन 10 बजे से 12 बजे खुलता है।
श्री गजानन औदीच्य पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

जगदीश चौक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर

इस पुस्तकालय में लगभग 3000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में लगभग 50 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 2500 से अधिक पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें कोलन पद्धति से वर्गीकृत हैं। वर्ष 1969-70 में सदस्य संख्या 315 थी। पुस्तक खरीद के लिए वार्षिक बजट रु० 200 है।

श्रीमती कमला कुमारी उपाध्याय पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

जनपद पुस्तकालय, उदयपुर (1940)

वर्ष 1940 में स्थापित इस सार्वजनिक पुस्तकालय में वर्तमान में 11 हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 40 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 10 हजार पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। वर्ष 1969-70 में सदस्य संख्या 400 थी। इसके अन्तर्गत चल-पुस्तकालय सेवा की विशेष व्यवस्था है।

श्री एस. आर. द्विवेदी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

कंवरपाड़ा बहुउद्देश्यीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर (1932)

गणेशघाटी स्थित इस राजकीय विद्यालय के पुस्तकालय में 11 हजार लगभग पुस्तकें हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1932 में हुई। वर्ष 1969-70 में सदस्य संख्या 700 थी। पुस्तक खरीद के लिए वार्षिक बजट रु. 600 का है।

श्री आर. सी. मेनारिया पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

लम्बरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर (1947)

सन् 1947 में पुस्तकालय की स्थापना हुई। नगरपालिका स्टेडियम में स्थित इस पुस्तकालय में लगभग 9,000 पुस्तकें हैं। वाचनालय में 50 पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। वर्ष सन् 1969-70 में सदस्य संख्या 1575 थी। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 7500 से अधिक पुस्तकें दी जाती हैं।

श्री एस. सी. शर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर (1966)

डबोक स्थित इस पुस्तकालय का आरम्भ जून सन् 1966 में हुआ। वर्तमान में पुस्तक संख्या लगभग 3500 है तथा वाचनालय में 50 लगभग पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। वर्ष 1969-70 में सदस्य संख्या 310 थी। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट 10 हजार रुपये है।

श्री वी. के. झा. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

मदनमोहन मालवीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय, उदयपुर (1933)

अम्बामाता मन्दिर के समीप स्थित इस संस्था की शुरूआत सन् 1933 में हुई। वर्तमान में लगभग 2800 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 25 पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1500 पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तक खरीद के लिए वार्षिक बजट रु. 1500 है।

श्री जी. एस. श्रोत्रिय पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

महाराणा संस्कृत महाविद्यालय, पुस्तकालय, उदयपुर (1865)

कोई एक शताब्दी पूर्व सन् 1865 में संस्थापित इस पुस्तकालय में 6 हजार से अधिक ग्रंथ संग्रहीत है। वर्ष 1969 में सदस्य संख्या 134 रही। प्रति वर्ष घर पर पढ़ने हेतु एक हजार पुस्तकें दी जाती है। पुस्तकों का वर्गीकरण विषयवार है।
श्री वी. एन. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

महिला मण्डल पुस्तकालय, उदयपुर (1955)

महिला शिक्षण तथा स्त्री जागरण के लिए कार्यशील इस संस्था के अन्तर्गत पुस्तकालय का प्रारम्भ सन् 1935 में हुआ। वर्तमान में 19 हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 125 लगभग पत्र-पत्रिकाएं आती है। वर्ष 1969–70 में सदस्य संख्या 211 रही। प्रति वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 3000 से अधिक पुस्तकें दी जाती है।
श्री आर. सुखवाल पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर (1956)

राजस्थान के लोकनेता स्वर्गीय माणिक्यलालजी वर्मा से सम्बन्ध यह ज्ञानमन्दिर विचारक्रांति का दीप स्तम्भ बन गया है। सन् 1956 में संस्थापित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 14,000 करीब पुस्तकें हैं। वाचनालय में 75 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। सन् 1969-70 में सदस्य संख्या 604 थी। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट 8000 रु० का है।
श्री एस० एल० शर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष है।

नगर परिषद पुस्तकालय, उदयपुर (1955)

जगदीश चौक स्थित नगर परिषद के इस पुस्तकालय का प्रारम्भ सन् 1955 में हुआ। वर्तमान में सभी विषयों की 10,000 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा वाचनालय में 150 से अधिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। प्रति वर्ष घर पर पढ़ने हेतु दस हजार करीब पुस्तकें दी जाती हैं। वर्ष 1969–70 में सदस्य संख्या 638 थी। पुस्तकों का वर्गीकरण कोलन-पद्धति से किया गया है। इस पुस्तकालय के अन्तर्गत नगर में वाचनालय चलाए जाते हैं।
श्री सी. एल. जोशी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

पंचायतीराज प्रशिक्षण केन्द्र पुस्तकालय, उदयपुर (1959)

राज्य सरकार द्वारा डबोक में मई सन् 1959 में इस पुस्तकालय का प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में 4,000 लगभग पुस्तकें हैं। वाचनालय में 50 करीब पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। वर्ष 1969–70 में 175 सदस्य थे। पुस्तक खरीद तथा पत्र-पत्रिकाओं के लिए वार्षिक बजट रु. 600 है।
श्री एस. के. शुक्ला पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

पॉलीटेकनिक पुस्तकालय, उदयपुर (1957)

प्रतापनगर में अवस्थित इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1957 में हुई । वर्तमान मे 8,000 करीव पुस्तकें हैं तथा वाचनालय में 70 से अधिक पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं । प्रति वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 2,000 से अधिक पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक वजट रु. 5,00 का है । पुस्तकें डेवी–पद्धत्ति से वर्गीकृत हैं ।
श्री. आर. एस. मेहता पुस्तकालयाध्यक्ष हैं ।

राजस्थान महिला परिषद पुस्तकालय, उदयपुर (1947)

हाथीपोल के वाहर स्थित महिला परिषद द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना सितम्वर सन् 1947 में हुई । वर्तमान में लगभग 6,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा 50 पत्र–पत्रिकाएं वाचनालय में आती हैं । प्रति वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 3,000 करीव पुस्तकें दी जाती हैं । पुस्तक खरीदने के लिए वार्षिक वजट रु. 6,000 का है । पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं । पुस्तकालय के अन्तर्गत चल–पुस्तकालय योजना का क्रम भी है ।
श्री मुरताजअली पुस्तकालयाध्यक्ष हैं ।

राजस्थान महिला विद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1958)

सन् 1958 में संस्थापित इस पुस्तकालय में लगभग 9,000 पुस्तकें हैं तथा वाचनालय में 25 पत्र–पत्रिकाएँ आती हैं । प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 2,000 से अधिक पुस्तकें दी जाती हैं । पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक वजट रु. 2,000 का है ।
श्रीमती नारायणी देवी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं ।

राजस्थान साहित्य अकादमी पुस्तकालय, उदयपुर (1958)

राजस्थान साहित्य अकादमी स्थापना–तिथि 28 जनवरी सन् 1958 से सन् 1962 तक सरकारी स्वरूप में अपना कार्य करती रही 1962 के वाद यह राज्य सरकार द्वारा स्वायत्त घोषित करदी गई । साहित्यिक संस्थाओं एवम् साहित्यिकों की सहायता इसके कार्यक्षेत्र में हैं । सन् 1958 के दिसम्वर में अकादमी के पुस्तकालय की शुरूआत हुई । वर्तमान में 8,000 से अधिक पुस्तकें हैं तथा 50 करीव पत्र-पत्रिकाएँ वाचनालय में आती हैं । प्रति वर्ष पुस्तक खरीद हेते रु. 7,000 का वजट है । घर पर पढ़ने हेतु हर साल 1,000 लगभग पुस्तकें दी जाती हैं । पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं ।
श्री आविद हुसैन पुस्तकालयाध्यक्ष हैं ।

राजस्थान विश्वविद्यालय, जियोलोजी विभाग, उदयपुर

सन् 1950 में संस्थापित इस पुस्तकालय में 3,000 से अधिक ग्रन्थ संग्रहीत हैं । वाचनलय में 50 से अधिक पत्र–पत्रिकाएँ आती हैं । प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु लगभग 4,000 पुस्तकें दी जाती हैं । पुस्तकें कोलन पद्धन्ति से वर्गीकृत हैं । प्रतिवर्ष पुस्तक खरीद हेतु रु. 5,000 का वजट है ।
श्री टी. आर. शर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं ।

रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडीकल कॉलेज पुस्तकालय, उदयपुर

उदयपुर के जनरल अस्पताल प्रांगण में स्थित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ अक्टूबर सन् 1962 में हुआ। वर्तमान में 10,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा वाचनालय में 300 से अधिक पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। पुस्तकालय हेतु वार्षिक बजट लगभग 1 लाख रुपये का है। प्रति वर्ष लगभग 4,000 पुस्तकें पढ़ी जाती हैं। पुस्तकें डेवी पद्धत्ति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में माइक्रो-फिल्म रीडर की व्यवस्था है।
श्री पी. सी, भार्गव पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

रेजीडेंसी कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर (1960)

सन् 1960 में संस्थापित इस पुस्तकालय में 7,000 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में करीव 40 पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। वर्ष 1969-70 में 1254 सदस्य थे। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 25,000 पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट रु. 4,000 का है।
श्रीमती प्रकाशवती कुलश्रेष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष है।

साहित्य संस्थान पुस्तकालय, उदयपुर (1939)

सन् 1939 में स्थापित इस पुस्तकालय में 6,000 से अधिक ग्रन्थ संग्रहीत हैं। वाचनालय में 70 करीव पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। पुस्तकें कोलन पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तक खरीद हेतु रु. 2,000 का वार्षिक बजट है।
श्री सुमन मन्जेट पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

बुनियादी विज्ञान एवं मानविकी विद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर

सन् 1945 में स्थापित इस पुस्तकालय में 52,000 करीव पुस्तकें हैं। वाचनालय में करीव 4,00 पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 75,000 पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट रु. 1,15,00 का है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। कॉलेज पुस्तकालय में प्राप्त पुराने पत्र-पत्रिकाओं का कैटलॉग प्रकाशित किया गया है।
श्री बी. एल. भानावत पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

ला कॉलेज पुस्तकालय, उदयपुर

महाराणा भूपाल महाविद्यालव प्रांगण में स्थित इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1945 में हुई। वर्तमान में इसमें 2,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा वाचनालय में 50 करीव पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। वर्ष 1969-70 में 200 सदस्य थे। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 5,000 पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट रु. 2,000 का है।
श्री आर. सी. देपुरा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्रमजीवी माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर

धानमण्डी स्थित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ सन् 1937 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकालय में 4,000 करीव पुस्तकें संग्रहीत हैं। वर्ष 1969–70 में 250 सदस्य संख्या थी। पुस्तकें डेवी पद्धत्ति से वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष 1,000 पुस्तकें पढ़ी जाती हैं।
श्री महात्मा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्री दिगम्बर जैन कन्या विद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1941)

सन् 1941 में स्थापित इस पुस्तकालय में करीव 3,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 30 लगभग पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। वर्ष 1969–70 में 300 सदस्य थे। प्रतिवर्ष 8,000 पुस्तकें पढ़ने को दी जाती हैं। पुस्तकें खरीद हेतु रु. 1,000 का वार्षिक वजट है।
श्रीमती तीजादेवी वर्मा पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र पुस्तकालय, उदयपुर (1963)

फतेह सागर क्षेत्र में सन् 1963 में स्थापित इस पुस्तकालय में 14,000 पुस्तकें हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 3,000 से अधिक पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें कोलन-पद्धत्ति से वर्गीकृत हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक वजट रु. 18,000 का है।
श्री रामशरण पानेरी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

सामुदायिक विकास एवं पंचायती राज संस्थान पुस्तकालय, उदयपुर

रानी रोड़–फतेहसागर स्थित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ अक्टूबर 1958 में हुआ। वर्तमान में लगभग 4,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा वाचनालय में 70 पत्र–पत्रिकाएँ आती हैं। पुस्तकें डेवी पद्धत्ति से वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 12,000 पुस्तकें दी जाती हैं। वर्ष 1969–70 में 2025 सदस्य थे। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक वजट रु. 3,000 का है।
श्री आर. एन. श्रीमाली पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

विज्ञान अध्ययन संस्थान पुस्तकालय, उदयपुर (1965)

नेहरू छात्रावास के समीप स्थित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ अक्टूबर 1965 में हुआ। वर्तमान में पुस्तक संख्या 5000 करीब है तथा वाचनालय में 50 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1,000 पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें कोलन-पद्धत्ति से वर्गीकृत हैं। संस्थान द्वारा विज्ञान-पत्रिका तथा विज्ञान-समाचार प्रकाशित होते हैं।
श्री व्रजराज कृष्ण पुरोहित पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

तयाबीह माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1959)

दिल्ली दरवाजे पर स्थित इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1959 में हुई। वर्तमान में लगभग 3,000 पुस्तकें हैं। प्रतिवर्ष 5,000 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी जाती हैं। वर्ष 1969–70 में सदस्य संख्या 407 रही। वाचनालय में 40 पत्र–पत्रिकाएं आती हैं।
श्री वतुल पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

विद्याभवन रूरल इन्स्टीट्यूट पुस्तकालय, उदयपुर (1956)

बड़गांव–उदयपुर में स्थापित यह पुस्तकालय सन् 1956 से लोकशिक्षण की दिशा में अग्रसर है। वर्तमान में 21,000 पुस्तकें हैं तथा वाचनालय में 150 पत्र–पत्रिकाएं आती हैं। प्रतिवर्ष पढ़ने हेतु 1,000 पुस्तकें दी जाती हैं। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट रु. 5,000 का है। वर्ष 1969–70 में सदस्य संख्या 500 रही। श्री एम. एस. जानी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

वी. एस. शिक्षा भवन माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, उदयपुर (1942)

स्वरूप-सागर के समीप सन् 1942 में स्थापित इस पुस्तकालय में 4,000 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। प्रतिवर्ष 500 से अधिक पुस्तकें पढ़ने हेतु दी जाती हैं। पुस्तक खरीद हेतु वार्षिक बजट रु. 500 का है। श्री हबीबुद्दीन खां पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

जोनल ट्रेनिंग वेस्टर्न रेल्वे स्कूल, उदयपुर (1956)

फतेहपुरा–उदयपुर में चल रहा यह पुस्तकालय सन् 1956 में प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में 5,000 करीब पुस्तकें संग्रहीत हैं। प्रतिवर्ष 6,000 पुस्तकें पढ़ने हेतु दी जाती हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। वर्ष 1969–70 में सदस्य संख्या 378 रही। वाचनालय में 50 पत्र–पत्रिकाएं आती हैं। श्री जी. ए. राखे पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

प्रताप म्यूजियम पुस्तकालय, उदयपुर (1874)

इस पुस्तकालय की स्थापना 1874 से 1880 के बीच की गई थी। इस पुस्तकालय से अध्यापक विद्यार्थी तथा अनुसंधान करने वाले स्नातक अधिक से अधिक लाभ उठा रहे हैं।
वर्तमान में 1,607 पुस्तकें इस पुस्तकालय में संग्रहीत हैं, जिसमें इतिहास, चित्रकला, दस्तकारी, विज्ञान, पुरातत्व सम्बन्धी पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।

जिला पुस्तकालय, नाथद्वारा (1956)

राजस्थान के प्रसिद्ध धार्मिक नगर नाथद्वारा में नगर के मध्य 1956 में स्थापित इस पुस्तकालय में 7669 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 73 है। पुस्तक खरीदने हेतु 1200 रु. वार्षिक तथा पत्र-पत्रिकाओं के लिये 700 रु. वार्षिक बजट स्वीकृत है। श्री नाथजी के दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों के कारण इस पुस्तकालय की पाठक संख्या 45 हजार के लगभग पहुँच जाती है। पुस्तकालय में पाठकों की संख्यानुसार भवन छोटा है इस पुस्तकालय का संचालन राजस्थान सरकार के समाज शिक्षा विभाग द्वारा निर्मित 7 सदस्यीय समिति द्वारा किया जाता है। पुस्तकाध्यक्ष: विदल दास शर्मा वर्तमान में पुस्तकाध्यक्ष हैं।

सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा (1962)

सन् 1962 में स्थापित इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 9885 पुस्तकें हैं जिनमें हिन्दी-अंग्रेजी भाषा में चिकित्सा, इतिहास–भूगोल, अर्थशास्त्र, जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें हैं। पुस्तकें विषय वार वर्गीकृत है। पुस्तक खरीदने हेतु 11000 रु. सालाना बजट स्वीकृत है। श्री जी. एस. रावत पुस्तकाध्यक्ष हैं।

कोटा जिला

श्री भारतेन्दु पुस्तकालय, कोटा (1926)

यह पुस्तकालय श्री भारतेन्दु समिति के तत्वावधान में सन् 1926 से चल रहा है। भारतेन्दु समिति राजस्थान में ख्याति प्राप्त प्राचीन साहित्यिक संस्था है। संस्था का अपना भवन है जिसका इस समय मूल्यांकन लगभग तीन लाख का है। साहित्यकारों द्वारा बिना राजकीय सहयोग के निर्मित इतना विशाल भवन भारत के इने गिने भवनों में है।

इस संस्था द्वारा अनेक राष्ट्रीयस्तर के कवियों और लेखकों का निर्माण किया गया। डा० सुधीन्द्र, डा० ओंकारनाथ चतुर्वेदी, डा० त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी, नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, डा० रामचरण महेन्द्र, डा० शान्तिलाल भारद्वाज 'राकेश' आदि इसी संस्था से प्रेरणा प्राप्त विद्वान हैं।

समिति द्वारा 'चिदम्बरा' मासिक पत्रिका का प्रकाशन होता है, जो राजकीय मान्यता प्राप्त है। समिति ने अनेक प्रकाशन किए हैं। वर्ष में अनेक काव्य गोष्ठियां, उत्सव, पर्व संस्था द्वारा मनाये जाते हैं।

ठा० किशोरसिंहजी जो केसरीसिंहजी बारहठ की परम्परा में हैं, उनके नाम से ठा० किशोरसिंह कक्ष स्थापित किया गया है। इस कक्ष में प्राचीन अलभ्य पुस्तकों का संग्रह है, जो शोध विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है। वाचनालय भी नियमित चल रहा है। जिसमें सामान्य पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त साहित्यिक पत्रिकाओं का प्राधान्य है। इस समय अध्यक्ष—श्री गजेन्द्रसिंह सोलंकी तथा प्रधानमन्त्री—वैद्य बद्रीनारायण शास्त्री, एम० ए० हैं।

श्री महाराव भीमसिंह सार्वजनिक पुस्तकालय, कोटा (1910)

नगर परिषद, कोटा द्वारा संचालित इस सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना सन् 1910 में हुई। सुविख्यात क्रांतिकारी नेता श्री केसरीसिंह बारहठ द्वारा इस ज्ञानमन्दिर का शुभारंभ किया गया था और पब्लिक लाइब्रेरी के नाम से यह पूरे कोटा राज्य में ही एक मात्र पुस्तकालय था। राज्य की ओर से इसे सहायता मिलती रही। सन् 1921 में नगर पालिका, कोटा बनी तथा तब से यह नगर पालिका के तत्वावधान में आगया। महाराव भीमसिंह जी-भूतपूर्व कोटा नरेश ने इसके लिए विशाल भवन दिया है।

पुतकालय में 25,500 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 125 है। विगत वर्ष पुस्तकालय में 36,000 पुस्तकें पढ़ी गईं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष कुल 89 हज़ार रुपये व्यय होते हैं। पुस्तकालय का निजी भवन है, जो सर्वथा उपयुक्त है। गत वर्ष पुस्तकालय में 2000 पुस्तकें जोड़ी गईं। पुस्तकालय के अन्तर्गत उसकी शाखाओं के रूप में नगर में आठ वाचनालय भी चलते हैं।

श्री बद्रीनारायण शास्त्री एम० ए०, साहित्यायुर्वेद ज्योतिषरत्न वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राजकीय प्रादेशिक पुस्तकालय, कोटा (1956)

कोटा डिवीजन का सबसे बड़ा यह सार्वजनिक पुस्तकालय सन् 1956 में प्रादेशिक पुस्तकालय के नाम से द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कोटा में स्थापित किया गया था। कोटा की निरन्तर बढ़ती हुई आबादी, औद्योगिक विकास एवं दिनोंदिन बढ़ते हुए शिक्षा के प्रसार के कारण इस प्रादेशिक पुस्तकालय को सरकार ने सन् 1960 में डिवीजनल पुस्तकालय (प्रथम श्रेणी पुस्तकालय) में परिवर्तित कर दिया। आज यह पुस्तकालय इक्कीस कर्मचारियों एवं 35,900 पुस्तकों के सहयोग से कोटा डिवीजन में अपनी सेवा अर्पित कर रहा है। इस पुस्तकालय में अभी स्थानाभाव है कारण कि भवन अभी अधूरा ही बना है। भवन के विस्तार के साथ पुस्तकालय का विस्तार स्वाभाविक है।

पुस्तकालय में वर्तमान में कुल 35,464 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 117 है। विगत वर्ष 13,438 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है, जो ए. एल. ए. पद्धति पर बना हुआ है। लगभग आठ हजार रुपये प्रतिवर्ष पुस्तकें खरीदने पर व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय में कुल 30 कर्मचारी हैं, जिनमें पुस्तकालय–विज्ञान में 7 व्यक्ति प्रशिक्षित हैं।

श्री महावीर प्रसाद एम. ए., बी. काम., डी. एल. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं तथा श्री रामस्वरूप भार्गव बी. ए., बी. लिब. एस. सी. सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

सूचना केन्द्र, कोटा (1964)

सार्वजनिक जनसम्पर्क निर्देशालय, राजस्थान सरकार द्वारा संचालित इस केन्द्र की स्थापना 15 अगस्त, सन् 1961 में हुई। पुस्तकालय में लगभग 4000 ग्रन्थ संग्रहीत हैं तथा 120 पत्र-पत्रिकाएं प्रतिवर्ष मंगवाई जाती हैं। विगत वर्ष पुस्तक-क्रय करने पर रु० 2500 व्यय किए गये।

यह केन्द्र राजकीय भवन में चल रहा है, जो उपयुक्त है। पुस्तकालय का उपयोग करने वालों में छात्र सर्वाधिक हैं। वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष का स्थान रिक्त है।

जवाहरलाल नेहरू शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा (1965)

सन् 1965 में स्थापित इस संस्था के पुस्तकालय में 3,679 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु लगभग 6,000 पुस्तकें दी गई। शिक्षा शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें इसकी विशेषता है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय-भवन उपयुक्त है। पुस्तकाध्यक्ष का स्थान रिक्त है।

राजकीय पॉलीटेक्निक पुस्तकालय, कोटा (1960)

राजस्थान सरकार द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1960 में हुई। हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों की 9000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। लिंग्वाफोन रिकोर्ड्स, मानचित्रादि एवं लागटेबिल्स की संख्या 1000 है। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 1061 पुस्तकें दी गई। पुस्तकें डेवी-पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तक-संग्रह का कार्ड-कैटलाग है, जो सी. सी. सी. पद्धति पर बना है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है।

संस्था भवन सरकारी है तथा नये पुस्तकालय भवन का निर्माण विचाराधीन है।

श्री बृजेन्द्र बी. कौशिक एम. ए., बी. लिब. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्री महावीर जैन पुस्तकालय, कोटा (1918)

रामपुरा बाजार स्थित एवं जैन समाज द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1918 में हुई। वर्तमान में कुल 3059 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 2000 पुस्तकें दी गई। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं।

श्री दलपतसिंह तातेड़ पुस्तकाध्यक्ष हैं।

सार्वजनिक संस्कृत महाविद्यालय पुस्तकालय, बारां (1944)

महाविद्यालय समिति द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1938 में हुई। पुस्तकालय में 1444 पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 386 पुस्तकें दी गई। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं।

श्री पुरुषोतम स्वरूप गौतम पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राजकीय तहसील पुस्तकालय, बारां (1956)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1956 में हुई। पुस्तकालय में कुल 4920 पुस्तकें संग्रहीत है। पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की प्रतिदिन की संख्या 50 है। पुस्तकें डेवी–पद्धत्ति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय किराये के मकान में चल रहा है।

श्री मदनलाल भाम्ब पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, बारां (1966)

जौलाई सन् 1966 से संचालित इस पुस्तकालय में 8415 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। वर्ष भर मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 53 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 11,502 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकें कोलन-पद्धत्ति पर वर्गीकृत है। पुस्तकालय-संग्रह का कैटलॉग है, जो रंगनाथन पद्धत्ति पर बना है।

श्री तेजमल विजय एम. ए., बी. लिब. एस. सी. पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

—o—

शिक्षा-व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी

सार्वजनिक पुस्तकालय राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। पुस्तकालय सेवाओं के माध्यम से ही मानव की सांस्कृतिक उपलब्धियों का प्रसार एवम् प्रचार होता है। पुस्तकालयों से ही राष्ट्र को अपना बौद्धिक पोषाहार प्राप्त होता है चिन्तन होता है, चिन्तन जागृत होता है। एक सुनियोजित व्यापक पुस्तकालयी व्यवस्था के बिना किसी भी राष्ट्र के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। अब पुस्तकालय केवल पुस्तक भण्डार ही नहीं है वरन् एक सशक्त जीवन्त, सक्रिय, सजग, एवम् क्रियाशील संस्था है।

विद्यालयों की शिक्षा से निवृत होने पर जीवन के लिये नई दिशा, नई प्रेरणा, मनोरंजन, ज्ञान, चेतना सभी कुछ पुस्तकालय से अत्यन्त सुविधा से प्राप्त किया जा सकता है। एक सार्वजनिक पुस्तकालय जन मस्तिष्क को शिक्षित करता है। मानव अपने मानसिक क्षितिज का विस्तार पुस्तकालय के माध्यम से ही कर पाता है। पुस्तकालय का क्षेत्र व्यापक होता है और वह सम्पूर्ण समुदाय का विकास करता है।

चित्तौड़गढ़ जिला

राजकीय जिला पुस्तकालय, चित्तौड़गढ़ (1956)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1956 में हुई। आरम्भ में यह किराये के मकान में चलता रहा तथा वर्तमान में पी. डवलू. डो. के भवन में चल रहा है। वर्तमान में इस पुस्तकालय का संचालन समाज शिक्षा विभाग, राजस्थान राज्य द्वारा किया जा रहा है। प्रतिदिन पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की संख्या लगभग 200 है। पुस्तकें दशमलव-पद्धत्ति पर वर्गीकृत हैं। कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है, जो सी. सी. सी. पद्धति पर बना है। विगत वर्ष 18,130 पुस्तकों का उपयोग पाठकों द्वाराकिया गया है। पुस्तकालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 38 हैं। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। वर्तमान में 8583 पुस्तकें संग्रहीत हैं।

श्री घनश्याम शर्मा वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्रीमती मोतीबहन जीवराज शाह बाल पुस्तकालय, चित्तौड़गढ़

भामाशाह भारती भवन बाल मंदिर के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1962 में हुई। वर्तमान में 1250 पुस्तकें संग्रहीत हैं। सर्वोदय तवा शिक्षा-साहित्य इस संग्रह की विशेपता है। पुस्तकालय निजो भवन में चल रहा है।

श्री निर्मला वहिन पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

सांस्कृतिक क्षेत्र में सहअस्तित्व

पुस्तकालय के द्वार विना किसी जाति, लिंग, धर्म, रंग सम्प्रदाय अथवा राजनैतिक सम्बन्ध आदि के भेद-भाव के सभी के लिये खुले रहते हैं। एक पुस्तकालय की आलमारी में विभिन्न संस्कृतियां पास-पास रहती हैं। साम्यवादी और पूंजीवादी साहित्य तथा गीता और कुरान, बाइबिल इत्यादि सभी पूर्ण शान्ति के साथ रहते हैं। विभिन्न मत-मतान्तरों तथा धर्मों एवम् वादों से सम्बन्वित परस्पर विरोधी साहित्य भी पुस्तकालयों में रहता है, जहां सत्य की खोज निर्बाध रूप से की जा सकती है। सांस्कृतिक क्षेत्र में शान्ति-पूर्ण सहअस्तित्व का इससे उत्तम उदाहरण नहीं मिल सकता।

चूरू जिला

लोहिया महाविद्यालय पुस्तकालय, चूरू (1945)

महाविद्यालय के अन्तर्गत चल रहे इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1945 में हुई। पुस्तकालय में कुल 26,000 पुस्तकें हैं, जिनमें हिन्दी की 14,700 पुस्तकें हैं। वर्ष भर में घर पर 13,256 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 300 है। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का कार्ड कैटलॉग है, जो सी. सी. नी. रंगनाथन पद्धति पर बना है।

वर्तमान स्थिति में पुस्तकालय-भवन छोटा पड़ता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त सहायता के अन्तर्गत पुस्तकालय का अलग से एक नया भवन बनाने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। श्री राधेश्याम शर्मा, एम. ए., बि. लिब. साहित्यरत्न पुस्तकालयाध्यक्ष हैं तथा श्री पुरुषोत्तमलाल शर्मा एम. ए., सी. लिब. एस. सी, सहायक पुस्तकाध्यक्ष हैं।

साहित्य संस्थान पुस्तकालय, चूरू (1965)

साहित्य संस्थान पुस्तकालय की शुरूआत सन् 1965 में हुई। वर्तमान में पुस्तकालय में 1510 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। दस पत्र-पत्रिकाएं पुस्तकालय में आती हैं। वर्ष भर में घर पढ़ने हेतु 500 पुस्तकें दी गईं। साहित्य एवं विधि विषयों की अधिकांश पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 30 है। यह पुस्तकालय व्यक्तिगत प्रयत्नों का अच्छा उदाहरण है। श्री राधेश्याम पाठक इस पुस्तकालय के संस्थापक और संचालक हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय, तारानगर (1926)

15 जून सन् 1926 में संस्थापित इस सार्वजनिक पुस्तकालय में 6.210 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 25,000 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 150 है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 4,000 रु० से अधिक व्यय किए जाते हैं।

पुस्तकालय का निजी-भवन है, जो सर्वथा उपयुक्त है। समय-समय पर संस्था द्वारा सांस्कृतिक उत्सवों का भी आयोजन किया जाता है।

श्री पूर्ण महर्षि वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्री नवयुवक पुस्तकालय, मोमासर (1946)

चुरू जिलान्तर्गत मोमासर का यह सार्वजनिक पुस्तकालय सन् 1946 में स्थापित हुआ। पुस्तकालय में 5138 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वर्ष भर में 3058 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकालय का निजी भवन है, जो उपयुक्त है। श्री बाबूलाल नखारा संस्था के मंत्री हैं।
श्री लालुराम वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

श्री सार्दुल पुस्तकालय, सादुलपुर (1940)

शिक्षा विभाग, राजस्थान से सहायता प्राप्त इस सार्वजनिक पुस्तकालय की दिसम्बर 1940 में स्थापना हुई। पुस्तकालय में 2659 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 1239 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 30 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर 2000 रु० व्यय होते हैं। संस्था के पास तीन सौ गज जमीन है, जिस पर भवन निर्माण शीघ्र करने का प्रयास चालू है। वर्तमान में पुस्तकालय किराये के मकान में चलता है। संस्था के मन्त्री श्री मानचन्द मालू हैं।

श्री भंवरलाल दूगड़ आयुर्वेद विश्वभारती पुस्तकालय, सरदारशहर (1956)

आयुर्वेद विश्वभारती के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1956 में हुई। वर्तमान में इसमें 4,000 से अधिक ग्रन्थ संग्रहीत हैं। आयुर्वेद एवं पाश्चात्य विज्ञान विषय संग्रह की विशेषता है। संस्था का निजी भवन है, जो सर्वथा उपयुक्त है। विद्यार्थी तथा शिक्षकगण ही मुख्य रूप से इसका उपयोग करते हैं।
वैद्य सोहनलाल वर्तमान में व्यवस्थापक हैं।

श्री भगवती पुस्तकालय, आडसर (1943)

यह सार्वजनिक पुस्तकालय अक्षय तृतीया सं. 1999 में स्थापित हुआ। कार्यकारिणी–समिति द्वारा इसका संचालन होता है तथा राज्य सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग मिलता है। वर्तमान में 1115 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकें विषयानुसार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर एक हजार रुपये व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय का भवन निजी है।
श्री जयचन्दलाल व्यास पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़

इस संस्था की स्थापना सन् 1961 में की गई। वर्तमान में इसका संचालन एक निर्वाचित कार्यकरिणी द्वारा होता है, जिसके 15 सदस्य हैं। संस्था हर वर्ष दो पुस्तकें प्रकाशन का विचार रखती है। संस्था के अन्तर्गत दो प्राथमिक स्कूल चलते हैं।
हिन्दी व राजस्थानी भाषा की विशिष्ट पुस्तकें इसके संग्रह की विशेषता है। संस्था का मकान किराये का है। प्रकाशित पुस्तकें हैं—१. काव्यांजलि (कविता संग्रह), हिन्दी तथा काव्यांजलि (कविता संग्रह)–राजस्थानी।

जयपुर जिला

महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर (1866)

सन् 1866 में स्थापित इस ज्ञान मन्दिर में वर्तमान में कुल 94,497 ग्रंथ संग्रहीत हैं, जिनमें हिन्दी 50316, अंग्रेजी 28,530 तथा अन्य भाषाओं के 15651 ग्रंथ हैं। हिन्दी साहित्य मुख्यतया उपन्यास संग्रह की विशेषता है। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 48966 पुस्तकें दी गईं तथा पुस्तकालय में साल भर में 20,728 पुस्तकें पढ़ी गईं। 102 पत्र पत्रिकाएं वाचनालय में आती हैं।

पुस्तकें डेवी दसमलव पद्धति पर वर्गीकृत हैं। कार्ड कैटलाग पद्धति की पुस्तकालय में व्यवस्था है। पाठकों की सुविधा के लिये मर्यादित खुली पहुंच की व्यवस्था है।
पुस्तकालय निजी भवन में है लेकिन बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखते हुए वह पर्याप्त नहीं है। पुस्तकालय में नये फर्नीचर की आवश्यकता भी अनुभव की जा रही है।

पुस्तकालय में प्रतिदिन चार सौ के लगभग व्यक्ति अध्ययन हेतु आते हैं। विद्यार्थी तथा व्यवसायी वर्ग के व्यक्तियों की पाठकों में प्रमुखता है। विगत वर्ष 1684 पुस्तकें पुस्तकालय में जोड़ी गईं हैं। पुस्तकालय का बजट लगभग सवा लाख रुपये प्रतिवर्ष है। सन् 1900 से पूर्व छपी हुई पुस्तकों की संख्या 4000 से अधिक हैं जिनकी सूची तैयार की जा रही है। स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं से ही अधिकतर पुस्तकें क्रय की जाती हैं।

पुस्तकालय के अन्तर्गत नगर में 13 वाचनालय चलते हैं। पुस्तकालय में बाल-विभाग की अलग से व्यवस्था है। चल पुस्तकालय सेवा भी कार्यशील है। पुस्तकालय में वर्तमान में 44 व्यक्ति कार्यरत हैं। जिनमें तीन व्यक्ति डिग्री तथा 6 व्यक्ति प्रमाणपत्र प्राप्त हैं।

श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता एम. ए., बी. लिब. एस. सी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। श्री गुप्ता ने पुस्तकालय विज्ञान पर महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं।

सूचना केन्द्र जयपुर (1959)

सन् 1959 में स्थापित यह सूचना केन्द्र राजस्थान के जन सम्पर्क निदेशालय के तत्वावधान में कार्यरत एक ऐसी संस्था है जिसका लक्ष्य पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से चल रहे राष्ट्रीय और क्षेत्रीय विकास की सूचनाओं, समस्याओं एवं विभिन्न आयामों को जन जनसाधारण के

सामने प्रस्तुत करना हैं। दिनांक 22 नवम्बर 1959 को इस संस्था का उद्घाटन डा० बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर के कर कमलों द्वारा सम्पादित हुआ और विकास का एक चरण पूरा करने के पश्चात दिनांक 9 मई 1968 से यह संस्था सवाई रामसिंह रोड़ स्थित अपने विशाल नये भवन में स्थानान्तरित होकर अपना कार्य कर रही है। गत दशक में इस केन्द्र के पाठकों की संख्या एवं सेवाओं की कार्य कुशलता का उत्तरोतर विकास हुआ है। यह संस्था अपने संदर्भ पुस्तकालय, वाचनालय, अध्ययन कक्ष, शिक्षण सेवा, विक्रय कक्ष, सूचना एवं संदर्भ-सेवा, वृत्त चित्र प्रदर्शन, कला दीर्घिका तथा माइक्रोफोन स्टेशन द्वारा जन सेवा में रत है। केन्द्र की सेवा से प्रतिदिन 300 से भी अधिक पाठक लाभान्वित होते हैं।

इस संस्था की दो विशिष्ट सेवायें हैं— समाचार प्रसारण सेवा तथा कलादीर्घा के माध्यम से सामाजिक विषयों पर प्रदर्शनियों का आयोजन। प्रदर्शन कक्ष समय-समय पर राज्य में हो रही प्रगति का दिग्दशन प्रस्तुत करता है। केन्द्र के अन्तर्गत विचार-गोष्ठियों, कवि-सम्मेलनों, मुशायरों, वार्ताओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन भी होते हैं।

दिल्ली विश्व विद्यालय के पत्राचार-पाठयक्रम के विद्यार्थियों के लिए गठित लघु पुस्तकालय सेवा ने केन्द्र की सेवाओं में एक और नई कड़ी जोड़ दी हैं। पुस्तकालय के इस विभाग से दिल्ली पत्राचार पाठ्यक्रम एवं अनुवर्ती शिक्षा के पंजीवद्ध छात्रों को घर पर पढ़ने के लिए पाठ्य-पुस्तकें दी जाती हैं।

राज्य के जन सम्पर्क निर्देशालय द्वारा संचालित इस विशिष्ट सार्वजनिक पुस्तकालय में वर्तमान में 26,262 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। पैम्फलेट्स तथा अन्य पाठ्य सामग्री की संख्या 13749 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगायी जाने वाली कुल पत्र-पत्रिकाएं 526 हैं। संग्रह की विशेषता संदर्भ पुस्तकें एवं सरकारी प्रतिवेदन हैं। पुस्तकालय में वर्ष भर में पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या 56,000 है। पुस्तकालय में प्रतिदिन लगभग 300 पाठक आकर लाभ उठाते हैं।

पुस्तकालय की पुस्तकें 'डेवी' के सोलहवें संस्करण के अनुसार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्डकैट लॉग है, जो सी. सी. सी (रंगनाथन) पद्धति पर बना हुआ है। वर्ष 1971 में 728 पुस्तकें तथा 828 पुस्तिकाएं पुस्तकालय में जोड़ी गई। विगत वर्ष पुस्तक क्रय करने पर लगभग 12000 रु. व्यय किये गए। पुस्तकालय कर्मचारियों तथा अन्य मदों पर व्यय एक लाख रु. वार्षिक से अधिक है।

मनन के लिए, ज्ञानवृद्धि के लिए और अध्ययन में रत रहने के लिए एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता होती है, जिसमें शांति हो, सुविधा हो और अध्ययन योग्य सामग्री हो, सूचना केन्द्र जयपुर में यह सब कुछ उपलब्ध है और यही कारण है कि यह संस्था राज्य में ही नहीं अपितु देश के पुस्तकालय जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है।

वर्तमान में श्री अमरसिंह महता सूचना केन्द्र के मुख्य प्रभारी अधिकारी हैं। श्री छाजूसिंह चांपावत एम. ए बी. लिब. एस. सी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। गीजगढ़ में वर्ष 1928 में जन्मे श्री चांपावत को फोटोग्राफी तथा सिने-समीक्षा में रुचि है। श्री परमहंस प्रसाद त्रिपाठी सहायक पुस्तकयाध्यक्ष हैं तथा श्री दिनेशकुमार रघुवंशी केटलागर हैं।

राजस्थान विधान सभा पुस्तकालय, जयपुर (1952)

राज्य सरकार द्वारा विधान सभा के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना सन् 1952 में हुई। वर्तमान में इस पुस्तकालत में 27560 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। प्रतिवेदन तथा अन्य साहित्य-सामग्री की संख्या लगभग 15,000 है। पुस्तकालय में आने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 126 है। विधि-पुस्तकें इस संग्रह की विशेषता है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 23194 पुस्तकें दी गई।

पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तक संग्रह का कैटलॉग है, जो विषवार बना हुआ है। पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाओं के क्रय हेतु प्रतिवर्ष 15,000 रु. व्यय किए जाते हैं। पुस्तकालय का निजी भवन है, जो उपयुक्त है। विधान सभा सदस्य तथा स्टाफ एवं अन्य शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग मुख्य रूप से करते हैं।

श्री किशोरलाल माथुर बी. ए. एल. एल.बी, एल. एस. जी. डी. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। श्री कमला तैलंग एम. ए. साहित्य-रत्न यहां तेरह वर्षों से कार्यरत हैं।

महाराजा सवाई मानसिंह द्वि० म्यूजियम पुस्तकालय, जयपुर (1959)

भूतपूर्व जयपुर राज्य के राजस्थान में विलीनीकरण के पश्चात स्वर्गीय म० स० मानसिंह द्वितीय ने अपने वंश परम्परागत अमूल्य वस्तु संग्रह को व्यवस्थित करके सन् 1959 में इस संग्रहालय की स्थापना की, जो अब एक बोर्ड आफ ट्रस्टीज द्वारा संचालित है।

जयपुर नरेश के वंश परम्परागत संग्रह में लगभग 16,000 हस्तालिखित ग्रन्थ हैं, जो वेद, वेदांग, स्मृति-धर्मशास्त्र, इतिहास-पुराण, भक्ति-शास्त्र, तंत्रआगम, काव्य, नाटक, चम्पू, व्याकरण, कोष, छन्द शास्त्र, नाट्यशास्त्र, शिल्प, अर्थशास्त्र, राजनीति, आयुर्वेद ज्योतिष, संगीत आदि सभी प्रकार के भारतीय साहित्य एवं विषयों से सम्बद्ध हैं। ये ग्रन्थ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, मराठी, गुजराती, बंगला, अरबी, फारसी, उर्दू अंग्रेजी और लैटिन भाषाओं में हैं। इनका लेखन काल 13 वीं शताब्दी वि० से 20 वीं. तक का है। अनेक ग्रन्थ विविध शैलियों के चित्रों से सुसज्जित हैं। इनमें विविध भारतीय शैलियों के प्रकार भी दृष्टिगत होते हैं। अनेक ग्रंथ भोजपत्र, ताड़पत्र, अगर पत्र, वस्त्रों आदि पर लिखित हैं। इस विशाल-संग्रह की सूची निर्माणाधीन है, जो संग्रहालय से प्रकाशित होगी। संग्रहालय से सम्बद्ध संदर्भ ग्रन्थों का बाहुल्य है, जिनमें चित्रकला, स्थापत्य, इतिहास, संस्कृति आदि विषय हैं। पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु नहीं दी जाती हैं। पुस्तक-संग्रह का कार्ड कैटलॉग है जो पुस्तक नामानुक्रमणिका एवं ग्रन्थकार नामानुक्रमणिकानुसार हैं। इसके अतिरिक्त रजिस्टर कैटलॉग है।

हस्तलिखित ग्रन्थों का एक सूचीपत्र छप चुका है। परामर्शदात्री समिति पुस्तकों का चयन करती है। Catalogue of Manuscripts in the maharaja Muesum, Jaipur' 1971 का प्रकाशन हुआ है।

श्री गोपालनारायण बोहरा एम. ए. भूतपूर्व उपनिदेशक, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर वर्तमान में पुस्तकाध्यक्ष हैं।

पुरातत्व व संग्रहालय विभाग, राजस्थान

राज्य के पुरातत्व व संग्रहालय विभाग द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में 6015 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। संग्रह में इतिहास, पुरातत्व, तथा कला सम्बन्ध विषयों की पुस्तकें प्रचुरता से हैं। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। रिसर्च स्कालर मुख्य रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : माधुरी द्रविड़, एम. ए., बी, लिब. एस. सी.

जन सम्पर्क निदेशालय पुस्तकालय, जयपुर (1954)

जन सम्पर्क निर्देशालय, राजस्थान के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1954 में हुआ। हिन्दी तथा अंग्रेजी आदि विषयों की 8196 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष 354 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। राजस्थानी साहित्य, पत्रकारिता एवं संदर्भ ग्रन्थ आदि इस संग्रह की विशेषता है। लगभग 100 व्यक्ति पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय भवन राजकीय है, जो उपयुक्त हैं। पुस्तकालय का उपयोग राज्य कर्मचारी वर्ग तथा अन्य बुद्धिजीवी लोग प्रायः करते है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रामदास मंडावरिया

शोध-संदर्भ पुस्तकालय भाषा-विभाग, राजस्थान (1964)

राजस्थान सरकार के भाषा-विभाग द्वारा संचालित शोध-संदर्भ पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1964 में हुई। वर्तमान में सभी विषयों की 4624 पुस्तकें सग्रहीत हैं। वंश-भास्कर तथा वीर-विनोद जैसे दुर्लभ ग्रंथ भी उपलब्ध हैं। विगत वर्ष 340 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। विभिन्न प्रकार की शब्दावलियों एवं भाषा शास्त्रीय साहित्य का विशेष संग्रह है। पुस्तकें कोलन पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय-संग्रह का कार्ड कॅटलॉग है, जो सी. सी. सी. पद्धति पर बना है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 10,000 रु. व्यय किये जाते हैं। शोधार्थी तथा कर्मचारी ही मख्यरूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। सन् 1900 से पूर्व छपी पुस्तकों की संख्या 15 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : कुमारी आशा सीकरी, एम. ए. बी. लिब. एस. सी,

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पुस्तकालय, जयपुर (1965)

राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी की स्थापना भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के अन्तर्गत हिन्दी में विभिन्न विषयों के उत्कृष्ट ग्रन्थों के लेखन, अनुवाद और प्रकाशन के उद्देश्य से सन् 1965 में की गई थी। अकादमी स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों की उत्कृष्ट पाठ्योपयोगी एवं सन्दर्भ ग्रंथ प्रकाशित करने की विशाल एवं महत्वपूर्ण योजना क्रियान्वित कर रही है। इसी संदर्भ में पुस्तकालय की भी स्थापना की गई। पुस्तकालय में 1813 ग्रंथ संग्रहीत हैं। इतिहास, दर्शन, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि विषयों की प्रमुखता है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। संग्रह का कॅटलॉग कार्ड एवं रजिस्टरफार्म पर है, जो सी. सी. सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना है। विगत वर्ष पुस्तकें खरीदने पर अनुमानित रु. 12,000 व्यय किये गये।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री प्रहल्लादमोहन माथुर

हरिश्चन्द्रमाथुर राजकीय लोकप्रशासन संस्थान पुस्तकालय, जयपुर (1957)

मालवीय नगर स्थित लोक प्रशासन संस्थान पुस्तकालय की स्थापना सन 1957 में हुई। पुस्तकालय में हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों की 18,500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउन्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 150 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष 98 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं मंगाई जाती हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 3,400 पुस्तकें दी गई। लोकप्रशासन, सामाजिक-राजनैतिक विचार-धारायें, आर्थिक प्रगति आदि विषय संग्रह की विशेपता है। पुस्तकें डेवी-पद्धति द्वारा वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैट-लॉग है, जो ए.एल.ए. पद्धति पर बना है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रू. 10,000 राजकीय बजट से व्यय किये जाते हैं। पुस्कालय का उपयोग करने वालों में राजकीय अधिकारियों की प्रमुखता है। प्रति त्रैमासिक नवीन प्राप्त पुस्तकों की सूची तैयार की जाती है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : सम्पतमल शर्मा, एम.ए. एल.एल.बी. बी.लिव. एस.सी.
सहायक पुस्तकाध्यक्ष : सुश्री उपा मेहरा एम.ए. बी.लिव. एस.सी.

आर्थिक एवं सांख्यिकी निर्देशालय पुस्तकालय, जयपुर (1949)

कृषि भवन, जयपुर में अवस्थित राज्य के आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय के अंतर्गत संचालित इस पुस्तकालय की स्थापना सन 1949 में की गई। वर्तमान में 20,541 ग्रंथ संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 2,000 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष 132 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं मंगवाई जाती हैं। योजना साहित्य, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, प्रतिवेदन, केन्द्रीय और राज्य सरकारों के सांख्यिकीय प्रकाशन, राज्यों के आय व्ययक (बजट) (सन 1856 से) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के प्रकाशन आदि संग्रह की विशेपता है। विश्व विद्यालयों के शोधकर्ता तथा विभागीय अधिकारी आदि मुख्य रूप से इस पुस्तक संग्रह का उपयोग करते हैं। पुस्तकें कोलन-पद्धति पर वर्गीकृत हैं। संग्रह का कार्ड कैटलॉग है, जो सी.सी.सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना हुआ है। प्रतिवर्ष पुस्तक-खरीद पर रू. 3500 तथा पत्र-पत्रिकाओं की खरीद पर रु. 2500. व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय, भवन सरकारी है, जो उपयुक्त है। विगत वर्ष पुस्तकालय में 1,000 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री महेशप्रसाद माथुर एम. ए. बी. लिव एस. सी.

राजस्थान नहर मंडल पुस्तकालय, जयपुर (1960)

भवानीसिंह रोड़ पर स्थित सिंचाई भवन में चल रहे इस विभागीय पुस्तकालय का आरंभ सन 1960 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी की 2700 पुस्तकें संग्रहीत हैं। इरिगेशन इंजीनियरिंग विषय इस संग्रह की विशेपता है। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलॉग है, जो रजिस्टर फार्म पर बना है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रु. 2000 व्यय किये जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री ज्ञानचद जैन

परिचारिका महाविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1963)

सन 1963 से प्रारम्भ इस पुस्तकालय में वर्तमान में एक हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिदिन 50 से अधिक छात्र आते हैं। पुस्तकें कोलन पद्धति से वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रु. 1500 व्यय होते हैं। पुस्तकालय का उपयोग छात्रगण ही मुख्य-रूप से करते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री विष्णुकान्त भार्गव

गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, बापूनगर, जयपुर (1953)

2 अक्टूबर 1953—गांधी जयंती के दिन गांधी स्मारक निधि की राजस्थान शाखा द्वारा गांधी अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई। सन 1966 में विनोबा ज्ञान मन्दिर में स्थित यही केन्द्र गांधी शांति प्रतिष्ठान के एक केन्द्र के रूप में परिणत हो गया। गांधी-शांति प्रतिष्ठान का उद्देश्य गांधी विचार और व्यवहार का प्रसार है। केन्द्र की प्रवृत्तियां हैं-पुस्तकालय, वाचनालय, विचार-सभा और शिविर आयोजन, सत्साहित्यप्रचार तथा तरुण एवं शिक्षकों से संपर्क कार्य। वर्तमान में इसके पुस्तकालय में लगभग 5000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। गांधी साहित्य इस संग्रह की विशेषता है छात्रसमुदाय और रचनात्मक कार्यकर्ता मुख्य रूप से इसका उपयोग करते हैं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या साठ है। पुस्तकालय भवन उपयुक्त है। वर्तमान में श्री रामेश्वर विद्यार्थी मुख्य कार्यकर्ता हैं।

महाराजा कॉलेज पुस्तकालय, जयपुर (1881)

राजस्थान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 40,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। विज्ञान विषय इस संग्रह की विशेषता है। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 90,000 पुस्तकें दी गईं। पुस्कें कोलन, डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलॉग है, जो सी.सी.सी. पद्धति पर बना है। विगत वर्ष पुस्तकें खरीदने पर 2500 रु. व्यय किए गये। गत वर्ष 1234 पुस्तकें जोड़ी गईं। पुस्तकालय का अपना निजी भवन है, जो उपयुक्त है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री महतावचन्द सक्सेना एम. ए., बी. लिब, एस.सी.

महारानी कॉलेज पुस्तकालय, जयपुर (1944)

सन 1944 में संस्थापित इस महाविद्यालय का पुस्तकालय तीन साल तक माधव विलास भवन में चला। सन् 47 में वर्तमान भवन में स्थानान्तरित हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय ने इसे 1962 में हस्तगत किया। पुस्तकालय में 30,313 ग्रंथ संग्रहीत है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगवाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 120 से अधिक है। वर्ष भर में 84,000 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। पुस्तकें कोलन पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलॉग है, जो सी. सी. सी, (रंगनाथन) पद्धति पर बना है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 20 हजार रुपये व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय का उपयोग मुख्य रूप से छात्रायें करती हैं। विगत वर्ष पुस्तकालय में 1286 पुस्तकें जोड़ी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : कुमारी उषा भटनागर एम.ए., बी.लिब. एस.सी.
श्रीमती मीरा सक्सेना एम.ए., बी.लिब. एस.सी.

राजकीय महाराज संस्कृत महाविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1852)

संस्कृत महाविद्यालय पुस्तकालय की स्थापना अब से 120 वर्ष पूर्व सन् 1852 में जयपुर के तत्कालीन महाराजा श्री रामसिंह ने की थी। प्रारंभ में आयुर्वेद कॉलेज का पुस्तकालय सम्मिलित था, लेकिन सन् 1946 में पुस्तकालय को दो भागों में विभाजित कर दिया गया। पुस्तकालय में वर्तमान में 6335 पुस्तकें हैं, जिनमें तंत्र, ज्योतिष, धर्म शास्त्र, न्याय, व्याकरण, वेद-वेदांत, दर्शन, मीमांसा व साहित्य आदि विषयों के महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं, जो अनुपलब्ध हैं। हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रह की विशेषता है। संस्कृत के अलावा अन्य आधुनिक विषयों के ग्रन्थ भी पुस्तकालय में हैं। पुस्तकालय से अब तक कॉलेज छात्रों के अतिरिक्त शोध करने वाले छात्र छात्राओं, अन्य प्राच्य विद्याओं के जिज्ञासुगण तथा विद्वान लोग इन दुर्लभ पुस्तकों का उपयोग कर ज्ञानार्जन करते रहे हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सत्यनारायणसिंह चौहान एम. ए., बि. लिब., एस. सी., शास्त्री

सेंट जेवियर पुस्तकालय, जयपुर (1941)

वर्तमान सेंट जेवियर स्कूल का आरंभ सन् 1941 में सेंट मेरीन स्कूल के नाम हुआ था। संस्था के विकास के साथ ही इसका पुस्तकालय भी प्रगति करता गया। वर्तमान पुस्तकालय में अनेक विषयों की 18,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु लगभग 62,500 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की संख्या 400 करीब है। पुस्तकें डेवी डेसी मल पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष रु. 10.000 व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय निजी-भवन में चल रहा है, जो उपयुक्त है। विगत वर्ष 600 पुस्तकें पुस्तकालय में जोड़ी गई। विषय अध्यापकों द्वारा प्रस्तुत सूची के अनुसार पुस्तकें क्रय करने का क्रम रहता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : ले० फादर विल वेचर एस. जे हरिराम टी. आसरानी

राज्य० केन्द्रीय पुस्तकालय, जयपुर (1956)

पुस्तकालय विकास योजना (द्वितीय पंचवर्षीय योजना) के अन्तर्गत 1956 में केन्द्रीय पुस्तकालय, जयपुर में एक किराये के मकान में खोला गया था। लेकिन उपनिर्देशक समाज-शिक्षा का जयपुर स्थित कार्यालय यहां से शिक्षा विभाग, बीकानेर के साथ रखने के उद्देश्य हेतु स्थानान्तरण कर दिये जाने के फलस्वरूप केन्द्रीय पुस्तकालय का स्टाफ राज्य पुस्तकालयाध्यक्ष सहित बीकानेर चला गया। उस समय ही क्रय की गई केवल 1000 पुस्तकें ही इस पुस्तकालय में हैं और इसे क्षेत्रीय पुस्तकालय (महाराजा सार्वजनिक) पुस्तकालय जयपुर के साथ जोड़ दिया गया है।

वर्तमान में श्री सांवलराम गुप्ता इसके पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

एस० एस० जैन सुबोध महाविद्यालय, जयपुर (1960)

जैन श्वेताम्वर स्थानकवासी शिक्षा समिति द्वारा संचालित इस महाविद्यालय के पुस्तकालय का प्रारम्भ 1960 में हुआ। वर्तमान में 6,500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 35 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। वर्ष भर में घर पर पढ़ने हेतु 14,000 पुस्तकें दी गईं। धार्मिक तथा स्कूल विषयों की पुस्तकें मुख्य रूप से हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री कैलाशचन्द्र कंवर वी. ए. एल. एल., वी. सी. लिब एस. सी.

श्री स्वरूप गोविन्द पारीक माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1906)

पुरानी वस्ती में नाहरगढ़ रोड़ पर स्थित पारीक पाठशाला के नाम से विख्यात ज्ञान मन्दिर की स्थापना सन् 1906 में उस समय हुई थी, जबकि जयपुर नगर में कोई शिक्षण संस्था नहीं थी। वर्तमान में पुस्तक संख्या 4,178 है तथा प्रतिवर्ष पुस्तकालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 26 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री जगमोहन पुरोहित

श्री श्वेताम्बर जैन माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1940)

इस संस्था के पुस्तकालय में 4500 लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 45 है। जैन दर्शन तथा बाल साहित्य संग्रह की विशेषता है। प्रति वर्ष पुस्तकालय पर रु० 1000 लगभग व्यय होते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री देवी नारायण माथुर

श्री गुरु नानक पुस्तकालय, जयपुर (1949)

आदर्श नगर स्थित श्री गुरु नानक देव विद्यालय का आरम्भ सन् 1949 में हुआ। इस विद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय में 897 पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने 910 पुस्तकें दी गईं। धार्मिक एवं ज्ञानवर्द्धन पठन सामग्री संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 60 है। घर पर पढने हेतु दी गई पुस्तकों की संख्या 850 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। रजिस्टर फार्म पर कैटलॉग है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 500 रु० व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय एक बड़े हाल में चल रहा है, जो उपयुक्त है। विद्यालय की प्रगति के साथ पुस्तकालय भी विकास की ओर अग्रसर है।

पुस्तकालयाध्यक्षा : श्रीमती भूपिन्दर कौर

वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1955)

राजापार्क, जयपुर स्थित इस विद्यालय के पुस्तकालय का आरंभ सन् 1955 में हुआ। वर्तमान में 3305 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 60 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। विगत वर्ष 2,371 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। पुस्तकालय का वार्षिक वजट रु० 1,500 है। इस वर्ष 236 नई पुस्तकें जोड़ी गई हैं।

पुस्तकालयाध्यक्षा : श्रीमती कमला भवनानी

श्री कृष्ण परनामी पुस्तकालय, जयपुर (1966)

श्री छत्रसाल परनामी नवयुवक सभा, आदर्शनगर द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 1,700 पुस्तकें संग्रहीत हैं। धार्मिक तथा अन्य सामाजिक विषयों का पुस्तक संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय सदस्यों की संख्या 100 है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु. 3,000 का है। विगत वर्ष 300 नई पुस्तकें खरीदी गई हैं। पुस्तकालय संचालन समिति के सदस्य हैं—सर्वश्री सुभाष खुराना, प्रवीण परनामी, श्यामसुन्दर परनामी।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मुनीश्वर लाल

मुस्लिम उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1919)

विद्यालय की प्रगति के साथ ही संस्था का पुस्तकालय भी शनैः शनैः विकासमान हुआ। सन् 1945 में यह मिडिल स्कूल और सन् 1970–71 में उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत हुआ है। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या 5,000 तथा लगभग 20 पत्र-पत्रिकाएं वाचनालय में आती हैं। पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या 400 है। पुस्तकें दशमलव पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय के लिये नया भवन इस वर्ष में तैयार होने की सम्भावना है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री अथर अली अस्करी

ज्वैलर्स एसोसियेशन पुस्तकालय, जयपुर (1940)

ज्वैलर्स एसोसिएशन की स्थापना के साथ ही रत्न उद्योग सम्बन्धी पुस्तकालय की स्थापना का भी प्रयास किया गया। लगभग सन् 1940 में इस पुस्तकालय की शुरुआत हुई। पुस्तकालय में वर्तमान में 300 रत्न-उद्योग संबंधी दुर्लभ तथा महत्वपूर्ण पुस्तकें संग्रहीत हैं। यहां विश्व भर में रत्न उद्योग सम्बन्धी निकलने वाली प्रायः सभी पत्र-पत्रिकाएं आदि मंगवायी जाती हैं। वर्तमान में श्री ज्ञानचन्द खिन्दूका ऐडहाक कमेटी के कन्वीनर तथा सचिव श्री विद्या विनोद काला हैं।

समाज कल्याण विभाग पुस्तकालय, जयपुर (1955)

राज्य के समाज कल्याण विभाग द्वारा मुख्यावास केशरगढ़ बिल्डिंग, नेहरू मार्ग में अवस्थित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 9,903 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउन्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 5,000 है। समाज शास्त्र तथा समाज कल्याण आदि विषय संग्रह की विशेषता हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगवाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 15 है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड-कैटलॉग है, जो सी. सी. सी. पद्धति पर बना है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष रु. 10,000 लगभग व्यय किए जाते हैं। विगत वर्ष पुस्तकालय में 2,000 पुस्तकें जोड़ी गई। वर्ष 1955 में प्रारम्भ यह पुस्तकालय शनैः शनैः प्रगति पथ पर अग्रसर है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती रजनी राजवंशी, एम. ए., लिब. एस. सी.

प्राकृतिक चिकित्सालय पुस्तकालय, जयपुर (1952)

बापूनगर-जयपुर अवस्थित इस पुस्तकालय का संचालन प्राकृतिक चिकित्सालय के अन्तर्गत ही होता है। सन् 1952 से यह पुस्तकालय कार्यशील है तथा वर्तमान में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा मुख्यरूप से प्राकृतिक चिकित्सा व योग-आध्यात्मिक विषयों की लगभग 600 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 10 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। चिकित्सालय के रोगी तथा अन्य प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमीजन इस संग्रह से लाभ उठाते हैं। स्वास्थ्य विषयक इनसाइक्लोपीडिया–जो 10 भागों में है, इस संग्रह की विशेषता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री गजराज सिंह तोमर

राजस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जयपुर (1953)

आगरा-रोड पर हिन्दी भवन में प्रादेशिक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ स्व. दौलतरामजी शर्मा के सद् प्रयत्नों से सन् 1953 में हुआ। वर्तमान में 2137 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा 10 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। छात्र तथा अन्य कार्यकर्त्ता पुस्तकालय का मुख्यरूप से उपयोग करते हैं। संस्था के अध्यक्ष श्री शोभनाथ गुप्त तथा मंत्री श्री कृष्णलाल वर्मा हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री परमेश्वर मिश्र

उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर पुस्तकालय, जयपुर (1954)

आदर्शनगर-जयपुर में अवस्थित इस विद्यालय के पुस्तकालय की शुरुआत वर्ष 1954 में हुई। वर्तमान में 9,500 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा प्रतिवर्ष यहां मंगवायी जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 60 है। पुस्तकालय का उपयोग मुख्यतया छात्र तथा शिक्षकगण करते हैं, जिनकी संख्या 300 करीब है। प्रतिवर्ष घर पर पढ़ने हेतु ले जायी जाने वाली पुस्तकों की संख्या 8,000 है। पुस्तकें दशमलव पद्धति से वर्गीकृत हैं तथा कार्ड-कैटलॉग सी. सी. सी. पद्धति पर बना है। इसके अतिरिक्त अलग-अलग कक्षाओं में कक्षा पुस्तकालय भी चलते हैं।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री नानकचन्द गुप्ता बी. ए.

आदर्श पुस्तकालय-वाचनालय, जयपुर (1958)

आदर्श नगर में गीता-भवन के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय में 4,000 लगभग ग्रन्थ संग्रहीत हैं। यहां आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 30 है। पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या 200 है। वर्ष 1958 से प्रारम्भ इस पुस्तकालय का आदर्श नगर क्षेत्र के लोग मुख्य रूप से उपयोग करते हैं।

श्री लक्ष्मण वाधवानी तथा आर. पी. रायसिंहानी मुख्य कार्यकर्ता हैं।

आकाशवाणी पुस्तकालय, जयपुर (1955)

जयपुर में आकाशवाणी केन्द्र सन् 1955 आरम्भ हुआ और तभी से इस पुस्तकालय की भी शुरूआत हुई। वर्तमान में सभी भाषाओं की 7,000 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष रु. 5,000 व्यय होते हैं। कहना न होगा कि यह विभागीय उपयोग के लिए सन्दर्भ-पुस्तकालय है। पुस्तकों के अलावा यहां 6,000 लगभग टेपरिकार्ड तथा 9000 ग्रामोफोन रिकार्ड भी उपलब्ध हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती मणिमाला भटनागर श्री रामदास भार्गव

सेंट ऐंजीला सोफिया उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर

इस संस्था के अन्तर्गत चल रहे पुस्तकालय का आरम्भ जुलाई 1959 में हुआ। वर्तमान में सभी विषयों की 7,500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 35 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 34,000 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकालय में प्रतिदिन 350 लगभग पाठक आते हैं। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय-संग्रह का कार्ड कैटलॉग है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर लगभग 7,000 रु. व्यय होते हैं। विगत वर्ष पुस्तकालय में लगभग 350 पुस्तकें जोड़ी गईं। विषय शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत सूचियों के अनुसार पुस्तकें क्रय किये जाने का क्रम रहता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : सिस्टर लिलीयन

जैन श्वेताम्बर मित्र मंडल पुस्तकालय, जयपुर (1927)

घी वालों का रास्ता स्थित इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1927 में हुई। श्री रतनचन्द्र जी कोचर संस्थापक हैं। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या 3,500 है। हस्तलिखित ग्रन्थ भी लगभग 250 हैं। प्रतिवर्ष 250-300 तक पुस्तकें नई खरीदी जाती हैं। श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ इसका संचालन करता है। संस्था के मन्त्री श्री सुशीलकुमार हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सम्पतलाल जैन

श्री खण्डेलवाल वैश्य सेंट्रल उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1917)

स्थानीय खंडेलवाल वैश्य समाज द्वारा संचालित इस संस्था के पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1917 में हुआ। वर्तमान में 7957 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाएं 1938 हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : प्रद्युम्न कुमार शर्मा सी. लिब., एस. सी. सी.

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, शाखा कार्यालय, जयपुर

प्रतिष्ठान की जयपुर शाखा में विविध विषयों के करीब 12,000 से ऊपर हस्तलिखित ग्रन्थ विद्यमान हैं। प्रतिष्ठान की यह शाखा विधानसभा के सामने रामचन्द्र जी के मन्दिर में स्थित है। देश-विदेश के सभी विद्वान यहां शोध व सम्पादन के लिए आते हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों में ज्योतिष, आयुर्वेद, कामशास्त्र, वेद, वेदांग, कल्प, वस्तु शास्त्र आदि विषय प्रमुख हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों के साथ ही यहां पर एक हजार से ऊपर मुद्रित पुस्तकें संदर्भ की दृष्टि से बहुत ही उपादेय हैं। वर्तमान में इस संग्रह के प्रभारी श्री जमुनालाल बल्दुआ हैं।

प्रगति शिक्षण केन्द्र पुस्तकालय, जयपुर (1963)

स्थानीय खजाने वालों का रास्ता स्थित इस केन्द्र के पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1963 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या 672 है तथा लगभग 15 पत्र-पत्रिकाएं केन्द्र में आती हैं। धार्मिक, सामाजिक तथा मनोविज्ञान विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय के सदस्यों की संख्या 419 है। पुस्तकालय किराये के भवन में चल रहा है। विगत वर्ष लगभग 600 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। प्रगति शिक्षण केन्द्र की कार्य समिति की अध्यक्षा कुमारी विजयलक्ष्मी एम. ए. तथा मंत्री श्री अमरनारायण माथुर हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : कुमारी उमा एम. ए.

राजस्थान चैम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज पुस्तकालय, जयपुर (1949)

प्रदेश व्यापार तथा उद्योग संस्थानों की प्रतिनिधि संस्था के अन्तर्गत चल रहे पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1949 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या लगभग 3,000 है। संग्रह में उद्योग तथा व्यापार सम्बन्धी डाइरेक्टरियां, केन्द्रीय तथा राजस्थान राज्य के बजट तथा अन्य आर्थिक विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें मुख्य रूप से हैं। वाचनालय में 60 करीब पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। सदस्यों की संख्या 450 है। संस्था द्वारा पाक्षिक 'चेम्बर संदेश' का प्रकाशन होता है। पुस्तकालय निजी-भवन में चल रहा है। संस्था के अध्यक्ष श्री आलोक प्रकाश जैन तथा मन्त्री कन्हैयालाल जैन हैं।

मानव हितकारी संघ पुस्तकालय, जयपुर (1962)

न्यू कालोनी स्थित कोठयारी भवन में इस पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1962 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकालय में 2,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति से सम्बन्धित पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। मानव हितकारी संघ द्वारा नगर मे होमियोपैथी चिकित्सालय भी चलाए जाते हैं। जिसके संस्थापक डाक्टर श्री पी. एन. मेहरा हैं। संस्था के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार लूनावत तथा मन्त्री प्रकाश मोहनोत हैं।

वैद्य विश्वनाथ पुस्तकालय, जयपुर

अंजीर का दरवाजा स्थित इस पुस्तकालय में आयुर्वेद, तंत्र, सिद्धान्त, भाषा विज्ञान आदि विषयों की लगभग 3,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। प्राचीन ग्रन्थ इस संग्रह की विशेषता है।

श्री वीरेश्वर पुस्तकालय, जयपुर

जयपुर में सुप्रसिद्ध दाक्षिणात्य विद्वान स्वर्गीय श्री वीरेश्वर शास्त्री द्राविड़ ने अपने जीवनकाल में संग्रहीत पुस्तकों को पुस्तकालयाकार में व्यवस्थित कर एक आदर्श परम्परा का निर्वाह किया है। यह पुस्तकालय गणगौरी बाजार में संस्थापित है। इसका एक ट्रस्ट है तथा जिसके सचिव श्री जगदीश शर्मा हैं। वर्तमान में अनुमानतः प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ सहित संग्रहीत ग्रंथों की संख्या 3,000 हैं। इसमें संस्कृत की प्रकाशित पुस्तकों का संग्रह अधिक है। संस्कृत

ग्रंथों में विशेषतः साहित्य और व्याकरण के ग्रंथ अधिक हैं। इस पुस्तकालय के साथ वाचनालय भी चलता है। बंबई से प्रकाशित होने वाली काव्यमाला–सीरीज के दुर्लभ ग्रंथ यहां सुरक्षित रूप में उपलब्ध हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री गुलाबचंद शर्मा

वैद्य श्री कृष्णराम भट्ट पुस्तकालय, जयपुर

भट्ट मेवाड़ा जातीय वैद्य परिवार के इस संग्रहालय की स्थापना का समय निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता परन्तु फिर भी इतना अवश्य है कि श्री लक्ष्मीरामजी वैद्य महाराज सवाई प्रतापसिंहजी के समय जयपुर आये थे, अतः उस समय अथवा उसके पश्चात् ही इसका अस्तित्व माना जाता है। श्री कृष्णरामजी ने इस पुस्तकालय को सुव्यवस्थित किया था, इसीलिए यह उनके नाम से आज भी अपना अस्तित्व बनाये हुए है। इनका स्वयं निर्मित (हस्तलिखित) एक सूचीपत्र उपलब्ध होता है, जिसमें वैद्यक के अनेक दुर्लभ तथा अलभ्य ग्रंथ हैं। अकारादि क्रम से निर्मित इस सूचीपत्र में सभी ग्रंथ हस्तलिखित हैं, जिनकी संख्या 838 है। इनमें 234 आयुर्वेद—वैद्यक के ग्रंथ तथा 604 काव्य-साहित्य दर्शन आदि के हैं। इस पुस्तकालय में प्रायः हस्तलिखित ग्रंथ ही हैं। प्रकाशित ग्रंथों की संख्या तो नगण्य सी है। इस समय पुस्तकालय के संरक्षक वैद्य श्री देवेन्द्रकुमार भट्ट हैं, जो श्री कृष्णराम भट्ट के प्रपौत्र हैं।

श्री मंजुनाथ पुस्तकालय, जयपुर

इस ग्रंथ संग्रहालय में देवर्षि-परिवार के सभी परम्परागत विद्वानों की रचनाएं ही अधिकांश रूप में संग्रहीत हैं। साथ ही उनकी अभिरुचि के वैदुष्यपूर्ण अन्याय ग्रंथों का भी संग्रह हैं। अनेक भाषाओं के ग्रंथागार इस पुस्तकालय में संस्कृत तथा ब्रजभाषा के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। ग्रंथों के साथ-साथ इसमें विभिन्न भाषाओं की पत्र-पत्रिकाएं भी उपलब्ध हैं। वर्तमान में संस्कृत भाषा के 1600, हिन्दी भाषा के 700 तथा बंगला-गुजराती आदि प्रादेशिक भाषाओं के 200 ग्रंथ– इस प्रकार कुल 2500 ग्रंथ इसकी निधि हैं। संस्कृत भाषात्मक ग्रंथों में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथ हैं, जिनमें भी काव्य साहित्य के ग्रंथ सर्वाधिक हैं। अनेक दुर्लभ तथा अलभ्य ग्रंथ भी यहां विद्यमान हैं—उदाहरणार्थ—शब्दार्थ चिंतामणि कोष, श्री भागवत अष्टटीका व्याख्या सुधा ग्रंथ आदि। चूंकि इसके संरक्षक स्वर्गीय मथुरानाथ शास्त्री संस्कृत रत्नाकर तथा भारती पत्रिका के सम्पादक रहे हैं। अतः उनके पास अनेक दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं का भी संग्रह है।

यह संग्रह सी-स्कीम स्थित उनके निवास स्थान मंजु निकुंज में सुरक्षित है। इस समय श्री कलानाथ शास्त्री एम० ए० साहित्याचार्य इस पुस्तकालय के अधीक्षक हैं।

पर्वणीकर पुस्तकालय एवम् संग्रहालय, जयपुर

विधानसभा भवन के सामने भट्टों की गली में विद्यमान पर्वणीकरणजी की हवेली में यह संग्रहालय स्थित है, जिसमें लगभग 27,00 ग्रंथ संग्रहीत हैं। संग्रहालय में वेद, व्याकरण, कोश, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, पुराण, न्याय, आयुर्वेद, वेदांत, दर्शन शास्त्र, उपनिषद्, काव्य शास्त्र, काम शास्त्र, मंत्र शास्त्र आदि विषयों के ग्रंथ हैं। हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या 1,888 हैं। अनेक प्राचीनतम ग्रंथों में संवत् 1411 का नलोदय काव्य इस संग्रहालय की उल्लेखनीय निधि है।

जयपुर नगर के संस्थापन से पूर्व ही आमेर में महाराज विष्णुसिंह (संवत् 1745–1756) के आश्रय में एक महाराष्ट्रीय विद्वान रहते थे, जिनका नाम श्री माधव भट्ट शर्मा था। ये महाराष्ट्र प्रान्त के पाथरी परभनी नामक ग्राम के निवासी होने के कारण पर्वणीकर कहलाते थे। महाराज विष्णुसिंह ने इन्हें सवाईसिंह जयसिंह द्वितीय का अध्यापक नियुक्त किया था और तब से लेकर वर्तमान तक इनका वंश राजगुरु तथा विद्यागुरु का पद प्राप्त किये हुए हैं। इस वंश के विद्वानों का विद्या-व्यसन ही उक्त संग्रहालय का मूल कारण है।

श्री वृद्धिचन्द्र शास्त्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय, जयपुर

जयपुर महाराजा द्वारा सम्मानित श्रीमाली ब्राह्मण परिवार अपने ज्योतिष विषयक ज्ञान के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। इन परिवारों में से एक परिवार लब्धजन्मा श्री शास्त्रीजी के पूर्वज ज्योतिष तथा सामान्य देवार्चन परम्परा का निर्वाह करते रहे हैं। इस संग्रहालय की श्री वृद्धि का जो भी अवसर प्राप्त हुआ है, वह स्वर्गीय श्री शास्त्रीजी का ही प्रयास था। इस संग्रहालय में हस्तलिखित ग्रन्थों की इतनी अधिकता नहीं है, जितनी प्रकाशित पुस्तकों की है। पुस्तक संग्रह उनका एक व्यसन रहा है, और उसी का यह परिणाम है कि इस संग्रहालय में अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या अनुमानतः 300 है। वर्तमान में इस संग्रहालय में 3382 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। धर्मशास्त्र, साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, कोश, पुराण, सामान्य संस्कृत, हिन्दी आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है।

पत्र-पत्रिकाओं में संस्कृत-रत्नाकर की प्रायः सभी संचिकाएँ (सन् 1964 तक प्रकाशित) उपलब्ध हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों में काव्यामृत, नामक काव्य-प्रकाश का खण्डनात्मक ग्रन्थ जो अन्यत्र दुर्लभ हैं तथा श्री वत्स लांछन द्वारा रचित हैं, यहां उपलब्ध हैं।

श्री महावीर पुस्तकालय, जयपुर (1936)

महावीर पार्क किशनपोल बाजार स्थित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 6000 पुस्तकें हैं। रजिस्टर पद्धति से विषयवार पुस्तकों का कैटलॉग है। प्रतिवर्ष 15 पत्र-पत्रिकाऐं अनुदान स्वरूप प्राप्त होती हैं। गत वर्ष 8000 पुस्तकें वितरित की गई है जिसका श्रेय श्री प्रसन्न कुमार सेठी को है जिनके द्वारा प्रतिदिन घर 2 जाकर महिलाओं एवम् बच्चों को पुस्तकें पहुँचाने का क्रम रहता है। 150 बाउन्ड पत्र-पत्रिकाऐं हैं। गत वर्ष 150 पुस्तकें खरीदी गईं।

श्री रत्नाकर पुस्तकालय, जयपुर (1957)

आरोग्य भारती संस्थान के अन्तर्गत यह पुस्तकालय 1957 में प्रारम्भ किया गया, जिसमें करीब 1,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तक संग्रह में आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, शरीर विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकों की विशेषता है। जिसका श्रेय श्री सुशीलकुमार एवम् श्री महेन्द्रकुमार रांवका को है। संस्था के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र शेखर तथा मंत्री श्री माणक चन्द सोगाणी हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी 10 पत्र-पत्रिकाऐं आती हैं। इस वर्ष 600 रु० का वार्षिक बजट स्वीकृत किया गया है।

वाणिज्य महाविद्यालय, जयपुर (1957)

राजस्थान विश्वविद्यालय के अंतर्गत वाणिज्य महा-विद्यालय के इस पुस्तकालय में 29,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष 75 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। वर्ष भर में एक लाख से अधिक पुस्तकें पढ़ने हेतु दी गई। वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र विषय इस संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की संख्या 300 प्रतिदिन है। पुस्तकें डेवी दशमलव पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलॉग है, जो ए. एल. ए, पद्धति पर बना है। प्रति वर्ष पुस्तकालय पर 25000 रु. व्यय किए जाते हैं। पुस्तकालय भवन उपयुक्त है। गतवर्ष 3500 पुस्तकें पुस्तकालय में जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री एस. पी. वार्ष्णेय, एम. कॉम. डिप्लोमा—पुस्तकालय विज्ञान

मालवीय क्षेत्रीय अभियांत्रिक महाविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1964)

मालवीय क्षेत्रीय अभियांत्रिक महाविद्यालय के इस पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1964 में हुआ। सितम्बर 1971 में पुस्तकालय अपने वर्तमान भवन में स्थानान्तरित हुआ। पुस्तकालय भवन सर्वथा उपयुक्त है। वर्तमान में 7962 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा 1296 पुस्तकें छात्र सहायता कोष पुस्तकालय की हैं। अन्य सामग्री में फिल्म–3, माइक्रो फिल्मस–20 तथा फोटो स्टेट कापी = 110 हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 4215 है। अभियांत्रिकी विज्ञान इस संग्रह की विशेषता है। पुस्तकें कोलन पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैट-लॉग है, जो सी. सी. सी. (रंगनाथन) पद्धति से बना है। विगत वर्ष पुस्तकें खरीदने पर 40,000 रु. व्यय हुए। कॉलेज के छात्र तथा अध्यापक ही इसका मुख्य रूप से उपयोग करते हैं। विगत वर्ष लगभग 2,000 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री नटवरलाल त्रिवेदी, एम.ए., बी.एस.सी. डिप्लोमा—पुस्तकालय विज्ञान

सवाई मानसिंह मेडीकल कॉलेज पुस्तकालय, जयपुर (1947)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस महाविद्यालय के पुस्तकालय की शुरूआत सन् 1947 में हुई। वर्तमान में 24500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में वर्ष भर में 33, 000 पुस्तकें पढ़ी गई। पुस्तकें विषमवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलॉग है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। पुस्तकालय का उपयोग मुख्य रूप से डाक्टर तथा विद्यार्थीगण करते हैं। गत वर्ष पुस्तका-लय में 1302 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री पुरुषोत्तम उपाध्याय, एम.ए., डि. एल.एस.सी.

श्री गोविंद पारीक कॉलेज पुस्तकालय, जयपुर (1945)

बनीपार्क स्थित यह महाविद्यालय सन् 1945 के पहले हाई स्कूल था और तभी से पुस्तकालय का क्रम रहा है। कॉलेज कार्य कारिणी समिति द्वारा इसका संचालन होता है। वर्तमान में 16,648 पुस्तकें संग्रहीत हैं। लगभग 2500 बाउण्ड पत्र-पत्रिकाएँ हैं। पुस्तकालय में 65 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। कला तथा वाणिज्य विषयों की अधिकता है। वर्ष भर में घर पर

पढ़ने हेतु 5200 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकें डेवी-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलॉग है, जो रजिस्टर फार्म व सी, सी. सी, पद्धति पर बना है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रू. 6000 व्यय किए जाते हैं। विगत वर्ष 623 पुस्तकें जोड़ी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मोहनलाल पारीक, एम.ए., बी.लिब. एस.सी.

श्री लालबहादुर शास्त्री कॉलेज पुस्तकालय, जयपुर (1963)

भारत सेवक समाज द्वारा संचालित इस महा-विद्यालय के पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1963 में हुआ। वर्तमान में 7,500ग्रंथ संग्रहीत हैं। सन71-72 में घर पर पढ़ने हेतु 10,450 पुस्तकें दी गईं। पाठय पुस्तकें इस संग्रह की विशेषता है। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 50 है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय-संग्रह का कार्ड कैट लॉग है, जो सी. सो. सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना है। विगत वर्ष पुस्तकालय पर रु. 40,000 व्यय हुए जिनमें पुस्तकों के लिए बीस हजार रु. का प्रावधान था। पुस्तकालय अभी कॉलेज भवन में ही चल रहा है, शीघ्र ही नया भवन बनने वाला है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री नारायणप्रसाद, एम.ए., बी.लिब. एस. सी.

श्री दिगम्बर जैन संस्कृत कॉलेज पुस्तकालय, जयपुर (1885)

मणिहारों का रास्ता स्थित दिगम्बर जैन संस्कृत कॉलेज की स्थापना सन् 1885 में हुई। महाविद्यालय के इस पुस्तकालय में 5,295 पुस्तकें संग्रहीत हैं। जैन दर्शन तथा संस्कृत-साहित्य इस संग्रह की विशेषता है। वाचनालय में 16 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय-संग्रह का कैटलॉग है, जो रजिस्टर फार्म पर है। पुस्तकालय किराये के मकान में चलता है। पुस्तकालय का उपयोग छात्र तथा शिक्षक हो मुख्यरुप से करते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री महावीर प्रसाद गदिया, बी. काम

राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय–पुस्तकालय, जयपुर (1948)

आयुर्वेद विभाग, राजस्थान द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में 5400 ग्रंथ संग्रहीत हैं। चिकित्सा, दर्शन व धार्मिक साहित्य की प्रचुरता है। विगत वर्ष 14,000 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकें द्वि बिन्दु वर्गीकरण पद्धति से वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर 15,000 रु. व्यय किए जाते हैं। छात्र तथा अध्यापकगण ही मुख्य रुप से इसका उपयोग करते हैं। विगत वर्ष 750 पुस्तकें जोड़ी गईं। सन् 1900 से पूर्व की लगभग 500 पुस्तकें हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री गिरधारी लाल शर्मा, बी. ए., बी. लिब. एस. सो.

राजस्थान कृषि निदेशालय पुस्तकालय, जयपुर (1961)

कृषि-भवन में स्थित इस विभागीय पुस्तकालय का आरंभ सन् 1961 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी की कुछ 5686 पुस्तकें संग्रहीत हैं। कृषि-संबंधी पुस्तकें संग्रह का विशेषता है। दशमलव पद्धति द्वारा पुस्तकों का वर्गीकरण किया गया है। कार्ड-कैटलॉग की व्यवस्था है, जो सी. सी. सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 1500 रु. व्यय हो जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सीताराम माथुर

राजकीय भाषा शिक्षण संस्थान पुस्तकालय, जयपुर (1966)

गांधीनगर-मार्ग पर स्थित इस विभागीय पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1966-67 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकालय में 17,000 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। विगत वर्ष 900 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। पुस्तकालय में कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है। इस पुस्तकालय पर प्रति वर्ष 10,000 रु० व्यय किए जाते हैं। विगत वर्ष पुस्तकालय में 1000 से अधिक ग्रन्थ जोड़े गए।

पुस्तकालयाध्याक्ष : श्री बत्तूलाल गुप्ता, एम. ए., साहित्यरत्न, बी. लिब एस. सी.

कानोड़िया महिला महाविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1965)

कानोड़िया शिक्षा ट्रस्ट द्वारा संचालित इस महाविद्यालय के पुस्तकालय का आरंभ सन-1965 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी-अंग्रेजी के 13,000. ग्रंथ संग्रहीत हैं। प्रतिवर्ष मगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 104 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 17,975 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की औसत संख्या 300 है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है, जो सी,सी.सी. (रंगनाथन) पद्धति पर बना है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर 25,000 रु. को राशि व्यय की जाती है। पुस्तकालय के लिए उपयुक्त भवन की व्यवस्था है। संबंधित शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत सूचियों के अनुसार पुस्तक क्रय का क्रम रहता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : सुश्री पद्मा हुकमानी, बी.ए., लिब. बी. एस.सी.

एस० एस० जैन सुबोध उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1933)

स्थानकवासी जैन श्वेताम्बर समाज की ओर से संचालित इस विद्यालय के पुस्तकालय का आरंभ वर्ष 1933 में हुआ। वर्तमान में 9913 पुस्तकें सग्रहीत हैं। पुस्तकालय में लगभग 25 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। इतिहास, भूगोल तथा वाणिज्य विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 3000 रु. का है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की औसत संख्या 150 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री निर्मल कुमार जांगिड़

एस० एस० जैन सुबोध बालिका विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1918)

वर्ष 1918 में संस्थापित इस विद्यालय के पुस्तकालय में 1,000 से अधिक ग्रंथ संग्रहीत हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। इतिहास तथा धार्मिक पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय-वाचनालय पर प्रतिवर्ष लगभग एक हजार रुपये व्यय किए जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती कुसुम पाटनी

अग्रवाल महा विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर

स्थानीय अग्रवाल शिक्षा समिति द्वारा संचालित इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 15701 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 738 है। प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 60 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 7745 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 700 है। पुस्तकों का कोलन-पद्धति से वर्गीकरण किया गया है। पुस्तकालय में कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है, जो रंगनाथन-पद्धति पर बना है। पुस्तकालय का निजी भवन है, जो उपयुक्त है

पुस्तकाध्यक्ष : श्री कलाधर शर्मा, बी. ए. बी., लिब., एस. सी.

अग्रवाल उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर

स्थानीय अग्रवाल समाज द्वारा निर्मित ट्रस्ट की ओर से संचालित इस विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 6,000 लगभग पुस्तकें हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। इतिहास, भूगोल तथा विज्ञान विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। वाचनालय में 20 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री अवधेश कुमार

श्री माहेश्वरी उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर

सन् 1937 में जब विद्यालय प्राथमिक विद्यालय था, तभी से यह पुस्तकालय कार्य कर रहा है। जब यह विद्यालय हाईस्कूल स्तर पर परिवर्तित हुआ, तो सन् 1955 में प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष की व्यवस्था की गयी। पुस्तकालय में न केवल उच्च माध्यमिक स्तर तक की ही पुस्तकें उपलब्ध रहती हैं, बल्कि विज्ञान एवं वाणिज्य विषयों में काफी उच्च स्तर तक की उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध हैं। इस समय पुस्तकालय में 7107 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 200 है। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 61 है। विगत वर्ष 4500 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है, जो सी. सी. सी. रंगनाथन पद्धति पर बना है। इस पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष रु. 7,500 व्यय किये जाते हैं। कुछ चयनित पुस्तकों की सूची छपाई गई है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री नन्दकिशोर परवाल, बी. ए., बी. लिब., एस. सी.

राजा रामदेव पोद्दार उ० मा० विद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1957)

गांधीनगर स्थित इस विद्यालय के पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1957 में हुआ। वर्तमान में 26,700 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। 200 से अधिक व्यक्ति प्रतिदिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकें वर्गीकृत हैं तथा कार्ड की व्यवस्था है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मदनदत्त शर्मा बी. ए., बी. लिब. एस. सी.

श्री महावीर दिगम्बर जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1938)

श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित विद्यालय के इस पुस्तकालय की शुरुआत विद्यालय की स्थापना के साथ ही सन् 1938 में हुई। स्कूल प्रगति के साथ-साथ पुस्तकालय के कदम भी उन्नति की ओर बढ़ते ही गए। यह पुस्तकालय एक विशाल हाल में अवस्थित है। नई-नई योजनाएं बनाने एवं उनको कार्यान्वित करने के लिए विद्यालय की प्रबन्ध कारिणी समिति सतत् प्रयत्नशील रहती है। पुस्तकालय की प्रगति में प्रधानाध्यापक श्री तेजकरण डंडिया का मार्ग-दर्शन एवं सहयोग उल्लेखनीय है।

इस समय पुस्तकालय 20,000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 275 है। पुस्तकें डेवी-पद्धति के अनुसार वर्गीकृत हैं। कार्ड कैटलांग की व्यवस्था है, जो सी. सी. सी. पद्धति पर बना है। गत वर्ष 1842 नई पुस्तकें पुस्तकालय में जोड़ी गईं। पुस्तकालय के अतिरिक्त पृथक से वाचनालय की व्यवस्था है जिसमें 130 दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक व अर्द्धवार्षिक पत्र–पत्रिकायें मंगवाई जाती है। संग्रहीत करने योग्य पत्रिकाओं की प्रतिवर्ष फाइलें बनवाली जाती हैं। इस समय लगभग 700 बाउन्ड पत्रिकायें उपलब्ध हैं।

श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, बी. ए. वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। श्री जैन पुस्तकालय विज्ञान में प्रशिक्षण प्राप्त हैं तथा सन् 1956 से यहां पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

श्री पद्मावती जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1908)

घी वालों का रास्ता स्थित इस पुस्तकालय का आरम्भ संस्था की स्थापना के साथ ही वर्ष 1908 मे हो गया। वर्तमान में 2450 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकें वर्गीकृत हैं तथा कार्ड कैटलॉग की व्यवस्था है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर 2000 रु. व्यय किए जाते हैं। हाल ही में 2500 पुस्तकें और प्राप्त हुई हैं। सदस्यों की संख्या 450 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री कौशल किशोर भाटी

वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1955)

कुन्दीगरों के भैरों के रास्ता स्थित वीर बालिका विद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय की शुरूआत वर्ष 1955–56 में हुई। वर्तमान में 3581 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 35 है। बाल-साहित्य संग्रह की विशेषता है।

पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं तथा कार्ड की व्यवस्था है, जो रजिस्टर पद्धति पर बना है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर एक हजार रु. से अधिक व्यय किए जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती पदमा भार्गव, बी. ए. डिप्लोमाप्राप्त

बाल-मंदिर पुस्तकालय, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर (1953)

नगर की प्रमुख स्वयं सेवी संस्था के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1953 में हुआ। वर्तमान में 2800 पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 200 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकें विषयानुसार वर्गीकृत हैं। काफी संस्था में पुस्तकें दान स्वरूप प्राप्त हुई हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री तेजवीरसिंह, बी. एस. सी.

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मोतीकटला, जयपुर (1942)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस शिक्षण संस्था के पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1942 में हुआ। वर्तमान में 15097 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 63 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 96 83 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकें विषयानुसार वर्गीकृत हैं। लगभग तीन हजार रुपये प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर व्यय किये जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री हरिनारायण शर्मा

श्री महावीर दिगम्बर जैन बालिका विद्यालय पुस्तकालय,जयपुर (1953)

चौरूकों का रास्ता स्थित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ विद्यालय की स्थापना के साथ ही वर्ष 1935 में हुआ। शनैः शनैः इसमें पुस्तकों की वृद्धि होती गई। इस समय विद्यालय के पुस्तकालय में 2962 पुस्तकें हैं। चरित्र-निर्माण सम्बन्धी पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर खतरगच्छ संघ पुस्तकालय, जयपुर

संघ द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में लगभग 5000 पुस्तकें संग्रहीत हैं, जिनमें से 1400 हस्त लिखित ग्रन्थ हैं। कुछ ग्रन्थ तो 400 वर्ष से भी अधिक पुराने हैं। पुस्तकालय में जैन दर्शन से सम्बन्धित पुस्तकें अधिक हैं। पुरातत्त्व, इतिहास, साहित्य, वैद्यक एवं ज्योतिष आदि विषयों की भी पुस्तकें हैं। वर्तमान में यह पुस्तकालय मोतीसिंह भोमिये के रास्ते में स्थित शिवजीराम भवन के सामने उपाश्रय में स्थापित हैं।

पुस्तकालय के लिए एक परामर्शदात्री समिति बनी हुई है, जिसके मुख्य परामर्शदाता श्री राजरूप टांक हैं और मंत्री श्री गुमानमल माल्लू हैं। पुस्तकों का आधुनिक ढंग से वर्गीकरण, कैटलागिंग आदि का कार्य अवैतनिक पुस्तकालयाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द जैन (रांवका), के निर्देशन में हो रहा है।

गांधी पुस्तकालय, गोविन्दगढ़ (1926)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य स्मृति में संस्थापित इस ज्ञानमंदिर का संचालन गांधी मंदिर ट्रस्ट द्वारा होता है। वैसे यह पुस्तकालय वर्ष 1926 से चल रहा है। ट्रस्ट ने उपयुक्त भवन बना दिया है। वर्तमान में 1770 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 27 है। विगत वर्ष 500 से अधिक पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। गांधी-साहित्य इस संग्रह की विशेषता है। प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या लगभग 50 है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 3000 रु. लगभग व्यय होता है, जो मुख्य रूप से जन सहयोग से प्राप्त किया जाता है। संस्था के मंत्री श्री रामप्रसाद सिंगोदिया हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष। श्री हरिनारायण वर्मा

श्री जाजू ज्ञान मंदिर, खादीबाग (1960)

प्रदेश की प्रमुख खादी संस्था राजस्थान खादी संघ के प्रधान कार्यालय खादीबाग चौमूं में अवस्थित इस ज्ञान मंदिर का स्वर्गीय तपोधन श्री कृष्णदासजी जाजू की पावन स्मृति में वर्ष 1960 में प्रारंभ किया गया। वर्तमान में 2029 पुस्तकें संग्रहीत हैं, जिनमें गांधी-साहित्य की अधिकता है। पुस्कालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 25 है। विगत वर्ष लगभग 500 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की संख्या 50 है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष लगभग 1200 रु. व्यय किए जाते हैं। भवन उपयुक्त है। समय-समय पर ज्ञान मंदिर के अंतर्गत विचारसभाओं आदि का क्रम रहता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष। श्री कृष्ण सहाय पुरोहित

राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय पुस्तकालय, शिवदासपुरा (1954)

राजस्थान खादी संघ खादीबाग (जयपुर) द्वारा संचालित इस विद्यालय का प्रारंभ 2 अक्टूबर, 1954 को तपोधन स्व० श्री कृष्णदासजी जाजू के आशीर्वाद से हुआ। विद्यालय की स्थापन के साथ ही इस पुस्तकालय की भी शुरूआत हुई। वर्तमान में 3269 पुस्तकें संग्रहीत हैं। प्रतिवर्ष आने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 25 है। सर्वोदय एवं खादी ग्रामोद्योग साहित्य संग्रह की विशेपता है। पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की संख्या 35 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 1000 रु. व्यय किए जाते है।

सहारिया राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, कालाडेरा (1960)

महाविद्यालय के अंतर्गत चल रहे इस पुस्तकालय की स्थापना जौलाई सन 1960 में हुई। उस समय इसमें लगभग 1500 पुस्तकें थीं और इस समय पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की 20,203 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय की विशेपता यह है कि इसमें विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों जैसे निर्धन छात्र सहायता पुस्तकालय, पाठ्य पुस्तक पुस्तकालय, प्लानिंग फोर्म लाइब्रेरी तथा बुक बैंक पुस्तकालय आदि का भी समावेश है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय से लगभग 15,000

पुस्तकों का लेन-देन होता है। पुस्तकालय के वाचनालय में इस समय 100 पत्र-पत्रिकाएं आती है। पुस्तकालय का जिल्दसाजी कक्ष भी उपयोगी प्रवृत्ति है। विगत वर्ष लगभग 15,000 रु. की पुस्तकें राज्य सरकार की ग्रांट से खरीदी गई थी और करीब 15000 रु. की राशि की पुस्तकें विश्वविद्यालय-अनुदान आयोग की ग्रांट से खरीदी गई थी। पुस्तकालय का नया-भवन बन कर तैयार हो चुका है। पुस्तकालय की पुस्तकें कोलन-पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलॉग है, जो सी.सी. सी. (रंगनाथन) पद्धत्ति पर बना है। सन 1900 से पहले की लगभग 100 पुस्तकें उपलब्ध हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष। श्री एस. पी. रावत एम.ए., डी.एल. एस.सी.
श्री बी. एस. भटनागर, बी.ए.

श्री क० न० कृषिमहाविद्यालय पुस्तकालय, जोबनेर (1947)

वर्तमान में उदयपुर विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित इस महाविद्यालय का प्रारम्भ वर्ष 1947 में डिग्री कॉलिज के रूप में हुआ, तब स्व० ठाकुर नरेन्द्रसिंहजी के नियंत्रण में यह संस्था थी। और जब वर्ष 1956 में यह संस्था राज्य सरकार द्वारा अधिगृहीत की गई, उस समय पुस्तकालय में केवल 525 पुस्तकें थीं। वर्तमान में 16,685 ग्रंथ संग्रहीत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलॉग है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। शोध छात्रों के लिए माइक्रोफिल्म तथा फोटो-कॉपिंग आदि की पुस्तकालय में व्यवस्था की गई हैं। पुस्तकालय में अलग से जिल्द-साजी विभाग प्रारम्भ किया गया है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर 50 हजार रु. से अधिक व्यय किए जाते हैं। पुस्तकालय का भवन उपयुक्त है।

पुस्तकालयाध्यक्ष। श्री ब्रजमोहन शर्मा एम.ए. डिप्लोमा इन लाइ. साइंस

सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय पुस्तकालय, लालसोट (1916)

संस्कृत महाविद्यालय के अंतर्गत संचालित इस पुस्तकालय का आरंभ ज्येष्ठ शुक्ला 5 सं० 1972 को हुआ। वर्तमान में पुस्तकालय में 2148 ग्रंथ संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 500 पुस्तकें दी गईं। संस्कृत तथा धार्मिक साहित्य संग्रह की विशेषता है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है।

पुस्तकालयाध्यक्ष। श्री राधेश्याम शर्मा वैद्य विशारद

राजकीय संस्कृत महाविद्यालय पुस्तकालय, महापुरा

इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 3079 पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु लगभग एक हजार पुस्तकें नी गई। पुस्ककें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय सरकारी भवन में ही चल रहा है। विगत वर्ष 127 नई पुस्तकें आईं। प्रतिवर्ष लगभग 500 रु. पुस्तक खरीद पर व्यय किए जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री गंगासहाय शर्मा, साहित्यशास्त्री

श्री सांभर पुस्तकालय, सांभरलेक (1922)

उस घटना को पचास वर्ष हो गए, जब इस ज्ञानमन्दिर का प्रादुर्भाव हुआ। पुस्तकालय ने हाल ही अपनी स्वर्णजयंती समारोहपूर्वक मनाई है। 20 सितम्बर सन् 1922 को इस सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरूआत हुई। वर्तमान में 7280 पुस्तकें इसमें संग्रहीत हैं। धार्मिक पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 150 लगभग है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है, जो उपयुक्त है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री अरुण कुमार शर्मा सी. लिव. एस-सी.

गवर्नमेन्ट कालेज पुस्तकालय सांभरलेक (1970)

इस राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय में करीब 1 हजार पुस्तकों का संग्रह है। हिन्दी संस्कृत इकोनामिक्स इतिहास है। जाग्राफी वाणिज्य एवम् सांख्यिकी आदि का संग्रह किया जा रहा है। वार्षिक वजट 22 हजार का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रावाकृष्ण शर्मा एम० ए० लाईब्रेरी साईन्स।

अमर पुस्तकालय, कोटपूतली (1920)

विक्रम सं० 1976 में इस सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरूआत हुई। वर्तमान में सभी विषयों की 5816 पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष 1100 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 50 हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। राज्य सरकार की भी आर्थिक मदद मिलती है। सात दुकानों का निर्माण किया गया है। जिनके किराये से आय हो सकेगी।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रामेश्वर प्रसाद वी. ए.

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, राजनोती (कोटपूतली)

विद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 1854 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाल साहित्य संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 22 है। विगत वर्ष 1500 पुस्तकें पढ़ने हेतु दी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री,

राजकीय धूलेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, पुस्तकालय, मनोहरपुर (1952)

9 अगस्त सन 1952 इस महाविद्यालय का स्थापना-दिवस है। उक्त दिन ही इस पुस्तकालय की भी स्थापना का दिवस है। महाविद्यालय के विकास के साथ साथ पुस्तकालय का विकास भी समय गति से हो रहा है। संस्कृत वांङ्मय के विभिन्न ग्रंथों,

एवं हिन्दी आदि की पुस्तकों की प्रचुरता संग्रह की विशेषता है। प्रतिवर्ष विभिन्न विषयाध्यापकों के सुझाव के अनुसार नवीन कृतियों का क्रय किया जाता है।

वर्तमान में 2049 पुस्तकें संग्रहीत हैं। प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 35 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रमेश चन्द्र शर्मा शिक्षाशास्त्री,

बाल निकेतन पुस्तकालय, तिलकनगर (1962)

श्री देवेन्द्र विधार्थी के प्रयत्नों से सन् 1962 में तिलक नगर में इस बाल निकेतन का आरंभ हुआ। इसका पुस्तकालय अभी शैशवावस्था की देहरी पार कर ही रहा है। वर्तमान में 771 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 400 रु. का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री गंगा रानी

प्रदीप शिक्षण केन्द्र, पुस्तकालय–जयपुर (1960)

शिक्षण केन्द्र के पुस्तकालय की शुरूआत सन् 1960 में हुई। वर्तमान में 650 पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष 1,500 पुस्तकें पढ़ने हेतु दी गई। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 10 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : कुमारी मीना जैन एम. ए.

महिला विद्यापीठ माध्यमिक विद्यालय, गोपालजी का रास्ता (1924)

वर्ष 1924 में संस्थापित इस विद्यापीठ के पुस्तकालय में वर्तमान में 3,500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 15 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1592 पुस्तकें दी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती जगदेवी जैन

राज० महाराजा बेसिक आदर्श विद्यालय, जयपुर (1920)

रथखाना नाम से जाने-पहचाने इस विद्यालय की शुरूआत सन् 1920 से पूर्व हुई। वर्तमान में इसके पुस्तकालय में 5,000 लगभग पुस्तकें है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु दी गई पुस्तकों की संख्या 6,000 है। पुस्तकालय में अधिकांश पुस्तकें कोर्स की हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु 2,400 का है। श्री विशनसिंह शेखावत वर्तमान में प्रधानाध्यापक हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रामधनसिंह

श्री गौड़ विप्र माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (1945)

विद्यालय प्रवन्ध समिति द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में करीव 1500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पत्र-पत्रिकाएं 15 मंगाई जाती हैं। गत वर्ष 150 पुस्तकें खरीदी गई हैं। 250 सदस्यों को पढ़ने के लिये करीव 1200 पुस्तकें दी गईं हैं। वार्षिक वजट 350 रु० का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रामधन गौड़

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार, जयपुर

इस भंडार का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। संवत् 2016 में स्वर्गीय श्री अमरचन्दजी म. सा. की लम्वी अस्वस्थता के कारण आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा, को जयपुर में कुछ अधिक समय के लिए रुकना पड़ा था। इस समय सवाई मानसिंह हाइवे स्थित लाल भवन के तहखाने में सुरक्षित कतिपय हस्तलिखित ग्रंथों को वाहर निकाला गया और इन्हें सुरक्षित करने का निर्णय किया गया। इस प्रकार श्री सोहनमलजी कोठारी के प्रयास से तथा श्री हस्तीमलजी की प्रेरणा से पोप शुक्ला 14संवत् 2016 को यह ज्ञान भंडार अस्तित्व में आया सम्प्रति इस ज्ञान भंडार ने संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भापाओं के प्राचीन जैन-जैनेतर हस्तलिखित ग्रंथों का विशाल संग्रह एवं संरक्षण करने का दायित्व उठाया है। अव तक इस भवन में 11 हजार पूर्ण, 4 हजार अपूर्ण एवं एक सौ गुटके (जिनमें अनुमानतः तीन हजार फुटकर रचनाएं लिपिवद्ध हैं) हस्तलिखित ग्रथों के रूप में संग्रहीत हो चुके हैं। प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ-संग्रह के साथ-साथ शोधकार्य को वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से आगे वढ़ाने के लिए स्तरीय एवं वहुमूल्य मुद्रित पुस्तकों तथा शोध सम्वन्धी पत्र-पत्रिकाओं को भी संग्रहीत किया जा रहा है।

प्राचीन हस्तलिखित एवं आधुनिक मुद्रित ग्रंथ संग्रह के साथ साथ प्राचीन जैन-जैनेतर चित्रों एवं नकशों के विविध नमूनों का महत्वपूर्ण संकलन कार्य भी प्रगति पर है। यहां के संचालकों का विचार है कि इस भंडार को केन्द्रीय शोध-संस्थान का रूप दिया जाय और इसी दृष्टिकोण से यहां कार्य हो रहा है।

राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डा० नरेन्द्र भानावत इस संस्थान के मानद निर्देशक के रूप में कार्य कर रहे हैं। अव तक दिल्ली, आगरा, इलाहावाद, गुजरात, राजस्थान, गोरखपुर आदि विश्वविद्यालयों के कई शोध छात्र अपने शोध-ग्रन्थ की सहायतार्थ इस भंडार का उपयोग कर चुके हैं।

महाराजा उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय, किशनपोल वाजार, जयपुर

कोतवाली के पार्श्व में स्थित इस विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 14,652 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 50 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री शान्ती देवी पारीक

राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर (1949)

उस घटना को आज चौबीस वर्ष हो गए। बीज से वटवृक्ष का उद्भव ही जैसे साकार हुआ है। श्री रगनाथन लिखित पुस्तक 'प्रीफेस टू लाइब्रेरी साइंस' इस ज्ञान मन्दिर के भव्य-भवन की पहली ईंट बन गई। सवाई मानसिंह हाइवे स्थित केशरगढ़ में प्रथम उपकुलपति डा० जी. एस. महाजनी के कार्यालय के एक कोने में राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय का सन् 1949 में शुभारंभ हुआ।

तब इस पुस्तकालय का स्वरूप शैक्षणिक विभागों के पुस्तक-संग्रहों से समन्वित एक केन्द्रीय पुस्तकालय का था। प्रारम्भिक दिनों में श्रीयुत् आर. एस. पारखी—पुस्तकालयाध्यक्ष—फर्ग्यूशन कॉलेज, पूना और दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री एस. रामभद्रन का विशिष्ट योगदान रहा। कहना न होगा कि इस पुस्तकालय में कोलन-पद्धति का समावेश ही श्री पारखी के निर्देशन से हुआ।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय का उद्देश्य सम्बन्धित महाविद्यालयों तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना है। इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर ही बराबर साहित्य आदि की खरीद की जाती रही है। वर्तमान में बहुविध विषयों के दो लाख से अधिक ग्रंथ संग्रहीत हैं तथा 1200 लगभग पत्र-पत्रिकाएं वाचनालय में आती हैं। दो हजार से अधिक सदस्य हैं तथा लगभग डेढ़ सौ कार्यकर्ता सेवारत हैं।

सन्, 57 में गांधीनगर स्थित यूनीवर्सिटी कैम्पस में इस पुस्तकालय के स्थानान्तरण के साथ ही संस्था द्रुतगति से प्रगति पथ की ओर अग्रसर हुई। 19 अक्टूबर सन् 57 को तत्कालीन राजप्रमुख महाराजा मानसिंह ने वर्तमान भवन की आधार-शिला रखी। गांधी जयंती—2 अक्टूबर 1952 को भारत के प्रधान मंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू के कर कमलों से वर्तमान भवन का उद्घाटन संपन्न हुआ। कहना न होगा कि विश्व विद्यालय पुस्तकालय का यह भवन एक दर्शनीय स्थल बन गया है।

इस अवधि मे विश्व विद्यालय पुस्तकालय के तत्वावधान में महत्वपूर्ण प्रकाशन किये गए हैं। प्रदर्शनियों तथा सेमीनार-गोष्ठियों के आयोजन के क्रम रहे हैं। 14 नवम्बर 64 को नेहरू-जयंती पर पुस्तकालय के अन्तर्गत बाल-पुस्तकालय का शुभारंभ डा० मोहनसिंह मेहता द्वारा किया गया। नवोदित पीढ़ी के लिए इस पुस्तकालय का विशेष उपयोग और महत्व है।
देशमान्य शिक्षाशास्त्री प्रो० एम. वी. माथुर इसके प्रथम पुस्तकाध्यक्ष रहे हैं। श्री माथुर तब विश्व विद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष थे। सर्वश्री डा० डी. एल. गुप्ता, प्रो० एम. बशीरुद्दीन, प्रो० सतीशचन्द्र की पुस्तकालयाध्यक्ष पद से की गई सेवाएं उल्लेखनीय रहेंगी। वर्तमान में श्री एन. एन. गिड़वानी पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। श्री गिड़वानी सन् 64 से इस पद पर कार्यशील हैं। इसके पूर्व आप नागपुर विश्व विद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष थे।

उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसन्धान संस्थान पुस्तकालय, जयपुर (1970)

राजस्थान विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति पद्मभूषण डा० प्रभुलाल भटनागर के सभापतित्व में विजयादशमी 10 अक्टूबर, 70 को आयोजित समारोह में यहां इस संस्थान की स्थापना की गई। देश के विभिन्न प्रदेशों विशेषकर राजस्थान के सामाजिक क्षेत्रों में खोज एवं अनुसन्धान ही संस्थान का एकमेव उद्देश्य है। संस्थान के विभागशः कार्य (1) भारतीय ज्ञान विज्ञान अध्ययन–अनुसंधान शाखा (2) सामाजिक विज्ञान अध्ययन–अनुसन्धान शाखा तथा (3) प्राकृतिक विज्ञान अध्ययन–अनुसंधान शाखा के अन्तर्गत संचालित हैं। संस्थान के अन्तर्गत कई स्थानों पर अध्ययन केन्द्र स्थापित किए गए हैं, जिनका सम्बन्ध गहरे अध्ययन के माध्यम से छात्रों, शिक्षकों एवं समाज के अन्य प्रबुद्धजनों के साथ सजीव सम्पर्क की स्थापना से है।
संस्थान के अन्तर्गत संस्थापित पुस्तकालय में वर्तमान में संस्कृत, वैदिक, दर्शन व्याकरण, आलोचना, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, पुराण, सूत्र साहित्य, भाषा-विज्ञान आदि के 500 से अधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ संग्रहीत हैं तथा तीस के लगभग पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। संस्थान के अन्तर्गत "अध्ययन-अनुसंधान" पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ है। पद्मभूषण डा० प्रभुलाल भटनागर संस्थान के अध्यक्ष हैं तथा कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. प्रवीणचन्द्र जैन हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : कमलेश जैन एम. ए.

यौगिक अनुसंधान केन्द्र पुस्तकालय, बापूनगर (1962)

बापूनगर के योगसाधना आश्रम में संचालित इस पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1962 में हुआ। वर्तमान में इसमें 500 ग्रंथ संग्रहीत हैं। विगत वर्ष तीन सौ पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। योग तथा स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकें ही इसमें मुख्यरूप से हैं। स्वामी आनन्दानन्दजी केन्द्र के संचालक हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा

निदेशालय जिला गजेटियर्स पुस्तकालय, जयपुर

विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए यह पुस्तकालय है, जोकि विभाग का ही एक अंग है। इसमें कुल 2,520 पुस्तकें है जोकि मुख्यतया इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र से सम्बन्धित है। इन पुस्तकों में राजस्थान से सम्बन्धित साहित्य की प्रमुखता है। पुस्तकालय की देखभाल विभाग के कर्मचारी ही करते हैं–अलग से इस कार्य के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष का कोई पद नहीं है।

राजस्थान खादी–ग्रामोद्योग संस्था संघ पुस्तकालय, जयपुर (1957)

बजाज नगर स्थित प्रदेश की खादी-ग्रामोद्योग संस्थाओं के मध्यवर्ती संगठन की शुरुआत सन् 1957 में हुई। इसके अन्तर्गत संचालित पुस्तकालय में 950 पुस्तकें हैं। खादी-ग्रामोद्योग तथा सर्वोदय से संबंधित 20 पत्र-पत्रिकाएं वाचनालय में आती हैं। संस्था के अध्यक्ष श्री चिरंजीलाल शर्मा तथा मंत्री श्री छीतरमल गोयल हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री उदयवीर सिंदल

श्री सन्मति पुस्तकालय, जयपुर (1920)

सन्मति पुस्तकालय एक ऐसे महापुरुष का स्मारक है, जिसने ज्ञान के द्वारा सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। पुस्तकालय की स्थापना स्व० मास्टर मोतीलाल जी संघी द्वारा सन् 1920 में की गई। पुस्तकों की वर्तमान संख्या लगभग 40,000 हैं। राजस्थान सरकार द्वारा पुस्तकालय के भवन निर्माण हेतु अर्जुनलाल सेठीनगर में निःशुल्क भूमि प्रदान की गई। नवीन भवन का शिलान्यास मास्टर साहब के विद्यार्थी श्री दौलतमल भंडारी (तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान) के द्वारा 31 मई 1969 को हुआ। इस अवधि मेंदो लाख रु. की लागत के पुस्तकालय प्रबन्धक और अध्ययनकक्ष का निर्माण कार्य चल रहा है। पुस्तकालय भवन में ये कक्ष होंगे—बाल पुस्तकालय कक्ष, अध्ययन कक्ष, पत्र-पत्रिका कक्ष, प्रबन्धक कक्ष, पुस्तक भंडार कक्ष, शोध कक्ष, प्रदर्शनी कक्ष। विगत वर्ष अक्टूबर 72 में राज्य के मुख्य मन्त्री श्री बरकतुल्ला खां द्वारा स्व० मास्टर साहब की मूर्ति का अनावरण हुआ।

पुस्तकालय की अन्य प्रवृत्तियां हैं (1) सम्यक ज्ञान प्रसार, (2) लौकिक शिक्षा का प्रचार (3) गृह-सेवा (4) अन्य सेवाकार्य। विगत वर्ष 17500 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं। भारत में पुस्तकालय विज्ञान के राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसर स्व० डा० रंगनाथन ने सन्मत्ति पुस्तकालय के संस्थापक मास्टर मोतीलाल जी को महान पुस्कालय-अनुदाता, पुस्तकालय कार्यकर्ता, पुस्तकालय-सन्देशवाहक, निर्देश-पुस्तकाध्यक्ष के रूप में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि जो स्वयं निर्मित थे, जिस अकेले में ही ये सब वर्तमान थे। उन्होंने कहा कि भगवान इस पुस्तकालय पर अपनी अनुकम्पा बनाये रखे ताकि यह दुनिया की आखिरी चोज के समाप्त होने तक बना रहे।

श्री पूरणचन्द गोदोका, डा० कमलचन्द सोगाणी, भंवरलाल पाटनी, निर्मल कुमार हांसूका तथा रूपचन्द चौकसी वर्तमान में पुस्तकालय ट्रस्ट के सदस्य हैं।

बोर्ड आफ इन्डियन मेडिशन–राजस्थान, पुस्तकालय (1972)

बोर्ड के अन्तर्गत संचालित पुस्तकालय की शुरूआत वर्ष 1972 में हुई। वर्तमान में लगभग 150 पुस्तकें हैं। आयुर्वेदिक, यूनानी तथा अन्य चिकित्सा-पद्धत्तियों की पुस्तकें खरीदने की एक योजना बनाई गई है। उम्मीद है कि शीघ्र ही यह पुस्तकालय समृद्ध होगा। वर्तमान में श्री प्रेमशंकर शर्मा बोर्ड के डाइरेक्टर हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री जगदीश चन्द्र शर्मा

रा० आदर्श कन्या उच्चमाध्यमिक विद्यालय, गणगौरी बाजार, जयपुर

सन् 1966 में संस्थापित इस विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 5925 पुस्तकें संग्रहित हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 20 है। विगत वर्ष लगभग 3,000 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सज्जन पांडे

राजस्थान कालेज पुस्तकालय, जयपुर–4

इस कॉलेज की स्थापना सन् 1957 में हुई। उस समय इस कॉलेज का उद्देश्य राजस्थान में प्रतियोगितामूलक परिक्षाओं के लिए उत्तम विद्यार्थी शिक्षित करना था। यह क्रम सन् 1960 तक रहा और उसके परिणाम आशा से अधिक उत्तम रहे। सन् 1962–63 में इस कालेज को भी राजस्थान विश्वविद्यालय ने जयपुर के अन्य राजकीय कालेजों के साथ साथ ले लिया। समय समय पर इस कालेज के अनेक नामकरण होते रहे। मौजूदा स्थिति में विश्वविद्यालय के कला संकाय के स्नातक कक्ष (Undergraduate Wing) के नाम से है।

कॉलेज में स्नातक व स्नातकोत्तर सम्वन्धी कला विभाग की पाठ्य पुस्तकें, सहायक पुस्तकें व संदर्भ पुस्तकों सम्वन्धी 31475 ग्रन्थ संग्रहीत हैं।

पुस्तकालय में प्रतिवर्ष 1500 से 2000 तक नवीन पुस्तकें खरीदी जाती हैं।

पुस्तकालय वजट व अनुदान प्राप्त वजट का औसत 20,000 रु० है।

वाचनालय में कला सम्वन्धी उपयोगी 80 पत्र पत्रिकाएं आती हैं तथा 545 पुरानी पत्रिकाएं पुस्तकाकार में संदर्भ हेतु रखी हुई हैं।

पुस्तकालय की सभी पुस्तकें द्विविन्दु वर्गीकरण द्वारा वर्गीकृत हैं तथा पाठकों की सुविधा हेतु सूचीपत्र भी विषयानुसार व अनुक्रमणिकानुसार पुस्तकालय में स्थित है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री बी. एन. शर्मा, एम. ए. वि. लिव. साईन्स।

जयपुर चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री पुस्तकालय, जयपुर (1944)

गुलावीनगर के प्रमुख औद्योगिक व व्यवसायिक शहर के मध्य जयपुर चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री में उसके स्थापना काल 1944 से ही पुस्तकालय है। इस समय पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या करीव एक हजार है तथा ये पुस्तकें मुख्य रूप से उद्योग व व्यवसाय से सम्वन्धित हैं। इसके अतिरिक्त उद्योग एव व्यवसाय से सम्वन्वित देश विदेश की प्रमुख पत्र-पत्रिकायें भी चैम्बर में मंगायी जाती हैं। इस समय चैम्वर कीं सदस्य संख्या करीव 350 है। चैम्बर के पदाधिकारी श्री भगन विहारीलाल अध्यक्ष, श्री सोहन लाल सोगानी उपाध्यक्ष, श्री कोमल चन्द पाटनी सेवार्थी मन्त्री हैं।

राज० कन्या उ० मा० विद्यालय पुस्तकालय, गांधीनगर

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस शिक्षण-सस्था के पुस्तकालय में वर्तमान में 4,000 से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष 395 पुस्तकें खरीदी गईं। पिछले वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 3,000 पुस्तकें दी गईं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 30 है। गांधी-साहित्य सामाजिक ज्ञान तथा अन्य 'कोर्स-बुक्स' संग्रह की विशेषता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती निर्मला जैन

बाल निकेतन, पुस्तकालय विद्याधर का रास्ता, जयपुर (1950)

जयपुर नगर की इस सर्व-प्रमुख बाल शिक्षण संस्था के पुस्तकालय की शुरूग्रात 1950 में हुई। विद्यालय की प्रगति के साथ ही पुस्तकालय भी शनैः शनैः प्रगति करता गया। वर्तमान में 2581 पुस्तकें इसमें संग्रहीत हैं। वाचनालय में ग्राने वाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या 16 है। विगत वर्ष 3,000 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। बाल-साहित्य इस संग्रह की विशेपता है। बाल-निकेतन के संचालक श्री देवेन्द्र विद्यार्थी हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती तारा सक्सेना

प्रेम शांति पब्लिक स्कूल, सी–स्कीम, जयपुर (1961)

विद्यालय की स्थापना वर्ष 1961 में हुई ग्रौर तभी से पुस्तकालय की शुरूग्रात भी की गई। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या 2500 है। तथा वाचनालय में ग्राने वाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या लगभग 15 है। विगत वर्ष 5,00 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकालय का सालाना–बजट 1,000 रु. का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सुषमा गुप्ता.

केन्द्रीय विद्यालय पुस्तकालय, बजाज नगर (1964)

बजाजनगर में स्थित इस केन्द्रीय विद्यालय के ग्रन्तर्गत संचालित पुस्तकालय की शुरूग्रात संस्था के ग्रारम्भ के साथ ही वर्ष 1964 में हुई। वर्तमान में इसमें 6,000 लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 4,000 पुस्तकें दी गई। वाचनालय में ग्राने वाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या 33 हैं। पिछले साल 500 तक पुस्तकें खरीदी गई। पुस्तकालय तथा वाचनालय का वार्षिक बजट रु. 4000 का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री नन्दकिशोर ग्राहूजा एम. ए., डिप्लोमा लाइब्रेरी साइंस,

श्री कन्या सदाचार पठशाला पुस्तकालय, जयपुर (1900)

स्व. पं. शिवनन्दजी द्वारा लड़कियों के शिक्षण हेतु इस विद्यालय की स्थापना वर्ष 1900 में की गई। भिन्डों के रास्ते में स्थित यह शिक्षण संस्था नारी जाति की प्रगति का प्रतीक वन गई है। वर्तमान में इसके पुस्तकालय में 2,000 लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में ग्राने वाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या 15 है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु. 400 का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : कुमारी कुसुम दवे

कमला नेहरू–स्मृति रा० उच्च माध्यामिक विद्यालय, जयपुर (1959)

श्रीमती कमला नेहरू स्मृति राजकीय उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय में पुस्तकाल की स्थापना सन् 1959 में हुई। संस्था की प्रगति के साथ ही पुस्तकालय भी ग्रागे बढ़ता गया। वर्तमान में 6745 पुस्तकें हैं, जो डेवी-पद्धत्ति से वर्गीकृत हैं। रंगनाथन-पद्धत्ति पर ग्राधारित कार्ड कैटलाग की भी व्यवस्था है। इसके वाचनालय में प्रति वर्ष ग्राने वाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या 55 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : कुमारी गौरी वली रामानी एम. ए., सी. लिब. एस. सी.

राजस्थान माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, गणपतिनगर जयपुर

गणपतिनगर स्थित इस विद्यालय का प्रारम्भ सन् 1966 में हुआ और तभी से संस्था के अन्तर्गत पुस्तकालय की भी शुरूआत हुई। वर्तमान में विभिन्न विषयों की 4029 पुस्तकें संग्रहीत है तथा वाचनालय में पन्द्रह से अधिक पत्र-पत्रिकाएं नियमित आती हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 2304 पुस्तकें दी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री हनुमान सहाय शर्मा बी० ए०, बी० एस० टी० सी०।

राज० उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, माणकचौक जयपुर

गुलाबीनगर के मध्य हवामहल के सामने स्थित इस उच्च माध्यमिक विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 7502 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में वर्तमान में 50 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। बाउण्ड पुस्तकों की संख्या 1024 है। विगत वर्ष 463 पुस्तकें खरीदी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रामदेव मौर्य।

चिल्ड्रन्स एकैडमी पुस्तकालय, बनीपार्क जयपुर (1961)

बनीपार्क के टोडरमल मार्ग स्थित इस बाल शिक्षण संस्था के पुस्तकालय में वर्तमान में 3000 के लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष 1500 पुस्तकें घर पढ़ने हेतु दी गईं। विगत वर्ष 350 पुस्तकें खरीदी गई। संस्था के संचालक जोगेन्द्रसिंह हैं।

राज० कन्या मा० विद्यालय, पुस्तकालय, जयपुर (1964)

मानसिंह हाई वे स्थित नगर की प्रमुख बालिका—शिक्षा संस्था के पुस्तकालय में वर्तमान में 3795 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 45 पत्र-पत्रिकाएं नियमित रूप से आती हैं। विगत वर्ष 100 पुस्तकें खरीदी गई। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 400)00 रु० का है। विज्ञान, वाणिज्य, अर्थशास्त्र गणित तथा अन्य कोर्स विषयक पुस्तकें संग्रह की विशेषता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष :

वैदिक पुस्तकालय एवं वाचनालय, जयपुर (1905)

किशनपोल बाजार स्थित आर्य समाज द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1905 में हुआ। वर्तमान में इसमें 1049 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 500)00 रु० का है। हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या 7 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु लगभग 500 पुस्तकें दी गई। वैदिक एवं आर्य ग्रंथ इस की विशेषता है। इस वर्ष के लिए संस्था के अध्यक्ष श्री विद्यारत्न भटनागर तथा मन्त्री श्री शम्भुलाल गुप्ता हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री ओमप्रकाश शर्मा।

पं० मोतीलाल शोध पुस्तकालय, दुर्गापुरा रोड, जयपुर (1960)

सुप्रसिद्ध विद्वान स्व० पंडित मोतीलालजी शास्त्री द्वारा संस्थापित इस संग्रह में पुराण, उपनिषद, कर्मकांड, व्याकरण, कोष, वेदान्त, धर्मशास्त्र, इतिहास पंचांग आदि विषयों में 5000 से अधिक ग्रन्थ हैं। पंडितजी द्वारा स्थापित "राजस्थान वैदिक तत्व शोध संस्थान मानवाश्रम के अन्तर्गत लगभग महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है। लगभग 70 हजार पृष्ठों के 35 ग्रन्थ प्रकाशित है। पं० मोतीलालजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री कृष्णचन्द्र शर्मा ही संस्थान तथा पुस्तकालय की देख रेख करते हैं।

पं० मधुसूदन ओझा संग्रहालय, पुस्तकालय, जयपुर

विद्याधर के रास्ते में स्थित इस संग्रहालय में भारत प्रसिद्ध विद्वान पं० श्री मधुसूदन ओझा की लिखी हुई पांडुलिपियों की संख्या करीब 150 है जिनमें 57 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ब्रह्मविज्ञान, यज्ञविज्ञान, पुराण समीक्षा, वेदांग समीक्षा, आगम रहस्य आदि विभागों के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है। वर्तमान में श्री रमेशचन्द्र ओझा प्रकाशन तथा संग्रहालय कार्य की देखरेख करते हैं।

ओझा पुस्तकालय सिरहड्योढी बाजार, जयपुर (1938)

वर्ष 1928 में स्थापित इस पुस्तकालय में लगभग 3000 ग्रन्थ संग्रहीत है। जिनमें हस्तलिखित ग्रन्थ 2000 हैं। व्याकरण, न्याय, तंत्र, मंत्र, आयुर्वेद, ज्योतिष साहित्य आदि विषय की पुस्तकें एवं ताड़ पत्रों के संग्रह की विशेषता हैं। श्री विद्यानाथ ओझा इसके कार्य को देखते हैं।

स्वामी लच्छीराम पुस्तकाल, मोतीडूंगरी रोड़, जयपुर (1934)

स्वामी लच्छीरामजी के बाग में मुख्य द्वार की ऊपरी मंजिल में यह पुस्तकालय एवं संग्रहालय अवस्थित है। स्वर्गीय स्वामीजी ने अपना निजी पुस्तकालय एवं संग्रहालय को स्वय द्वारा संस्थापित स्वामी लक्ष्मीराम ट्रस्ट को प्रदान किया था। इसमें वर्तमान में करीब दो हजार ग्रन्थों का संग्रह है। अधिकांश पुस्तकें आयुर्वेद-साहित्य की है। इसके अतिरिक्त वेद, दर्शन, साहित्य, उपनिषद से सम्बन्धित साहित्य है। हस्तलिखित ग्रन्थ है, जिनमें कुछ पूर्ण तथा अपूर्ण कृतियां है। वैद्य श्री रामप्रकाश स्वामी इसकी देखरेख करते हैं।

श्री जैन श्वे० तेरापंथी उच्च प्राथमिक विद्यालय, जयपुर (1913)

विक्रम संवत 1970 में संस्थापित इस शिक्षण संस्था के पुस्तकालय में वर्तमान में कुल 2315 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में 16 पत्र-पत्रिकाए आती हैं। विगत वर्ष 500 पुस्तकें पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग चार सौ रु० का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्रीमती सुशीला हल्दियां एम०ए०, बी०एड०।

जैन साहित्य शोध विभाग, जयपुर (1947)

प्राचीन एवं विलुप्त जैन साहित्य की खोज, प्रकाशन एवं शोध के लिये दि० जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रवन्ध कारिणी समिति द्वारा सन् 1947 के प्रारम्भ में जयपुर में एक जैन साहित्य शोध विभाग की स्थापना की गयी थी। विभाग की स्थापना में क्षेत्र के तत्कालीन मंत्री स्व० श्री रामचन्द्र जी खिन्दूका का प्रमुख योग रहा तथा विभाग की स्थापना करने की प्रेरणा स्व० पं० चैनसुख दास न्यायतीर्थ से प्राप्त हुई।

यहां हस्तलिखित ग्रन्थों के अतिरिक्त प्रकाशित ग्रन्थों का भी अच्छा संग्रह है। वर्तमान में पाण्डुलिपियों की संख्या 3053 है। इन ग्रन्थों में 1500 से अधिक संस्कृत ग्रन्थ हैं तथा 800 ग्रन्थ प्राकृत अपभ्रंश तथा 700 हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के हैं। विभाग में विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्राच्य विद्या को लेकर तथा विशेषतः जैन विषयों पर खोज करने वाले शोधार्थियों को पूरा सहयोग दिया जाता है। अब तक 50 से भी अधिक शोधार्थी इसके संग्रह से लाभ ले चुके हैं। यहां से अब तक 17 ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। जिनमें राजस्थान में जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियों के पांच भाग उल्लेखनीय हैं। इन भागों में राजस्थान के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में स्थित जैन शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत 40 हजार से भी अधिक ग्रन्थों का परिचय मिलता है। सभी ग्रन्थ शोध क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

शोधार्थियों का निर्देशन डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल देते हैं। तथा श्री पं० अनूपचन्द न्यायतीर्थ शोधकार्यों में सहायता करते हैं। वर्तमान में श्री महावीर क्षेत्र के अध्यक्ष श्री मोहनलाल काला एवं मंत्री श्री सोहनलाल सोगानी ही इस विभाग के अध्यक्ष एवं मन्त्री हैं। यह विभाग महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे में स्थित है।

श्री दिगम्बर जैन मंदिरजी ठोलियान, जयपुर

घी वालों का रास्ता स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिरजी ठोलियान के सरस्वती भवन में लगभग 900 हस्तलिखित ग्रन्थ गुटके आदि उपलब्ध है जिनमें कई अद्भुत, अप्राप्य तथा अमूल्य है। इनके अतिरिक्त लगभग 700 मुद्रित ग्रन्थ व पुस्तकें हैं। वाचनालय में जैन समाज के साप्ताहिक मासिक पत्र भी उपलब्ध कराये जाते हैं। श्री नरेन्द्र मोहन डंडिया इस की देख रेख करते हैं।

सरस्वती भण्डार, दिगम्बर जैन मन्दिर गोधान, जयपुर

चौकड़ी घाट दरवाजा में नागौरियों के चौक में अवस्थित दिगम्बर जैन मन्दिर गोधान कि सरस्वती भण्डार में संस्कृत-प्राकृत व हिन्दी के करीब 700 ग्रन्थ; 125 गुटके हस्तलिखित है तथा 2100 मुद्रित पुस्तकें हैं। ग्रन्थ तथा पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दिये जाने की व्यवस्था है। सरस्वती भण्डार समिति के संयोजक श्री राजमल संघी है।

महिला पुस्तकालय जयपुर (1951)

सेवा सदन द्वारा संचालित महिला शिक्षा विद्यालय का श्रीमती सावित्री भारतीया ने उद्घाटन किया था। इसके पुस्तकालय में जो वर्तमान में कल्याण जी के रास्ते में बाल विद्यापीठ में चल रहा है। करीब 1100 पुस्तकें हैं।

वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष श्री सुधाकर शास्त्री तथा मन्त्री वैद्य विजय शंकर हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : शारदा शर्मा

राजस्थान कान्य कुब्ज सभा पुस्तकालय, जयपुर (1962)

राजस्थान में निवास करने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक विकास हेतु सक्रिय राजस्थान कान्य कुब्ज सभा द्वारा संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 1500 लगभग पुस्तकें संग्रहीत है। बृजभाषा संस्कृत और डिंगल आदि विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। संस्कृत में आध्यात्मिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकों का प्राधान्य है। पुस्तकालय के विकास के लिए यह संस्था प्रयत्नशील है। पुस्तकालय की देख-रेख संस्था के मत्री स्वयं करते हैं। वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष श्री शिवविहारी तिवारी और मन्त्री श्री शांतिस्वरूप अग्निहोत्री हैं।

कुतुबखाना मौलवी ऐतरामुद्दीन, जयपुर (1915)

तस्लीम मंजिल, रामगंज बाजार स्थित यह पुस्तक संग्रह अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। डा० जाकिर हुसेन—जब अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर थे तब इस संग्रह को देखने हेतु ही यहां तशरीफ लाये थे। वर्तमान में इसमें 1600 ग्रन्थ संग्रहीत हैं—जो प्रायः सभी उर्दू, अरबी और फारसी भाषाओं के हैं। अनेक विद्या विषयों—जिनमें तवारीख, नाविल, तस्वुक, तिब, फलस्फा, मजहबियात आदि प्रमुख हैं। ये महत्वपूर्ण ग्रन्थ यहां उपलब्ध है। हिजरी सन् 1813 में लिखी दिवाने गुल नामक पुस्तक की प्रतिलिपि यहां सुरक्षित है—जिसे मिर्जा अकबर अली खां ने तैयार की थी। फारसी तथा उर्दू की पत्र-पत्रिकाएं काफी संख्या मे बाउन्ड है। अब तक इस कुतुबखाने में 25 छात्र शोध कर चुके हैं।

कथाभट्ट हर गोविन्द पुस्तकालय. जयपुर (1940)

चांपावतो के मन्दिर में स्थित इस पुस्तकालय में हस्तलिखित ग्रन्थों की करीब 100–125 प्रतियं है जिनमें महाभारत के 18 पर्व श्रीमद् भगवत—वालमीकी रामायण तथा स्मृतियां—तथा धार्मिक ग्रन्थ है। 6 चित्र महाभारत से सम्बन्धित है ये पुस्तकालय की विशेषता है। कथाभट्ट श्री नन्दकिशोरजी ने धार्मिक पुस्तक का संवर्धन संशोधन किया है। जरमनी केटलाग में भी जिसका उल्लेख है। यह संग्रह कथा भट्ट श्री जगदीशचन्द्र साहित्याचार्य की देखरेख में सुरक्षित है। श्री हरगोविन्दजी महाराजा सा के पुस्तकालय के अध्यक्षपद पर रहे हैं।

राज ज्योतिषी पं० संतरामशर्मा पुस्तकालय संग्रहालय, जयपुर

इस पुस्तक निधि में लगभग 1500 ग्रन्थ संग्रहीत हैं जिनमें मुख्य रूप से ज्योतिपशास्त्र की प्रकाशित पुस्तकें अधिकांश है। कुछ पुस्तकें हस्तलिखित अप्रकाशित हैं। इस संग्रहालय में तंत्र, मंत्र, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि के महत्वपूर्ण ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इस संग्रहालय में दिक प्रत्ययकृत पंचाग यथा क्रम सुरक्षित है। इसके वर्तमान व्यवस्थापक प० मोहनलाल है।

श्री गंगा पुस्तकालय संग्रहालय, जयपुर

परतानियों का रास्ता स्थित इस संग्रहालय में 1300 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। हरिजन पत्र को 25 जिल्दें भी है। आध्यात्मिक तथा सर्वोदय-साहित्य संग्रह की विशेषता है। श्री गंगाप्रसाद महेश्वरी इसके संचालक हैं।

जिला जालौर

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, जालौर

इस महाविद्यालय के अन्तर्गत वर्ष 1966 में पुस्तकालय का प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों की 8300 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 32 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु करीब 4000 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 60 है। पुस्तकें डेवी दशमलव पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय से खुली पहुँच है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रु० 15000 से अधिक व्यय किये जाते हैं। महाविद्यालय के भवन में पुस्तकालय स्थित है जिसे उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। गत वर्ष पुस्तकालय में 1040 पुस्तकें जोड़ी गई। अन्य नागरिक भी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रणजीत सिंह सोलंकी बी० ए०, बी० लिब० एस० सी०

जिला पुस्तकालय जालौर (1956)

विरदेमव चौक, जालौर में अवस्थित यह राजकीय पुस्तकालय वर्ष 1956 में प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में 6685 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 78 हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 20711 पुस्तकें दी गई है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 200 है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत है। पुस्तकालय में टकेलाग की व्यवस्था है, जो रजिस्टर फार्म सी० सी० सी० पद्धति पर बना है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। वर्तमान में पुस्तकालय किराये के भवन में चल रहा है, जो उपयुक्त है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मनहरलाल बी० ए०, बी० लिब० एम० सी०।

जिला जैसलमेर

एस० बी० कोठियारी गवर्नमेन्ट कालेज पुस्तकालय, जैसलमेर (1970)

इस कालेज के पुस्तकालय में करीब 2 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। जिसमें अंग्रेजी हिन्दी भाषाओं में इतिहास, अनुशासन, राजनीति-विज्ञान आदि की पुस्तकें हैं। वार्षिक बजट 10 हजार रुपया का है।

जैन शास्त्र भण्डार संग्रहालय जैसलमेर

जलविरल इस दुर्गम मरु-प्रदेश से इन्हीं ज्ञान-भण्डारों के सौरभ से समाकृष्ट होकर अनेक देशी-विदेशी प्राज्ञ-मधुर कष्ट-साध्म यात्रा करके यहां आते रहे हैं। यहां के भण्डारों में प्राचीनतम प्रति संवत् 1109 की लिखी हुई 'पंचमीकहा' की मिलती है। 1115 संवत् की हरिभद्रसूरि विरचित 'पंचाशको' की प्रति तथा संवत् 1139 में लिखित भगवतीसूत्र, तिलक-मंजरी और कुवलयमाला की अत्यन्त प्राचीन प्रतियां भी यहां पर प्राप्त हैं। तीन ऐसे ग्रन्थों की प्राचीन प्रतियां भी विद्यमान हैं जिनकी रचना इसी नगर में हुई थी, प्रथम, संवत् 1284 में पूर्णभद्र गणि रचित 'धन्यशालिचरित्र' की तालपत्रीय प्रति, दूसरी 1407 संवत् में विरचित 'अंजणासुन्दरी चरित' तथा तृतीय, संवत् 1645 में पुण्यसागर उपाध्याय कृत 'जम्बू-दीप-प्रज्ञप्ति वृत्ति'। इनके अतिरिक्त भी यहां पर विविध विषयक अनेक ग्रन्थों की ऐसी पाण्डुलिपियां संग्रहीत हैं, जिनकी पुष्पिकाओं में विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक के राजाओं के सत्तासमयादि, समाज, वर्ग और जनजीवन सम्बन्धी सूचनाएं प्राप्त होती हैं।

जिला जोधपुर

राजस्थान उच्च न्यायालय पुस्तकालय, जोधपुर (1947)

पुस्तकालए मारवाड़ में चीफ कोर्ट से सम्बन्धित था। 1947 में भारत के स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर विभिन्न छोटी छोटी रियासतों के चीफ कोर्टों के पुस्तकालयों का विलय इस पुस्तकालय में हो गया। 1958 तक उच्च न्यायालय की एक शाखा-खण्ड पीठ जयपुर में भी स्थित थी। परन्तु फिर एकीकृत उच्च न्यायालय जोधपुर में स्थित हो गया और पुस्तकालय भी तब से यहीं है। पिछले चौदह वर्षों में पुस्तकों की संख्या दुगुनी हो गई है। कहना न होगा कि यह पुस्तकालय एक विशेष प्रकार की सेवा प्रदान करता है। यहां के पाठक मुख्यतया वकील ही हैं। पुस्तकें केवल मात्र न्यायालयों या न्यायालय के अधिकारियों को दी जाती है।

वर्तमान में पुस्तकालय में 36000 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र पत्रिकाओं की संख्या 102 है। प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या पच्चीस से अधिक है। पुस्तकें वर्गीकृत है तथा सन् 1964 तक प्रिंटेड कार्ड रहा और तत्पश्चात कार्ड केटलाग है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रु० 45000)00 से अधिक व्यय होते हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है, लेकिन उसे उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। पुस्तकालय का उपयोग करने वाले पाठकों में वकील ही अधिक हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री घनश्याम चारण, एम०ए०, एल०एल०बी०, बी०लिब०एस०सी०।

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान पुस्तकालय, जोधपुर (1950)

राजस्थान सरकार द्वारा संचालित इस प्रतिष्ठान के पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1950 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या 14781 है। शाखा कामलियों सहित हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या एक लाख से ऊपर है। ग्रन्थ सामग्री में 977 प्रतिलिपियां तथा 268 फोटो कापियों उल्लेखनीय है। प्राच्य विषयक शोध संदर्भ पुस्तकों का बाहुल्य है। पुस्तकें वर्गीकृत नहीं है तथा संग्रह का रजिस्टर केटलाग है, जो अकारादि अनुक्रमणिका के अनुसार सी० सी० सी० (रंगनाथन) पद्धति पर बना है। विगत वर्ष पुस्तकालय पर लगभग 5000 रु० व्यय किए गए। पुस्तकालय सरकारी निजी भवन में चल रहा है। पी० एच० डी० के शोधार्थी प्रायः पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की दो सूचियां (सूचीपत्र) छपी है। सब ग्रन्थों की अकारादि अनुक्रम से चिटिकाएं तैयार है।

प्रतिष्ठान के अलवर, जयपुर, टोंक, कोटा, उदयपुर, चित्तौड़, बीकानेर आदि स्थानों पर शाखा कार्यालय है। बीकानेर शाखा में बाईस हजार हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। वर्ष 71–72 तक प्रतिष्ठान द्वारा 115 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है।

जोधपुर पोलिटेकनिक पुस्तकालय (1958)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस संस्थान के पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1958 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी की 18200 पुस्तकें संग्रहीत है। बाउण्ड पत्र पत्रिकाओं की संख्या 260 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 71 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 24000 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 160 है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड केटलाग है, जो ए० एल० ए० पद्धति पर बना हुआ है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष रु० 10,00 व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है जो उपयुक्त है। विगत वर्ष पुस्तकालय में जोड़ी गई पुस्तकों की संख्या 3077 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री हरिश्चन्द्र माथुर बी०काम०, बी०लिब०एस०सी०।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुस्तकालय, जोधपुर (1956)

अकादमी की स्थापना के साथ ही इस पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1956 में हुआ। वर्तमान में 2031 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 19 हैं। संगीत, नृत्य एवं नाटक विषयक पुस्तकों का संलग्न संग्रह की विशेषता है। पुस्तकें वर्गीकृत नहीं है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर एक हजार से पन्द्रह सौ रु० तक व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय का निजी भवन नहीं है। राजस्थानी लोकगीत, लोक वाध्य एवं लोक नाटक सम्बन्धी टेक रिकार्डिंग संग्रह शोधार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। श्री राजेन्द्र सिंह बारहठ अकादमी के सचिव है।

सुमेर सार्वजनिक पुस्तकालय, जोधपुर (1915)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरूआत सन् 1915 में हुई। वर्तमान में पुस्तकालय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, तथा अन्य भाषाओं के 50292 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 350 है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय में मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 76 है, विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 29688 पुस्तकें दी गई। इतिहास तथा संस्कृत विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या लगभग 400 है। पुस्तकें डेवी डेसीमल पद्धति से वर्गीकृत हैं। सन् 1943 तक की पुस्तकों के लिए छपे हुये फार्म में केटलाग है, उसके पश्चात की पुस्तकों के लिए कार्ड केटलाग है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर लगभग 1 लाख रुपये की राशि व्यय की जाती है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है जो उपयुक्त है। विगत वर्ष पुस्तकालय में 1353 पुस्तकें जोड़ी गई। सन् 1900 से पूर्व छपी हुई पुस्तकों की संख्या लगभग 300 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री हिदायतुल्ला खां, एम०ए०, एल०एल०बी०, बी०लिब०एस०एस०सी०।

जोधपुर विश्वविद्यालय केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर (1963)

जोधपुर विश्वविद्यालय अधिनियम 1962 के अन्तर्गत स्थापित लाईब्रेरी बोर्ड की देखरेख तथा नियंत्रण में इस नवोदित विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का संचालन हो रहा है। जुलाई सन् 1963 से प्रारम्भ पुस्तकालय में वर्तमान में एक लाख दस हजार करीब पुस्तकें संग्रहीत है तथा बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 4500 है। वाचनालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 685 हैं विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1,32,025 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या लगभग 1200 है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है जो रंगनाथ-पद्धति पर बना है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है।

वर्ष 72–73 में रु० 2,23,600 पुस्तकें खरीद तथा रु० 1,35,000 पत्रिकाओं आदि के लिए स्वीकृत है। जिनमें से क्रमशः रु० 1,90,700 तथा 1,31,000 ही व्यय हुए। पुस्तकालय कर्मचारियों पर रु० 1,66,000 तथा अन्य कार्यों के लिए रु० 41,600 रु० व्यय हुए।
पुस्तकालय के कर्मचारिय की संख्या 41 है, जिनमें डिग्री प्राप्त 8 तथा प्रमाण पत्र प्राप्त व्यक्ति वर्तमान में पुस्तकालय राजकीय भवन में चल रहा है। पुस्तकालय के नये भवन निर्माण का तय हुआ है–जिस पर कुल व्यय रु० 35 लाख होंगे। यूनिवर्सिटी ग्रान्टस् कमीशन ने इसके मास्टर प्लान पर स्वीकृति प्रदान करदी है। जिसके अनुसार प्रथम चरण में रु० 15 लाख व्यय होंगे।

विगत वर्ष कुल 6870 नई पुस्तकें इसमें जोड़ी गईं। विभागाध्यक्षों की सिफारिश पर मुख्य रूप से पुस्तक खरीद का क्रम रहता है।
अन्तर विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों पुस्तकालयों से शोध विद्यार्थियों हेतु पुस्तकें तथा अन्य शोध-ग्रन्थ उपलब्ध कराये जाने का क्रम रहता है। हाली मैजक्स कोपिंग मशीन खरीदी गई है, जिससे पाठकों को आवश्यक प्रति लिपियां मुहैया कराने की सुविधा हो गई है। इस पुस्तकालय की शाखा पुस्तकालय हैं 1–महिलाओं के लिए कमला नेहरू हाल पुस्तकालय 2- फैकल्टी आफ इंजीनियरिंग लाइब्रेरी तथा 3–ला फैकल्टी लाइब्रेरी-
पुस्तकालयध्यक्ष—श्री किशोरीलाल राय डिप्टी लाईब्रेरीयन है। सन् 1921 में जन्में श्री राय एम० काम०, बी०, वि० लिब० एस० सी० तथा एफ० आर० ई० एस० (लन्दन)।
अन्य कार्यकर्ताओं में मुख्य हैं–श्री डी० आर० लोढ़ा, श्री आर० के० नाथावत, श्री आर० पी० राना, श्री पी० आर० पुरोहित, श्री आई० आर० सिंघवी, श्री आर० आर० जैन तथा श्रीमती अनुसूया व्यास।

एस० एन० मैडीकल कालेज पुस्तकालय, जोधपुर (1965)

वर्तमान में इस पुस्तकालय में करीब 5 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। जिसमें मैडीकल साईन्स एवं बाईलाजी तथा अन्य साहित्य है। अधिकतर अंग्रेजी भाषा का साहित्य है। बजट 50 हजार रुपया वार्षिक है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री पी० जी० भट्ट एम० ए० लाईब्रेरी साईन्स।

राजस्थान शोध संस्थान पुस्तकालय, चौपासनी (1955)

चौपासनी शिक्षा समिति के अन्तर्गत संचालित इस संस्थान के पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1955 में हुआ। इसमें अभी पुस्तक ग्रन्थ कुल 1800 हैं। ये सब ग्रन्थ शोध खोज के लिए संदर्भ ग्रन्थों के रूप में चयनित है। पुस्तकालय में हिन्दी और राजस्थानी की शोध पत्रिकाएं ही अधिक मंगवाई जाती हैं। शोध क्षेत्र के सभी पत्र यहां आते हैं, ऐसी नियमित आने वाले पत्रों की त्रैमासिक संख्या 27 है। साहित्य, इतिहास, लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों में शोध विद्यार्थी प्रमुख है। हस्तलिखित पुस्तकालय में 15 हजार पोथियां है, जिनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रजभाषा राजस्थानी भाषा की कृतियां है। विषय की दृष्टि से साहित्य और इतिहास, ज्योतिष, संगीत, स्थापत्य, नृत्य और चित्रकला आदि सभी विषयों की कृतियां है। राजस्थानी साहित्य और इतिहास के लिए प्रदेश में यह पुस्तकालय सर्वोपरि महत्व का है।
वर्तमान में श्री नारायणसिंह भाटी इस संस्थान के निदेशक हैं।

जोधपुर जिला पुस्तकालय, बिलाड़ा (1956)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस सार्वजनिक पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1956 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या 6501 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 50 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1600 पुस्तकें दी गईं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या लगभग 60 है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत है। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड केटलाग है। जो ए०एल०ए० पद्धति से बना है। पुस्तकालय अभी किराये के मकान में चल रहा है। ज्ञातव्य है कि प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत मार्च 1956 में यह पुस्तकालय जोधपुर में खोला गया था तदुपरान्त अगस्त 1956 में बिलाड़ा स्थानान्तरित हुआ।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री विजयराज माथुर बी० लिब० एस० सी०।

सत्संग भवन पुस्तकालय, जोधपुर (1965)

सत्संग भवन ट्रस्ट द्वारा सरदारपुरा में संचालित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ सन् 1965 में हुआ। वर्तमान में कुल 1838 पुस्तकें संग्रहीत हैं। धार्मिक पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में खुली पहुंच है। पुस्तकालय निजी भवन में है। विगत वर्ष 200 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री बदरीनारायण मोहणोत

ऐन्टीक्यूटीज म्यूजियम पुस्तकालय, जोधपुर (1909)

इस ग्रन्थागार में इस समय में 3125 पुस्तकें पुरातत्व सम्बन्धी संग्रहीत हैं जिनमें हिन्दी अंग्रेजी तथा राजस्थानी भाषा की विशेषता है जिसका लाभ भिन्न-भिन्न शोधकर्ता उठा रहे हैं। इस पुस्तकालय का वार्षिक बजट पुस्तकें खरीद के लिए 2500 रु० का है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मुकन्दलाल अग्रवाल कलचर, लाईब्रेरी साईन्स।

बरकत रीडिंग रूम एण्ड लाईब्रेरी, जोधपुर (1952)

यह पुस्तकालय और वाचनालय सन् 1952 में प्रारम्भ किया गया है। राज्य के शिक्षा विभाग से इसे सहायता प्राप्त होती है। पुस्तकालय में 511 पुस्तकें संग्रहीत है तथा दस के करीब पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की संख्या औसतन 20 है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रु० 1000 व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय का उपयोग करने वाले पाठकों मे समाचारपत्रादि पढ़ने आने वाले व्यक्ति ही मुख्य रूप से हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : काजी मोईनुद्दीन।

जिला झालावाड़

जिला पुस्तकालय, झालावाड़ (1956)

पंचवर्षीय योजनान्तर्गत राजकीय इस जिला पुस्कालय की स्थापना दिनांक 16 मार्च 1956 को शिक्षा विभाग राजस्थान के उपनिदेशक–समाज शिक्षा के अधीन हुई थी। वर्तमान में पुस्तकालय के लिए राज्य शासन की ओर से नियंत्रण अधिकारी के रूप में जिले के विद्यालय निरीक्षक नियुक्त है। पुस्तकालय की स्थानीय कठिनाईयां हल करने हेतु एक सात सदस्यीय समिति निर्मित है, जिसके स्थायी अध्यक्ष श्री जिलाधीश एवम् पदेन सचिव पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

वर्तमान में पुस्तकालय में सभी विषयों की 6300 पुस्तके संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 150 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र पत्रिकाओं की संख्या 100 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु करीब 2500 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या लगभग 100 है। पुस्तकालय संग्रह का कॅटलाग है जो कार्ड पद्धति पर बना हुआ है।

विगत वर्ष पुस्तक खरीद पर रु० 1900 तथा पत्र-पत्रिकाओं पर रु० 700 व्यय हुए। कर्मचारी वेतन आदि पर रु० 8800 व्यय हुए। पुस्तकालय के कर्मचारियों की संख्या तीन है। पुस्तकालय राजकीय भवन में चल रहा है जिसे उपयुक्त नहीं कहा जा सका। पुस्तकालय का उपयोग करने वालों में छात्र तथा कर्मचारी गण की मुख्यतया हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा 'दीपक'

श्री हरिश्चन्द्र पुस्तकालय, झालावाड़

रियासत के समय ही इसकी स्थापना तत्कालीन स्वर्गीय महाराजा श्री हरिश्चन्द्रजी द्वारा की गई थी। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात इस पुस्तकालय को राज्य शासन के अधीन सौंप दिया गया। पुस्तकालय में प्राचीन ग्रंथ, हस्तलिखित ग्रंथ आदि उपलब्ध है–जिनके संग्रह की संख्या वर्तमान में लगभग 12 हजार है। कहना न होगा कि यह पुस्तकालय स्थानीय जनता की उपयोगी सेवा कर रहा है।

जिला झुन्झुनूं

श्री विद्या विवर्धन पुस्तकालय, नवलगढ

शेखावाटी के इस पुराने तथा सार्वजनिक महत्व के पुस्तकालय का प्रारम्भ कार्तिक शुक्ला 8 संवत् 1967 को हुआ। वर्तमान में लगभग 9 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 500 से अधिक है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 60 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 590 पुस्तकें दी गई। पचास से अधिक व्यक्ति पुस्तकालय का दैनिक उपयोग करते हैं। पुस्तकें कोलन–पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है, जो रजिस्टर फार्म पर बना है। विगत वर्ष पुस्तकालय पर कुल 5 हजार रुपये व्यय किये गये। पुस्तकालय का निजी भवन है।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री किशनलाल शर्मा।

सेठ मोतीलाल महाविद्यालय पुस्तकालय, झुन्झुनूं (1952)

महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में लगभग 11 हजार पुस्तकें उपलब्ध हैं। अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा कुक शिपिंग आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट पांच हजार रुपये से अधिक का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री रामकिशोर शर्मा बी० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

सेठ जी० बी० पोद्दार कालेज पुस्तकालय, नवलगढ़ (1922)

पोद्दार महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1922 में हुआ। वर्तमान में सभी विषयों की 23,302 पुस्तकें संग्रहीत है तथा बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 3500 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 134 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 36515 पुस्तकें दी गई। वाणिज्य विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है जो रंगनाथन्-पद्धति पर बना है। विगत वर्ष पुस्तक तथा पत्र-पत्रिकाएं खरीद पर 31 हजार रु० व्यय हुए। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। पुस्तकालय में विगत वर्ष 1780 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री राजेन्द्रप्रसाद कुलश्रेष्ठ, एम० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

श्री नेहरू पुस्तकालय, नवलगढ़ (1964)

समाज सेवी संस्था द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का शुभारम्भ 15 अगस्त 1964 को हुआ। वर्तमान में 895 पुस्तकें संग्रहीत हैं तथा वाचनालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 30 है। पुस्तकें वर्गीकृत नहीं हैं। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष रु० 300 व्यय किए जाते हैं। राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल. नेहरू की स्मृति में स्थापित इस संस्था का एकमेव लक्ष्य युवकों की मानसिक शक्ति का विकास करना है।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री विमल कुमार गोयनका।

माखरिया पुस्तकालय, बगड़ (1937)

माखरिया पुस्तकालय की स्थापना तात्कालीन बगड़ निवासी बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० सेठ पीरामलजी ने देश व समाज सेवा से प्रेरित होकर सन् 1937 में की थी। इसका संचालन स्व० सेठजी द्वारा स्थापित महादेवी पीरामल दातव्य न्यास द्वारा होता है। वर्तमान में इसमें हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत विषयों की 7051 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाल-कक्ष की अलग से व्यवस्था है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 35 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 5995 पुस्तकें दी गई। उपन्यास तथा बाल-साहित्य संग्रह की विशेषता है। औसतन 200 व्यक्ति पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकें विषय वार वर्गीकृत है। विगत वर्ष इस पर सात हजार करीब व्यय हुए। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। 566 पुस्तकें पुस्तकालय में जोड़ी गई। सन् 1900 से पूर्व की छपी हुई लगभग 500 पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री रामावतार स्वामी।

श्री प्रताप पुस्तकालय, सूरजगढ़ (1936)

श्री कृष्ण परिषद द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1936 में हुआ। वर्तमान में इसमें 7600 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 45 है। विगत वर्ष 1850 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई पुस्तकालय का उपयोग 150 व्यक्ति प्रतिदिन करते हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत है। पुस्तकालय का वार्षिक व्यय लगभग 4 हजार रु० का है। पुस्तकालय का उपयुक्त निजी भवन है। संस्था के मन्त्री श्री बालकिशन हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री सांवरमल जाटू।

श्री महावीर पुस्तकालय, महनसर (1933)

वर्ष 1933 में इस सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरूआत हुई। जिसका संचालन प्रबन्ध कारिणी समिति द्वारा होता है। वर्तमान में कुल 4883 पुस्तकें संग्रहीत है तथा बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 300 है। विगत वर्ष 500 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। उपन्यास तथा धार्मिक पुस्तकें संग्रह की विशेशता है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय पर प्रतिवर्ष 2 हजार रु० से अधिक व्यय होता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री गोकुल प्रसाद शर्मा।

श्री मलसीसर नवयुवक संघ पुस्तकालय (1943)

नवयुवक संघ द्वारा संचालित इस सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरुआत वर्ष 1943 में हुई। वर्तमान में 1800 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 10 है। पुस्तकें विषय वार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 20 है। पुस्तकालय पर प्रति वर्ष 1500 रु० व्यय किए जाते हैं। पुस्तकालय किराये के मकान में चल रहा है। संस्था के मन्त्री श्री सत्यनारायण केडिया हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री सीताराम कनोई।

श्री हनुमान मण्डल पुस्तकालय, बड़ागांव (1943)

समाज सेवी संस्था द्वारा सन् 1943 में प्रारम्भ इस पुस्तकालय में वर्तमान में 4029 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 310 है। वाचनालय में करीब 25 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। इस पर करीव तीन हजार रु० वार्षिक व्यय होते हैं।
पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री सवाई सिंह।

इन्दिरा गांधी बाल निकेतन पुस्तकालय, अरडावता (1966)

झुन्झुनूं जिले की सुप्रसिद्ध बालिका शिक्षा संस्था के पुस्तकालय में वर्तमान में साढ़े तीन हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत है। अर्थशास्त्र, इतिहास तथा विज्ञान विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 2 हजार रु० से अधिक है।
पुस्तकालयाध्यक्ष–सुदर्शन तलवार, बी० ए०, डिप० लिब० एस० सी०।

ग्राम सुधार पुस्तकालय, धमौरा (1958)

स्वयं ग्रामजनों द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की शुरूआत वर्ष 1958 में हुई। वर्तमान में इसमें 330 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाले समाचार पत्रों की संख्या 7 है। गांधी-सर्वोदय साहित्य संग्रह की विशेषता है। जन सहयोग से जुटाकर प्रतिवर्ष रु० 200 से अधिक व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय की सभी गतिविधियां निशुल्क सेवाभावी युवकों द्वारा ही संचालित है। स्थानीय, विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री अब्दुल गफूर कादरी वर्तमान में इसकी व्यवस्था देखते हैं।

लाठ उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय, मंडरेला (1927)

सन् 1927 में संस्थापित इस विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 4750 पुस्तकें संग्रहीत हैं। धार्मिक तथा समाजज्ञान की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 36 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु लगभग 1 हजार पुस्तकें दी गई। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर लगभग 800 रु० करीब व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय का निजी भवन है।
पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री हरिकान्त गौड़।

राजकीय तहसील पुस्तकालय, खेतड़ी (1896)

तहसील स्तर के इस पुस्तकालय में वर्तमान में 8000 लगभग पुस्तकें संग्रहीत है। सभी भाषाओं की महान् व पूर्ण पुस्तकें उपलब्ध है। वाचनालय में आने वाली पत्र पत्रिकाओं की संख्या 30 से अधिक हैं। बाल कक्ष की अलग से व्यवस्था है।

साबू कामर्स कालेज पुस्तकालय, पिलानी (1970)

वर्तमाम में इस पुस्तकालय में लगभग 9000 हजार पुस्तकें संग्रहीत है। अर्थशास्त्र अकाउन्टेन्सी आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 8 हजार का हैं।

श्री सार्वजनिक पुस्तकालय, मण्डरेला (1957)

वसंत पंचमी सन् 1947 को इस सार्वजनिक पुस्तकालय का शुभारम्भ हुआ। वर्तमान में कुल 3020 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं को संख्या 130 है। वाचनालय में आने वाले समाचार पत्रों की संख्या 20 है। विगत वर्ष 1865 पुस्तकें घर पर पढ़ने दी गई। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर रु० 2500)00 व्यय किये जाने का क्रम रहता है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है।

वैसे काफी पूर्व ही श्री रामप्रतापजी व्यास ने सार्वजनिक औषधालय भवन के साथ इस ज्ञान मन्दिर का बीजारोपण कर दिया था। वर्तमान भवन श्री डी. एम. रूंगटा ट्रस्ट द्वारा निर्माण करवाया गया है। वर्तमान में श्री सुरेश कुमार शर्मा अध्यक्ष तथा सत्यनारायण पोद्दीवाल मंत्री है।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री दामोदर प्रसाद शर्मा

बिड़ला हायर सैकण्डरी स्कूल पुस्तकालय, पिलानी

बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित इस विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में सभी विषयों की 10500 पुस्तकें हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 70 है। वाचनालय में करीब 40 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। विगत वर्ष 7170 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकें डेवी दसमलव पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है जो कार्ड सी० सी० सी० पद्धति पर बना है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर लगभग रु० 2000 व्यय किए जाते हैं। पुस्तकालय का निजी भवन है।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री शादीलाल शर्मा।

चिड़ावा महाविद्यालय पुस्तकालय (1913)

इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 12 हजार लगभग पुस्तकें हैं। राजस्थान में भी पुस्तकें उपलब्ध है। अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु० 4000 का हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री रामनलाल शर्मा, बी० ए०, बी लिब० एस० सी०।

> बच्चों के पुस्तकालय का आयोजन केवल बालोपयोगी पुस्तकों का संकलन तथा लेनदेन नहीं है। बल्कि यह एक साधना है जो भावी भारत के कर्णधारों के लिये निष्ठापूर्वक की जानी चाहिये।
>
> —हरिकृष्ण देवसरे

जिला टोंक

सहिदीया जिला पुस्तकालय, टोंक (1896)

सदीहिया जिला पुस्तकालय की स्थापना सन् 1896 में नवाब मोहम्मद् अली खां द्वारा की गई थी। सन् 1946 में इस पुस्तकालय को जनता के उपयोग हेतु खोल दिया गया। तथा इसका नाम करण सहिदीया पब्लिक लाईब्रेरी रखा गया। सन् 1956 में भारत सरकार की पुस्तकालय विकास योजना के अन्तर्गत राजस्थान में जिला पुस्तकालय स्थापित किए गए। तब से इसका नाम सहिदीया जिला पुस्तकालय टोंक है। इस पुस्तकालय में उर्दू, अरबी तथा फारसी भाषा में कई विषयों के दुर्लभ ग्रन्थ हैं। इसलाम तथा इतिहास विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है।

राज्य के निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में अनेक भाषाओं की कुल 13,246 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 45 लगभग है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 23,473 पुस्तकें दी गई। लगभग 125 व्यक्ति प्रतिदिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकें डेवी दशमलव पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलाग है, जो सी० सी० सी० पद्धति पर बना है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 24 हजार रु० का है। पुस्तकालय किराये के भवन में चल रहा है। फिलहाल भवन उपयुक्त है लेकिन फर्नीचर का अभाव बना हुआ है। विगत वर्ष 253 पुस्तकें जोड़ी गईं हैं। पुस्तकालय में सन् 1900 से पूर्व छपी हुई लगभग 5000 हजार पुस्तकें उपलब्ध हैं।

श्री मोहनराव राव, एम० ए० बी० लिब०.एम० सी० विशारद वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष है। श्री राव सन् 1963 से 72 तक केन्द्रीय पुस्तकालय, राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष-प्रभारी चलपुस्तकालय महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय जयपुर के मद पर रहे। श्री राव राजस्थान पुस्तकालय संघ की स्थापना से कार्यकारिणी के सदस्य, तथा तीन वर्ष तक संघ के महामन्त्री पद पर तथा संघ द्वारा प्रकाशित स्मारिका के प्रबन्ध सम्पादक रहे है।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, टोंक (1952)

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत चल रहे महा विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में लगभग 14 हजार पुस्तकें संग्रहीत है। सभी भाषाओं की पुस्तकें हैं तथा अर्थशास्त्र, वाणिज्य दर्शन तथा अर्थशास्त्र आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट छः हजार रु० से अधिक का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री कमरूज्जमा अनसारी, बी० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय केन्द्रीय पुस्तकालय, वनस्थली विद्यापीठ (1935)

भारत प्रसिद्ध महिला शिक्षण संस्था–वनस्थली के अंतर्गत संचालित महाविद्यालय के इस स्त-पु कालय का आरम्भ वर्ष 1935 में संस्था के जन्म के साथ ही हुआ। संस्था की प्रगति के साथ-साथ इस ज्ञान मन्दिर भी वर्द्धमान हुआ। वर्तमान में इस पुस्तकालय में 75 हजार के लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। भारतीय भाषाओं मुख्यतया मराठी, गुजराती, तेलगु, तामिल, मलयालम, बंगाली के अलावा विदेशी भाषाओं में फ्रेंच, जर्मनी, रूसी भाषाओं की भी पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत है। इतिहास, रसायनशास्त्र, ज्योतिष, संगीत, दर्शन गृह विज्ञान, राजनीति शास्त्र, पुस्तकालय विज्ञान आध्यात्मिक साहित्य आदि की पुस्तकें संग्रह की विशेषता हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग अस्सी हजार रु० का है।

पुस्तकालयव्यक्षः—श्री टी० एन० रेना, बी० ए०, डिप्लोमा लिब० एस० सी०।

प्रशिक्षण महाविद्यालय पुस्तकालय, वनस्थली विद्यापीठ (1962)

वनस्थली विद्यापीठ के अन्गंत प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में करीब 7 हजार पुस्तकें संग्रहीत है। कोर्स पुस्तकों के साथ ही विभिन्न विषयों की साहित्य भी उपलब्ध है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 5 हजार रु० का है।

पुस्तकालयाध्यक्षः––श्री गोपाल बिहारी

जिला डूंगरपुर

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, डूंगरपुर (1961)

राजकीय महोविद्यालय के अंतर्गत संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 13 हजार से अधिक ग्रन्थ संग्रहीत है। इंजीनियरिंग, कृषि, इतिहास, कला, सामान्य विज्ञान आदि विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 6000 रु० का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष–श्री गोरीशंकर चोविसा, एम० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

राजकीय जिला पुस्तकालय, डूंगरपुर

राज्य सरकार की प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत समाज शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत इस पुस्तकालय की शुरूआत हुई। वर्तमान में इसमें 8 हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत है। वाचनालय में लगभग 75 पत्र-पत्रिकायें प्रति वर्ष आती है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 1200 रु० का हैं। कहना न होगा कि यह ज्ञान मन्दिर स्थानीय जनता की उपयोगि सेवायें कर रहा है।

जिला नागौर

जिला पुस्तकालय, नागौर (1956)

इस पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1955 में नागौर नगर की जनता द्वारा हुई थी। वर्तमान भवन का निर्माण भी जन सहयोग द्वारा किया गया। जनता ने यह भवन राज्य सरकार को मार्च 1956 में सौंप दिया। तब से ही यह पुस्तकालय राज्य सरकार द्वारा संचालित है। वर्तमान में पुस्तकालय में 8455 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 80 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 10,800 पुस्तकें दी गईं। प्रतिदिन लगभग 200 व्यक्ति पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 11 हजार रु० का है। गत वर्ष पुस्तकालय में जोड़ी गई पुस्तकों की संख्या 275 है। पुस्तकालय का वर्तमान भवन सर्वथा उपयुक्त है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री दीन मोहम्मद खां।

श्री बांगड़ महाविद्यालय, डीडवाना (1958)

श्री बांगड़ महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय की शुरूआत सन् 1958 में हुई। वर्तमान में 23,262 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में बाउण्ड पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 11,733 पुस्तकें दी गईं। शैक्षणिक पुस्तकालय होने के कारण पाठ्य पुस्तकों का बाहुल्य है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 250 है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलाग है, जो सी० सी० सी० पद्धति पर बना है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 53 हजार रु० का है। पुस्तकालय का निजी भवन है जिसका निर्माण विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से हुआ। पुस्तकालय का उपयोग करने वालों में छात्र तथा प्राध्यापक ही मुख्य हैं। विगत वर्ष पुस्तकालय में जोड़ी गई पुस्तकों की संख्या 1580 है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री गोवर्द्धन शर्मा, एम० काम, बी० लिब० एस० सी०

श्री छोटी खाटू हिन्दी पुस्तकालय (1958)

प्रदेश में जन सहयोग से चलने वाले पुस्तकालयों में इस ज्ञान मन्दिर का विशिष्ट महत्व है। सेवा भावी और उत्साही युवकों ने यहां उपयुक्त भवन का निर्माण करवाया है तथा पुस्तकालय के अन्तर्गत समय-समय पर साहित्य समारोहों आदि का आयोजन किया है। इस सार्वजनिक पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1958 में हुआ।

वर्तमान में पुस्तकालय में लगभग 2 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 35 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 4200 पुस्तकें दी गईं। प्रतिदिन पुस्तकालय में 50 व्यक्ति आते हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट पांच हजार रुपये का है। पुस्तकालय का निजी भवन है जो उपयुक्त है। पिछले साल 250 पुस्तकें जोड़ी गईं। पुस्तकचयन समिति की सिफारिश पर ही पुस्तकें खरीद किए जाने का क्रम रहता है। पुस्तकालय द्वारा समय-समय पर स्मारिका का प्रकाशन होता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सोहनलाल शर्मा।

जिला पाली

सार्वजनिक जिला पुस्तकालय, पाली (1957)

यह पुस्तकालय शिक्षा विभाग के आदेशानुसार मई 1957 में जैन मार्केट में एक किराये के मकान में स्थापित किया गया। 22 जून 1971 में इसका स्थानान्तरण नगर पालिका भवन में किया गया। वर्तमान में 7115 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 90 लगभग है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 5127 पुस्तकें दी गई। दो सौ व्यक्ति प्रतिदिन इस पुस्तकालय का उपयोग करने आते हैं। पुस्तकों का डेवी पद्धति पर वर्गीकरण किया जा रहा है। पुस्तक संग्रह का कार्ड केटलांग—इ० एल० ए० के आधार पर बनाया जा रहा है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 15 हजार रु० का है। पुस्तकालय किराये के भवन में चल रहा है। विगत वर्ष 288 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री नजीर मोहम्मद, बी० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

बांगड़ महाविद्यालय, पुस्तकालय, पाली (1961)

इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 8 हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। इतिहास, अर्थशास्त्र, दर्शन तथा बुक कीपिंग आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट दस हजार रुपये से अधिक का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : आर० के० खूबचन्दानी, एम० ए०, बी० लिब० एस० सी०

झाला हितकारी पुस्तकालय, देवली (1947)

झाला साहित्य कुटीर द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की शुरुआत 15 अगस्त 1947 के शुभ दिन हुई। पुस्तकालय के संस्थापक तथा संचालक डा० पुष्पेन्द्र झाला पथिक की अनन्य सेवा और साहित्य प्रेम का यह प्रतीक है। वर्तमान में इसमें 2500 पुस्तकें संग्रहीत है। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं तथा हस्तलिखित आदि ग्रन्थों की संख्या 700 हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 15 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1225 पुस्तकें दी गई। प्रतिदिन लगभग 30 व्यक्ति पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। सन् 1900 से पूर्व छपी हुई पुस्तकों की संख्या 50 है। झाला साहित्य कुटीर के अन्तर्गत अब तक हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा की 72 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री श्यामसुन्दर झाला एम० ए०, बी० एड०।

एस० पी० यू० महाविद्यालय, फालना (1952)

स्थानीय जैन समाज द्वारा यहां संचालित महाविद्यालय में वर्तमान में 10 हजार लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। धार्मिक, दर्शन, वाणिज्य इतिहास आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट सात हजार रुपये से अधिक का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री श्रीनिवास माहेश्वरी बी० ए०, बी० लिब० एस० सी०

जिला बाड़मेर

जिला पुस्तकालय, बाड़मेर (1956)

राज्य सरकार द्वारा इस पुस्तकालय का आरम्भ यहां वर्ष 1956 में किया गया। पुस्तकालय के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए राज्य सरकार द्वारा पुस्तकालय प्रबन्ध समिति का गठन किया गया है। जिलाधीश इस समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं। पुस्तकालय रणछोड़ धर्मशाला के किराये के कमरों में स्थित है। पुस्तकालय की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखते हुए वर्तमान भवन उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। वर्तमान में पुस्तकालय में लगभग 7 हजार पुस्तकें हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग एक सौ है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले व्यक्तियों की औसत संख्या 150 हैं।

पुस्तकालय का सन्दर्भ विभाग परिपूर्ण नहीं है। फिर भी प्राप्त साधनों से पाठकों की जिज्ञासा शान्त करने का प्रयत्न किया जाता है। पुस्तकालय में प्राप्त सब पुस्तकों का वर्गीकरण कर लिया है। वर्गीकरण डेसीमीमल क्लासीफिकेशन पद्धति से और सूचीकरण डिक्सनेरी कैटलाग के अनुसार किया गया है। पाठक कार्ड कैटलाग का काफी मात्रा में और सही ढंग से उपयोग करते हैं।

पुस्तकालय पूर्णतः राजकीय है और इसका सारा खर्च राज्य सरकार ही वहन करती है। पुस्तकालय के वेतन आदि को छोड़कर विविध खर्चों के लिए वार्षिक रु० चार हजार लगभग का प्रावधान है।

भवन की समस्या का समाधान होते ही पुस्तकालय में बाल कक्ष जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है, की भी व्यवस्था की जायेगी। कहना न होगा कि यह पुस्तकालय बाड़मेर की जनता के लिए अधिकाधिक उपयोगी सिद्ध होता जा रहा है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सुमेरमल शर्मा।

चीन की योजना

यदि एक वर्ष की योजना है तो खेती करो।

दस वर्ष की योजना है तो बाग लगावो और सौ वर्ष की योजना के लिये मनुष्यो का निर्माण करो।

समाज व्यक्तियों का समूह है और उसकी सौ साला योजना को पूरा करने के लिये अच्छे पुस्तकालय बनाओ।

जिला बांसवाड़ा

राजकीय जिला पुस्तकालय, बांसवाड़ा (1956)

समाज शिक्षा राजस्थान द्वारा संचालित इस पुस्तकालय की शुरुआत सन् 1956 में हुई। वर्तमान में इसमें कुल 5870 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 40 है। पुस्तकालय में प्रतिदिन 150 व्यक्ति अध्ययन हेतु आते हैं। पुस्तकें दशमलव पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है जो रजिस्टर फार्म पद्धति पर बना है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 12 हजार रुपये का है। पुस्तकालय नगर पालिका के किराये के भवन में चल रहा है जिसे उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। गत वर्ष 235 पुस्तकें जोड़ी गई। फर्नीचर पुस्तकालय के अनुरूप है। पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने हेतु आने वाले पाठकों की संख्या विशेष रहती है। वर्तमान में पुस्तकालय स्टाफ में चार व्यक्ति हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष ही पुस्तकालय विज्ञान में प्रमाण-पत्र प्राप्त हैं।

पुस्तकालय में पाठकों के लिए खुली पहुंच की सुविधा है। जिले की उच्च शैक्षणिक संस्थाओं के अध्यापकों एवं प्राचार्यों से सम्पर्क स्थापित कर पुस्तकें खरीदने का क्रम रहता है। पुस्तकों की सूची छपी हुई नहीं है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री योगेशचन्द्र पंड्या।

राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा (1950)

राजकीय महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में 18,123 पुस्तकें संग्रहीत हैं। अर्थशास्त्र, दर्शन, जीवन विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु० 6 हजार का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री इन्द्रलाल चौबीसा, एल० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

> शिक्षा की उद्भावना के पीछे काम कर रही वृत्ति यही है कि जो पहले का ज्ञानात्मक अर्जन है, वह संरक्षित रहे, अक्षुण्ण बना रहे एवं नवीन प्रगति उसमें संलग्न होती रहे। यह कार्य नगर के पुस्तकालय करते हैं।
>
> —श्री गोपाल मिश्र

जिला बीकानेर

सूचना केन्द्र, बीकानेर (1963)

राज्य सरकार द्वारा रावतसर हाउस में संचालित इस सूचना केन्द्र की शुरूग्रात जनवरी सन् 1963 में हुई। वर्तमान में 4050 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या 80 है। पुस्तकालय से प्रतिदिन ग्रौसतन 300 व्यक्ति लाभ उठाते हैं। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड है जो सी० सी० सी० पद्धति पर वना है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। पुस्तकालय किराये के मकान में चलता है। पुस्तकालय का उपयोग करने वाले पाठकों में विद्यार्थियों की प्रमुखता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री योगेन्द्र कुमार बी० ए०, बी० लिब एस० सी०।

राजकीय शिक्षक प्रशिक्षरण महाविद्यालय, पुस्तकालय–बीकानेर

राजस्थान में एक मात्र राजकीय स्नातकों के लिए (एम० एड०) शिक्षक प्रशिक्षरण महाविद्यालय का यह पुस्तकालय है। सन् 1946 में संस्था की स्थापना के साथ ही पुस्तकालय का भी प्रारंभ हुग्रा। वर्तमान में हिन्दी तथा ग्रंग्रेजी की कुल 20,488 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या 92 हैं। शैक्षिक विषयों पर उत्तम पुस्तकें इस संग्रह की विशेषता है। प्रतिदिन पुस्तकालय का 150 व्यक्ति उपयोग करते हैं। पुस्तकें डेवी० दशमलव पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलांग है जो सी० सी० सी० पद्धति पर वना है। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। प्रति वर्ष पुस्तकालय पर लगभग 25 हजार रु० व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय भवन उपयुक्त है। शिक्षक तथा शैक्षरिणक ग्रधिकारी ही मुख्य रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। विगत वर्ष पुस्तकालय में जोड़ी गई पुस्तकों की संख्या 2456 है। विपय विशेषज्ञों की राय से ही प्रायः पुस्तकें खरीदने का क्रम रहता है। पुस्तकालय का प्रकाशन है–शिक्षरण, प्रशिक्षरण तथा शिक्षानुसन्धान–कुछ तथ्य कुछ विचार।

श्री दीप सिंह एम० ए० डिप्लोमा-लाइब्रेरी साइन्स वर्तमान में पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। ये भारतीय सेना को सेवाग्रों से सम्बन्धित रहे तदुपरान्त उच्च शिक्षा प्राप्त किया श्री दीपसिंह की सन् 60 में सूचना केन्द्र में प्रथम पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में नियुक्त हुये। ग्रापकी ग्रध्ययन तथा लेखन में ग्रभिरूचि है।

राज० निदेशालय पुस्तकालय, बीकानेर (1959)

प्राथमिक एवं माध्यमिक निदेशालय के ग्रन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय की शुरूग्रात सन् 1959 में हुई। वर्तमान में हिन्दी तथा ग्रंग्रेजी की लगभग 8 हजार पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जानेवाली पत्र-पत्रिकाग्रों की संख्या 70 है। शिक्षा तथा साहित्य विषय संग्रह की विशेषता है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है। जो कार्ड पद्धति से वना है। प्रति वर्ष पुस्तकालय पर रु० 15,600 व्यय होते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री भगवतीलाल शर्मा, वी० ए०, डिप्लोमा लाईब्रेरी साइन्स

राजकीय क्षेत्रीय पुस्तकालय, बीकानेर (1937)

राजस्थान में पांच राजकीय क्षेत्रीय पुस्तकालय हैं। इन पांचों विशाल सरस्वती मन्दिरों में से बीकानेर का यह पुस्तकालय भी अपनी महानता के लिए सुप्रसिद्ध है। इसकी स्थापना पुराने बीकानेर राज्य के अन्तर्गत मार्च 1937 में हुई थी। तब इसका नाम किंग एम्परर जोर्ज पंचम सिल्वर जुबली लाइब्रेरी रखा गया था—और अब इसका नाम राजकीय क्षेत्रीय सार्वजनिक पुस्तकालय है।

पुस्तकालय के अन्तर्गत बाल विभाग, चल पुस्तकालय, संदर्भ विभाग एवं सुरक्षित कला एवं दुर्लभ पुस्तकें कक्ष एवं शाखा पुस्तकालय-जो डागा बिल्डिंग में स्थित है। जनता की सेवामें कार्यरत है। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या 47 हजार लगभग है। विगत वर्ष 23,229 पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। विगत वर्ष 1077 पुस्तकें जोड़ी गई। वाचनालय में 150 लगभग पत्र पत्रिकाए आती हैं।

संदर्भ कक्ष के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के अमूल्य इन्साइक्लोपीडियाज एवं प्राचीन इतिहास कला एवं अन्य विषयों की अलभ्य पुस्तकें संग्रहीत की गई हैं। कला विभाग में शिक्षाप्रद खिलौने, खेल तथा अन्य रोचक कहानियों की पुस्तकें आदि हैं।

पुस्तकालय का भवन बीकानेर राज्य के समय ही निर्मित किया गया था। यह वर्धन शील संस्था समयानुसार विकास की ओर अग्रसर है तथा भवन की न्यूनता अनुभव होने लगी है। शाखा पुस्तकालय जो गांधी मार्ग स्थिति डागा बिल्डिग में हैं—में 11 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। वर्तमान में श्री लक्ष्मीनारायण मारू एम० ए०, बी० लिब० एस० सी० पुस्तकालयाध्यक्ष है। तथा श्री हिम्मतलाल सनाढ्य बी० ए०, बी० लिब० एस० सी० सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर (1948)

समाज सेवी संस्था भारतीय विद्या मन्दिर द्वारा संचालित इस सार्वजनिक ज्ञान मन्दिर का आरम्भ सन् 1948 में हुआ। इसका शुरुआत छात्र वर्ग के लिए हुई थी। अब इससे शोध अध्ययनार्थी एवं अन्य लोग भी लाभ उठाते है। वर्तमान में हिन्दी अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के 10 हजार ग्रंथ संग्रहीत है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र पत्रिकाओं की संख्या 65 है। हिन्दी विशेषकर शोध प्रबन्ध आलोचना, इतिहास, धर्म दर्शन आदि विषय की पुस्तके संग्रह की विशेषता है। पुस्तके विषयवार वर्गीकृत। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है, जो रजिस्टर पद्धति पर बना है। पुस्तकालय पर कुल व्यय 6500 रू० हुआ। पुस्तकालय किराये के मकान में चल रहा है गत वर्ष 300 पुस्तके पुस्तकालय में जोड़ी गई। छात्र व शोध कर्ताओं के सुझावों पर पुस्तके क्रय करने का क्रम रहता है। संस्था की अन्य प्रमुख प्रवृतियां है; रात्री विद्यालय, राजस्थान बाल भारती' शोध प्रतिष्ठान तथा लोक साहित्य का प्रकाशन, अब तक 6 महा विषय प्रकाशन हुए है। संस्था के अन्तर्गत एक त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका वैचारीकी का प्रकाशन होरहा है।

पुस्तकालयाध्यक्ष—सुशीला गुप्ता, एम० एल, प्रभाकर।

श्री नृसिंह पुस्तकालय बीकानेर (1952)

लखोढिया चोक स्थित इस सार्वजनिक पुस्तकालय का आरंभ सन् 1952 में हुआ। शहर के मध्य भाग में स्थित होने के कारण यह ज्ञान मन्दिर विशेष जनोपयोगी बन गया है। साहित्यिक गोष्ठियां तथा बालकों के लिए खेल कूद आदि का भी क्रय रहता है। वर्तमान में 1940 पुस्तके संग्रहित है। पुस्तकालय में उपलब्ध पुराने ग्रंथों की सख्या 160 है। पुस्तकालय में 20 पत्र-पत्रिकाएं आती है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 2750 पुस्तके दी गई, लगभग 50 व्यक्ति प्रति दिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तके विषयवार वर्गीकृत है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु० 4 हजार रु० का है। वर्तमान में पुस्तकालय किराये के मकान, में मिलता है। विगत वर्ष 140 पुस्तकें जोड़ी गई। सन् 1900 से पूर्व छपी हुई लगभग 200 पुस्तकें उपलब्ध है।

पुस्तकालयाध्यक्ष:—श्री जीवराज श्रीमाली।

सार्वजनिक पुस्तकालय, नोखा (1952)

सार्वजनिक पुस्तकालय नोखा की स्थापना उत्साही नागरिकों के सद् प्रयत्नों से वर्ष 1948 में हुई प्रारम्भ में किरायें के भवन में कार्य चला। सन् 1960 में श्री सोहनलाल जी मरोटी व रामलाल जी खचाची प्रयत्नों से 3200 गज भूमि क्रय करके पुस्तकालय भवन बनाना प्रारंभ किया। अब तक इस भवन पर 75,000 व्यय हो चुके है। भवन निर्माण में वार्षिक सहयोग नगरपालिका तथा पंचायत समिति नोखा एवं नोखा मण्डी कि नागरिकों से प्राप्त हुआ। पुस्तकालय शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में श्री किस्तूरचन्द सचेती तथा श्री भीखम चन्द जैन क्रमश: अध्यक्ष तथा मंत्री है।

पुस्कालय में वर्तमान में कुल 3600 पुस्तके संग्रहीत है तथा बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 200 है। वाचनालय में 56 पत्र पत्रिकाएं आती है। विगत वर्ष घर पर पढने हेतु 5021 पुस्तके दी गई। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रू० 6700 का है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है जो उपयुक्त है। सन् 1900 से पूर्व छपी हुई लगभग 250 पुस्तकें है।
पुस्नकालयाध्यक्ष:— श्री भीखमचन्द जैन

नवयुवक पुस्तकालय, नापासर (1945)

ग्राम के उत्साही नवयुवकों द्वारा संचलित इस सार्वजनिक पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्प 1945 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी की 4100 पुस्तकें संग्रहीत है। पुस्तालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र पत्रिकाओं की संख्या 32 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 3700 पुस्तकें दी गई। पुस्तके विपयवार वर्गीकृत है। पुस्तकालय का वार्पिक बजट रू० 6000 का है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। नवनिर्मित इस भवन पर 80 हजार रू० लगभग व्यय हुए है।

श्री गिरधारी दान व्यवस्था सचिव है।

श्री जुबली नागरी भण्डार, पुस्तकालय, बीकानेर (1916)

समाज सेवी संस्था द्वारा स्टेशन रोड पर संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में कुल 7509 ग्रंथ संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 3700 पुस्तकें दी गई। साहित्य दर्शन तथा धर्म की पुस्तकें इस संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 250 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग रु० 7500 का है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। विगत वर्ष 300 नई पुस्तकें जोडी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री विद्या सागर आचार्य, एम० ए०, बी० एड०।

आवासीय अन्ध विद्यालय, पुस्तकालय, बीकानेर (1962)

बीकानेर स्थित इस अन्ध विद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में करीब 2 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकें सभी भाषाओं में हैं तथा इतिहास, भूगोल आदि विषय संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु० 700)00 का है।

ओसवाल पुस्तकालय, लाडनूं (1919)

समाजसेवी संस्था ओसवाल-सभा द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1919 में हुआ। वर्तमान में 9450 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाउण्ड पत्र पत्रिकाओं की संख्या 87 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु इक्कीस हजार पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में अधिक बाहुल्य उपन्यासों का है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आनेवाले पाठकों की औसत संख्या 150 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर 11 हजार रुपये से अधिक व्यय किये जाते है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। इस भवन के निर्माण में ओसवाल–सभा के 40 हजार रुपये लगे हैं। गत वर्ष 500 पुस्तकें जोड़ी गई। नगर के केन्द्र में उपस्थित यह ज्ञान मन्दिर लोकप्रिय संस्था है।

पुस्तकालयाध्यक्ष :—श्री मोहनलाल चोरड़िया

हम यह भूल गये हैं कि जिन-जिन देशों में क्रांतियां हुई हैं, उनमें साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं। पर हम यह याद रखें कि साहित्य की अवहेलना करके हम अपने देश को उठा नहीं सकेंगे, नीचे ही ले जायेंगे।....समय की मांग है कि अब हम इस ओर ध्यान दें और उत्तम साहित्य के प्रसार में सहायक हों।

--महर्षि अरविंद

जिला बूंदी

जिला पुस्तकालय, बून्दी (1956)

राजस्थान सरकार द्वारा स्कीम संख्या चार के अन्तर्गत मार्च 1956 में इस पुस्तकालय की स्थापना हुई। तथा सार्वजनिक रूप से इस पुस्तकालय को 3 अक्टूबर 1956 से उपयोग हेतु आरम्भ किया गया। वर्तमान में यह पुस्तकालय शहर के मध्य तोपखाना भवन में तीसरी मंजिल पर स्थित है। पुस्तकालय की सुव्यवस्था हेतु इस पुस्तकालय की एक समिति का गठन राज्य सरकार द्वारा किया गया है। जिलाधीश इस समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं।

वर्तमान में पुस्तकालय में सभी विषयों की 7911 पुस्तकें संग्रहीत है तथा बाउण्ड पत्र पत्रिकाओं की संख्या 130 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष 46 पत्र पत्रिकाएं मंगावाई जाती हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 11,651 पुस्तकें दी गई। औसतन 80 व्यक्ति प्रति दिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय की पुस्तकें कोलन पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है जो कार्ड पद्धति पर बना हैं। पुस्तकालय में खुली पहुँच है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग तेरह हजार रुपये है। पुस्तकालय सरकारी भवन में चल रहा है। लेकिन भवन उपयुक्त नहीं है। विगत वर्ष 440 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालय के अन्तर्गत बाल कक्ष भी चलाया जा रहा है। बालकों के लिए खेलादि की व्यवस्था है।

पुस्तकालयाध्यक्ष :—श्री भंवरलाल शर्मा

श्री केशव पुस्तकालय, केशवरायपाटन (1938)

लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व सार्वजनिक प्रयत्नों से इस पुस्तकालय की स्थापना हुई। वर्तमान में लगभग 2500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में बीस से अधिक पत्र पत्रिकाएं आती हैं। विगत वर्ष चार हजार पुस्तकें घर पर पढ़ने हेतु दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले व्यक्तियों की संख्या 35 हैं। पुस्तकें विषयानुसार वर्गीकृत है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 1200 रु० का है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। छात्र अध्यापक तथा सरकारी कर्मचारी मुख्य रूप से इसका उपयोग करते है। सन् 1900 से पूर्व छपी हुई लगभग एक सौ पुस्तकें हैं। देश की स्वतन्त्रता के लिए जनता में चेतना जागृत करने में इस ज्ञान मन्दिर की विशिष्ट भूमिका रही है। श्री कन्हैयालाल जी भारद्वाज का मौजूदा भवन निर्माण में विशिष्ट योगदान रहा है।

पुस्तकालयाध्यक्ष :—पं० रामचन्द्र दाधीच

जिला भरतपुर

हिन्दी साहित्य समिति, पुस्तकालय, भरतपुर (1915)

हिन्दी साहित्य समिति पुस्तकालय प्रदेश का एक प्रमुख ज्ञान मन्दिर है, जो विगत साठ वर्ष से सेवा रत है। समाज सेवी संस्था–हिन्दी साहित्य समिति द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का आरंभ सन् 1912 में हुआ। वर्तमान में इसमें 15654 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं तथा हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या क्रमशः 1000 तथा 649 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु दी गई पुस्तकों की संख्या 16581 है। पुस्तकालय में अनेक अलभ्य हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 17 हजार रु० का है। पुस्तकालय का निजी भवन है जो उपयुक्त है। विगत वर्ष पुस्तकालय में जोड़ी गई पुस्तकों की संख्या 535 है। पाठकों के सुझावानुसार पुस्तकें क्रय करने का क्रम रहता है। हिन्दी साहित्य समिति द्वारा कवि कुसुमांजली, स्वर्ण जंयती ग्रन्थ तथा समिति-वाणी आदि पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सुरेशचन्द शर्मा।

स्टेट म्यूजियम पुस्तकालय, भरतपुर (1944)

भरतपुर स्थित इस पुस्तकालय का आरंभ वर्ष 1944 में हुआ। पुस्तकालय शोधार्थियों के लिए हर समय खुला रहता है। पुस्तकालय में वर्तमान में लगभग एक हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। कला, शिल्प, चित्रकला आदि विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय द्वारा प्रतिवर्ष नवीन पुस्तकें खरीदने के लिए 200)00 रु० का प्रावधान है।

बजरंग शिक्षा प्रसारक महाविद्यालय, भरतपुर (1960)

पुस्तकालय में वर्तमान में लगभग तीन हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। स्टेटिक्स, दर्शन, राजनीति-शास्त्र, मैनेजमेन्ट स्वास्थ्य शिक्षण साहित्य आदि विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है।
पुस्तकालयाध्यक्ष:– श्री आर०सी० शर्मा बी०ए०, डिप्लोमा लिब० साईन्स

दि० जैन पंचायती मन्दिर ग्रन्थ भण्डार, भरतपुर

इस भण्डार में 800 हस्तलिखित ग्रन्थ एवं गुटके हैं। अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के हैं। पुराण, काव्य, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, मन्त्र शास्त्र आदि सभी विषयों के ग्रन्थ है।

दि० जैन मन्दिर कानूराम, ग्रन्थ भण्डार भरतपुर

इसमें 65 हस्तलिखित ग्रन्थ तथा गुटकों का संग्रह है जो सभी विषयों के हैं।

श्री हिन्दी पुस्तकालय, भुसावर (1938)

इस सार्वजनिक पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1938 में हुआ। वर्तमान में 4306 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाली पत्र पत्रिकाओं की संख्या 26 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 800 से अधिक पुस्तकें दी गई। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु० सात हजार का है। पुस्तकालय भवन उपयुक्त है। विगत वर्ष 186 पुस्तकें पुस्तकालय में जोड़ी गईं।

पुस्तकालयध्यक्ष ; श्री मोतीराम बोहरा

राजकीय तहसील पुस्तकालय, डीग (1956)

राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1956 में हुआ। वर्तमान में 4943 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिाओं की संख्या 37 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 6776 पुस्तकें दी गई। गांधी साहित्य संग्रह की विशेषता है पुस्तकाय में प्रति दिन लगभग चालीस व्यक्ति आते हैं। पुस्तकें विषय वार वर्गीकृत है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 8 हजार रु० का है। पुस्तकालय किराये के मकान में चल रहा है। गत वर्ष 306 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री राज कमल

हिन्ही साहित्य समिति, पुस्तकालय डीग (1929)

इस सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरुआत वर्ष 1929 में हुई। समाज सेवी संख्या साहित्य समिति इसका संचालन कर रही है। वर्तमान में 8159 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र पत्रिकाओं की संख्या 494 है। वाचनालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 30 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु लगभग 5 हजार पुस्तकें दी गई। पुस्तके विषय वार संग्रहीत हैं। पुस्तकालय का निजी भवन है। विगत वर्ष में 887 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री गोविन्द शर्मा

दि० जैन मन्दिर ग्रंथ भण्डार, पुरानी डीग

यह मन्दिर 14 वीं शताब्दी के आसपास का है। यहां 101 हस्त लिखित ग्रन्थ एवं गुटकों का संग्रह है। अधिकांश ग्रन्थ हिन्दी भाषा के हैं। किन्तु सभी विषयों पर संग्रह हैं। नाथ महाकवि का जिन गुणविलास एवं मुकुददास का भ्रमर गीत उल्लेखनीय है।

दि० जैन पंचायती मन्दिर ग्रन्थ भण्डार, नयी डीग

यहां बड़े तथा छोटे पंचायती मन्दिर में 130 ग्रन्थों का संग्रह है, जिनमें सभी विषयों के ग्रन्थ है।

राजकीय तहसील पुस्तकालय, धौलपुर (1954)

समाज शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा संचालित इस पुस्तकालय का प्रारम्भ सन् 1944 में हुआ। वर्तमान में 6427 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में आने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 15 है। पुस्तकालय में प्रति दिन साठ से अधिक व्यक्ति आते है। पुस्तकें विषय वार संग्रहीत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 10 हजार रु० का है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। विगत वर्ष 244 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : शिवचरणलाल गर्ग।

दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर ग्रन्थ भण्डार, कामा

कामा भी काफ़ी प्राचीन साहित्यक केन्द्र रहा है। यहां हस्तलिखित ग्रन्थ तथा गुटकों की सं० 578 है जिनमें सभी विषय के ग्रन्थ है। यहां स० 1405 तक की पाण्डुलिपियां है। संस्कृत अपभ्रंश प्राकृत तथा हिन्दी के ग्रन्थ हैं। व्याकरण, ज्योतिष, काव्य पुराण, आयुर्वेद, जैन आगम, सिद्धान्त दर्शन सभी विषयों के ग्रंथ हैं। यहां जोधराज कासलीवाल का सुखाविलास भी है जो सं० 1884 की रचना है।

अग्रवाल पंचायती मन्दिर ग्रन्थ भण्डार कामा

यह ग्रन्थागार भी काफी प्राचीन है इसमें यहां 111 हस्तलिखित ग्रन्थ है जिनमें एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है—कवि सधारू का प्रद्युम्न चरित्र। यह सं० 1411 की हिन्दी रचना है। जो साहित्य शोध विभाग श्री महावीरजी से डा० कासलीवाल द्वारा संपादित होकर प्रकाशित हुई है।

पुस्तकें हमें जीवन के नये रूप दिखाती हैं, जीने का ढंग सिखाती हैं। दुखियों को वे तसल्ली देती है, जिद्दियों को दंड देकर राह पर लाती हैं। मूर्खों की वे लानत-मलामत करती हैं, अक्लमंदों को ताकत देती हैं, एकांत में वे हमें सहारा देती हैं। संसार और मनुष्य की क्षणभंगुरता को भुलाने में हमारी मदद करती हैं, हमारी निराशाओं को थपकियां देकर सुलाती हैं।

—डॉ० जाकिर हुसेन

जिला भीलवाड़ा

श्री माणिक्यलाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (1950)

लोकनायक श्री माणिक्यलालजी वर्मा के नाम पर संचालित इस महाविद्यालय का यहां वर्ष 1950 में प्रारम्भ हुआ। तभी से इसके अन्तर्गत पुस्तकालय की भी शुरुआत हुई। श्री वर्माजी के देहावसान के पश्चात कालेज का नामकरण उनके नाम पर किया गया। वर्तमान में इसके पुस्तकालय में 29 हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत है। वाचनालय में आनेवाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या लगभग 250 है। पुस्तकालय का निजी भवन है। जिसकी अनुमानित लागत तीन लाख रुपये है। पुस्तकालय स्टाफ में 8 कार्यकर्त्ता कार्यशील है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 35 हजार रु० का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष :—श्री हंगामीलाल कोगना, बी० लिब० एस० सी०

राजकीय जिला पुस्तकालय, भीलवाड़ा (1956)

समाज शिक्षा विभाग राजस्थान के अन्तर्गत संचालित इस जिला पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1956 में हुआ। वर्तमान में पुस्तकालय में बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं सहित 10 हजार के लगभग पुस्तकें हैं। वाचनालय में आनेवाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 100 से अधिक है। पुस्तकालय में दैनिक उपस्थिति का औसत 200 है। राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह का आयोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि विभिन्न मुख्य प्रवृत्तियां है। संदर्भ सेवाकक्ष आदि विशेष सेवाएं है। पुस्तकालय के लिए कार्य कारिणी समिति है, जिसके अध्यक्ष जिलाधीश होते है।

सेवा सदन पुस्तकालय, भीलवाड़ा (1943)

प्रदेश की प्रमुख लोक सेवी संस्था सेवा सदन की स्थापना 8 अक्टूबर 1943 ई० को विजया-दशमी के शुभ दिवस पर हुई। गांधी जीवन दर्शन और विचार धारा से प्रेरित नवीन समाज रचना और राष्ट्रनिर्माण के आधार भूत मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्न करना ही सदन का लक्ष्य रहा है। सदन की अन्य प्रवृत्तियां है--विनय-मन्दिर, बाल-मन्दिर, ग्राम भारती विद्यालय, गांधी अध्ययन केन्द्र आदि।

संस्था की स्थापना के साथ ही पुस्तकालय का प्रारम्भ हुआ। पुस्तकालय में गांधी विचार धारा तथा उसके तुलनात्मक अध्ययन हेतु लगभग 6 हजार पुस्तकों का संग्रह है। वाचनालय में गांधी विचार एवं सर्वोदय तत्व दर्शन तथा देश विदेश की गति-विधियों से सम्बन्धित दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक लगभग 75 पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था है। पुस्तकालय जो गांधी अध्ययन केन्द्र के रूप में चलता है, की सदस्यता निःशुल्क है। विशेष अध्ययन के लिए नियमित सदस्यों को विशेष सुविधाएं उपलब्ध की जाती हैं। केन्द्र पूरे समय के लिए है।

इसके संस्थापक तथा संचालक श्री रूपलाल सोमानी है।

जिला सवाईमाधोपुर

राजकीय जिला पुस्तकालय, सवाईमाधोपुर (1956)

समाजशिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा संचालित इस जिला पुस्तकालय का प्रारंभ वर्ष 1956 में हुआ। वर्तमान में यहां दस हजार के लगभग पुस्तकें तथा बाउण्ड पत्र-पत्रिकायें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में आनेवाली पत्र पत्रिकाओं की संख्या लगभग 100 है। पुस्तकालय में दैनिक औसत उपस्थिति 200 है। राजकीय कर्मचारी, छात्र तथा अन्य सभी वर्गो के नागरिक इस पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय की अन्य प्रवृत्तियां हैं–सूचना केन्द्र, संदर्भ सेवा, सेवा कक्ष, बालसभा कक्ष आदि है। राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अतिरिक्त समय समय पर पुस्तकालय द्वारा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विचार गोष्ठी आदि के आयोजन भी होते हैं। पुस्तकालय का संचालन एक कार्यकारिणी समिति की देखरेख में होता है। समिति के अध्यक्ष श्री जिलाधीश तथा सचिव पुस्तकालयाध्यक्ष होते हैं।

दि० जैन मन्दिर संग्रहालय, भुसावरियों का सवाईमाधोपुर

इस मन्दिर में 150 हस्तलिखित ग्रन्थों एवं गुटकों का संग्रह है। व्याकरण ज्योतिष आयुर्वेद के ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन पुराण, आगम चरित्र स्तोत्र तथा पूजा साहित्य है।

दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी ग्रन्थ संग्रहालय, सवाईमाधोपुर

यह मन्दिर बहुत सुन्दर बना है। इसमें करीब 200 हस्तलिखित ग्रन्थ एवं गुटके हैं जो मुख्यतः जैन पुराण काव्य आगम सिद्धान्त स्तोत पूजा पाठ संबंधी हैं। कुछ आयुर्वेद व्याकरण तथा ज्योतिष सम्बन्धित ग्रन्थ हैं।

दि० जैन मन्दिर दीवान अमरचन्दजी ग्रन्थ संग्राहलय, सवाईमाधोपुर

इसमें हस्तलिखित ग्रन्थों का अच्छा संग्रह है। प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत हिन्दी आदि सभी भाषाओं के ग्रन्थ हैं–प्राचीन चिठ्ठियां भी है। अन्य विषयों पर भी काफी संग्रह है।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालया, करौली (1960)

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस महाविद्यालय के पुस्तकालय का प्रारम्भ वर्ष 1960 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी आदि की १२ हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। इतिहास, भूगोल अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान दर्शन रसायनशास्त्र गणित आदि विषयों की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 20 हजार रुपये का है।

पुस्तकालयाध्यक्षः—श्री काशीनाथ गुप्ता; एम० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

श्री दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर ग्रन्थ संग्रहालय, करौली

इसमें वर्तमान में 275 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जिनमें ज्योतिष, दर्शन, आयुर्वेद आदि के ग्रन्थ मुख्य है। ये ग्रंथ संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में हैं।

मन्दिर सोगणीयान ग्रन्थ संग्रहालय, करौली

इस शास्त्र भण्डार में करीब 300 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। भाषा की दृष्टि से हिन्दी संस्कृत पाली आदि के हैं। जिनमें तत्व दर्शन आयुर्वेद न्याय-व्याकरण आदि के ग्रन्थ हैं।

शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी

यहां एक प्राचीन अतिशय क्षेत्र है जहां करीब 400 वर्ष पूर्व भगवान महावीर की दिगम्बर प्रतिमा भूगर्भ से निकली थी। यहां प्राचीन हस्तलिखित 300 ग्रन्थों का अपूर्व संग्रह है, जिसकी सूची प्रकाशित हो चुकी है। ग्रन्थ सभी भाषाओं एवं विषयों के हैं, यहां विशेषतः आयुर्वेद व्याकरण मंत्रशास्त्र काव्य, ज्योतिष आदि विषयों के ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

श्री दि० जैन ग्रंथ भंडार, खंडार

सवाईमाधोपुर में पुरानी तहसील है। यहां जैन मन्दिर में करीब 60 ग्रन्थ हैं। सभी हस्तलिखित हैं व्याकरण, ज्योतिष पुराण आदि के ग्रंथ हैं। यहां पहाड़ पर श्री दि० जैन मन्दिर तथा मूर्तियां है जो बहुत ही प्राचीन है।

नेहरू कालेज आफ ऐज्यूकेशन पुस्तकालय, हिण्डोन (1968)

शिक्षा महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित पुस्तकालय में हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों की लगभग पांच हजार पुस्तकें संग्रहीत है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 4 हजार रुपये का है।
पुस्तकालयाध्यक्ष :— मीना श्री वास्तव, एम० ए०, लिब० एस० सी०

किसी भी देश के स्तर का अनुतना वहां के साहित्य के मान दण्ड से किया जाना है। जो देश जितना समुन्नत होगा, वह उतने ही गंभीर साहित्य का अनुशीलन करेगा और चरित्र को गिरानेवाले हल्के साहित्य को प्रोत्साहन नहीं देगा।

—महर्षि अरविंद

जिला सिरोही

श्री सारणेश्वरजी जिला पुस्तकालय, सिरोही

श्री सारणेश्वरजी जिला पुस्तकालय, सिरोही की स्थापना सन् 1948 में भू० पू० सिरोही राज्य द्वारा की गई थी। पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य श्री सारणेश्वरजी मन्दिर के कोष द्वारा सन् 1946 में प्रारम्भ किया गया था। किन्तु सिरोही राज्य का विलीनीकरण 4 जनवरी 1949 को बम्बई राज्य तदुपरान्त 25 जनवरी 1950 को राजस्थान राज्य में हो जाने से देव-स्थान फण्ड से इस भवन का निर्माण कार्य बन्द हो गया। इसके उपरान्त राजस्थान सरकार द्वारा इस भवन का निर्माण कार्य जुलाई 1954 में पूर्ण हुआ। तभी से पुस्तकालय इस नवीन भवन में अपना कार्य करता आ रहा है। इससे पूर्व सन् 1948 से 30 जून 1954 तक यह पुस्तकालय पास ही के श्री जीतकुंवर बा शिशुशाला के दो कमरों में चलता रहा है। शताब्दी समारोह सन् 1957 के उपलक्ष में सिरोही के नागरिकों द्वारा इस भवन के चारों ओर एक सुन्दर उद्यान एवं 2 फव्वारों का निर्माण कराया गया।

पुस्तकालय केलिए श्री सारणेश्वरजी के फण्ड से 2650 पुस्तकें खरीदी गई थी। जिनकी संख्या आज लगभग 12 हजार हो चुकी हैं।

वर्तमान समय में यह पुस्तकालय राजस्थान सरकार के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत श्री उप निदेशक समाज शिक्षा, राजस्थान बीकानेर के अधीनस्थ है। प्रशासकीय अधिकारी श्री विद्यालय निरीक्षक सिरोही हैं। पुस्तकालय के संचालन हेतु एक समिति है, जिसके अध्यक्ष जिलाधीश सिरोही हैं।

पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 80 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 5848 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रतिदिन 130 लगभग व्यक्ति आते हैं। पुस्तकें डेवी पद्धति पर वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कैटलाग है, जो कार्ड सूची सी० सी० सी० पद्धति पर बना है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 16 हजार रुपये का है। पुस्तकें चयन समिति की सिफारिश पर पुस्तकें खरीदने का क्रम रहता है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री महेशदत्त पुरोहित, बी० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

नेशनल पुलिस अकादमी पुस्तकालय, माउन्ट आबू (1948)

वर्तमान में इस पुस्तकालय में करीब 11 हजार पुस्तकें सग्रहीत हैं जिसमें कानूनी, प्रशासनिक, जन सुरक्षा, नागरिक शास्त्र, सम्बन्धी पुस्तकों के साथ ही इतिहास राजनीति, सैनिक शिक्षा जासूसी एवं सामाजिक उपन्यास आदि का हिन्दी अंग्रेजी भाषा में अच्छा संग्रह है। इस पुस्तका-लय का वार्षिक बजट करीब 2 हजार का है। पत्र-पत्रिकाओं का बजट 3500 है तथा पुलिस सम्बन्धी समय-समय पर निकलनेवाली सूचनाओं का संग्रह इसकी विशेषता है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री के. बी. रामचन्दानी, एम. ए. डिप्लोमा लिब. साइन्स तथा साहित्य रत्न।

तहसील पुस्तकालय, शिवगंज (1956)

यह राजकीय पुस्तकालय यहां सन् 1956 में आरम्भ हुआ। पुस्तकालय भवन सदर बाजार में गोयल इलेक्ट्रिकल स्टोर की प्रथम मंजिल पर स्थित है। पुस्तकालय दो छोटे किराये के कमरों में ही चल रहा है। कहना न होगा कि पुस्तकालय की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को देखते हुए उपयुक्त स्थान का अभाव है।

वर्तमान में पुस्तकालय में 4935 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 41 हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1454 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रति दिन लगभग चालीस व्यक्ति आते हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट रु० 6 हजार से अधिक का है। गत वर्ष 169 पुस्तकें पुस्तकालय में जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री शंकरदयाल सेन।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय सिरोही, (1952)

महाविद्यालय के इस पुस्तकालय में वर्तमान में 16,020 पुस्तकें संग्रहीत हैं। इतिहास, रसायन शास्त्र, गणित, अकाउन्टेन्सी तथा स्टेटिसटिक्स आदि विषयों की पुस्तकों की बहुलता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री एम० सी० सेठ, बी० काम०, बी० लब० एम० सी०।

आज समाज में दो वर्ग हैं, एक वह जो बुद्धिजीवी है और दूसरा वह जो श्रमिक हैं, दोनों के बीच किसी प्रकार का सामंजस्य नहीं, इतना ही नहीं बुद्धिजीवी श्रमिक को हेय दृष्टि से देखता है। कितनी बड़ी बिडम्बना है कि जो पसीना बहाकर शुद्ध कमाई करता है, वह छोटा माना जाता है और जो दूसरे की कमाई पर आश्रित है, परोपजीवी है, वह प्रतिष्ठा पाता है।

—विनोबा

जिला सीकर

राजकीय जिला पुस्तकालय, सीकर (1956)

राजस्थान सरकार द्वारा पंचवर्षीय योजना के अंतिम चरण में समाज शिक्षा के अंतर्गत राज्य के प्रत्येक जिला मुख्यालयों पर जिला पुस्तकालयों की स्थापना की गई। इसी क्रम में इस पुस्तकालय का समारम्भ पन्द्रह अगस्त सन् 1956 को हुआ। अपनी स्थापना तिथि से अब तक यह पुस्तकालय विभिन्न किराये के भवनों में चलता आ रहा है। इस पुस्तकालय में सूचना केन्द्र, बालसभा, संदर्भकक्ष एवं महिला कक्ष की विशेष सुविधा एवं सेवाएं उपलब्ध हैं। वर्तमान में इस पुस्तकालय में हिन्दी तथा अंग्रेजी आदि विषयों की कुल 8403 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 732 तथा अन्य सामग्री 5128 है। पुस्तकालय में प्रति वर्ष 80 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं मंगवाई जाती हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 38,766 पुस्तकें दी गई। पुस्तक संग्रह में नब्बे प्रतिशत प्रायः उपन्यास हैं। पुस्तकालय में पाठकों की दैनिक औसत उपस्थिति 200 है। पुस्तकें डेसीमल पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलाग है, जो सी० सी० सी० पद्धति पर बना है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 22 हजार रु० का है। विगत वर्ष पुस्तकालय में 643 पुस्तकें जोड़ी गईं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री अमीरअली खां, एम० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

श्री कल्याण कालेज पुस्तकालय, सीकर (1947)

यह महाविद्यालय वर्ष 1958 से डिग्री कालेज के रूप में चल रहा है। वर्तमान में बीस हजार लगभग पुस्तकें संग्रहीत हैं। कला, विज्ञान, तथा वाणिज्य विषय से सम्बन्धित पुस्तकों की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 10 हजार रु० का है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री महेन्द्रनाथ शर्मा, एम०, ए०, बी० लिब० एस० सी०।

पी० आर० आयुर्वेदिक कालेज, सीकर (1943)

स्वाभाविक ही इस कालेज के पुस्तकालय में आयुर्वेद विषय से सम्बन्धित पुस्तकें मुख्य रूप से संग्रहीत हैं वर्तमान में पुस्तक-संख्या लगभग तीन हजार हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 3 हजार रुपये का है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : वैद्य राजेन्द्रप्रसाद

ऋतेष्वु आश्रम पुस्तकालय, सीकर (1947)

श्री शिवभगवान शर्मा ने वर्ष 1947 में इस संग्रह का प्रारम्भ किया। धार्मिक पुस्तकें मुख्य रूप से हैं। वर्तमान में लगभग 900 पुस्तकें है।

सरस्वती पुस्तकालय, फतेहपुर (1910)

यह पुस्तकालय मरुधरा स्थित वह ज्ञान वाटिका है जिसकी सौरभ ने विगत पांच दशाब्दियों से इस क्षेत्र के मानस कलेवर को स्वस्थ एवं समृद्ध किया है। यह विशाल ग्रंथागार ही फतेहपुर का मर्म स्थल है, जिसकी सुरक्षा में तन-मन-धन से इस क्षेत्र की वसुधा के पुत्र अनवरत परिश्रम से तल्लीन हैं।

पुस्तकालय की स्थापना 15 मई 1910 को की गई। सर्वश्री वासुदेवजी गोयनका, वजरंग लालजी लोहिया आदि महानुभावों का इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सन् 1935 मे मौजूदा भव्य भवन का निर्माण करवाया गया लेकिन पुस्तकालय की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के लिए यह भवन उपयुक्त नहीं रह गया है। वर्तमान में 27 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। लगभग 500 दुर्लभ पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं। जिनका अनुसंधान की दृष्टि से भारी महत्व है। हस्तलिखित तथा ताड़पत्रों, भोजपत्रों आदि पर भी पुस्तक है। मध्यकालीन संत-साहित्य के अप्रकाशित ग्रंथ हैं, जिनकी गवेषणा साहित्य मनीषियों से अपेक्षित है। इतिहास, ज्योतिष तथा अन्य विषयों से भरापूरा सम्पन्न साहित्य भी है।

संस्था के विशाल सभा कक्ष में वाचनालय की व्यवस्था है, जहां दैनिक, साप्ताहिक व मासिक पत्रों के पठनार्थ अलग अलग स्थान निर्धारित हैं। आगत विभिन्न भाषाओं के पत्र पत्रादिकों की कुल संख्या 95 है। पुस्तकालय की यह भी अपनी एक विशेषता है कि यहां गत 52 वर्षों के दैनिक पत्रों की फाइलें भी प्राप्त है। हिन्दुस्तान, विश्वमित्र व हिन्दुस्तान टाइम्स की कुल प्रकाशित प्रतियों को क्रमानुसार पत्थर के रैक्स में रखा गया है।

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के सहयोग से पुस्तकालय के अंतर्गत वाल-पुस्तकालय व उद्यान की व्यवस्था की गई है। विभिन्न अवसरों पर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्वों के समारोह आयोजित किये जाते रहे हैं।

वर्तमान में तीन कर्मचारी कार्य कर रहे हैं। पुस्तकालय का संचालन एक कार्यकारिणी समिति द्वारा होता है। पुस्तकालय को राज्य सरकार द्वारा साठ प्रतिशत सहायता मिलती है। पुस्तकालय की आय का साधन सामने निर्मित आठ दुकानें हैं, जिनसे लगभग 250) प्रति माह किराया आता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री कल्याणसहाय शर्मा।

आर० एन० रूइयां राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, फतेहपुर (1968)

यह महाविद्यालय वर्ष 1968 से पुनः राजकीय कालेज के रूप में प्रारम्भ किया गया है। वर्तमान में इसमें 10 हजार से अधिक पुस्तकें हैं। रसायन शास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, दर्शन आदि विषयों की पुस्तकों की विशेषता है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 15 हजार रु० से अधिक का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री आर० एस० रावत बी० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

जी० आर० चमड़िया महाविद्यालय पुस्तकालय, फतेहपुर (1947)

इस महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 11 हजार लगभग पुस्तकें हैं। हिन्दी अंग्रेजी आदि भाषाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 5 हजार रुपये से अधिक का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री के० सी० जैन, बी० ए०, डिप्लोमा लिब० एस० सी०।

शास्त्र भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, फतेहपुर

यहां 275 हस्तलिखित ग्रंथों एवं गुटकों का संग्रह हैं। सभी भाषा के ग्रंथों का अपूर्व संग्रह है। मंत्रशास्त्र, औषधियों के नुस्खे, व्याकरण, साहित्य आदि सभी विषयों पर ग्रंथ हैं। यहां एक 1222 पृष्ठ का गुटका हैं तथा इसे 22 वर्ष में लिखा गया। यहां णमोकार महातम कथा की भी एक सुन्दर प्रति वर्तमान है।

आजाद भवन पुस्तकालय, फतेहपुर (1942)

पुस्तकालय की स्थापना 9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन की स्मृति में स्वर्गीय सेठ सोहनलालजी दूगड़ ने की। विशाल भवन में कन्या माध्यमिक विद्यालय बन जाने से पुस्तकालय का अलग भवन सन् 1956 में बनवाया गया। लगभग डेढ़ लाख रु० मूल्य की पुस्तकें हैं। सभी पाठकों को निःशुल्क अध्ययनार्थ पुस्तकें दी जाती हैं।

श्री आजाद भवन महिला कन्या विद्यालय ट्रस्ट द्वारा संचालित इस सार्वजनिक पुस्तकालय में वर्तमान में 24881 पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगवाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 50 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 9754 पुस्तकें दी गईं। पाठ्य पुस्तक विशेषतः उच्च शिक्षा के लिए ही इस संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या 52 है। पुस्तकें विषय अनुसार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का उपयोग करने वालों में छात्र पाठकों की संख्या अधिक है। हस्तलिखित संग्रह का कैटलाग है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री भूदेव शर्मा, बी० ए०, साहित्यरत्न।

सार्वजनिक वाचनालय, दांता (1945)

वर्तमान में सुभाष युवा संगठन द्वारा संचालित इस सार्वजनिक पुस्तकालय का आरम्भ सन् 1945 में हुआ। वर्तमान में एक हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 550 है। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 35 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री महेशकुमार पोद्दार

श्री नवज्योति पुस्तकालय, रामगढ़ सेठोंका

शेखावाटी के इस पिछड़े प्रदेश में शैक्षणिक प्रगति को द्रुततर बनाने के उद्देश्य से भाद्रपद कृष्णा 1 संवत् 1975 विक्रमी को स्थानीय कतिपय उत्साही नवयुवकों ने एक छोटी सी दुकान में इस पुस्तकालय की स्थापना की थी। रामगढ़ के दानी सज्जनों के सहयोग से संस्था का विशाल व तिमंजला भव्य भवन 1940 में बनकर तैयार हुआ तथा भवन के अनुरूप ही सुन्दर फर्नीचर व पुस्तकों के लिए विशेष रूप से निर्मित 34 आलमारियों की व्यवस्था हो गई। यह संस्था विधि-वत् रजिस्टर्ड है तथा राजस्थान सरकार द्वारा सहायता प्राप्त है।
वर्तमान में कुल 10,400 पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 1308 है तथा हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या 142 है। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 57 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 8100 पुस्तकें दी गई। संस्कृत भाषा की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन आने वाले पाठकों की संख्या औसतन 85 है। पुस्तकें कोलन-पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलाग है। पुस्तक-चयन समिति की सिफारिश पर पुस्तकें क्रय करने का क्रम रहता है।

पुस्तकालय के अंतर्गत बाल-विभाग की विशेष व्यवस्था है। नगर की जनता में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना जागृत करने हेतु समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा कवि-गोष्ठी आदि का भी आयोजन किया जाता है। संस्था शीघ्र ही अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रही है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री किशोरीलाल शुक्ला।

विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र, नीमकाथाना (1972)

इस अध्ययन केन्द्र का आरम्भ 17 अक्टूबर 1972 में हुआ तथा वर्तमान में लगभग 500 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय से प्रतिवर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 20 लग-भग है। पुस्तकालय में प्रतिदिन 50 व्यक्ति आते हैं। वर्तमान में एक सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा भवन निःशुल्क प्रयोग हेतु दिया हुआ है। महापुरुषों की जीवनियां संग्रह की विशेषता है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री राजेन्द्रप्रसाद खन्दा।

भगवानदास तोदी महाविद्यालय पुस्तकालय, लक्ष्मणगढ़ (1965)

सीकर जिले के इस नवोदित महाविद्यालय पुस्तकालय में वर्तमान में लगभग 750 पुस्तकें संग्रहीत हैं। इतिहास, रसायनशास्त्र, दर्शन, अकाउन्टेन्सी तथा राजनीति शास्त्र आदि की पुस्तकें मुख्य रूप से है। पुस्तकालय का वार्षिक बजट 6 हजार रुपये से अधिक है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री बलवीरसिंह एम. ए, डिप्लोमा लिब० एस० सी०।

गीता पुस्तकालय, कुली (1971)

एक व्यक्ति के संकल्प और प्रयत्न का परिणाम यह ज्ञान मन्दिर है। स्थानीय शिक्षा प्रेमी श्री रामचन्द ने वर्ष 1971 में इस पुस्तकालय का आरम्भ किया। वर्तमान में पुस्तकों की संख्या लगभग 2 हजार है। संस्कृत तथा अंग्रेजी विषय की पुस्तकें भी हैं। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण पुराण, दर्शन तथा धार्मिक विषयक पुस्तकें संग्रह की विशेषता है।

ग्राम पुस्तकालय, दांतारामगढ़ (1949)

उत्साही युवकों ने वर्ष 1949 में इस पुस्तकालय की स्थापना की। जन सहयोग जुटाकर पुस्तकें संग्रहीत की गईं। वर्तमान में चार हजार लगभग पुस्तकें है। वाचनालय में दस पत्र पत्रिकाएं आती हैं। पुस्तकालय की अन्य प्रवृत्तियां हैं—विचार सभा, साक्षरता प्रसार, प्रकाशन तथा सांस्कृतिक आयोजन आदि। सर्व श्री जयनारायण जी व्यास, श्री मोहनलाल सुखाड़िया, श्री भगवतसिंह मेहता, श्री शंकरसहाय सक्सेना, श्री जवाहिरलाल जैन आदि ने पुस्तकालय का अवलोकन किया है। स्व० भगवानदास जी केला ने ग्रामीण क्षेत्र में पुस्तकालय सेवाओं की सराहना की है।

पुस्तकालय के संचालक : श्री रामेश्वर विद्यार्थी है।

श्री गांधी स्मृति पुस्तकालय, लोसल (1947)

नगर के एक-मेव इस सार्वजनिक पुस्तकालय की शुरुआत वर्ष 1948 में हुई। वर्तमान में 6 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। बाउण्ड पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 168 है। वाचनालय में 32 पत्र-पत्रिकायें आती हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 3000 पुस्तकें दी गईं। गांधी साहित्य संग्रह की विशेषता है। पुस्तकालय में प्रतिदिन 60 व्यक्ति आते हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है, जो उपयुक्त है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री हरिप्रसाद गौड़

———

पुस्तकों का निरीक्षण पठन पाठन अपनी ही उन्नति नहीं बल्कि राष्ट्र की उन्नति है। पुस्तकें हमें, धर्म, ज्ञान जाति, देव देश की भक्ति सिखाती है हमें आध्यात्म ज्ञान, तत्वज्ञान आत्मज्ञान का परिचय कराती है एवम् हमारे जन्म का सार्थक्य करके जन्म मरण का नाश कराती है।

जिला श्रीगंगानगर

जिला पुस्तकालय. श्री गंगानगर (1956)

प्रथम पंचवर्षीय योजना की स्कीम सख्या चार (सी) के अंतर्गत पुस्तकालय की स्थापना हुई। शिक्षा विभाग राजस्थान की देख रेख में इसका संचालन होता है। पुस्तकालय अपने सीमित साधनों के अंतर्गत संदर्भ सेवा का अधिक से अधिक लाभ प्रदान कर रहा है। वर्तमान में

महात्मा गांधी साध्य महाविद्यालय पुस्तकालय. श्रीगंगानगर

पुस्तकालय में हिन्दी-अंग्रेजी की 5900 पुस्तकें संग्रहीत है। बोउण्ड पत्र पत्रिकाओं की सख्या 602 है। गांधी साहित्य संग्रह की विशेषता है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 15865 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मगाये जाने वाला पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 60 लगभग हैं। पुस्तकालय का प्रति दिन औसत 71 व्यक्ति उपयोग करते है। पुस्तकें डेवी दशमलव पद्धति के अनुसार वर्गीकृत है। पुस्तकालय संग्रह का केटलाग हैं, जो रजिस्टर फार्म पर बना है। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। राज्य कर्मचारी एवं छात्र वर्ग इसका मुख्य रूप से उपयोग करते है। विगत वर्ष पुस्तकालय में 233 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मदन मोहन राजवंशी

महात्मा गांधी सांध्य महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1966–67 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी की 5 हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1 हजार पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रति दिन आने वाले पाठकों की संख्या 150 है। पुस्तकें कोलन पद्धति पर वर्गीकृत है। पुस्तकालय संग्रह का केटलाग है, जो सी सी सी (रंगनाथन्) पद्धति पर बना है। प्रति वर्ष पुस्तकालय पर चार हजार रु० से अधिक व्यय किये जाते है। अभी पुस्तकालय किराये के मकान में ही चल रहा हैं। पुस्तकालय में पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन करने वाले व्यक्ति ही मुख्य रूप से आते है। विगत वर्ष 300 पुस्तकें जोड़ी गई।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सागर मल एम० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

महर्षि दयानन्द महाविद्यालय पुस्तकालय, श्रीगंगानगर (1969)

महर्षि दयानन्द महाविद्यालय के इस पुस्तकालय का आरम्भ जोलाई 1968 में हुआ। वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों की 5 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 45 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 9599 पुस्तकें दी गई। रसायन विज्ञान भौतिक विज्ञान तथा गणित आदि विषयों की पुस्तकें सग्रह की विशेषता है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलाग है जो सी सी सी (रंगनाथन्) पद्धति पर बना है। पुस्तकालय पर प्रति वर्ष लगभग पन्द्रह हजार रु० व्यय होते हैं। गत वर्ष पुस्तकालय में 405 पुस्तकें जोड़ी गई। विषय के प्राध्यापक एवं छात्रों के सुझाव के अनुसार पुस्तकें क्रय किये जाने का क्रम रहता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री शिवशंकर गर्ग, एम० ए०, बी० लिब० एस० सी।

ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय पुस्तकालय, संगरिया (1965)

सुप्रसिद्ध लोकसेवी स्वामी केशवानन्दजी द्वारा संस्थापित इस विद्यापीठ के अन्तर्गत संचालित शिक्षा महा विद्यालय के पुस्तकालय का आरम्भ वर्ष 1965 में हुआ। वर्तमान में इसमें हिन्दी तथा अंग्रेजी की 3758 पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 60 है। शिक्षा तथा मनोविज्ञान विषय की पुस्तकें संग्रह की विशेषता है। पुस्तकें डेवी पद्धति से वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय संग्रह का कार्ड कैटलाग है, जो सी० सी० सी० (रंगनाथन्) पद्धति पर बना है। प्रतिवर्ष पुस्तकालय पर लगभग तीन हजार रुपये व्यय किये जाते हैं। पुस्तकालय निजी भवन में चल रहा है। शिक्षा स्नातक मुख्य रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के एक लाख रुपये के अनुदान से नवीन पुस्तकालय भवन का निर्माण हो रहा है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री मुरारीलाल अग्रवाल, एम० ए०, बी० लिब० एस० सी०।

नेहरू मैमोरियल महाविद्यालय, हनुमानगढ़ टाउन (1966)

महा विद्यालय के अन्तर्गत संचालित इस पुस्तकालय में वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी की 6 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकें विषयवार संग्रहीत हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सुरेशचन्द्र त्रिपाठी, बी० काम०, बी० लिब० एस० सी०

श्री कृष्ण पुस्तकालय, भादरा (1928)

सन् 1928 में संस्थापित इस सार्वजनिक पुस्तकालय में, हिन्दी तथा अंग्रेजी की 7 हजार से अधिक पुस्तकें संग्रहीत हैं। पुस्तकालय में प्रति वर्ष मंगाये जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 55 है। पुस्तकालय का प्रतिदिन लगभग 200 व्यक्ति उपयोग करते हैं। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 5 हजार रुपये का हैं। संस्था का निजी भवन है तथा फर्नीचर की समुचित व्यवस्था है।
पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री किशनलाल शर्मा।

श्री जैन सार्वजनिक पुस्तकालय, भादरा (1947)

राज्य सरकार द्वारा सहायता प्राप्त इस सार्वजनिक पुस्तकालय का प्रारम्भ सन् 1947 में हुआ। वर्तमान में 4374 पुस्तकें संग्रहीत हैं। वाचनालय में आनेवाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 40 है। विगत वर्ष घर पर पढ़ने हेतु 1962 पुस्तकें दी गई। पुस्तकालय में प्रति दिन आने वाले पाठकों की औसत संख्या 60 है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत हैं। पुस्तकालय का वार्षिक बजट लगभग 5 हजार रुपये का है। पुस्तकालय अभी किराये के मकान में चलता है। यह ज्ञान मन्दिर साक्षरता प्रसार की दिशा में अच्छी सेवाएं कर रहा है।

जो० वी० कृषि वाणिज्य विज्ञान महा विद्यालय, पुस्तकालय संगरिया

इस पुस्तकालय में वर्तमान में करीब 8 हजार पुस्तकें संग्रहीत हैं। जिसमें कृषि-विज्ञान तथा वाणिज्य विज्ञान, अर्थ शास्त्र, कला तथा शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों का बाहुल्य है। पुस्तकें विषयवार वर्गीकृत की गई हैं। अंग्रेजी व हिन्दी भाषा का साहित्य यहां विद्यमान है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री एल० डी० मित्तल, एम० ए०, बी० लिब० एस. सी.।

राजकीय महाविद्यालय पुस्तकालय, श्रीगंगानगर (1954)

यह विद्यालय 1964 में डिग्री कालेज बनाया गया। इस पुस्तकालय में वर्तमान में 25000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। जिसमें इतिहास, भूगोल, अंक संकलन, राजनीति अर्थशास्त्र वाणिज्य, केमिस्ट्री आदि सब तरह के ग्रंथ हिन्दी अंग्रेजी संस्कृत भाषा में हैं। इस पुस्तकालय का वार्षिक बजट 21 हजार रु० का है। करीब 2500 रु० पत्र-पत्रिकाओं में व्यय किये जाते हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री एस. आर. शर्मा, एम० ए० हिन्दी-इतिहास डिप्लोमा लाइब्रेरी साइन्स

एस० के० एन० खालसा महा विद्यालय पुस्तकालय, श्रीगंगानगर (1957)

वर्तमान में इस विद्यालय पुस्तकालय में 15 हजार से अधिक पुस्तकें हैं, जो विषयवार वर्गीकृत हैं। हिन्दी अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें संग्रहीत हैं। वार्षिक बजट करीब 6 हजार रु० का है।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री वेदपाल सिंह, एम०, ए०, बी. लिब० साइन्स।

चौधरी बालूराम गोधरा गर्ल्स महा विद्यालय, श्रीगंगानगर (1950)

वर्तमान में इस महा विद्यालय के पुस्तकालय में करीब 1400 पुस्तकों का संग्रह है जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, वाणिज्य, भूगोल, संगीत, अर्थशास्त्र, जीव विज्ञान आदि सब विषयवार वर्गीकृत साहित्य है। वार्षिक बजट करीब नौ हजार रुपये का है। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएं आती हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री रमनलाल शर्मा, बी० ए०, बी० लिब० साइन्स।

स्वतन्त्रता मिले पच्चीस वर्ष हो गये हैं। लेकिन देखा जाय तो भारत अभी गांधीजी की कल्पना के भारत से बहुत पीछे है। यत्र तत्र सर्वत्र गरीबी और शोषण कायम है और तरह-तरह की समस्यायें मौजूद हैं। नयी नयी पैदा हो रही हैं। प्रश्न है कि भारत का जो चित्र गांधीजी के मन में था, वह मूर्त कैसे होगा, कौन उसे बनायेगा और कब वह बनेगा? इन प्रश्नों का समाधान गांधी-विनोबा के विचार-साहित्य और कार्यक्रम में निहित हैं।

राजस्थान के महाविद्यालय पुस्तकालय

१–अजमेर

१. श्री जवाहरलाल नेहरू मेडीकल कालेज, अजमेर
२. श्री विजयसिंह पथिक श्रमजीवी कालेज, अजमेर
३. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, अजमेर
४. रीजनल कालेज, अजमेर
५. दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर
६. सैन्ट ऐंजेलेन्स कालेज, अजमेर
७. सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
८. राजकीय शिक्षक महाविद्यालय, अजमेर
९. सोफिया कन्या महाविद्यालय, अजमेर
१०. मेयो कालेज, अजमेर
११. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
१२. सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर
१३. राजकीय महाविद्यालय, नसीराबाद
१४. राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ़
१५. श्रीराम वैकुण्ठ संस्कृत महाविद्यालय, पुष्कर
१६. श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, मदनगंज किशनगढ़
१७. सनातन धर्म संस्कृत प्रसारक महाविद्यालय, ब्यावर

२–अलवर

१. राजकीय ऋषि कालेज, अलवर
२. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, अलवर
३. गौरीदेवी कन्या महाविद्यालय, अलवर
४. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय. कोटकासिम
५. राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़
६. औद्योगिक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर

३–उदयपुर

१. राजकीय महाविद्यालय, भीनमाल

२. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, उदयपुर
३. राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
४. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, नाथद्वारा
५. महाराजा भोपाल कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
६. मावव संस्कृत विद्यालय, उदयपुर
७. राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
८. मीरा राजकीय कन्या महाविद्यालय, उदयपुर
९. भोपाल नोबल महाविद्यालय, उदयपुर
१०. माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर
११. राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय, उदयपुर
१२. विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्यूट, उदयपुर
१३. सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र महाविद्यालय, उदयपुर
१४. पी० जी० सोसियल वर्क्स स्कूल, उदयपुर
१५. सेठ मथुरादास एम० बीयानी राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा

४–कोटा

१. औद्योगिक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा
२. राजकीय महाविद्यालय, कोटा
३. राजकीय स्नातक महिला विद्यालय, कोटा
४. जे० डो० बी० कन्या महाविद्यालय, कोटा
५. सरस्वती विद्यापीठ, कोटा
६. विट्ठल नाथ संस्कृत महाविद्यालय, कोटा
७. पोलोटेकनिक कालेज, कोटा
८. सार्वजनिक संस्कृत महाविद्यालय बारां
९. राजकीय महाविद्यालय, बारां
१०. श्री भारतीय विद्यापीठ, सुनतानपुरा
११. राजकीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा

५–चित्तौड़

१. राजकीय महाविद्यालय, चित्तोड़

६–चूरू

१. लोहिया कालेज, चूरू
२. राजस्थान ऋषि कुल ब्रह्मचर्याश्रम, रतनगढ़
३. श्री हनुमान संस्कृत विद्यालय, सरदारशहर
४. एन० बी० डो० राजकीय महाविद्यालय, सरदारशहर
५. सोनादेवी सेठिया विद्यामन्दिर, सुजानगढ़

७–जयपुर

१. महाराजा कालेज, जयपुर
२. महारानी कालेज, जयपुर
३. कानोड़िया महिला महाविद्यालय, जयपुर
४. लालबहादुर शास्त्री कालेज, जयपुर
५. एस० एस० सुबोध कालेज, जयपुर
६. श्री गोविन्द पारीक कालेज, जयपुर
७. अग्रवाल कालेज, जयपुर
८. श्री दादू महाविद्यालय, मोतीडूंगरी रोड़, जयपुर
९. श्री दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर
१०. राजकीय धूलेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर
११. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, महापुरा
१२. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, कालाडेरा
१३. श्री ग्रार० एल० सहरिया कालेज, कालाडेरा
१४. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, दौसा
१५. राजकीय महाविद्यालय, दौसा
१६. सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय, लालसोट
१७. राजकीय महाविद्यालय, कोटपूतली
१८. राजकीय महाविद्यालय, सांभरलेक
१९. हरिश्चन्द्र राजकीय लोक प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर
२०. परिचारिका महाविद्यालय, जयपुर
२१. मालवीय क्षेत्रीय अभियान्त्रिक महाविद्यालय, जयपुर
२२. सवाईमानसिंह मैडीकल कालेज, जयपुर
२३. श्री क० न० कृषि महाविद्यालय, जोबनेर
२४. राजस्थान कालेज, जयपुर
२५. कामर्स कालेज, जयपुर

८–जालौर

१. राजकीय महाविद्यालय, जालौर

९–जैसलमेर

१. एस० बी० राजकीय महाविद्यालय, जैसलमेर

१०–जोधपुर

१. पोलीटैकनिक महाविद्यालय, जोधपुर
२. औद्योगिक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जोधपुर

३. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, जोधपुर
४. लांचू मैमोरियल कालेज, जोधपुर
५. एस० एन० मेडीकल कालेज, जोधपुर
६. जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर
७. जसवन्त कालेज (विज्ञान संकाय), जोधपुर
८. एस० एम० के० कालेज (आर्टस), जोधपुर
९. कमला नेहरु गर्ल्स कालेज, जोधपुर

११—झालावाड़

१. राजकीय महाविद्यालय, झालावाड़

१२—झुन्झुनूं

१. मोतीलाल कालेज, झुन्झुनूं
२. इन्दिरा गांधी बालिका निकेतन, अरड़ावता
३. राजकीय महाविद्यालय, चिड़ावा
४. विरला इन्स्टीट्यूट, पिलानी
५. साबू कामर्स कालेज, पिलानी
६. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, चिड़ावा
७. विरला संस्कृत महाविद्यालय, पिलानी
८. एस० एस० वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय, चिड़ावा
९. एस० जी० रुंगटा संस्कृत महाविद्यालय, बगड़
१०. जे० बी० पोद्दार कालेज, नवलगढ़
११. एस० एस० कालेज, मुकुन्दगढ़

१३—टौंक

१. राजकीय महाविद्यालय, टोंक
२. सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय, निवाई
3. वनस्थली ज्ञान पीठ वेद विद्यालय, वनस्थली
४. वनस्थली ज्ञान विज्ञान महिला महाविद्यालय, वनस्थली
५. प्रशिक्षण महाविद्यालय, वनस्थली

१४—डूंगरपुर

१. श्री गोवर्द्धन संस्कृत महाविद्यालय, खडगढ़ा
२. राजकीय महाविद्यालय, डूंगरपुर

१५–नागौर

१. वांगड़ महाविद्यालय, डीडवाना
२. राजकीय महाविद्यालय, नागौर
३. एम० एल० वी० राजकीय महाविद्यालय लाडनूं
४. राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़
५. पारीक संस्कृत महाविद्यालय, मूंडवा सिटी
६. सनातन धर्म संस्कृत विद्यालय, मारवाड़ मूंडवा

१६–पाली

१. वांगड़ कालेज, पाली
२. एस० पी० यू० डिगरी कालेज, फालना

१७–वाड़मेर

१. राजकीय महाविद्यालय, वाड़मेर

१८–बांसवाड़ा

१. राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा

१९–बीकानेर

१. महारानी सुदर्शना महिला कालेज, बीकानेर
२. डूंगर कालेज, बीकानेर
३. श्री शार्दुल संस्कृत विद्यापीठ, बीकानेर
४. नेहरू शारदा पीठ महिला विद्यालय, बीकानेर
५. राजकीय शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर
६. राजकीय पोलोटेकनिक महाविद्यालय, बीकानेर
७. पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
८. मेडीकल कालेज, बीकानेर
९. जैन महाविद्यालय, बीकानेर
१०. वी० जे० एस० आर० जैन कॉलेज, बीकानेर

२०–बूंदी

१. राजकीय महाविद्यालय, बून्दी

२१–भरतपुर

१. महारानी श्री जया० कालेज, भरतपुर
२. राजकीय महिला महाविद्यालय, भरतपुर
३. राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
४. राजकीय सहकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर

२२--भीलवाड़ा

१. राजकीय महिला महाविद्यालय, भीलवाड़ा
२. श्री माणिकलाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा
३. राजकीय महाविद्यालय, शाहपुरा
४. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, भीलवाड़ा

२३--सवाई माधोपुर

१. राजकीय महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर
२. राजकीय महाविद्यालय, करौली
३. श्री दिगम्बर आदर्श विद्यालय, श्रीमहावीरजी
४. ग्राम सेवक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर

२४--सिरोही

१. राजकीय महाविद्यालय, सिरोही

२५--सीकर

१. राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, सीकर
२. श्री कल्याण राजकीय महाविद्यालय, सीकर
३. आर० एन० रूइया महाविद्यालय, रामगढ़ सेठों का
४. बलदेवराम बाजोरिया संस्कृत महाविद्यालय, फतेहपुर
५. जी० आर० चमड़िया संस्कृत कालेज, फतहपुर
६. ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़
७. भगवानदास तोदी महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़
८. सेठ गोरखराम चमड़िया महाविद्यालय, फतहपुर
९. पी० आर० आयुर्वेदिक महाविद्यालय, सीकर
१०. एस० एन० के० पी० राजकीय महाविद्यालय, नीमकाथाना

२६--श्रीगंगानगर

१. राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
२. चौधरी बी० आर० राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
३. श्री नेहरू मैमोरियल कालेज, हनुमानगढ़
४. महर्षि दयानन्द महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
५. मेडीकल कालेज, श्रीगंगानगर
६. राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
७. औद्योगिक प्रशिक्षण महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
८. सहकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
९. खालसा महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
१०. श्री बियाणी एस० डी० कालेज, श्रीगंगानगर

प्रदेश के मान्यता प्राप्त पुस्तकालय

—०—

१. पंचायत पुस्तकालय, राजगढ़ (अलवर)
२. श्री सांभर पुस्तकालय, सांभर (जयपुर)
३. श्री नवयुवक पुस्तकालय, किशनगढ़-रेनवाल (जयपुर)
४. सार्वजनिक पुस्तकालय, रेनवाल (जयपुर)
५. अमर पुस्तकालय, कोटपूतली (जयपुर)
६. केशव पुस्तकालय, केशोरायपाटन (बूंदी)
७. सार्वजनिक पुस्तकालय बून्दी
८. टैगोर सोसायटी लाईब्रेरी, उदयपुर
९. रामकृष्ण आश्रम लाईब्रेरी, अजमेर
१०. विजयवर्गीय पुस्तकालय, केकड़ी (अजमेर)
११. झुंझनू पुस्तकालय, झुंझनू
१२. गांधी पुस्तकालय, बबाई
१३. नवयुवक पुस्तकालय, मलसीसर (झुंझनू)
१४. महावीर पुस्तकालय, मेहनसर (,,)
१५. श्री कृष्ण पुस्तकालय, चिड़ावा
१६. माखरिया पुस्तकालय, बगड़
१७. श्री सरस्वती पुस्तकालय, फतेहपुर (सीकर)
१८. श्री गांधी स्मृति पुस्तकालय, लोसल (सीकर)
१९. शिवानन्द पुस्तकालय, बीकानेर
२०. श्री नृसिंह ,, ,,
२१. श्री गायत्री ,, ,,
२२. विद्यार्थी सभा ,, ,,
२३. जुबली नागरी भण्डार, ,,
२४. हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर
२५. श्री गुलप्रकाश सज्जनालय, बीकानेर
२६. सार्वजनिक पुस्तकालय, नोखा (बीकानेर)
२७. नवयुवक पुस्तकालय, सरदार शहर (चूरू)

२८. नवयुवक पुस्तकालय नागासर (बीकानेर)
२६. नवजीवन ,, रतनगढ़
३०. नवयुवक ,, भूसावर (चूरू)
३१. ,, ,, श्रीगंगानगर
३२. श्री कृष्ण ,, भादरा (श्री गंगानगर)
३३. माहेश्वरी लाईब्रेरी, जोधपुर
३४. शास्त्री धर्म पुस्तकालय, उदयपुर
३५. म्यूनिसिपल लाईब्रेरी गांधी भवन, अजमेर
३६. म्यूनिसिपल लाईब्रेरी भवन, किशनगढ़ (अजमेर)
३७. ,, ,, ,, पुष्कर ,,
३८. युवक पुस्तकालय नसीराबाद ,,
३६. श्री सार्वजनिक पुस्तकालय, लक्ष्मणगढ़ (अलवर)
४०. श्री सुधारानी समिति पुस्तकालय, भरतपुर
४१. हिन्दी पुस्तकालय भुसावर ,,
४२. ,, ,, डीग ,,
४३. गांधी , गोविन्दगढ़ (जयपुर)
४४. श्री सार्वजनिक पुस्तकालय, मुकन्दगढ़ (झुंझनू)
४५. श्री प्रताप ,, सूरजगढ़ ,,
४६ विद्या प्रचारणी ,, डूंडलोद ,,
४७. सार्वजनिक पुस्तकालय गुढ़ागोड़जी ,,
४८. ,, ,, मन्ड्रेला ,,
४६. युवक सभा ,, मंडावा ,,
५०. आज लाईब्रेरी बटवालन ,,
५१. हनुमान मण्डल पुस्तकालय बड़गांव ,,
५२. सार्वजनिक ,, पचार सीकर
५३. श्री महावीर ,, सीकर ,,
५४ श्री ग्राम ,, कसवाली ,,
५५. श्री नवज्योति ,, रामगढ़ ,,
५६. शारदा सदन ,, लक्ष्मणगढ़ ,
५७. शिक्षा भारती ,, बीकानेर
५८. छात्र सदन ,, बीकानेर
५६. श्री सादुल ,, सादुलपुर (चुरू)
६०. सार्वजनिक ,, तारानगर ,,
६१. श्री डुंगर पुस्तकालय डुंगरगढ़ ,,
६२. भगवती ,, आडसर ,,
६३. गान्धी लाइब्रेरी राजलदेसर ,,

६४. सनातम धर्म सभा चुरू
६५. सर्वहितकारी लाईब्रेरी ,,
६६. जैन सार्वजनिक पुस्तकालय, भादरा (श्रीगंगानगर)
६७. ,, ,, नोहर ,,
६८. लोकप्रिय वाचनालय जोधपुर
६९. भुवनेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, जोधपुर
७०. अमरसिंह चुनीलाल वाचनालय, निम्बाजोया (नागौर)
७१. आदर्श पुस्तकालय, कोलिया (नागौर)
७२. हिन्दी पुस्तकालय छोटी खाटू
७३. सार्वजनिक वाचनालय बाड़ी सजनपुर (पाली)
७४. सर्वहितकारी सभा राजगढ़ (चूरू)
७५. ग्राम ज्योति केन्द्रीय जी. बी. एम, सरदार शहर (चूरू)
७६. सेवा सदन गांधी अध्ययन केन्द्र, भीलवाड़ा
७७. ग्राम सेवा संघ लाईब्रेरी, माही कांकरोली
७८. बरकत रीड़िंग रूम जोधपुर
७९. शास्त्री मण्डल, नाथद्वारा, (उदयपुर)
८०. श्री शारदा पुस्तकालय, चौमू
८१. हृदय नाथ कुंजरू पुस्तकालय, उदयपुर
८२. श्री सन्मति पुस्तकालय, जयपुर

जिस प्रकार मन्दिर में स्थापित पत्थर की मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, उसी प्रकार अच्छे पुस्तकालयाध्यक्षों और पाठकों के माध्यम से पुस्तकों में निहित ज्ञान को मुखरित करते हुए उन्हें सजीव बनाया जाना चाहिए। इसी से उनका जीवन संदेश मानवता के लिए एक वरदान के रूप में प्रसारित किया जा सकता है।

राजस्थान राज्य विभागीय पुस्तकालय

अजमेर

राजस्थान राजस्व मंडल, पुस्तकालय, अजमेर
लोकसेवा आयोग पुस्तकालय, अजमेर
सूचना केन्द्र, अजमेर
आदर्श कारागार पुस्तकालय, अजमेर

अलवर

सूचना केन्द्र, अलवर
जिला कारागर, पुस्तकालय अलवर

उदयपुर

खनन व भूगर्भ विभाग पुस्तकालय, उदयपुर
सूचना केन्द्र, उदयपुर
केन्द्रीय कारागार, उदयपुर

कोटा

सूचना केन्द्र, कोटा
जिला कारागार पुस्तकालय, कोटा

जयपुर

1. शासन सचिवालय पुस्तकालय, जयपुर
2. विधि विभाग पुस्तकालय, जयपुर
3. अंक विभाग पुस्तकालय
4. गजेटियर विभाग पुस्तकालय
5. मूल्यांकन विभाग पुस्तकालय
6. आर्थिक एवं सांख्यिकी निर्देशालय पुस्तकालय
7. कृषि विभाग पुस्तकालय
8. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग पुस्तकालय
9. राजस्थान नहर मंडल पुस्तकालय
10. विकास विभाग पुस्तकालय
11. जन सम्पर्क विभाग पुस्तकालय
12. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पुस्तकालय
13. राजकीय भाषा शिक्षण संस्थान पुस्तकालय
14. समाज कल्याण विभाग पुस्तकालय
15. शोध सन्दर्भ भाषा विभाग पुस्तकालय
16. राजस्थान विधान सभा पुस्तकालय
17. राज्यपाल सचिवालय पुस्तकालय
18. वन सुरक्षा विभाग पुस्तकालय
19. भारतीय औषध मंडल पुस्तकालय

20. जन पुलिस विभाग पुस्तकालय
21. कारागार पुस्तकालय
22. राष्ट्रीय पाठ्य पुस्तक मंडल पुस्तकालय
23. पशु पालन विभाग पुस्तकालय
24, भेड ऊन विभाग, पुस्तकालय
25. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान पुस्तकालय
26. उद्योग-वाणिज्य विभाग पुस्तकालय
27. पुरातत्व संग्राहलय पुस्तकालय
27. सहकारी विभाग पुस्तकालय
29. राजस्थान क्रीडा परिपद् पुस्तकालय
30. सूचना केन्द्र पुस्तकालय
31. निर्देशक संस्कृत शिक्षा पुस्तकालय
32. निर्देशक कालेज शिक्षा पुस्तकालय
33. राज्य परिवहन निगम पुस्तकालय
34. राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल पुस्तकालय
35. श्रमविभाग पुस्तकालय

जोधपुर

1. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान पुस्तकालय
2. राजस्थान उच्च न्यायलय पुस्तकालय
3. सूचना केन्द्र पुस्तकालय
4. जिला कारागार पुस्तकालय
5. ग्राम सेवक प्रशिक्षण केन्द्र पुस्तकालय, मंडोर

टोंक

1. प्रशिक्षणालय सर्व उद्देशीय पुस्तकालय
2. जिला कारागार पुस्तकालय

भरतपुर

जिला कारागार पुस्तकालय, भरतपुर

जिला कारागार पुस्तकालय. धोलपुर

बीकानेर

1. अभिलेखागार विभाग, पुस्तकालय
2. प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग
3. सूचना केन्द्र पुस्तकालय
4, जिला कारागार पुस्तकालय

सिरोही

नेशनल पुलिस अकादमी, पुस्तकालय

श्रीगंगानगर

जिला कारागार, पुस्तकालय

राजस्थान के जैन ग्रन्थ संग्रहालय

राजस्थान रजपूती शान बान का प्रदेश है। यह वीर भूमि है जहां देश पर अथवा मातृभूमि पर बलिदान होने में यहां के निवासियों ने सदा ही गौरव माना है। मुस्लिम शासन में मुसलमानों से जितना यहां के वीरों ने लोहा लिया था, उतना किसी प्रदेश वाले नहीं ले सके। यहां की धरती महाराणा प्रताप की गौरव गाथा से अलंकृत है। महाराजा हम्मीर के शौर्य्य, पराक्रम एवं बहादुरी से कृतकृत्य है और यहां के असंख्य वीर योद्धाओं के खून से इस प्रदेश का चप्पा-चप्पा अभिसिक्त है लेकिन वीर भूमि के साथ-साथ राजस्थान कर्म भूमि भी रहा है। एक ओर यहां के वीर पुत्रों ने यदि मातृभूमि के लिये अपने जीवन की आहुति दी तो दूसरी ओर यहां के वणिक समाज ने देश की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सम्पत्ति को भी सुरक्षित ही नहीं रखा किन्तु उसके प्रचार प्रसार में भी अपना अपूर्व योगदान दिया और इस दृष्टि से भी राजस्थान का महत्व कम नहीं है। जैसे चित्तौड़, रणथम्भौर, अजमेर जैसे दुर्गों के दर्शन करते ही हमारी भुजाएं फड़कने लगती हैं उसी तरह जैसलमेर, नागौर, अजमेर एव बीकानेर, जयपुर के ग्रंथ संग्रहालयों के दर्शन करके हम अपने भाग्य की सराहना करने लगते हैं। आज अकेले राजस्थान में जितनी हस्तलिखित पाण्डुलिपियां मिलती हैं उतनी देश के किसी प्रदेश में नहीं मिलतीं। यह सब राजस्थानवासियों के युगों के परिश्रम का फल है। राजस्थान में जैन एवं जैनेतर शासन संग्रहालयों में पांच लाख से भी अधिक पाण्डुलिपियां हैं। जिनके केन्द्र हैं :— जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, भरतपुर, बूंदी के ग्रंथागार जिनमें पाण्डुलिपियों के रूप में साक्षात् सरस्वती एवं जिनवाणी के दर्शन होते हैं। अनूप संस्कृत लायब्रेरी बीकानेर, राजस्थान पुरातत्व मन्दिर जोधपुर, महाराजा का पोथीखाना जयपुर एव उदयपुर के महाराजाओं का निजी संग्रह में $1\frac{1}{2}$–2 लाख से कम ग्रंथ नहीं होंगे जिनमें सारी भारतीय विद्या छिपी पड़ी है और वह हमारे आचार्यों के असीम ज्ञान का एक जीता जागता उदाहरण है।

राजस्थान में जैन ग्रंथ सग्रहालयों की जितनी अधिक संख्या है उतनी देश के किसी अन्य प्रदेश में नहीं है। लेखक द्वारा अब तक किये गये सर्वे के अनुसार राजस्थान में दिगम्बर एव श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायों के संग्रहालयों में ढाई-तीन लाख पाण्डुलिपियों से कम संख्या नहीं होगी। इनमें से $1\frac{1}{2}$ लाख पाण्डुलिपियां दिगम्बर भण्डारों में एव इतनी ही पाण्डुलिपियां श्वेताम्बर भण्डारों में मिलेगीं। ये पाण्डुलिपियां मुख्यतः संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों की हैं और 11 वीं शताब्दी से लेकर 20 वीं शताब्दी तक की हैं। जैनाचार्यों साधुओं, भट्टारकों एव पंडितों ने अपने ग्रंथ संग्रहालयों को साहित्य संग्रह की दृष्टि से सर्वाधिक उपयोगी बनाने का सदैव प्रयास किया है। जहां कहीं से भी कोई हस्तलिखित ग्रंथ मिल गया चाहे वह फिर किसी धर्म का हो अथवा विषय का उसे भंडार में सुरक्षित रूप से विराजमान कर दिया गया या फिर उसकी प्रतिलिपि करवाकर संग्रहीत करने का प्रयास किया गया। इसलिये राजस्थान के ये जैन ग्रंथ भंडार साहित्यिक उपयोगिता की दृष्टि से देश के

महत्वपूर्ण संग्रहालय हैं। जैनों ने इन भंडारों की रक्षा करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी और मुगलों एवं शत्रुओं के आक्रमणों के समय में भी सर्वप्रथम अपने जीवन की आहुति देकर भी इन भंडारों की सुरक्षा की थी। यही कारण है राज्याश्रय विहीन होने पर भी ये अब तक सुरक्षित रह सके और देश की महत्वपूर्ण सामग्री नष्ट होने से बचायी जा सकी।

श्री महावीर क्षेत्र के साहित्य शोध विभाग की ओर से राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूचियों के पांच भाग प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें करीब पचास हजार ग्रथों का परिचय दिया हुआ है। इन ग्रंथ सूचियों से सैंकड़ों अज्ञात ग्रंथों को परिचय विद्वानों को प्रथम बार प्राप्त हुआ है। स्व. डा. वासुदेव शरण अग्रवाल ने ग्रंथ सूची चतुर्थ भाग की भूमिका में लिखा है कि विकास की उन पिछली शतियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिये महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकड़ी, व्याहलो, वधावा, विनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, वात, गीत, लीला, चरित्र, छन्द, छप्पय, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौढालिया, चौमासिया, वारामासा, वटोई, वेलि, हिंडोलणा, चूनड़ी, सज्झाय, वाराखड़ी, भक्ति, वन्दना, पच्चीसी, वत्तीसी, पचासा, वावनी, सतसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरूवावली, स्तवन, सम्बोधन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी वहुमूल्य सामग्री इन भंडारों में सुरक्षित है। इसी तरह ग्रंथ सूची के पंचम भाग के प्रकाशन का भावपूर्ण शब्दों में स्वागत किया है। इसी तरह जयपुर के लाल भवन की ओर से ग्रन्थ सूची का एक भाग अभी कुछ समय पूर्व प्रकाशित हो चुका है। इन ग्रन्थ सूचियों ने देश के प्राच्यविद्या पर कार्य करने वाले विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया है और देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अब कितने रिचर्स विद्यार्थियों द्वारा शोध कार्य किया जा रहा है जो एक शुभ सूचना है और इन भंडारों में सैंकड़ों वर्षों से संग्रहीत ग्रंथों का उपयोग होना प्रारम्भ हो गया है।

राजस्थान के इन भंडारों में जैसलमेर का वृहद् ज्ञान भंडार सर्वाधिक प्राचीन एवं संग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमें सभी पाण्डुलिपियां ताड़पत्र की है जिसकी संख्या 800 से भी अधिक हैं। इनमें सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि संवत् 1117 (सन् 1090) की है जो ओघ निर्युक्ति वृत्ति की है। इस भंडार को देश विदेश के सभी प्राच्य विद्या विशारदों ने देखने का सौभाग्य प्राप्त किया है जिनमें कर्नल टाड, व्हूलर, जैकोवी, सी० डी० दलाल, पी० एल० वैद, मुनि विनयजी, मुनि पुण्य विजयजी जैसे वहुश्रुत विद्वानों का नाम उल्लेखनीय है। इस भंडार में कालिदास, भारवि, माघ जैसे महाकवियों के महाकाव्यों की प्राचीनतम पाण्डुलिपियों का भी संग्रह है। इसी तरह लक्षणग्रंथों का भी महत्वपूर्ण संग्रह मिलता है।

जैसलमेर के पश्चात् राजस्थान के महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ भंडारों में नागौर का भट्टारकीय शास्त्र भंडार सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं विशाल है जिसमें 15 हजार से अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह है। इस भंडार में अपभ्रंश भाषा की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का संग्रह है जिनमें

कितनी ही अन्यत्र नहीं मिलतीं। संस्कृत के ग्रंथों का यहां विशाल संग्रह है। अधिकांश पाण्डुलिपियां 15 वीं, 16 वीं एवं 17 वीं शताब्दियों की हैं जिनकी प्रशस्तियों में इतिहास के कितने ही विलुप्त तथ्य लिपिबद्ध हैं।

उक्त दोनों भण्डारों के अतिरिक्त अजमेर का भट्टारकीय शास्त्र भण्डार, जयपुर का आमेर शास्त्र भण्डार, पटौदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, दि० जैन तेरह पंथी बड़ा मन्दिर का शास्त्र भण्डार, वधी चन्द जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, लूणकरण जी पांडे के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, लश्कर के मन्दिर का शास्त्र भण्डार लाल भवन के शास्त्र भण्डार का नाम उल्लेखनीय है। जिनमें हजारों की संख्या में पाण्डुलिपियों का संग्रह है। भरतपुर, बयाना, डीग, कामा, टोड़ारायसिंह, मालपुरा, बसवा, बूंदी, कोटा अलवर, उदयपुर, डूंगरपुर, सागवाड़ा, ऋषभदेव, श्रीमहावीर जी, बीकानेर, चुरू, सरदार शहर, फलौदी, लोहावर, जैसे अनिक नगरों में जैन ग्रंथ भण्डारों का जाल बिछा हुआ है जिनमें कागज की एवं ताड़ पत्र की पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखा गया है। राजस्थान के इन भण्डारों की संख्या 200 से कम नहीं होगी। वास्तव में इन भण्डारों में संग्रहीत ग्रंथों का अभी तक कोई मूल्यांकन नहीं हो सका है। विद्या के एवं शोध के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर इन भण्डारों में संग्रहीत ग्रथों के आधार पर कार्य लिया जा सकता है। आयुर्वेद ज्योतिष, छन्द, अलंकार, नाटक, भूगोल, इतिहास सामाजिक शास्त्र, न्याय व्यवस्था, यात्रा तथा व्यापार, प्राकृतिक सम्पदा आदि विभिन्न विषयों पर इन भण्डारों में संग्रहीन ग्रंथों के आधार पर रिसर्च की जा सकती है। कितने ही नये तथ्यों की जानकारी मिल सकती है। भाषा विज्ञान, अर्थ शास्त्र एव समीक्षा ग्रंथों पर कार्य करने के लिये इनमें प्रचुर सामग्री संग्रहीत है। देश में विभिन्न वादशाह एवं राजाओं के शासन काल में विभिन्न वस्तुओं की क्या-क्या कीमतें थीं तथा भुखमरी, आर्थिक दशा जैसे रोचक विषयों पर भी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। ऐसे कितने ही पत्रों का संग्रह मिलेगा जिनमें मां वाप ने भुखमरी के कारण अपने लड़कों को वहुत कम मूल्य में वेच दिया था। इन सवके अतिरिक्त भंडारों में संग्रहीत ग्रंथों में एवं उनकी प्रशस्तियों में देश के सैंकड़ों, हजारों नगरों एवं ग्रामों के इतिहास पर, उनमें सम्पन्न विभिन्न समारोहों पर, वहां के निवासियों पर प्रचुर सामग्री का संकलन किया जा सकता है। वास्तव में आज तक इन शास्त्र भंडारों की जो उपेक्षा की गयी है उसी का कारण है कि न तो देश की विभिन्न भाषाओं का ही साहित्य सम्यक रूप से लिखा जा सका है। और न देश के इतिहास पर ही निष्पक्ष लेखनी चल सकी। इसलिये मेरा सभी से यही निवेदन है कि वे इन भंडारों में संग्रहीत सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग करें क्योंकि प्रेस विज्ञान के प्रारम्भ होने के अर्थ में ही हमारे पुस्तकालय थे और स्वाध्याय करने के प्रमुख स्थान थे। आशा है भविष्य में इनका अधिक से अधिक उपयोग किया जावेगा।

—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

तृतीय खण्ड

सहयोगी प्रकाशन संस्थान

हमारे सहयोगी प्रकाशन संस्थान :

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी

सर्व सेवा संघ गांधीजी की रचनात्मक प्रवृत्तियों का एक मिलाजुला संगठन है। संघकी अनेक प्रवृत्तियां हैं, जिनमें से एक सर्वोदय साहित्य का प्रकाशन भी है।

विनोवाजी की भूदान-पदयात्रा सन् १९५१ में शुरू हुई। उनके विचारों को तथा गांधीजी प्रवर्तित सर्वोदय विचारों के देशव्यापी प्रसार के लिए सन् १९५४ से प्रकाशन-विभाग शुरू किया गया। शुरू-शुरू में भूदान-आन्दोलन से सम्बन्धित छोटी-छोटी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई, लेकिन व्यापक प्रसार के लिए यह आवश्यक समझा गया कि सर्व सेवा संघ का अपना प्रकाशन-विभाग रहे। यह कार्य श्री राधाकृष्ण बजाज के संचालकत्व में प्रारम्भ हुआ। छपाई आदि की सुविधा तथा हिन्दी भाषी प्रदेशों में प्रचार की दृष्टि से प्रकाशन विभाग का कार्यालय सन् १९५५ में वर्धा से वाराणसी लाया गया। उन दिनों विनोवाजी की पदयात्रा बिहार तथा बंगाल में चल रही थी जैसे-जैसे आन्दोलन बढ़ता गया और विचार का विकास होता गया, वैसे-वैसे प्रकाशन का कार्य भी बढ़ता गया। धीरे-धीरे छोटी-छोटी किताबों से लेकर विचार-प्रधान ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया जाने लगा।

बिहार तथा उत्तर प्रदेश से निकलने वाले भूदान साप्ताहिकों को एक करके वाराणसी से भूदान-यज्ञ साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू हुआ। आचार्य दादा धर्माधिकारी इसके सम्पादक थे। जितने समय तक दादा काशी रहे, प्रकाशन-कार्य को उनका पूरा मार्गदर्शन तथा वात्सल्य मिलता रहा। वाराणसी से हिन्दी के अलावा अंग्रेजी तथा उर्दू भाषा के प्रकाशन भी किये जाते रहे। अंग्रेजी में भूदान तहरीक का प्रकाशन भी शुरू हुआ। विभिन्न प्रदेशों की पदयात्राओं के कारण सर्व सेवा संघ का साहित्य गांव-गांव पहुँचने लगा था। विनोवाजी की पदयात्रा में गीता-प्रवचन की काफी खपत होती रही है। वे उस पर अपने हस्ताक्षर देते थे, अतः हजारों लोग गीता प्रवचन खरीदते थे। गीता-प्रवचन के प्रचार के कारण भूदान-आन्दोलन को काफी बल मिला।

विनोवाजी ने अपनी सुदीर्घ पदयात्रा के दौरान अनेक भाषाओं का धार्मिक तथा समन्वयात्मक वांग्मय देखा और सर्वधर्म की दृष्टि से विश्व के प्रमुख धर्मों के मान्य ग्रन्थों के सार भी तैयार किये। नाम घोषासार, कुरान, बाइबिल, भागवत धर्म, जपुजी, मनुस्मृति, विनय पत्रिका, रामायण, उपनिषद, धम्मपद, वेद आदि ग्रन्थों पर विनोवाजी ने जो काम किया है, उसका आध्यात्मिक दृष्टि से बड़ा महत्व रहा। इनमें से अधिकांश ग्रन्थ सर्व सेवा संघ से प्रकाशित हो चुके हैं।

आचार्य दादा धर्माधिकारी के ग्रन्थों की अपनी विशेषताएं हैं। शास्त्रीय लेकिन सरस हृदय को स्पर्श करनेवाली पैनी भाषा में उनके प्रवचन देश के विभिन्न भागों में होते रहे हैं। आपने सर्वोदय-विचार को शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक ढंग से रखा है। दादा के सर्वोदय दर्शन, अहिंसक क्रान्ति की प्रक्रिया, लोकनीति-विचार, स्त्री-पुरुष सहजीवन आदि ग्रन्थों का अपना महत्व है। सर्वश्री धीरेन्द्र मजूमदार, जयप्रकाश नारायण, निर्मला देशपांडे, महात्मा भगवानदीन, काकासाहब कालेलकर, जैनेन्द्र कुमार, अशोक मेहता, बालकोबा भावे, श्री कृष्णदत्त भट्ट आदि लेखकों की रचनाएं भी प्रकाशित हुईं। सर्व सेवा संघ को अब तक लगभग एक सौ लेखकों का कृपापूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। पिछले १६-१७ वर्षों में हिन्दी और अंग्रेजी की लगभग ६०० पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

महादेवभाई की डायरी के प्रकाशन का कार्य बड़ा विशाल है। महादेवभाई सन् १६१७ में गांधीजी के सम्पर्क में आये और सन् १६४२ तक बराबर उनके साथ रहे। गांधीजी के कार्य-कलापों, पत्र-व्यवहार; मुलाकातों, प्रवासों, लेखों आदि की २५ वर्षों की यह डायरी लगभग २० जिल्दों में प्रकाशित होगी। हिन्दी में इसके अब तक १० खण्ड और अंग्रेजी में ८ खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस सम्पूर्ण डायरी में राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास सजीव रूप में अंकित हुआ है। सारा विवरण पढ़ते हुए ऐसा लगता है मानो पाठक चलचित्र की तरह सारे घटना-चक्र को देख रहा है। नयी पीढ़ी के लिए तो यह राष्ट्रीय निधि अत्यन्त उपयोगी है। गांधी-जन्म शताब्दी के वर्ष में विशेषरूप से एक सर्वोदय-साहित्य सेट प्रकाशित किया गया था। इस सेट में गांधीजी तथा विनोबाजी की महत्वपूर्ण तथा बुनियादी ५-६ पुस्तकें हैं, यह सेट लोगों ने काफी पसन्द किया और लगभग दो लाख सेटों की खपत हुई। सेट की इन पुस्तकों में विगत सौ वर्षों का सर्वोदय-विचार का इतिहास तथा विकासक्रम समग्ररूप से आ गया है।

गांधीजी से सम्बन्धित और भी अनेक पुस्तकें समय-समय पर सर्व सेवा संघ से प्रकाशित हुई हैं।

बालकोबाजी भावे का गीता तत्व बोध ग्रंथ इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है। यह ग्रन्थ दो खडों में है। लगभग १००० पृष्ठ के इस विशाल ग्रन्थ में प्रत्येक श्लोक के समस्त मुद्दों पर विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। सरल भाषा में लिखा गया यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण है।

सन् १६७१ में सर्व सेवा संघ प्रकाशन की ओर से विशाल पैमाने पर सर्वोदय साहित्य-प्रसार की योजना बनाई गयी। इसका उद्देश्य यह है कि देश भर की खादी-संस्थाओं के मार्फत सर्वोदय-साहित्य की बिक्री हो। खुशी की बात है कि खादी कमीशन, प्रमाण पत्र समिति तथा क्षेत्र की खादी-संस्थाओं ने इस योजना को काफी पसन्द किया है। खादी खरीददारों को सर्वोदय साहित्य की खरीद पर विशेष छूट देना तय किया है।

देश के विभिन्न रेल्वे स्टेशनों पर भी सर्वोदय-साहित्य के स्टाल खोले गये हैं। इस समय लगभग २१ स्टाल चल रहे हैं। सर्व सेवा संघ के सामने लगभग १०० स्टाल खोलने का लक्ष्य है। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा के मार्ग दर्शन में प्रकाशन का कार्य प्रगति की ओर अग्रसर है।

प्रकाशन का कार्य प्रादेशिक भाषाओं में भी चलता है। लगभग सभी प्रदेशों में प्रकाशन समितियां हैं और वे अपनी भाषाओं में प्रकाशन-कार्य करती हैं।

सर्व सेवा संघ का एक प्रयास यह भी है कि राष्ट्रभाषा की तरह एक राष्ट्रलिपि का भी प्रसार हो। नागरी लिपि में अगर प्रादेशिक भाषाओं की रचनाएं प्रकाशित होती हैं, तो राष्ट्रीय एकता की दिशा में बड़ा काम हो सकता है। विनोबाजी का गीता-प्रवचन ग्रन्थ अनेक भाषाओं में, नागरी-लिपि में प्रकाशित हो चुका है और कुछ पत्रिकाएं भी नागरी लिपि में प्रकाशित होने लगी हैं।

गांधीजी, भूदान-ग्रामदान, शांतिसेना, नयी तालीम, लोकनीति, जीवनी-संस्मरण, प्राकृतिक चिकित्सा, कृषि गौसेवा आदि अनेक विषयों पर सर्वोदय का यह प्रकाशन कार्य पिछले १७-१८ वर्षों से बराबर गतिशील है। संघ का विश्वास है कि सर्वोदय विचार में इतनी सामर्थ्य है कि उससे विश्व में शांति कायम हो सकती है, अहिंसक समाज की स्थापना हो सकती है, शोषण और उत्पीड़न मिट सकता है।

श्री रामकृष्ण आश्रम, धन्तौली (नागपुर)

भगवान श्री रामकृष्णदेव के एक अन्तरंगशिष्य स्वामी शिवानन्दजी ने १९२५ ई. में इस आश्रम का शिलान्यास किया एवं उन्हीं की प्रेरणा से "आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च" के आदर्शानुसार १९२८ ई. से इस आश्रम के विभिन्न कार्यों का छोटे पैमाने पर शुभारम्भ हुआ। क्रमशः विकसित होते-होते अब इस आश्रम द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में निम्नलिखित कार्य सम्पन्न किये जा रहे हैं :-

धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्य-आश्रम में नियमितरूपेण उपनिषद आदि ग्रन्थों का अनुशीलन तथा जनता के लिए प्रवचन इत्यादि होते रहते हैं। आश्रम की ओर से अवतारी विभूतियों के जन्मोत्सव मनाये जाते हैं तथा देश के कई शहरों में आमन्त्रित होकर व्याख्यानादि दिये जाते हैं।

प्रकाशन विभाग—आश्रम के प्रकाशन विभाग की ओर से हिन्दी तथा मराठी भाषा में श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य तथा अन्य धार्मिक साहित्य प्रकाशित किया जाता है। अब तक कुल १६८ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा प्रायः सभी पुस्तकों के अनेकानेक संस्करण भी निकल चुके हैं। आश्रम की ओर से "जीवन—विकास" नामक एक मराठी मासिक पत्रिका भी प्रकाशित होती है जो कि अत्यन्त लोकप्रिय है।

विवेकानन्द विद्यार्थी भवन-नागपुर स्थित भिन्न-भिन्न महाविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले निर्धन और होनहार विद्यार्थियों के लिए आश्रम की ओर से यह छात्रावास चलाया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों के सर्वांगपूर्ण विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

सार्वजनिक ग्रन्थालय तथा निःशुल्क वाचनालय-आश्रम के सार्वजनिक ग्रन्थालय में अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, संस्कृत आदि भाषाओं में प्रायः सभी विषयों की कुल २५,५६५ पुस्तकें हैं तथा निःशुल्क वाचनालय में देश विदेश की १०० से अधिक पत्र पत्रिकाएं तथा समाचार पत्र आते हैं।

निशुल्क औषधालय-नागपुर की गरीब बस्ती में आश्रम की ओर से चलाये जाने वाले निःशुल्क औषधालय में गतवर्ष कुल १,१२,४५६ रोगियों की चिकित्सा की गयी। प्रतिदिन औसतन ३९२ रोगियों ने यहां से औषधि प्राप्त की।

नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद

दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के पश्चात गांधीजी ने लोक शिक्षण हेतु 'यंग इण्डिया' तथा 'नवजीवन' पत्रों का संचालन हाथ में लिया तथा पिछले अनुभव के कारण उन्होंने इस कार्य के लिए स्वतन्त्र-प्रेस लगाना अभीष्ट समझा। इस प्रकार दस हजार रुपयों में एक प्रेस खरीदा गया, जो आज नवजीवन मुद्रणालय के नाम से देखा-जोखा जाता है। नवजीवन संस्थान परिवार के अन्य अंग हैं—नवजीवन ट्रस्ट, नवजीवन प्रेस, नवजीवन कार्यालय तथा नवजीवन प्रकाशन गृह आदि। सन् १९२९ में गांधीजी ने नवजीवन ट्रस्ट का गठन किया तथा स्व. सरदार वल्लभ भाई पटेल इसके अध्यक्ष बनाये गये। वर्तमान में श्री मोरार जी देसाई इसके अध्यक्ष हैं।

देश की आजादी की अहिंसात्मक लड़ाई में नवजीवन संस्थान की विशिष्ट भूमिका रही है। गांधीजी के सम्पादकत्व में निकलने वाले पत्र प्रति सप्ताह देश को नया मन्त्र दे रहे थे तथा प्रकाशन कार्य भी शनैः शनैः प्रगति की ओर उन्मुख हो चला। आज देश में शायद ही कोई पुस्तकालय हो, जिसमें नवजीवन-प्रकाशन की कोई न कोई पुस्तक उपलब्ध न हो।

नवजीवन प्रकाशन गृह गांधीजी की रचनाओं को हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी में प्रकाशित करके देश की बहुमूल्य सेवा कर रहा है। इसने अन्य विचारकों—महादेव भाई देसाई, काका साहब कालेलकर, किशोरलाल भाई मश्रुवाला, आदि की पुस्तकों का भी प्रकाशन किया है। इसके अन्तर्गत अब तक अंग्रेजी में ३००, हिन्दी में २५० और गुजराती में ३८० पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। बापू की आत्मकथा जो विश्व की महत्वपूर्ण पुस्तकों में गिनी जाती है, के अब तक बारह संस्करण निकले हैं तथा २ लाख से अधिक पुस्तकों की बिक्री की गई है। नवजीवन प्रकाशन का भावी कार्य गांधी जी की रचनाओं तथा अन्य गांधी-साहित्य का प्रसार ही रहेगा। नव-साहित्य प्रकाशित कर यह संस्थान गांधी विचार के प्रचार-प्रसार में बराबर सक्रिय रहेगा।

आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर

स्वास्थ्य मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है। पूर्ण स्वास्थ्य हर व्यक्ति के लिये सर्वोपरि आवश्यकता और अनुपम निधि है। जब मनुष्य प्रकृति के जीवन-सम्बन्धी नियमों का उल्लंघन करता है तो उससे शरीर के स्वाभाविक कार्यों में बाधा पड़ती है और रोग उत्पन्न होते हैं। रोगों का कारण मालुम होने पर उसका निवारण सहज हो जाता है अगर मनुष्य बीमार पड़ते ही प्रकृति की शरण ले ले तो बहुत आसानी से निरोग हो जाए। निरोग होना उतना ही आसान है जितना रोगी होना। इसी उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु सन् १९४० में श्री विटठल दास मोदी ने आरोग्य मन्दिर के नाम से इस प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना की। शहर से लगभग १॥ मील और गोरखपुर स्टेशन से २॥ मील की दूरी पर एक विशाल भवन आपको दिखाई देगा जो सन् १९६१ में निर्माण किया गया था जिससे देश के अनेक भागों से आकर असाध्य रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ पाया है।

इस संस्था की ओर से प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें प्रमुख रूप से रोगों की सरल चिकित्सा, दुग्ध कल्प, जीने की कला आदि हैं।

आरोग्य नाम का मासिक पत्र सन् ४७ से प्रतिमाह प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमियों का मार्ग दर्शन करता रहा है। ३० हजार रोगियों ने अब तक इसका लाभ उठाया है।

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

गांधीजी के आशीर्वाद तथा जमनालालजी बजाज की प्रेरणा तथा प्रयत्न से सन् १९२५ में 'सस्ता साहित्य मंडल' की स्थापना श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय की देख रेख में अजमेर में हुई।

उच्च कोटि के हिन्दी साहित्य का निर्माण एवं प्रकाशन करा कर जन-साधारण के लिए सस्ते से सस्ते मूल्य से सुलभ करना ही मंडल का प्रारम्भिक उद्देश्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पुस्तकें लिखाने, उनका संकलन व सम्पादन कराने अन्य भाषाओं से अनुवाद कराने के लिए योग्य व्यक्तियों की सेवायें प्राप्त करना एवं पुस्तकों का तथा पत्रों का प्रकाशन करना आदि कार्य बिना मुनाफे की भावना के किया जाता रहा है।

'मंडल' ने अपने कार्य का शुभारम्भ महात्मा गांधी की सुविख्यात पुस्तक 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' से किया, जो सन् १९२५ में प्रकाशित हुई। शीघ्र ही 'मंडल' ने जन-साधारण, विद्वानों तथा साहित्यकारों का ध्यान आकृष्ट कर लिया। अल्प-काल में छोटी बड़ी दर्जनों पुस्तकें सरल भाषा में प्रकाशित हो गयीं। उनमें कुछ मौलिक कुछ अनूदित तथा प्रामाणिक थीं। मूल्य बहुत ही कम होने से साधारण स्थिति के पाठक भी उन्हें आसानी से खरीदने लगे। सन् १९२८ में मंडल ने 'त्याग भूमि' मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया, वह ऊंचे मान दण्ड के कारण थोड़े समय में ही लोकप्रिय हो गयी। प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने तब इसे हिन्दी की सबसे अच्छी पत्रिका कहा था। सन् १९३२ में तत्कालीन सरकार द्वारा जमानत मांगने से उसका प्रकाशन स्थगित कर दिया गया।

राष्ट्रीय विचारों के कारण 'मंडल' की आठ पुस्तकें जब्त कर दीं और सन् १९३२ में कार्यालय तथा प्रेस पर ताला डाल दिया। 'मंडल' को इस काल में भारी आर्थिक क्षति हुई। विदेशी सरकार की निरंकुशता के आगे न झुकने के कारण सन् १९३३ में प्रेस को बन्द कर दिया गया।

'मंडल' के अधिकांश सहयोगी तथा परामर्शदाता राष्ट्रीय नेता एवं कार्यकर्ता थे और प्रायः जेल में बन्द कर दिये जाते थे। बीच-बीच में आने वाली इन विघ्न-बाधाओं से कार्य की जड़ें जमने में काफी रुकावट होती थी। इसलिए १९३४ में 'मण्डल' का प्रधान कार्यालय अजमेर से दिल्ली ले जाया गया।

प्रारम्भ के आठ नौ वर्षों ही में 'मण्डल' ने अजमेर में सुविख्यात भारतीय तथा विदेशी लेखकों, विचारकों एवं राजनैतिक नेताओं की कोई ६७ पुस्तकें प्रकाशित की जिनमें गांधीजी की

'आत्म-कथा', 'खादी का अर्थशास्त्र', 'गीता बोध', 'क्या करें' ? 'अनीति की राह पर'. तमिल वेद', 'जीवन-साहित्य' एवं टालस्टाय, क्रोपाटकिन आदि पश्चिमी विचारकों की पुस्तकें इत्यादि प्रमुख थीं।

दिल्ली आने पर सबसे बड़ा ग्रन्थ डा० पट्टाभि सीतारमैया-लिखित' कांग्रेस का इतिहास' सन् १९३५ में प्रकाशित हुआ। सन् १९३६ में पंडित जवाहरलाल नेहरू की विश्व विख्यात पुस्तकें 'मेरी कहानी' निकाली। इस महान् लेखक की और भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई। सर्वश्री राजगोपालाचार्य, आचार्य विनोबा, वियोगी हरि, काका साहिब कालेकल, हरिभाऊ उपाध्याय, घनश्यामदास बिड़ला तथा अन्य भारतीय एवं पाश्चात्य लेखकों और विचारकों की पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। 'मंडल' ने सन् १९४० में समाज का अहिंसा के आधार पर नव निर्माण करने के उद्देश्य से 'जीवन साहित्य' नामक मासिक पत्र प्रारम्भ किया।

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के कारण 'मण्डल' का काम फिर से एक बार रुक गया। उस समय की छः शाखाएं बन्द कर देनी पड़ी क्योंकि तत्कालीन सरकार 'मण्डल' की प्रगति के मार्गों में रोड़े अटकाने के लिए सदैव प्रस्तुत रहती थी। इस काल में 'मण्डल' की दो और पुस्तकें जब्त हुई।

इसके बाद स्वतन्त्रता आई, इस महान् उपलब्धि के लगभग छः मास पश्चात हमारे राष्ट्र पिता का उत्सर्ग हो गया। तब 'मण्डल' ने गांधीजी की सम्पूर्ण रचनाएं विधिवत बड़े पैमाने पर हिन्दी में प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया इस ग्रंथ-माला में अब तक लगभग ५००० पृष्ठ के नौ भाग निकल चुके हैं। साथ ही गांधीजी की विचार धारा के व्यापक प्रचार के लिए सन् १९५१ से गांधी डायरी का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया।

अभी अभी 'मण्डल' ने 'नेहरू स्मारक निधि' के सहयोग से राष्ट्रीय महत्व का एक और बड़ा काम हाथमें लिया है, वह है 'सम्पूर्ण जवाहरलाल नेहरू वाङमय' का बीस खण्डों में प्रकाशन। इस महत्वपूर्ण योजना का शुभारम्भ हो गया है; गत १४ नवम्बर को इसके प्रथम खण्ड का विमोचन श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा किया गया। अगले वर्ष सन् १९७४ में इसके चार खंड और प्रकाशित हो जायेंगे तथा आगामी तीन वर्षों में सम्पूर्ण वाङमय प्रकाशित हो जाएगा।

नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी

हिंदी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार और प्रसार करने वाली देश की अग्रणी संस्था है। इसकी स्थापना १६ जुलाई, १८९३ ई. को हुई थी। इसके प्रमुख संस्थापक थे स्व० श्यामसुन्दरदास जी, स्व० पं० रामनारायण जी मिश्र और स्व० ठा० शिवकुमार सिंह जी। यह वह समय था जब अँगरेजी, उर्दू और फारसी का बोलबाला था तथा हिंदी का प्रयोग करनेवाले बड़ी हेय दृष्टि से देखे जाते थे। अतः सभा को अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिये आरंभ से ही प्रतिकूलताओं के बीच अपना मार्ग निकालना पड़ा। किंतु तत्कालीन विद्वतमंडल और जनसमाज की सहानुभूति तथा सक्रिय सहयोग सभा को आरंभ से ही मिलने लगा था, अतः अपनी स्थापना के अनंतर ही सभा ने बड़े ठोस और महत्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लेना आरंभ कर दिया।

आर्यभाषा पुस्तकालय—सभा का यह पुस्तकालय देश में हिंदी का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। स्व० ठा० गदाधरसिंह ने अपना पुस्तकालय सभा को प्रदान किया और उसी से इसकी स्थापना सभा में सन् १८९६ ई० में हुई। विशेषत: १९ वीं शताब्दी के अंतिम तथा २० वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में हिंदी के जो महत्वपूर्ण ग्रंथ और पत्रपत्रिकाएं छपी थीं, उनके संग्रह में यह पुस्तकालय बेजोड़ है। इस समय तक लगभग १५००० हस्तलिखित ग्रंथ भी इसके संग्रह में हो गए हैं। मुद्रित पुस्तकें ड्यूई की दशमलव पद्धति के अनुसार वर्गीकृत हैं। इसकी उपयोगिता एकमात्र इसी तथ्य से स्पष्ट है कि हिंदी में शोध करनेवाला कोई भी विद्यार्थी जब तक इस पुस्तकालय का आलोड़न नहीं कर लेता तब तक उसका शोधकार्य पूरा नहीं होता। स्व० पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, स्व० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', स्व० मयाशंकर याज्ञिक, स्व० डा० हीरानन्द शास्त्री, स्व० डा० श्यामसुन्दर दास, स्व० पं० रामनारायण मिश्र, स्व० डा० संपूर्णानंद तथा स्व० नंद दुलारे वाजपेयी ने अपने अपने संग्रह भी इस पुस्तकालय को दे दिए हैं। जिससे उसकी उपादेयता और बढ़ गई है।

हस्तलिखित ग्रंथों की खोज—स्थापित होते ही सभा ने यह लक्ष्य किया कि प्राचीन विद्वानों के हस्तलेख नगरों और देहातों में लोगों के बेठनों में बँधे बँधे नष्ट हो रहे हैं। अतः सन् १९०० से सभा ने अन्वेषकों को गांव-गांव और नगर-नगर में घर-घर भेजकर इस बात का पता लगाना आरंभ किया कि किनके-किनके यहाँ कौन-कौन से ग्रंथ वर्तमान हैं। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में तो यह कार्य अब तक बहुत विस्तृत और व्यापक रूप में हो रहा है। इसके अतिरिक्त पंजाब, दिल्ली और राजस्थान में भी यह कार्य हुआ है। इस खोज की त्रैवार्षिक रिपोर्ट भी सभा प्रकाशित करती है। सन् १९५२ तक की खोज का संक्षिप्त विवरण भी दो भागों में सभा ने प्रकाशित किया है। इस योजना के परिणामस्वरूप ही हिंदी साहित्य का व्यवस्थित इतिहास तैयार हो सका है और अनेक अज्ञात लेखक तथा ज्ञात लेखकों की अनेक अज्ञात कृतियाँ प्रकाश में आई हैं।

प्रकाशन—उत्तमोत्तम ग्रंथों और पत्रपत्रिकाओं का प्रकाशन सभा के मूलभूत उद्देश्यों में रहा है। अब तक सभा द्वारा भिन्न-भिन्न विषयों के लगभग १,००० ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। त्रैमासिक 'नागरीप्रचारिणी पत्रिका' सभा का मुखपत्र तथा हिंदी की सुप्रसिद्ध शोधपत्रिका है। भारतीय इतिहास, संस्कृति और साहित्य विषयक शोधात्मक सामग्री इसमें छपती है और निर्व्यवधान प्रकाशित की जानेवाली पत्रिकाओं में यह सबसे पुरानी है। मासिक 'हिंदी', 'विधि-पत्रिका' और 'हिंदी रिव्यू' (अंगरेजी) नामक पत्रिकाएं भी सभा द्वारा निकाली गई थीं किंतु कालांतर में वे बंद हो गईं। पिछले पाँच वर्षों से 'नागरी पत्रिका' नामक एक मासिक पत्रिका भी सभा प्रकाशित कर रही है जिसमें हिंदी के अधुनातन ग्रंथों का परिचय, समीक्षा और हिंदी जगत् की नव्यतम गतिविधियों की जानकारी और उपयोगी लेखादि रहते हैं। सभा के उल्लेखनीय प्रकाशनों में हिंदी शब्दसागर, हिंदी व्याकरण, वैज्ञानिक शब्दावली, सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, भिखारीदास, पद्माकर, जसवंतसिंह मतिराम आदि मुख्य-मुख्य कवियों की ग्रंथावलियाँ, कचहरी-हिंद-कोश, द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, संपूर्णानंद अभिनंदन ग्रंथ, हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास और विश्वकोश आदि ग्रंथ मुख्य हैं।

बिहार राष्ट्र भाषा परिषद : पटना

बिहार राष्ट्रभाषा–परिषद् की स्थापना सन् 1950 में, बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत एक राजकीय संस्था के रूप में हुई और योजनानुसार इसका कार्यारम्भ हुआ। हिन्दी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं और उनके साहित्य के संवर्धन और विकास के लिए स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद जो भी प्रयास इस देश में किये गये हैं, उनमें बिहार सरकार द्वारा बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् की स्थापना सबसे पहला प्रयास है। यहां ज्ञातव्य है कि इसके प्रथम पूर्णकालिक मंत्री स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय की साधना से इसकी प्राण-प्रतिष्ठा हुई।

आधुनिक भारतीय भाषायों के साहित्य के संवर्धन, भारत की राष्ट्रभाषा तथा बिहार की राजभाषा हिन्दी में कला, विज्ञान एवं अन्यान्य विषयों के मौलिक तथा उपयोगी ग्रंथों के प्रकाशन और बिहार की प्रमुख बोलियों के अनुशीलन की समुचित व्यवस्था करना इस परिषद् का प्रमुख उद्देश्य है।

परिषद् के नीति-निर्धारण, प्रशासन और कार्य-संचालन के लिये दो समितियां संघटित है—(1) सामान्य समिति और (2) संचालक-मण्डल। परिषद् के मुख्यतः ये नौ विभाग कार्यरत है:—(1) प्रकाशन विभाग, (2) प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध विभाग (3) लोक-भाषा-अनुसंधान विभाग (4) बिहार का साहित्यिक इतिहास विभाग (5) विद्यापति (स्मारक अनुसंधान) विभाग (6) भारतीय अब्दकोष विभाग, (7) अनुसंधान पुस्तकालय और (8) भाषा सर्वेक्षण विभाग और (9) स्थापन विभाग।

परिषद् के प्रस्तावित कार्यों में बिहार के सभी जिलों के गजेटयर का हिन्दी अनुवाद, समस्त भारतीय वागमेय के और विशेषतः हिन्दी के विशिष्ट साहित्यकारों की हस्तलिपियों और उनके द्वारा कलाकृत वस्तुओं का संग्राहलय बनाना, इंसाइक्लोंपीडिया ऑव रेलिजन एंड एथिक्स" के अनुरूप हिन्दी में संस्कृति और धर्म का विश्वकोष प्रस्तुत करना, बिहार की आदिवासी भाषाओं के अनुशीलन परिशीलन के लिए परिषद् के अन्तर्गत आदिवासी की स्थापना करना आदि प्रमुख है।

परिषद् के अब तक सत्रह वार्षिकोत्सव हो चुके है, जिनमें ग्यारह वार्षिकोत्सवों के अध्यक्ष ग्यारह भारत प्रसिद्ध विद्धवानों के अध्यक्षीय भाषाओं का संग्रह राष्ट्रभाषा-हिन्दी: समस्यायें और समाधान 'के नाम से प्रकाशित हो चुका है। परिषद् के प्रकाशन विभाग द्वारा सन् 1971 ई० तक साहित्व एवं विज्ञान के विभिन्न विषयों पर लगभग डेढ़ सौ उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। सन्- 1960 ई० से भारतीय 8 वदकोश" नामक वार्षिक ग्रन्थ प्रतिवर्ष प्रकाशित होता है। परिषद् के समस्त बहु प्रशासित प्रकाशनों में अबतक उन्नीस ग्रन्थ उच्चस्तरीय राजकीय एवं सार्वजनिक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं, परिषद् ने दक्षिण की भाषाओं में तेलगु की रंगनाथ रामायण" एवं तामिल को कम्बरामायण का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया है। वार्षिकोत्सवों के अवसर पर पढ़े जाने वाले निबंधों में संविधान स्वीकृत भाषाओं और उनके साहित्य के निबन्धों का संकलन चतुर्दश भाषा निबन्धावली के नाम से प्रकाशित किया गया हैं और लोक भाषाओं के निबन्धों में पंद्रह लोक-भाषाओं और उनके साहित्य के निबन्धों का संग्रह पंचदश लोक-भाषा-निबंधावली के नाम से प्रकाशित हुआ है।

सर्वोदय सम्मेलन, अजमेर के अवसर पर वाणी मन्दिर के साहित्य स्टाल पर सन्त विनोबा के स्वागत का दृश्य ।

सर्वोदय विचारक श्री शंकरराव देव सर्वोदय साहित्य भण्डार, अजमेर का दीपक प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ।

वाणी मन्दिर रजत जयन्ति व्याख्यान-माला

रजत जयन्ति व्याख्यान-माला के अन्तर्गत राज्य विधान सभा के अध्यक्ष
श्री रामकिशोर व्यास की अध्यक्षता में सुप्रसिद्ध साहित्यकार
श्री वियोगी हरि "सत्साहित्य-निर्माण और प्रसार"
विषय पर भाषण करते हुए।

सर्वोदय मनीषी श्री दादा धर्माधिकारी 'नव समाज रचना में सत्साहित्य का योग' विषय पर भाषण करते हुए।

वाणी मन्दिर समिति द्वारा आयोजित साहित्य प्रदर्शनी का
राज्य के तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री शिवचरण माथुर
निरीक्षण करते हुए।
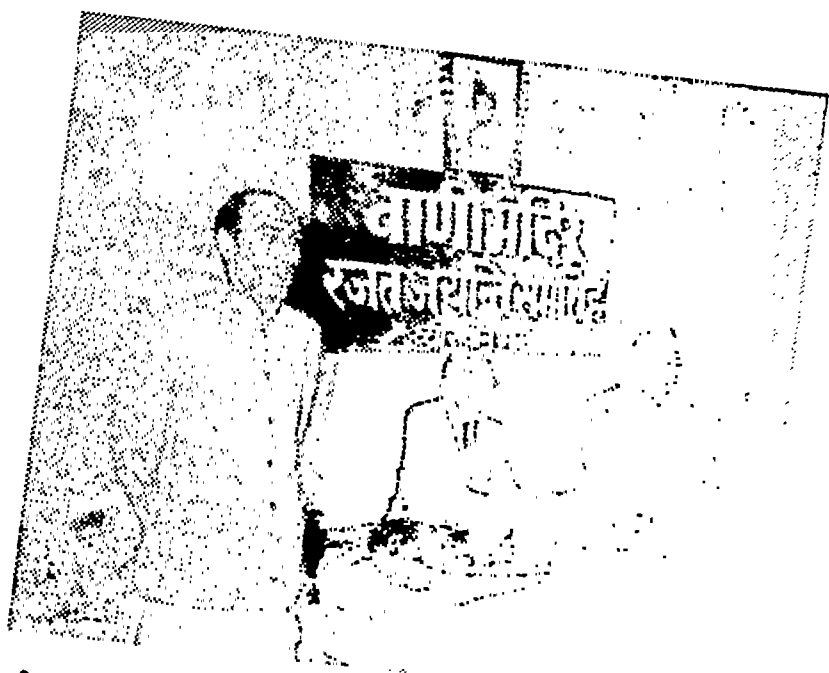
केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय के निदेशक श्री देशराज कालिया (मध्य में)
ने 'सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा' पर भाषण किया। समिति के मन्त्री
श्री लक्ष्मीचन्द भण्डारी स्वागत करते हुए।
प्रो० प्रवीणचन्द्र जैन ने अध्यक्षता की।

सर्वश्री सिद्धराज ढड्ढा, भोगीलाल पण्ड्या तथा शिवचरण माथुर
वाणी मन्दिर समिति के सदस्यों एवम् कार्यकर्त्ताओं के साथ।

वाणी मन्दिर के जयपुर स्टेशन स्थित सर्वोदय साहित्य स्टाल का
वेस्टर्न रेल्वे के जनरल मैनेजर श्री वी० एम० कोल
उद्घाटन करते हुए।

वाणी मन्दिर : प्रगति के पच्चीस वर्ष

श्री लक्ष्मीचन्द्र भण्डारी

जयपुर राज्य प्रजा मंडल के वार्षिक अधिवेशन पर आमंत्रित स्वर्गीय श्री सम्पूर्णानन्दजी की प्रत्यक्ष प्रेरणा पाकर सर्वोदय कार्यकर्ता श्री वसन्तलाल मुकीम ने साहित्य के माध्यम से सर्वोदय विचार-प्रसार की उदात्त भावना से प्रेरित होकर अपने अल्प साधनों से ही जौहरी बाजार में सर्वोदय साहित्य की विक्री का व्यक्तिगत प्रयास प्रारंभ किया। उनके इस प्रयास ने सर्वोदय प्रेमियों का ध्यान आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप 'युगान्तर प्रकाशन' के सहयोग से चौड़े रास्ते के मौजूदा स्थान पर गांधी-जयन्ती–2 अक्टूबर 1946 को वाणी मंदिर के नाम से सर्वोदय साहित्य का यह प्रतिष्ठान स्थापित हुआ। सन् 1952 तक यह क्रम चलता रहा। दैनिक लोकवाणी के हस्तान्तरण होने के साथ ही यह निजी संस्थान के रूप में चलने लगा।

गांधीजी के ट्रस्टीशिप के सिद्धांत से प्रेरित होकर पुनः श्री मुकीम जी ने 26 जनवरी 1956 को इस संस्थान का स्वामित्व सर्वोदय कार्य के निमित्त प्रांत की प्रमुख संस्था राजस्थान समग्र सेवा संघ को समर्पित कर दिया, किन्तु संघ के आग्रह पर व्यवस्था का भार फिर भी श्री मुकीम जी के ही जिम्मे रहा।

वाणी मंदिर का संचालन राजस्थान समग्र सेवा संघ द्वारा प्रारंभ होने के साथ उस पर अत्यन्त महत्वपूर्ण जिम्मेदारी यह आई कि संत विनोवा की राजस्थान पद-यात्रा के 75 पड़ावों पर साहित्य विक्री के स्टाल लगाने का भार उसे सौंपा गया, जिसे उसने वखूवी निभाकर राजस्थान के एक कोने से दूसरे कोने तक सर्वोदय साहित्य का प्रचार का अपना कार्य-क्रम भी आगे वढ़ाया। संत विनोवा अपनी पद-यात्रा के हर पड़ाव पर सार्वजनिक सभा के वाद 'गीता-प्रवचन' पर अपने हस्ताक्षर करते थे। अतः उसकी विक्री का विशेष प्रवन्ध रखना अनिवार्य था।

राजस्थान में विनोवाजी की पद-यात्रा से अनुभव में आया कि साहित्य की वढ़ती हुई मांग को पूरा करने में खादी एवम् रचनात्मक संस्थाओं को आगे आना चाहिए और अपने खादी भंडारों को सर्वोदय साहित्य विक्री के केन्द्र वनाना चाहिए। इसी सन्दर्भ में राजस्थान खादी संघ ने अपने सव केन्द्रों पर साहित्य रखने के साथ ही सन् 1962 से वाणी मंदिर की व्यवस्था भी अपने हाथ में ले ली। इधर राजस्थान

खादी-ग्रामोद्योग संस्था संघ ने भी साहित्य-प्रसार का काम प्रारम्भ कर दिया था। इस व्यवस्था से वाणी मंदिर के कार्य का कुछ विस्तार तो हुआ, पर यह भी अनुभव आया कि खादी संस्थाओं की मुख्य प्रवृत्ति खादी होने से साहित्य-प्रसार का स्थान गौण ही रहता है।

अतः साहित्य-प्रसार को सम्मिलित शक्ति और दृष्टि मिले, इस विचार से साहित्य का सर्वथा स्वतन्त्र संगठन बनाने का निश्चय हुआ। 15 नवम्बर 1968 से राजस्थान समग्र सेवा संघ, राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ तथा राजस्थान खादी संघ के संयुक्त प्रयास से इस संस्थान को **'वाणी मन्दिर समिति'** नाम से पंजीवद्ध संस्था के रूप में परिवर्तित करा दिया गया। अप्रेल 1969 से यह समिति विधिवत् कार्य करने लगी है।

वाणी मंदिर की प्रवृति के पीछे शुरू से ही सत्साहित्य के प्रचार की दृष्टि रही है। इस उद्देश्य से वाणी मन्दिर ने अपने व्यापार का दायरा सत्साहित्य तक ही सीमित रखा है। सत्साहित्य के प्रचार के लिए दुकान की बिक्री तक सीमित न रहकर वाणी मन्दिर द्वारा समय समय पर स्कूल कालेजों में साहित्य-प्रदर्शनियां भी लगायी गयी। विश्व-विद्यालय में काउन्टर पर साहित्य रखकर सेल्फ सर्विस के आधार पर बिक्री का आयोजन किया गया। वाणी मंदिर ने सहयोगी-परिवार की योजना द्वारा सत्साहित्य प्रेमियों से सम्पर्क रखने का सिलसिला भी चालू किया, जो कई वर्षों तक चला। समय समय पर गोष्ठियां भी आयोजित की जाती रही हैं।

अजमेर में अ. भा. सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर सर्वोदय साहित्य की स्टाल में वाणी मंदिर का भी मुख्य स्थान था। इसी प्रकार राजस्थान के प्रांतीय सर्वोदय सम्मेलनों में हटूण्डी, शिवदासपुरा, सुवाणा, जैसलमेर, सुजानगढ़, मकराना, बांरा, नीम का थाना, टोंक, खेजड़ावास, जयपुर आदि के अवसरों पर साहित्य स्टाल लगायें गये। इसी क्रम में खादी, गोसेवा–सम्मेलनों तथा कांग्रेस अधिवेशन आदि अन्य अवसरों पर भी स्टाल लगाये गये।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन की ओर से देश में जगह-जगह स्वतन्त्र साहित्य भंडारों की योजना का विस्तार होने लगा। इस योजना के अन्तर्गत राजस्थान में अजमेर शहर में तथा स्टेशन पर साहित्य स्टाल की प्रवृत्ति चलाई गई। प्रमुख सर्वोदय विचारक श्री शंकरराव देव ने अजमेर साहित्य भंडार का उद्घाटन किया।

सद् व सर्वोदय साहित्य के प्रति प्रेम रखने वाले मित्रों का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त करने तथा उनको वाणी मंदिर के साथ निकटता के सूत्र में बांधने की दृष्टि से एक सहयोगी सदस्य योजना चालू की गई, जिसके अनुसार जयपुर शहर के अलावा राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के लगभग 500 साहित्य प्रेमी वाणी मन्दिर परिवार के सदस्य बने हैं। समय समय पर उसके कई एक सम्मेलन व विचार-गोष्ठियां आयोजित की गईं, जिनमें अहिंसक समाज रचना की दृष्टि से विचार-प्रसार को बल दिया एवम् सद्साहित्य के संगठित प्रयास की आवश्यकता प्रतिपादित की गई।

गांधी जन्म-शताब्दी

वाणी मंदिर समिति के गठन के बाद प्रथम वर्ष ही गांधी जन्म-शताब्दी का वर्ष होने से उसे गांधी-साहित्य प्रसार में योगदान करने का सौभाग्य मिला। इस कार्य में उसे सर्व सेवा संघ, प्रकाशन विभाग तथा राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग संस्था संघ तथा अन्य खादी संस्थाओं का तथा सरकार के शिक्षा तथा पंचायत विभाग, समाज व सहकारी विभाग का सहयोग मिल सका, जिसके फलस्वरूप उसको अपने प्रयास में सफलता प्राप्त हो सकी।

गांधी जन्म-शताब्दी के अवसर पर 2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर 69 तक वाणी मंदिर के सामने एक साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन राज्य के तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री शिवचरण माथुर ने किया।

इसी वर्ष जयपुर रेल्वे स्टेशन पर सर्वोदय साहित्य के स्टाल का श्री बी. एम. कौल जनरल मैनेजर वेस्टर्न रेल्वे के कर कमलों द्वारा 18 फरवरी को शुभारंभ किया गया। स्टाल की व्यवस्था एवं सफलता के प्रति वेस्टर्न रेल्वे बोर्ड तथा सर्व सेवा संघ ने संतोष व्यक्त किया है।

वर्तमान में सर्वोदय साहित्य भंडार, अजमेर, वाणी मंदिर, जयपुर तथा अजमेर व जयपुर रेल्वे स्टेशनों पर सर्वोदय साहित्य स्टाल के नाम से विक्री केन्द्र सुचारू रूप से चल रहे हैं।

वाणी मन्दिर समिति द्वारा विशेष आर्थिक योजना बनाई गई है। इसके अन्तर्गत संरक्षक सदस्य, आजीवन सदस्य तथा सदस्य क्रमशः एक हजार रु., दो सो इक्यावन रु. तथा दो रुपये वार्षिक के सहयोगी बनाये जा रहे हैं। जिसके अन्तर्गत वर्तमान में निम्न संस्थाओं का सहयोग मिला है :—

संरक्षक सदस्य

1. राजस्थान खादी संघ, खादीबाग (जयपुर)
2. राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग संस्था संघ, जयपुर
3. राजस्थान समग्र सेवा संघ, जयपुर
4. सर्व सेवा संघ, प्रकाशन विभाग, वाराणसी
5. ऊनी खादी-ग्रामोद्योग संस्थान, बीकानेर

आजीवन सदस्य

1. खादी-ग्रामोद्योग सघन विकास समिति, बस्सी
2. अलवर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ, अलवर
3. टोंक जिला खादी-ग्रामोदय समिति, टोंक
4. क्षेत्रीय खादी-ग्रामोद्योग समिति, बांदीकुई
5. भरतपुर जिला खादी-ग्रामोदय समिति, भरतपुर
6. श्री धन्नालाल शारदा ट्रस्ट कलकत्ता

रजत-जयन्ती समारोह

पिछले कार्य का सिंहावलोकन तथा भावी योजना और कार्यक्रम पर समुचित विचार-विमर्श का लक्ष्य ही संस्था का रजत-जयंती समारोह आयोजन करने के मूल में रहा है। वाणी मन्दिर समिति ने इस कार्य के संयोजन हेतु एक समिति का गठन किया। श्री जवाहिरलाल जैन इस समिति के संयोजक हैं। रजत-जयंती समारोह के अन्तर्गत स्मारिका-प्रकाशन, विचार-गोष्ठियों का आयोजन तथा साहित्य-प्रदर्शनी आदि के कार्यक्रम निश्चित किये गये।

रजत-जयंती समारोह व्याख्यान माला की शुरुआत सर्वोदय मनीषी दादा धर्माधिकारी के व्याख्यान से हुई। गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, जयपुर में दिनांक २६-११-७३ को पूज्य दादा का प्रथम भाषण **'नव समाज रचना में सद् साहित्य का योग'** विषय पर हुआ। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा ने सभा की अध्यक्षता की। इस अवसर पर काफी संख्या में रचनात्मक कार्यकर्ता तथा नगर के बुद्धिजीवी लोग उपस्थित थे।

दादा ने अपने भाषण में सद्-साहित्य के लिए समाज में मांग, आकांक्षा पैदा किये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने कहा कि ऐसे साहित्य का बाजारु मूल्य चाहे न हो, पर समाज में आमूलाग्र परिवर्तन करने की आकांक्षा जगाने की ताकत उसमें होनी चाहिए। दादा ने विचार-शक्ति के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला।

आरंभ में रजतजयन्ति समारोह समिति के संयोजक श्री जवाहिरलाल जैन ने पूज्य दादा का वाणी मंदिर समिति की ओर से हार्दिक अभिवादन किया तथा समिति के मन्त्री ने श्री लक्ष्मीचन्द भण्डारी वाणी मन्दिर की प्रगति की जानकारी दी। श्री बसन्तलाल बगोचीवाला ने आगन्तुकों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का प्रारंभ वीर-बालिका विद्यालय की छात्राओं के सरस्वती गान से हुआ।

इस व्याख्यान-माला का दूसरा भाषण दि० २५-१२-७३ को केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय दिल्ली के निदेशक श्री देशराज कालिया का **'पुस्तकालय और राष्ट्रीय विकास'** विषय पर हुआ। स्थानीय सन्मति पुस्तकालय, सेठीनगर में मा० मोतीलाल संघी स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत इसका मिलाजुला आयोजन किया गया था। सुप्रसिद्ध विद्वान प्रोफेसर प्रवीणचन्द्र जैन ने अध्यक्षता की। श्री कालिया ने अपने भाषण में लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यापक शिक्षा प्रसार की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने बताया कि लोकशिक्षण के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय उपयोगी साधन हैं। श्री कालिया ने 'राजस्थानियाना' के अन्तर्गत राजस्थान से संबंधित साहित्य सामग्री संग्रह पर बल दिया।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा अखिल भारत हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री वियोगी हरिजी का इस क्रम में तृतीय भाषण दि० २४ फरवरी १९७४ को सद्-साहित्य निर्माण और प्रसार' विषय पर हुआ। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामकिशोर व्यास ने अध्यक्षता की। श्री वियोगी हरिजी ने लोकहित में सुरुचि-पूर्ण साहित्य के निर्माण और प्रसार की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने हिन्दी साहित्य के दुर्बल अंगों को पुष्ट बनाये जाने पर जोर दिया। आपने राजस्थान में उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण का अनुरोध किया।

जहां तक स्मारिका-प्रकाशन का सम्बन्ध है, 'राजस्थान में पुस्तकालय-सेवा' विषय पर प्रकाशित हो रही यह स्मारिका इस तरह का प्रथम प्रयास कहा जा सकता है। इसमें प्रदेश के सरकारी, सार्वजनिक तथा महत्वपूर्ण निजी पुस्तकालयों की जानकारी एकत्रित की गई है। प्रायः सभी जिलों के पुस्तकालयों का विवरण संग्रहीत किया गया है। प्रदेश भर के महाविद्यालयों तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों के सम्बन्ध में इसमें जानकारी दी गई है। पुस्तकालय-विज्ञान से संबंधित विचारपूर्ण लेख भी इसमें हैं। कहना न होगा कि विद्वान लेखकों तथा प्रदेश के पुस्तकालयाध्यक्षों आदि के उदारतापूर्ण सहयोग से ही इस स्मारिका का प्रकाशन संभव हो सका है। प्रदेश की खादी-ग्रामोद्योग संस्थाओं तथा अन्य प्रतिष्ठानों ने हमारे निवेदन पर विज्ञापन प्रदान कर बहूमूल्य सहयोग प्रदान किया है, एतदर्थ आभारी हैं।

साहित्य बिक्री : एक दृष्टि में

वर्ष 67-68	—	38,421)
वर्ष 68-69	—	30,507)
वर्ष 69-70	—	1,33,589)
वर्ष 70-71	—	63,051)
वर्ष 71-72	—	65,085)
वर्ष 72-73	—	90,807)
वर्ष 73-74	—	1,45,021)

भावी योजनायें

राज्य में सर्वोदय साहित्य की दिशा में संगठित प्रयास के लिए आर्थिक सुदृढ़ता अनिवार्य है और साथ ही सभी रचनात्मक संस्थाओं एवं साहित्य प्रेमी लोगों का निरन्तर सहयोग भी अपेक्षित है। इसी आशय से वाणी मन्दिर समिति के विधान में संस्थागत एवं व्यक्तिगत सदस्यता के समावेश के साथ संस्थापक सदस्य, संरक्षक सदस्य एवं सहयोगी सदस्यों सभी तरह का ध्यान रखकर उनका सहयोग प्राप्त करने की गुंजाइश रखी गई है। सन्तोष का विषय है कि इस दिशा में सहयोग मिलने लगा है।

इस संस्था की भावी योजना है कि राज्य में जहां 2 सम्भव हो, आर्थिक दृष्टि से सक्षम साहित्य भण्डार तथा स्टेशनों पर बुक स्टाल खोले जावें और उनके जरिये आबालवृद्ध सभी प्रकार के पाठकों के लिए सद्-साहित्य एवं विशेषतः सर्वोदय साहित्य उपलब्ध कराकर समाज में विचार क्रांति के बीज बोये जावें, ताकि देश व राज्य में जो रचनात्मक कार्यक्रम चालू है, तथा नई समाज रचना की दृष्टि से ग्रामदान आंदोलन चलाया जा रहा है, और जहां कहीं नैतिक उत्थान के कार्यक्रम हाथ में लिये जावें, उनके लिए जनता में अनुकूल वातावरण का निर्माण हो सके।

वाणी-मन्दिर समिति की यह कल्पना है कि राजस्थान के प्रत्येक जिले में इसकी शाखा हो, सारे जिलों के साहित्य प्रेमी सत्साहित्य के प्रसार में संगठित होकर योगदान करें तथा साहित्य के अध्ययन, मनन, विचार विनिमय और कार्यक्रम के द्वारा अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को उन्नत और समृद्ध करें।

हर्ष का विषय है कि सर्व सेवा संघ प्रकाशन के विशेष प्रयत्न से तथा खादी ग्रामोद्योग कमीशन की स्वीकृति तथा खादी संस्थाओं के सहयोग से देश भर में एक करोड़ की साहित्य सर्वोदय प्रसार योजना बनी है। 1 अगस्त 1971 को जिसका समारम्भ प्रदेश के लिए तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री पूनमचन्द विश्नोई द्वारा खादी-घर में किया गया था। इस योजना के अन्तर्गत खादी के ग्राहकों को रियायती कीमत में सर्वोदय साहित्य मिल रहा है। वाणी मन्दिर समिति का प्रयास रहेगा कि खादी भण्डारों से निरन्तर संपर्क रखकर सर्वोदय साहित्य उन्हें सुलभ कराया जाय। इस दृष्टि से समिति की साहित्य सृजन एवं प्रकाशन कार्यक्रम हाथ में लेने की भी योजना हैं।

साहित्य प्रेमी महानुभावों से व्यक्तिगत सम्पर्क रखने की भावना से प्रान्त के वरिष्ठ एवं अनुभवी रचनात्मक कार्यकर्ता सर्व श्री सिद्धराज ढड्ढा, श्री गोकुलभाई भट्ट, श्री प्रेमसुख तोषनीवाल, श्री रामेश्वर अग्रवाल, श्री गोकुल लाल असावा, श्री राजरूप टांक, श्री भोगीलाल पंड्या आदि महानुभावों से बराबर सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहा है।

वाणी मंदिर की प्रगति में श्री छीतरमल लुहाड़िया, जो प्रारंभ से ही इससे सम्बन्धित रहे हैं, का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसी प्रकार श्री बसंत-लाल बगीचीवाला की सेवायें राजस्थान खादी संघ से हमें प्राप्त हुई, इस उदारता पूर्ण सहयोग के प्रति हम संघ के कृतज्ञ हैं। श्री शिवशंकर शर्मा अजमेर साहित्य भंडार को परिश्रम पूर्वक संभाले हुए हैं—एतदर्थ इन सभी साथी कार्यकर्त्ताओं के प्रति आभारी हैं। स्मारिका-प्रकाशन में सर्व श्री रामेश्वर विद्यार्थी, चन्द्र प्रकाश गुप्ता, हिम्मतलाल नेगी, रतनलाल सनाढ्य, छाजूसिंह चांपावत, प्रकाश मुहणोत, महेन्द्र कुमार जैन आदि का सहयोग रहा है। स्मारिका के मुख पृष्ठ पर अंकित सरस्वती के चित्र के लिए हम मुनि जिन विजय अभिनन्दन ग्रंथ समिति के ऋणी

हैं। हमारी अल्प-स्मृति के कारण यदि किसी महानुभाव का नाम उल्लेख होने से रह गया हो, तो वे हमें क्षमा करेंगे तथा आशा है वे ऐसी अकिंचन वातों को अपने हृदय में स्थान नहीं देंगे।

इस प्रकार विगत पच्चीस वर्ष पूर्व सत्साहित्य प्रसार के जिस पादप का बीजारोपण हुआ था, वह आज विशाल वृक्ष के रूप में शाखा-प्रशाखाओं सहित विद्यमान है। वाणी मन्दिर का यह कारवां अपने मिशन पर दृढ़ता किन्तु नम्रता के साथ बढ़ने को पुनः संकल्पबद्ध हुआ है। आशा है प्रदेश की रचनात्मक संस्थाओं और साहित्य-प्रेमीजनों का सहयोग हमें बराबर मिलेगा। कहना न होगा कि हमारे देश का नवनिर्माण यदि लोकतान्त्रिक व्यवस्था में होना है, तो प्रेरणादायी सद्-साहित्य का अधिकाधिक प्रसार एक बुनियादी कार्यक्रम है।

संचालक मंडल : 1973

1.	श्री पं० यज्ञदत्त उपाध्याय	अध्यक्ष
2.	,, पं० महारुद्र मिश्र	उपाध्यक्ष
3.	,, पूर्णचन्द्र जैन	सदस्य
4.	,, जवाहिरलाल जैन	,,
5.	,, छीतरमल गोयल	,,
6.	,, रामवल्लभ अग्रवाल	,,
7.	,, राधाकृष्ण बजाज	,,
8.	,, वसन्तलाल मुकीम	,,
9.	,, दुर्गाप्रसाद अग्रवाल	,,
10.	,, भोजराज बाफणा	,,
11	,, वसन्तलाल बगीचीवाला	,,
12.	,, रामदास शर्मा	,,
13.	,, छीतरमल लुहाड़िया	,,
14.	,, रामेश्वर विद्यार्थी	,,
15.	,, लक्ष्मीचन्द भण्डारी	मंत्री
16.	,, राधेश्याम गुप्ता	सह, मन्त्री

हाल ही में वाणी मन्दिर समिति के पदाधिकारियों के नव निर्वाचन में श्री रामवल्लभ अग्रवाल तथा श्री राधेश्याम गुप्ता क्रमशः अध्यक्ष और मन्त्री निर्वाचित हुए हैं।

—लक्ष्मीचन्द भण्डारी

कतिपय सम्मतियां :

…………वाणी मंदिर के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

—जयप्रकाश नारायण

मैंने सर्वोदय साहित्य भंडार देखा। दूसरी जगह जो नहीं मिलती, वैसी एक पुस्तक मुझे यहां मिली। भंडार की उपयोगिता का मैं इसे द्योतक मानता हूं।

—दादा धर्माधिकारी

सर्वोदय साहित्य स्टाल देखा। सब दिशामें इसका प्रचार, प्रसार एवं समादर हो।

—वियोगी हरि

जयपुर स्टेशन पर सर्वोदय साहित्य स्टाल यह एक सत्साहित्य प्रचार का प्रयास है। सद् साहित्य के साथ-साथ आंदोलन की पुस्तकें भी थोड़ी अधिक रखी जायें, तो अच्छा होगा। मैं इस स्टाल की उत्तरोतर प्रगति की कामना करता है।

—ठाकुरदास बंग
मंत्री, सर्व सेवा संघ

जयपुर स्टाल मे साहित्य का चयन अच्छा है। मेरा रेल्वे अधिकारियों से आग्रह है कि वे अगर दैनिक समाचार पत्र भी रखने की अनुमति दे दें, तो सद्-साहित्य के प्रचार में बढोतरी होगी, साथ ही आय भी बढेगी।

—श्रीराम तिवारी
संगठक, गांधी शांति प्रतिष्ठान

सर्वोदय साहित्य स्टाल को आज देखा। आम लोगों को अच्छा विचारणीय साहित्य मिले, यह, अच्छी बात है। स्टाल की व्यवस्था व साज-सज्जा भी ठीक है।

—नवलकिशोर शर्मा
सदस्य, लोकसभा

रेल्वे स्टेशन पर अच्छा साहित्य उपलब्ध करने की योजना व विचार सराहनीय एवं अनुकरणीय है। पुस्तकों का चयन भी सुन्दर है। आशा है, यात्री इसका पूरा उपयोग करेंगे।

—जगन्नाथसिंह मेहता

जयपुर स्टेशन पर वाणी मंदिर द्वारा संचालित सर्वोदय साहित्य स्टाल एक वास्तविक आवश्यकता की सफल पूर्ति है। देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण पोषण के लिए ऐसी स्टालों का वहुत उपयोग है।

—आनन्दीलाल रूंगटा

समय-समय पर विद्वानों, विचारकों तथा अन्य महानुभावों ने वाणी मंदिर तथा उसके केन्द्रों पर पधार कर मार्गदर्शन करने की कृपा की है, एतदर्थ हम उन सभी के प्रति आभारी हैं।

एक विशिष्ट पुस्तकमाला
प्रमुख लेखकों की अपनी पसन्द की कहानियां विशेष भूमिकाओं सहित
मेरी प्रिय कहानियां
कहानियां बहुत लिखी जाती हैं परन्तु उनमें से कुछ ही साहित्य में स्थायी स्थान प्राप्त करती हैं। हिन्दी में अनेक लेखकों ने श्रेष्ठ कथाकार के नाते ख्याति अर्जित की है।उन सभी की चुनी हुई कहानियों को सुनियोजित रूप में सुलभ करना इस माला का उद्देश्य है। इनमें क्रमशः सभी प्रमुख कहानीकार प्रकाशित किए जा रहे हैं और कहानियों का चुनाव भी अपने संपूर्ण लेखन में से उन्होंने स्वयं किया है। इसके अतिरिक्त उनकी शैली, कथ्य, विचारधारा आदि पर प्रकाश डालने की दृष्टि से प्रत्येक में उनकी विशेष रूप से लिखी भूमिकाएं भी हैं।
अब तक प्रकाशित कहानीकार
* अमृतलाल नागर
* विष्णु प्रभाकर
* इलाचन्द्र जोशी
* यशपाल
* भगवतीप्रसाद वाजपेयी
* उपेन्द्रनाथ अश्क
आचार्य चतुरसेन
बलवन्त सिंह
मन्नू भंडारी
रांगेय राघव
कृश्न चन्दर
कमलेश्वर
अमृत राय
निर्मल वर्मा
शिवानी
मोहन राकेश
अमृता प्रीतम
महीप सिंह
प्रत्येक का मूल्य: पांच रुपये
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

गांधी आश्रम सुजानगढ़ (चुरू)
राजस्थान की प्रथम श्रेणी की चौखला ऊन से बने
वढ़िया कोटिंग (चार तार)
मलाई शाल, लेडीज शाल (तीन तार)
कम्वल डिजाइनदार, होजरी स्वेटर, जर्सियां, मफलर, मोजे।
हमारे विक्री भण्डार—चुरू, सुजानगढ़, श्री डूंगरगढ़।
उत्पादन—६ लाख ५० हजार (७२-७३)
विक्री—२ लाख फुटकर तथा ६ लाख २५ हजार थोक विक्री।
संचालक मंडल के सदस्य :—
श्री भोगीलाल पंड्या, श्री लादूराम वर्मा, श्री दादेराव राजोतिया
श्री माणकचन्द रोठिया, श्री नथमल मूंदडा
श्री देवीदत्त पन्त
अध्यक्ष
कृष्णचन्द्र मिश्रा
मंत्री
होशियार विद्यार्थियों को बैंक ऑफ़ बड़ौदा की आर्थिक सहायता
कॉलेज की शिक्षा, टेक्नीकल या व्यावसायिक विषयों में पोस्ट ग्रेजुएट या डिप्लोमा शिक्षण और विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने के लिये बैंक ऑफ़ बड़ौदा की आर्थिक सहायता उपलब्ध है।
अधिक जानकारी के लिये अपने नजदीक की बैंक ऑफ़ बड़ौदा शाखा के एजेन्ट के पास आइये। वह आपको मदद करेंगे!
BANK OF BARODA
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
IES
N. S. Novelties
लोकप्रिय
घटनाचक्र पर
चर्चाएं पढ़िये
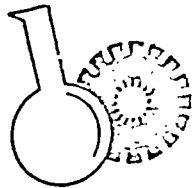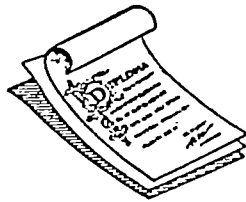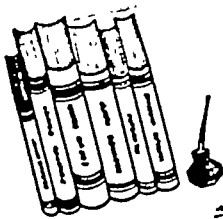
हेतु प्रेरित करना।
त्साहन देना।
) उपलब्ध करना।
गोघृत का ही सेवन क

भगवान् श्री रजनीश हिन्दी साहित्य

१ महावीर वाणी–१	३०.००
२ महावीर वाणी–२	३०.००
३ जिन खोजा तिन पाइयां	२०.००
४ ईशावास्योपनिषद्	१५.००
५ प्रेम है द्वार प्रभु का	६.००
६ समुन्द समाना बून्द में	७.००
७ घाट भुलाना बाट बिनु	७.००
८ सूली ऊपर सेज पिया की	७.००
९ सत्य की पहली किरण	६.००
१० शान्ति की खोज	३.५०
११ अन्तर्वीणा	६.००
१२ ढाई आखर प्रेम का	६.००
१३ नव सन्यास क्या ?	७.००
१४ सम्भोग से समाधि की ओर	६.००
१५ मिट्टी के दीये	५.००
१६ साधना-पथ	५.००
१७ अन्तर्यात्रा	५.००
१८ अस्वीकृति में उठा हाथ	५.००
१९ प्रेम का फूल	५.००
२० गीता-दर्शन (पुष्प-६)	३०.००
२१ गीता-दर्शन (पुष्प-७)	१२.००
२२ ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया	५.००
२३ क्रान्ति-बीज	६.००
२४ पथ के प्रदीप	५.००
२५ प्रभु की पगडंडियां	६.००
२६ भ्रांत समाजवाद और एक खतरा	०.३०
२७ सत्य की खोज	५.००
२८ शून्य की नाव	४.००
२९ सिंहनाद (नया संशोधित संस्करण, नया नाम: "पथ की खोज"	२.००
३० संभावनाओं की आहट	६ ००
३१ विद्रोह क्या है ?	१.५०
३२ ज्योतिष : अद्वेत का विज्ञान	१.५०
३३ ज्योतिष अर्थात् अध्यात्म	१.५०
३४ जन-संख्या विस्फोट : समस्या और समाधान परिवार नियोजन	१.५०
३५ मन के पार	१.००
३६ युवक और यौन	१.००
३७ अमृत-कण	१.००
३८ अहिंसा-दर्शन	१.००
३९ बिखरे फूल	१.००
४० क्रांति की वैज्ञानिक प्रक्रिया	१.५०
४१ धर्म और राजनीति	१.००
४२ ध्यान : एक वैज्ञानिक दृष्टि	१.००
४३ निर्वाण उपनिषद्	१५.००
४४ तओ उपनिषद् (प्रथम खण्ड)	४० ००
४५ मुल्ला नसरुद्दीन	५.००
४६ मैं मृत्यु सिखाता हूं	२०.००
४७ शून्य के पार	४.००
४८ मेडीसीन और मेडीटेशन	१.२५
४९ युवक कौन ?	०.३०
५० संभावना की आहट	६.००
५१ गहरे पानी पैठ	५.००
५२ अवधिगत सन्यास	०.३०
५३ अज्ञात के नये आयाम	१.००

प्राप्ति स्थान

जीवन जागृति केन्द्र

३१ इजराइल मोहल्ला,
भगवान भवन, मस्जिद बन्दर रोड़, बम्बई-९

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

की

प्रमुख विशेषताएं

१. यात्रियों के लिये सभी प्रकार की आधुनिक सुविधा उपलब्ध है।

२. यात्रियों के लिये शुद्ध एवं उत्तम भोजन का प्रबन्ध है।

३. प्रतिवर्ष होनहार किन्तु असमर्थ छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु छात्रवृत्ति दी जाती है। १९७१-७२ में ८५ छात्रों को १७६४७)०५ की वृत्ति दी गई।

४. वृद्ध एवं असहाय व्यक्तियों को सहायता दी जाती है। इस वर्ष १५३१६)६१ पैसा दिया गया।

५. क्षेत्र के औषधालय से इस वर्ष ४४२०६ रोगियों ने लाभ लिया।

साहित्य शोध विभाग द्वारा

प्राचीन एवं अनुपलब्ध साहित्य की खोज एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन।

नवीनतम प्रकाशन

१–राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची (पंचम भाग) पृष्ठ संख्या १४६० एवं मूल्य ४०)०० रुपये।

सम्पादक–:डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल एवम् अनूपचन्द न्यायतीर्थ।

पुरोवाक–डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी।

२--महाकवि--दौलतराम कासलीवाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व मूल्य १०)रु०

लेखक--डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

मन्त्री कार्यालय
महावीर भवन,
सवाई मानसिंह हाईवे,
जयपुर–३

सोहनलाल सोगानी
मन्त्री
प्रबन्धकारिणी कमेटी दि० जैन अ० क्षेत्र
श्री महावीरजी (राजस्थान)

आदर्श ग्राम ट्रस्ट फण्ड, सिरोही

केसर विलास, सिरोही (राजस्थान)

सिरोही जिले में गांधी विचार धारा को आगे बढ़ाने के लिये

भूतपूर्व सिरोही राज्य के लिये यह ट्रस्ट कायम हुआ है जिसके ट्रस्टी हैं:-

१. श्री राजमाता श्री कृष्ण कंवर वा साहिबा।
२. सिरोही दरबार हिजहाईनेस महाराजाधिराज श्री अभयसिंहजी सा० बहादुर।
३. श्री गोकुलभाई दौ० भट्ट।
४. श्री महाराज कुमार श्री रघुवीरसिंहजी।

इस ट्रस्ट की प्रवृत्तियाँ:—

१. बाल म्यूजियम को प्रोत्साहन। २. गांधी विचार निबंध प्रतियोगिता।
३. साहित्य प्रचार; ग्रामराज साप्ताहिक पत्र को सहायता।
४. गांधी अध्ययन केन्द्र (शिवकुटी आबू) में गांधी भवन का निर्माण।
५. बेवाओं को, विद्यार्थियों को, हरिजन-आदिवासियों को चरखा द्वारा सहायता।
६, चरखा-खादी तथा ग्रामोद्योगों के कार्य में सहायता।
७. सर्वोदय कार्यक्रम को प्रोत्साहन देना। ८. ग्रामदानी गांवों को आदर्श बनाने में सहायता।
९. चलती फिरती गांधी प्रदर्शनी योजना भी विचाराधीन है।
१०. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की गांधी विचार प्रचार योजना में योगदान।
११. गांधी विचार के सब कार्यों में यथायोग्य सहायता।
१२. शराबबंदी कार्य में यथायोग्य सहायता वगैरह।

आबू में शिवकुटी में गांधी भवन बन गया है जिसमें गांधी विचार के अध्ययन के लिए सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी। बाहर से आनेवालों के लिये एक सप्ताह तक ठहरने की भी व्यवस्था है।

गाधी भवन में बाल मन्दिर चल रहा है। मध्यम स्थिति के करीब ८० शिशु लाभ उठा रहे हैं। बहिन उमा मुंछाला उसके चार्ज में है।

इस तरह ट्रस्ट की प्रवृत्तियां दिन ब दिन आगे बढ़ती जा रही है। ट्रस्ट का ट्रस्ट डीड रजिस्टर्ड हो गया है। उसमें ट्रस्ट के चौथे ट्रस्टी महाराज कुमार श्री रघुवीरसिंह नियुक्त किये गये हैं।

सिरोही जिले में

चरखा, खादी का कार्य "नया समाज मण्डल" द्वारा करवाया जाता है।

ग्रामदान सर्वोदय का कार्य "जिला सर्वोदय मण्डल" द्वारा करवाया जाता है।

विद्यावाचस्पति पं० मधुसूदन जी ओझा के प्रधानशिष्य एवं विगत त्रिसहस्राब्दियों से प्राय: विलुप्त प्राय विशुद्ध विज्ञानात्मक परिभाषाओं से युक्त सहस्रों पृष्ठों के मौलिक साहित्य के भाष्यकार पं० मोतीलाल जी शास्त्री द्वारा अब तक लगभग दस सहस्रपृष्ठात्मक प्रकाशित साहित्य के ३२ कतिपय प्रकाशनान्तर्गत विविध विषयात्मक प्रमुख ग्रन्थ—

पं० मोतीलाल शास्त्री

1. गीत विज्ञान भाष्य भूमिका (8 खण्ड)
2. उपनिषद विज्ञान भाष्य भूमिका (3 खण्ड)
3. ईशउपनिषद विज्ञान भाष्य भूमिका (2 खण्ड)
4. श्राद्ध विज्ञान ग्रन्था नुगत (2 खण्ड)—शेष 2 खण्ड अप्रकाशित
5. शतपथ ब्राह्मणाहि भी विज्ञान भाष्य (2 खण्ड–3 भाग)—आगे के शेष भाग अप्रकाशित
6. राष्ट्रपति भवनानुगत व्याख्यान पंचक
7. भारतीय हिन्दू मानव और उसकी भावुकता (1 खण्ड)—शेष तीन खण्ड अप्रकाशित
8. संस्कृति एवं सभ्यता एवं सांस्कृतिक आयोजनों की रूपरेखा
9. दिग्देश काल स्वरूप मीमांसा

एक मात्र प्राप्ति स्थान
कृष्णचन्द्र शर्मा
'मानवाश्रम'
(शास्त्री नगर)
दुर्गापुरा रोड (जयपुर)

रत्न प्रकाश

(Indian Gemmology)

लेखक :

राजरूप टांक

मोती सिंह भौमियों का रास्ता
जौहरी बाजार, जयपुर

फोन : 72621

तेजस्वीनावधीतमस्तु

अहिंसा मनुष्य मात्र का गुण है या यों कहिए कि उसकी आन्तरिक अवस्था में अहिंसा उसका गुण होना चाहिए। मनुष्य अहिंसा परायण हो यही उसकी उन्नत अवस्था का बड़ा चिन्ह है। अगर इस तरह अहिंसा को देखा जाय तो मालूम होगा कि हमें अपनी जरूरतें विवेक पूर्वक अपने हाथों से ही पूरी करनी चाहिए। अगर हम ऐसा न करें तो इसके लिए हमें दूसरी शक्ति पर निर्भर रहना पड़ेगा और जब तक यह स्थिति रहेगी, तब तक हम अपने को निर्भय महसूस नहीं करेंगे। पर इस तेजस्वी विचार का प्रकाश सद् साहित्य के अध्ययन, चिन्तन और श्रवण के बिना मिलना सम्भव नहीं है। खादी अहिंसक विचार से ओतप्रोत गांधी की एक देन है।

भारत ६ लाख गांवों में फैला हुवा विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है, जिसकी ८०प्रतिशत जनता गांवों में रहती है और उसमें से ७० प्रतिशत पूर्णतया खेती पर निर्भर हैं। प्रति व्यक्ति आय औद्योगिक दृष्टि से सम्मुन्नत देशों की प्रति व्यक्ति आय के आठवें हिस्से से भी कम है। बेकारी की समस्या आय की असमानता तथा सामाजिक विषमतायें देश की उन्नति में बाधक हैं और उनके रहते हुए किसी भी देश की आजादी और सांस्कृतिक चेतना खतरे में पड़ सकती है। अधिकांश ग्रामीण जनता के पास वर्ष में तीन से ६ महीने तक लगभग कोई काम नहीं रहता। भारत की सबसे तीव्र समस्या लाखों लाख बेरोजगारों को काम देना है। यह एक पेचीदा एवम् विषम समस्या है। देश में खादी ग्रामोद्योगों के भरपूर विकास का आश्वासन दे सकना संभव नहीं है।

राजस्थान खादी संघ, खादी ग्रामोद्योगों, भूदान-ग्राम व सद्-साहित्य के माध्यम से जनता के आर्थिक, सामाजिक व नैतिक विकास में अपनी विनम्र सेवाएं करता रहा है और राष्ट्र सेवा के इस कार्य में जन-जन के सहयोग की अपेक्षा करते हुए वाणी मन्दिर रजत जयन्ति के अवसर पर अभिनन्दन करता है।

रामेश्वर अग्रवाल
(अध्यक्ष)
राजस्थान खादी संघ,
पो० खादीबाग (जयपुर)

छीतरमल गोयल
मंत्री
राजस्थान खादी संघ,
पो० खादीबाग (जयपुर)